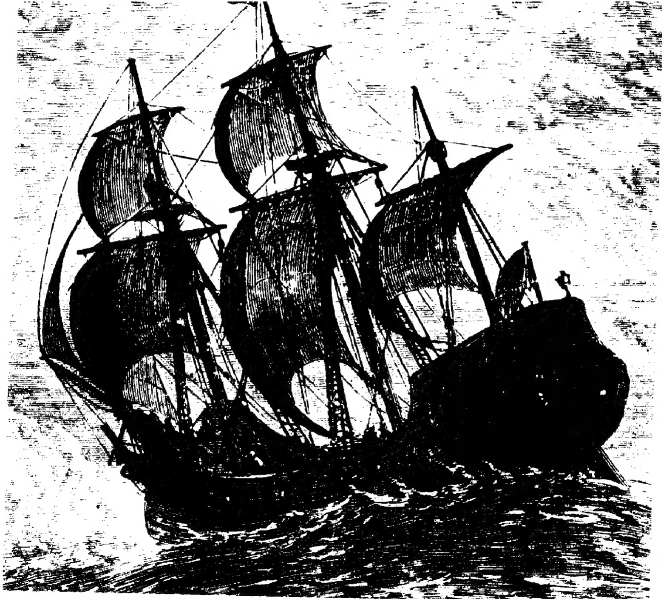
अमरीकी इतिहास
की
रूपरेखा

यूनाइटेड स्टेट्स इन्फ़र्मेशन सर्विस से जो बातें बहुधा पूछी जाती हैं उनमें से बहुतों का सम्बन्ध अमरीकी इतिहास से होता है। इस पुस्तक में उनका उत्तर संक्षिप्त और सुलभ रूप में देने का और इस राष्ट्र के विकास की तथा उसकी प्रमुख विचार-धाराओं की दिशा का संकेत करने का यत्न किया गया है। यह संयुक्त राज्य अमरीका का पूर्ण इतिहास नहीं है। इसमें जिस ऐतिहासिक काल का विवरण कुछेक पृष्ठों में दे दिया गया है उसका प्रत्येक भाग विद्वानों द्वारा पूर्ण खोज का विषय बन चुका है। पृष्ठ १५८ पर, पाठकों की सुगमता के लिए, अमरीकी इतिहास के पूर्णतया अध्ययनार्थ, कुछ प्रामाणिक ग्रन्थों की सूची दी गई है। आशा है कि यह पुस्तिका अपने विषय का परिचय देने के लिए उपयोगी और ज्ञान का आदान - प्रदान करने में तथा अपने पाठकों और संयुक्त राज्य अमरीका की जनता को एक दूसरे को समझने-समझाने में सहायक सिद्ध होगी।

यह पुस्तिका फ्रांसेस ह्विट्ने ने तैयार की। परिवर्धन नथेन ग्लिक ने किया। परामर्शदाताओं के नाम हैं : द जार्ज वाशिंगटन युनिवर्सिटी (वाशिंगटन डी. सी.) के इतिहास के प्रोफेसर डा. वुड ग्रे और कोलम्बिया युनिवर्सिटी (न्यूयार्क) के इतिहास के प्रोफेसर डा. रिचर्ड हाफ़स्टाडर।

चित्रों के लिए हम आभारी हैं : बार्ड सवर्य एन्थोनियम; न्यूयार्क हिस्टारिकल सोसाइटी; पेन्सिलवानिया एकेडेमी आव फाइन आर्टस; केटेरलिनम लियोग्रेफिक मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी; येल युनिवर्सिटी आर्ट गैलरी; न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी; डिपार्टमेण्ट आव पब्लिक बिल्डिंग्स, बास्टन (मॅसाचुसेट्स); हिस्टारिकल सोसाइटी आव पेन्सिलवानिया; इण्टरनेशनल हार्वेस्टर एक्सपोर्ट कम्पनी; स्टेट हाउस, सेक्रामेण्टो, कैलिफोर्निया; टेनेसी वेली एथारिटी, डिपार्टमेण्ट आव आर्मी; डिपार्टमेण्ट आव द नेवी; डिपार्टमेण्ट आव द ट्रेजरी

विषय-सूची



मेफ्लावर नामक जलयान

अध्याय १

औपनिवेशिक काल

"आदमी को बसाने के लिए इस स्थान की व्यवस्था करने में स्वर्ग और पृथ्वी कभी भी इतना अधिक सहमत नहीं हुए।"

—जान स्मिथ
वर्जिनिया उपनिवेश के संस्थापक, १६०७

सत्रहवीं शताब्दी से लेकर अट्ठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक के कोई सौ वर्षों तक यूरोप से अमरीका जाकर वहां बसने वाले आप्रवासियों का एक प्रवाह-सा चलता रहा। यह तूफानी प्रवाह इतिहास की उन महानतम घटनाओं में से एक है जिनमें आबादी का बड़े पैमाने पर स्थानांतरण हुआ है। शक्तिशाली किन्तु विविध प्रयोजनों से प्रेरित इस आन्दोलन के फलस्वरूप एक बियाबान वन्य प्रदेश में एक नये राष्ट्र का उदय हुआ। आन्दोलन की प्रकृति ने एक अज्ञात महाद्वीप के गुण-धर्म और उसके भविष्य को स्वरूप प्रदान किया।

आज, संयुक्त राज्य अमरीका दो मुख्य शक्तियों की देन है—विविध विचारों, रीति-रिवाजों और राष्ट्रीय विशिष्टताओं के यूरोपीय लोगों का आप्रवासन और इस नये देश का वह प्रवाह जिसने उनमें निहित यूरोपीय संस्कृति के स्पष्टतः दृष्ट लक्षणों में अपेक्षित सुधार किये। आवश्यकता के परिणामस्वरूप, औपनिवेशिक अमरीका यूरोप का ही एक प्रक्षेप था। एटलान्टिक पार करके, एक के बाद एक, अंग्रेजों, फ्रांसीसियों, जर्मनों, स्काटलैण्डवासियों, आयरलैण्डवासियों, डचों, स्वीडों और दूसरे तमाम लोगों के समूह आये और उन्होंने इस नये संसार में अपनी आदतों और परम्पराओं को प्रतिरोपित करने के प्रयत्न किये। किन्तु अनिवार्य रूप से, अमरीका की विशिष्ट भौगोलिक स्थितियों की शक्ति, विविध राष्ट्रीय समूहों का परस्पर व्यवहार एवं एक दूसरे पर पड़ने वाला प्रभाव और एक नए व अप्रौढ़ महाद्वीप में पुराने संसार के तौर-तरीकों को बनाए रखने की राह में आने वाली कठिनाइयों के कारण भी अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। ये परिवर्तन धीरे-धीरे और प्रारम्भ में तो बहुत ही सूक्ष्म रूप से हुए। किन्तु उनके परिणामस्वरूप एक नये सामाजिक-आदर्श की रचना हुई जो यद्यपि अनेक बातों में यूरोपीय समाज से मिलता-जुलता है फिर भी जिसका गुण-धर्म व चरित्रविशेष स्पष्टतः अमरीकी है।

जो राज्यक्षेत्र आज संयुक्तराज्य अमरीका के नाम से प्रसिद्ध है उसके लिए आप्रवासियों के पहले जहाजी-काफिले ने पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी में होने वाली अमरीका की खोजों के सौ से अधिक वर्षों बाद एटलांटिक पार किया। बीच के वर्षों में मैक्सिको, वेस्ट इण्डीज और दक्षिणी अमरीका में उन्नतिशील स्पेनी उपनिवेश स्थापित किए गए। उत्तरी अमरीका आने वाले ये यात्री छोटे और बेरहमी के साथ ठसाठस भरे हुए जलयानों में आते थे। अपने छः से बारह सप्ताह के इस सफर में उन्हें स्वल्पाहार पर ही निर्वाह करना पड़ता था। अनेक जलयान तूफानों की भेंट हो जाते थे। अनेक यात्री रोगों के शिकार होकर दम तोड़ देते थे और शिशु तो शायद ही कभी यात्रा के अन्त तक जीवित रह पाते थे। कभी-कभी प्रचण्ड आंधियां यानों को उनके निर्दिष्ट मार्ग से हटाकर दूर, बहुत दूर, बहा ले जाती थीं और अक्सर प्रशान्त मण्डलों में पड़ जाने के कारण जलयानों की यात्रा अनवरत रूप से विलम्बित हो जाती थी।

व्याकुल और उद्विग्न यात्रियों को अमरीकी तट के दर्शन मात्र से अवर्णनीय शान्ति मिलती थी। एक वृतान्त लेखक ने लिखा है "छत्तीस मील की दूरी से ही वायु नवोन्फुल्ल पुष्पों से सम्पन्न उद्यान की सुरभित समीर जैसी मधुर लगती थी।" औपनिवेशिकों को इस नये प्रदेश की प्रथम झांकी सघन वन की तरुपंक्तियों के रूप में मिली। विविध प्रकार के वृक्षों से युक्त और बहुत ही घना यह वन उत्तर में मेन से लेकर दक्षिण में जार्जिया तक फैला हुआ था और सच्चे अर्थों में समृद्धि का खजाना था। वहां बेशुमार ईंधन और लकड़ी मौजूद थी। वहां मकानों, फर्नीचर की वस्तुओं, जहाजों के साथ ही पोटाश, रंग और नौ-चालन सम्बन्धी आवश्यक वस्तुओं के बनाने में काम आने वाला कच्चा माल भी उपलब्ध था।

वर्जिनिया नामक उपनिवेश के संस्थापक जान स्मिथ ने उस उपनिवेश के बारे में लिखा है कि आदमी को बसाने के लिए इस स्थान की व्यवस्था करने में स्वर्ग और पृथ्वी कभी भी इतना अधिक सहमत नहीं हुए। पेन्सिलवानिया नामक उपनिवेश के संस्थापक विलियम पेन ने अपने उपनिवेश के सम्बन्ध में लिखा है कि यहां की वायु मधुर और स्वच्छ है और गगनांचल शान्त और निर्मल है। मौसम की भांति ही वहां पैदा होने वाले स्थानीय खाद्य-पदार्थ भी कम आकर्षक न थे। वहां के समुद्र में ओयस्टर, केकड़े, काड एवं लाब्सटर किस्म की मछलियों की बहुतायत थी। जंगलों में, 'मोटी और अविश्वसनीय वजन' की टर्कियां, बटेरें, गिलहरियां, तीतर, बारहसिंहा, कलहंस के

अलावा इतने अधिक हिरन पाये जाते थे कि अनेक स्थानों पर हिरन का गोश्त अनिच्छा से खाया जाने वाला मांस समझा जाने लगा था। फल-मेवा आदि सर्वत्र और स्वतः पैदा होते थे और शीघ्र ही इस बात की खोज भी कर ली गयी कि मटर, सेम, मक्का और कद्दू जैसे ठोस आहार सरलता से उगाये जा सकते हैं। नवागन्तुकों को शीघ्र ही यह भी मालूम हो गया कि वहां अनाज पैदा किया जा सकता है, फलों के पौधों की कलमें बढ़-पौढ़ सकती हैं। नये प्रदेश में गाय, बकरी, भेड़ और सूअर का पालन भी बढ़ने लगा।

भूमि कैसे आबाद हुई

नए महाद्वीप के ऊपर प्रकृति की विशेष कृपा थी। वह विविध प्रकार के प्राकृतिक साधनों से सम्पन्न था फिर भी जिन वस्तुओं का उत्पादन वहां पर बसने वाले लोग नहीं कर सकते थे, उनके आयात के लिए यूरोप के साथ व्यापार करना जरूरी था। उसके लिए महाद्वीप का समुद्र-तट बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ। नीचे से ऊपर तक सागर-तट में स्थान-स्थान पर असंख्य खाड़ियां व ऐसे उपयुक्त स्थान थे जहां बन्दरगाह बनाये जा सकते थे। मेन में केनेबक, कैनेक्टिकट, न्यूयार्क में हडसन, पेन्सिलवानिया में सस्क्वेहाना, वर्जिनिया में पोटॉमेक आदि अनेकानेक बड़ी-बड़ी नदियां थीं जो तटवर्ती मैदानों को बन्दरगाहों से जोड़ती थीं। वहां से आगे यूरोप तक जहाजरानी द्वारा सीधा सम्बन्ध था। किन्तु उत्तरी अमरीका के पूर्वी तट की अनेक बड़ी-बड़ी नदियों में कनाडा की सेण्ट लारेन्स नदी ही ऐसी थी जो महाद्वीप के भीतरी भागों में पहुँचने के लिए जलमार्ग का काम दे सकती थी। इस नदी पर तब फ्रान्सीसियों का अधिकार था। इसलिए जलमार्गों के अभाव और एपालेचियन पर्वत शृंखलाओं के अवरोध के कारण लोग काफी अर्से तक समुद्र-तटीय मैदानों से आगे बढ़कर भीतरी प्रदेशों में जाने के मामले में हतोत्साह होते रहे। केवल घोड़े आदि चौपायों को पकड़ने वाले शिकारी और व्यापारी ही तटीय प्रदेश के आगे भीतरी प्रदेशों में जाते थे। वस्तुतः, एक शताब्दी तक पूर्वी समुद्र तट पर ही औपनिवेशिकों ने अपनी बस्तियां बसायीं।

सागर तट पर जहां-जहां यात्रियों के आने के स्थान थे, वहां-वहां से उत्तर और दक्षिण में आबादी का विस्तार सबसे पहले तट के किनारे-किनारे तथा नदियों के निकट हुआ। अनेक उपनिवेश स्वाधीन समुदाय थे और समुद्र तक की निकासी के लिए उनके पास अपने निजी मार्ग थे। इन उपनिवेशों के अलग-अलग होने तथा बस्तियों के बीच की दूरी के कारण एक केन्द्रीय व एक समान शासन का विकास नहीं हो सका। बल्कि, हरेक उपनिवेश एक अलग इकाई बनता गया और उनमें उनका अपना मौलिक स्वरूप इतना दृढ़ होता गया कि वही आगे चलकर संयुक्तराज्य अमरीका के इतिहास में 'राज्यों के अधिकार' की भावना का आधार बना। किन्तु वैयक्तिक आत्माभिमानकी इस प्रवृत्ति के बावजूद प्रारम्भिक काल से ही व्यापार, नौ-चालन, वस्तु-उत्पादन, और मुद्रा की समस्याओं को हल करने के लिए विभिन्न उपनिवेशों के बीच की प्राचीरें तोड़ी गयीं और यह जरूरी हो गया कि इस सम्बन्ध में कुछ ऐसे नियम बनाए जाएं जो सभी पर लागू हों। बीज रूप में यही वह तथ्य था जिसने आगे चलकर इंग्लैण्ड से मुक्ति पाकर, स्वतन्त्र हो जाने पर एक महासंघ के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।

सत्रहवीं शताब्दी में उपनिवेशियों का आगमन सावधानी के साथ किये गये नियोजन व प्रबन्ध का परिणाम तो था ही साथ ही यह बेशुमार खर्च और खतरे का काम भी था। बसने वाले लोगों को समुद्र पार ३ हजार मील दूर लाना पड़ता था। उन्हें बर्तनों, कपड़ों, बीजों, औजारों, भवन निर्माण की वस्तुओं, पशुओं, हथियारों और गोलाबारूद की जरूरत पड़ती थी। दूसरे मौकों पर दूसरे देशों की उपनिवेश बसाने की नीतियों के विपरीत इंग्लैण्ड से होनेवाले इस आप्रवासन में वहां की सरकार किसी प्रकार की कोई सहायता नहीं दे रही थी। केवल गैर-सरकारी दल या व्यक्तियों ने ही इसमें पहल की थी। वर्जिनिया और मैसाचुसेट्स नामक दो उपनिवेश दो शासपत्रित (चार्टर्ड) कम्पनियों द्वारा संस्थापित किये गये थे जिनमें निजी विनियोगकर्ताओं की पूंजी लगी हुई थी। कम्पनियों द्वारा यह निधि उपनिवेशियों को आवश्यक साधनों से लैस करने, उन्हें ले जाने और उनके निर्वाह पर खर्च की गयी। न्यू हैवेन (जो बाद में कैनेक्टिकट राज्य में मिल गया) नामक बस्ती के मामले में सम्पन्न आप्रवासियों ने परिवहन, परिवारों के लिए साज-सामान और नौकरों आदि का खर्च स्वयं ही बर्दाश्त किया था। न्यू हैम्पशिायर, मेन, मेरीलैण्ड, उत्तरी व दक्षिणी कैरोलाइना, न्यू-जर्सी और पेन्सिलवानिया नामक बस्तियां शुरू में उन मालिकों की थीं जो अंग्रेज रईसों में से या कुलीन घरानों के थे। इन्हें इंग्लैण्ड के राजा की ओर से वहां जागीरें दी गयी थीं और इन्होंने जागीरदारों की हैसियत से अपने धन व साधनों के बल पर उन क्षेत्रों में काश्तकार व नौकर बसाये, ठीक उसी तरह जैसे कि उन्हें स्वयं अपने देश में जागीरें दी गयी हों। उदाहरणार्थ, चार्ल्स प्रथम ने सेसिल केल्वर्ट (लार्ड बाल्टिमूर) और उनके उत्तराधिकारियों को उस महाद्वीप में लगभग ७० लाख एकड़ भूमि का अनुदान दिया जो आगे चलकर मेरीलैण्ड राज्य के नाम से प्रसिद्ध हुई। उत्तरी और दक्षिणी कैरोलाइना तथा पेन्सिलवानिया के क्षेत्र चार्ल्स द्वितीय द्वारा अनुदान में दिये गये थे। तकनीकी दृष्टि से ये मालिक और शासपत्रित कम्पनियां इंग्लैण्ड के राजा के किरायेदार थे किन्तु वे इन बड़े-बड़े इलाकों के बदले में राजा को केवल नामचार की अदायगी ही करते थे। उदाहरण के लिए, प्रतिवर्ष लार्ड बाल्टिमूर वहां के मूल निवासी इंडियनों के दो तीरों के फलक और विलियम पेन दो ऊदबिलावों की खालें राजा को भेंट किया करते थे।

कुछ उपनिवेशों का विकास सिर्फ दूसरी बस्तियों के अंग के रूप में हुआ था। रहोड आइलैण्ड और कनेक्टिकट को उन लोगों ने बसाया था जो मैसाचुसेट्स से आये थे जो सम्पूर्ण न्यू-इंग्लैण्ड का पितृ-उपनिवेश है। जॉर्जिया नामक एक दूसरी बस्ती जेम्स एडवर्ड ओग्लेथ्रोप तथा कुछ दूसरे परोपकारी अंग्रेजों ने अधिकांशतः लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर बसाई थी। उनकी योजना यह थी कि इंग्लैण्ड की जेलों से ऋणी कैदियों को छुड़ाकर उन्हें अमरीका भेज दिया जाय और वहां उन्हें एक ऐसे उपनिवेश में बसाया जाय जो दक्षिण के स्पेनवासियों के विरुद्ध एक परकोटा सिद्ध हो। डचों द्वारा १६२४ में स्थापित न्यू निदरलैण्ड नामक उपनिवेश ४० वर्ष बाद अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया और उसका नया नाम न्यूयार्क रखा गया।

उपनिवेशियों को अपना यूरोपीय घर छोड़ने की प्रेरणा देने वाला एक अकेला सर्वाधिक उत्तेजक कारण यह था कि उनमें अपेक्षाकृत अधिक आर्थिक उन्नति के अवसरों की आकांक्षा थी। इस आकांक्षा को बल देने वाले दूसरे तत्व थे : धार्मिक स्वाधीनता की अभिलाषा, राजनीतिक दमन से बचने का संकल्प और साहसिक कार्यों को करने का लोभ। १६२० से १६३५ तक इंग्लैण्ड को अनेक आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बड़ी तादाद में लोग बेरोजगार हो गये। यहां तक कि कुशल से कुशल कारीगर भी सिर्फ पेट भरने लायक आमदनी ही कर पाता था। फसल की खराबी ने मुसीबत को और भी बढ़ा दिया। उसके साथ ही चूंकि इंग्लैण्ड के विकासशील ऊन उद्योग में करघों को चलाते रहने के लिए कच्चे ऊन की मांग बराबर बढ़ रही थी, इसलिए भेड़ पालने वाले उस भूमि पर अतिक्रमण करने लगे जिस पर अब तक खेती होती थी।

धार्मिक स्वतन्त्रता की तलाश

संयोग की बात है कि सोलहवीं व सत्रहवीं शताब्दी की धार्मिक उथल-पुथल के जमाने में प्यूरिटन कहलाने वाले स्त्री-पुरुषों की एक जमात ने इंग्लैण्ड के स्थापित चर्च में आंतरिक सुधारों की मांग की। अनिवार्यतः, उनका कार्यक्रम यह था कि विशेष रूप से जहां तक व्यक्ति के प्रति चर्च का दायित्व है, राष्ट्रीय चर्च को और भी अधिक प्रोटेस्टैण्ट बना दिया जाय। उनके सुधारवादी विचारों से जनता के दो हिस्सों में बंट जाने और राजकीय चर्च की एकता की क्षति द्वारा राज-सत्ता के नष्ट होने का खतरा पैदा हो गया। 'सेपरेटिस्ट्स' नामक एक रेडिकल पंथ का यकीन था कि उनकी रुचि के मुताबिक स्थापित चर्च का सुधार कभी हो ही नहीं सकता। जेम्स प्रथम के शासन-काल में ऐसे लोगों का एक समूह—जिसमें देहात के सामान्य लोग थे—इंग्लैण्ड छोड़कर लेडेन (हालैण्ड) चला गया, जहां उसे अपनी इच्छानुसार धर्म का पालन करने की छूट थी। कुछ वर्षों बाद इन्हीं लोगों में से कुछ ने नई दुनिया में जाने का निर्णय किया जहां उन्होंने १६२० में न्यू प्लाइमाउथ के 'पिलग्रिम' नामक उपनिवेश की स्थापना की।

१६२५ में चार्ल्स प्रथम के सिंहासनारूढ़ होने के तुरन्त बाद ही प्यूरिटन नेताओं को उस स्थिति का सामना करना पड़ा जिसे वे बढ़ता हुआ दमन व अत्याचार समझते थे। ऐसे अनेक पादरियों ने, जिन्हें प्रवचन या उपदेश देने के अधिकार से वंचित कर दिया गया था, अपने अनुयायियों को एकत्र किया और दूसरे धर्मयात्रियों का अनुसरण करते हुए वे भी अमरीका की यात्रा पर निकल पड़े। फिर भी, १६३० में 'मैसाचुसेट्स बे कालोनी' की स्थापना करने वाले इस दूसरे जत्थे के लोगों में आप्रवासियों के पहले जत्थे की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक लोग सम्पन्न और अच्छी स्थिति के थे। अगले दस वर्षों में कोई आधा दर्जन अंग्रेजी उपनिवेशों पर प्यूरिटनों की मुहर लग गई। लेकिन, धार्मिक कारणों से अमरीका आकर बसने वालों में सिर्फ प्यूरिटन ही नहीं थे। इंग्लैण्ड में क्वेकरों के भविष्य के प्रति असन्तोष होने के कारण विलियम पेन ने पेन्सिलवानिया नामक उपनिवेश बसाने का दायित्व सम्भाला। बहुत कुछ इसी भावना से प्रेरित होकर सेसिल कैल्वर्ट ने अंग्रेज कैथोलिकों के लिए 'मेरीलैण्ड' नामक उपनिवेश की संस्थापना की। पेन्सिलवानिया और उत्तरी कैरोलाइना के बहुत से उपनिवेशवासी जर्मनी और आयरलैण्ड के थे। वे वहां अपेक्षाकृत अधिक धार्मिक स्वतन्त्रता और आर्थिक अवसरों की तलाश में आए थे।

धार्मिक कारणों के साथ ही राजनीतिक विचारों ने भी बहुत से लोगों को अमरीका आने के लिए प्रेरित किया। इंग्लैण्ड में १६३० के दशक में चार्ल्स प्रथम ने मनमाना व स्वेच्छाचारी शासन करने का प्रयास किया जिसने लोगों को नई दुनिया में जाने और वहां बसने के लिए प्रेरित किया। बाद में क्रामवेल के नेतृत्व में चार्ल्स के विरोधियों द्वारा की गई क्रान्ति और उसकी सफलता के परिणामस्वरूप अगले दशक में 'राजा के आदमी' नामक अनेक कैवेलियरों को वर्जिनिया में अपना भाग्य आजमाने आना पड़ा। जर्मनी में विभिन्न छोटे राजाओं की विशेषतः धर्म सम्बन्धी दमनात्मक नीतियों तथा युद्धों की लम्बी तालिका से होने वाले विध्वंस और विनाश ने सत्रहवीं शताब्दी के आखिरी दशकों में तथा अट्ठारहवीं शताब्दी में अमरीका आने वाले आप्रवासियों की संख्या में और भी ज्यादा वृद्धि कर दी।

बहुत कम लोग यात्रा-व्यय वहन कर सके

बहुत से उदाहरण ऐसे भी मिलते हैं कि जिन स्त्री-पुरुषों को अमरीका में आकर नया जीवन प्रारम्भ करने में जरा भी रुचि नहीं थी उन्हें भी उपनिवेश बसाने के काम में

लगे लोगों द्वारा बड़ी चतुराई से वहां जाने के लिए राजी कर लिया गया। विलियम पेन ने नवागन्तुकों के लिए पेन्सिलवानिया उपनिवेश में प्रतीक्षा करते हुए लाभों और अवसरों को जिस ढंग से प्रचारित किया वह आधुनिक विज्ञापन कला की ओर संकेत करता है। जहाज के कप्तानों को उस ज़माने में किसी काम या नौकरी के लिए किसी आदमी को तैयार कर लेने पर बड़े-बड़े पारितोषिक मिला करते थे। इसलिए वे ऐसे कर्मचारियों व श्रमिकों को समुद्र पार ले जाने के लिए झूठे वायदों से लेकर जबरन उठा ले जाने तक के सभी तरीके इस्तेमाल करते थे और अपने जहाज में उसकी क्षमतानुसार ज्यादा-से-ज्यादा व्यक्ति ले जाने का प्रयत्न करते थे। न्यायाधीशों और जेल-अधिकारियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता था कि वे अपराधियों को कारावास का दण्ड भुगतने के बजाय अमरीका जाने का अवसर प्रदान करें।

महासागर पार आने वाले बेशुमार उपनिवेशवासियों में सापेक्षतया बहुत ही कम ऐसे थे जो अपना और अपने परिवार का मार्ग व्यय और इस नये देश में अपने नये जीवन का प्रारम्भिक खर्च बर्दाश्त कर सकते। शुरू में आने वाले उपनिवेशवासियों का परिवहन और निर्वाह सम्बन्धी खर्च वर्जिनिया कम्पनी तथा मैसाचुसेट्स-बे कम्पनी जैसे उपनिवेश बसाने का काम करने वाली एजेन्सियों ने किया था। बदले में बसने वालों ने एजेन्सी के लिए ठेके के श्रमिक के रूप में काम करना मंजूर किया। लेकिन जो लोग इस तरह का करार करके नई दुनिया में आए थे उन्होंने शीघ्र ही यह महसूस किया कि नौकरी या भाड़े पर काम करने के बन्धन में बंधे होने की इस स्थिति से तो वे इंग्लैण्ड में ही अच्छे थे। इस वन्य सीमान्त में आकर उन्होंने नाहक ही अपनी कठिनाइयों में वृद्धि की।

शीघ्र ही यह पद्धति उपनिवेश बसाने की सफलता में बाधक समझी जाने लगी। परिणामतः, अमरीका आकर बसने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने की एक नई पद्धति का विकास हुआ। कम्पनियों, उपनिवेश मालिकों और स्वतन्त्र परिवारों ने प्रत्याशित आप्रवासियों से ऐसे करार किये जिनके अन्तर्गत उनके द्वारा उठाए गए परिवहन और निर्वाह व्यय के बदले में आप्रवासी ४ से लेकर ७ वर्षों तक की एक निश्चित अवधि तक उनके लिए श्रम करने के लिए बाध्य होता था। इस अवधि की समाप्ति पर उसे स्वतन्त्रता का पुरस्कार प्रदान किया जाता जिसमें कभी-कभी भूमि का छोटा टुकड़ा—आमतौर से ५० एकड़ का —भी शामिल होता था। ऐसे करारों के अन्तर्गत आने वाले आप्रवासी 'करारबद्ध' कर्मचारी कहलाते थे। अनुमान लगाया गया है कि न्यू इंग्लैण्ड के दक्षिण की बस्तियों के आप्रवासियों में आधे व्यक्ति ऐसे ही करारों के अन्तर्गत अमरीका आए थे। आमतौर से उन सभी लोगों ने करार की शर्तों को वफादारी से पूरा किया। फिर भी, कुछ ऐसे भी थे जो पहले मौके में ही मालिकों को छोड़कर भाग गए। उन्हें भी, या तो उसी बस्ती में जहां वे पहले आकर बसे थे, या पड़ोस की बस्ती में रहने व खेती करने के लिए आसानी से भूमि मिल गयी।

इस प्रकार की अर्ध-दासता की व्यवस्था में जीवन प्रारम्भ करने वाले किसी भी परिवार के नाम व सम्मान पर इसके लिए कोई सामाजिक या दूसरी तरह का दोष या लांछन नहीं लगाया गया। वस्तुतः हरेक बस्ती में अनेक प्रमुख व्यक्ति या तो स्वयं 'करारबद्ध नौकर थे या उनकी सन्तानें थे।' दूसरे उपनिवेशवासियों की तरह वे भी उस देश की महानतम् परि-सम्पत्तियों के समान थे क्योंकि वहां की सब से बड़ी आवश्यकता यह थी कि वह आबाद हो। वास्तव में बस्तियां और उनकी सफलता में रुचि रखने वाले सभी सम्बन्धित समूह, आकर बसने वाले प्रवासियों की संख्या के प्रत्यक्ष अनुपात में ही उन्नत और समृद्ध हुए, क्योंकि भूमि और दूसरे प्राकृतिक साधन असीमित थे और प्रगति इसी तथ्य पर निर्भर करती थी कि उनके विकास के लिए काम करने वाली आबादी कितनी है। सत्रहवीं शताब्दी के पहले ७५ वर्षों में जो आप्रवासी अमरीका आये उनमें अंग्रेजों का प्रबल बहुमत था। देश के मध्य-क्षेत्र में कुछ थोड़े से डच, स्वेड, और जर्मन, दक्षिणी कैरोलाइना व दूसरे स्थानों में कुछ फ्रान्सीसी प्रोटेस्टेंन्ट तथा यहां-वहां इक्का-दुक्का स्पेनी, इतालवी और पुर्तगाली लोग बिखरे हुए थे। लेकिन इन सबकी कुल तादाद पूरी आबादी के १० प्रतिशत से अधिक नहीं थी।

अनेक संस्कृतियों का मेलमिलाप

१६८० के उपरान्त आप्रवासियों के आगमन का मुख्य स्रोत इंग्लैण्ड नहीं रहा। विविध कारणों से जर्मनी, आयरलैण्ड, स्काटलैण्ड, स्विटजरलैण्ड और फ्रान्स से बड़ी संख्या में आप्रवासी आए। युद्ध की आग से बचने के लिए हजारों जर्मन यूरोप से भाग आए। सरकार द्वारा ढायी गई गरीबी और दूरस्थ जमींदारों के दमन से बचने के लिए एक बड़ी तादाद में स्काटी-आयरी लोग उत्तरी आयरलैण्ड से भाग आए। स्काटलैण्ड और स्विटजरलैण्ड से भी लोग गरीबी के कारण भागे। आप्रवासियों का प्रवाह लहरों के चढ़ाव-उतार जैसा था किन्तु चाहे किसी एक अवधि को क्यों न ले लिया जाय आप्रवासन की धारा धीर व लगातार ही मिलेगी। १६९० में आबादी लगभग २॥ लाख तक पहुँच गयी और १७७५ तक वह हर २५ वर्ष में दूनी होती गयी। १७७५ में आप्रवासियों की आबादी २५ लाख से भी अधिक हो गयी।

अधिकतर मामलों में, गैर-अंग्रेज आप्रवासियों ने अपने आपको प्रारम्भ में आकर बसने वालों की संस्कृति के अनुसार ढाल लिया। फिर भी, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सभी आप्रवासी वहां जाकर पूरी तरह अंग्रेज बन गए। यह सही है कि उन्होंने

अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी कानून, अंग्रेजी रीतिरिवाज और अंग्रेजी विचारधारा को अपनाया किन्तु इन्हें इनके उसी संशोधित रूप में अपनाया गया जो अमरीका में वहां की स्थितियों के अनुकूल और अपेक्षित था। यही नहीं, बाद के आप्रवासियों तथा प्रारम्भ में आकर बसने वालों के परस्पर मेलमिलाप की प्रक्रिया के दौरान में और भी सांस्कृतिक सुधार अमल में लाये गये। इसी सांस्कृतिक समन्वय व मेलमिलाप के परिणामस्वरूप एक अभिनव संस्कृति उदय हुई जिसमें अंग्रेजी संस्कृति और यूरोपीय महाद्वीप की सांस्कृतिक विशेषताओं का ऐसा समन्वय था जो नई दुनिया की परिस्थितियों की मांगों की पूर्ति भी करता था। हालांकि, हरेक व्यक्ति और उसके परिवार को, बिना किसी बुनियादी पुनः समायोजन के, मैसाचुसेट्स या दक्षिणी कैरोलाइना छोड़कर वर्जिनिया या पेन्सिलवानिया जाकर बसने की पूरी छूट थी, फिर भी अलग-अलग उपनिवेशों की अपनी अलग-अलग विशेषताएं थीं।

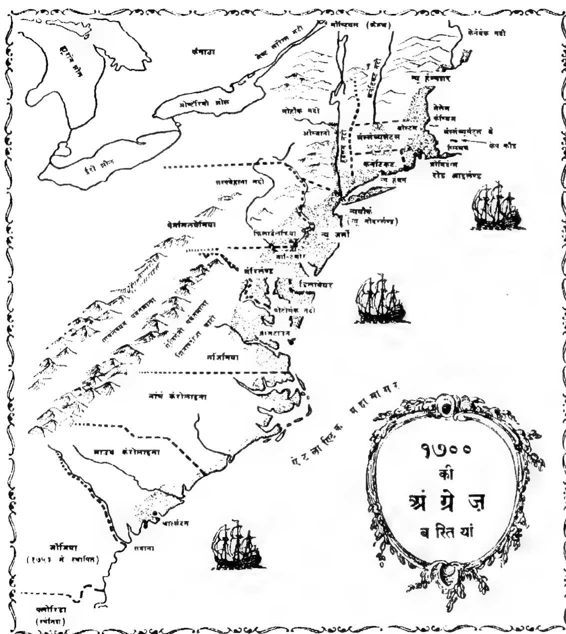
तमाम बस्तियों को तीन स्पष्ट श्रेणियों में बांटा जा सकता था। इनमें एक श्रेणी वह थी जिसमें न्यू इंग्लैण्ड आता था। न्यू इंग्लैण्ड मुख्यतः व्यापारिक और औद्योगिक बस्ती बन गया जबकि उसके दक्षिण में कृषि-प्रधान समाज का विकास हो रहा था। भौगोलिक स्थिति निर्णायक तथ्य थी। न्यू इंग्लैण्ड बर्फ के फिसलने से चिकने हुए तथा गोल रंगों से ढंका एक पथरीला क्षेत्र था। नदी की घाटियों के कुछ अपवादस्वरूप स्थलों को छोड़कर वहां की मिट्टी आमतौर से हल्की और अनुपजाऊ थी। इसके अलावा बहुत थोड़ी समतल भूमि, ग्रीष्म ऋतु की गुरुता, और लम्बी सर्दियों के कारण यह प्रदेश खेतीबारी के लिए एक घटिया क्षेत्र साबित हुआ। लेकिन, न्यू इंग्लैण्ड के वासियों ने शीघ्र ही दूसरे लाभकारी धन्धे खोज निकाले। उन्होंने जल-शक्ति से लाभ उठाया और ऐसी मिलें स्थापित कीं जो या तो गेहूं और मक्का पीसती थीं या शहतीरों को काटकर निर्यात के लिए इमारती लकड़ी तैयार करती थीं। समुद्र तट की खाड़ियां अच्छे बन्दरगाहों की स्थापना में सहायक हुईं और उनसे व्यापार में वृद्धि हुई। बढ़िया शहतीरों के सुलभ होने के कारण जहाज बनाने के काम को भी प्रोत्साहन मिला। समुद्र स्वयं ही ठोस सम्पत्ति का सम्भाव्य स्रोत था। काड नामक मछली का व्यवसाय ही एक अकेला ऐसा माध्यम था जिसने मैसाचुसेट्स के लोगों की समृद्धि की बुनियाद डाली।

न्यू इङ्गलैंड में धर्म का शासन

बन्दरगाहों के आसपास गांवों व कस्बों में बसकर न्यू इंग्लैण्ड वालों ने शीघ्र ही शहरी जीवन अपना लिया। जिन लोगों ने अपने गांवों व कस्बों के निकट ही अपने छोटे-छोटे फार्म बनाये थे उनकी आवश्यकता सम्मिलित चरागाहों व जंगलों से पूरी होती थी। ज्यादातर लोग खेती के साथ ही दूसरे अनेक प्रकार के व्यापार भी करते थे। पारस्परिक निकटता के कारण गांव के स्कूल, चर्च, नगर-सभा और आपसी मुलाकातें व विचार विनिमय सम्भव हो सका और इन सब ने मिल कर नयी विकासशील सभ्यता पर जबर्दस्त प्रभाव डाला। एक जैसी दिक्कतों का सामना करते हुए, एक जैसी पथरीली भूमि पर खेती करते हुए और सामान्य शिल्पों एवं व्यापार में लगे हुए न्यू इंग्लैण्ड-वासियों ने तीव्र गति से अपने में ऐसे विशिष्ट गुण-धर्मों का विकास कर लिया जिनके कारण उनका समाज अपने आपमें विशिष्ट और दूसरों से भिन्न प्रतीत होने लगा।

वस्तुतः, उनके गुण-धर्म व चरित्र की मूल उत्तरीमार और समुद्र-यात्रा से थकित व श्रमित एक सौ दो यात्रियों से प्रारम्भ हुई थी जो लेडेन और प्लाइमाउथ से केप काड तक आये थे। ये लोग लन्दन (वर्जिनिया) कम्पनी के तत्वावधान में वर्जिनिया में बसने के लिए आ रहे थे। किन्तु उनका जहाज जो मेफ्लावर के नाम से इतिहास प्रसिद्ध है, वर्जिनिया न पहुंचकर सुदूर उत्तर के तट से जा लगा। कुछ सप्ताहों तक खोजबीन करने के बाद इन उपनिवेशवासियों ने वर्जिनिया न जाने तथा जहां पहुंचे थे वहीं रहने का निर्णय किया। अपनी नयी बस्ती के लिए उपयुक्त स्थान के रूप में उन्होंने प्लाइमाउथ बन्दरगाह को चुना और हालांकि वहां की पहली सर्दी बहुत ही कठिनाई की तथा कष्टदायक सिद्ध हुई फिर भी उनकी बस्ती उसे झेलती हुई बढ़ती-पनपती रही।

प्लाइमाउथ के लोग अभी अपने और अपनी बस्ती के अस्तित्व के लिए संघर्ष कर ही रहे थे कि उसके आस-पास के क्षेत्रों में दूसरी बस्तियां बसायी जाने लगीं। १६३० के बाद मैसाचुसेट्स खाड़ी के क्षेत्र में संस्थापित बस्ती ने आगे चलकर न्यू इंग्लैण्ड और पूरे राष्ट्र के विकास में विशेष रूप से एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। यह बस्ती लगभग २५ व्यक्तियों ने संस्थापित की थी। उन्हें इंग्लैण्ड के राजा की ओर से शासनपत्र (चार्टर) प्राप्त था। उनमें से कुछ लोग स्वयं अमरीका आये। वे अपने साथ-साथ बसने के इच्छुक लोगों का एक समूह तथा राजा का शासन-पत्र भी लाये। वे अपनी सफलता के लिए दृढ़ता के साथ कृत-संकल्प थे। हालांकि, न्यू इंग्लैण्ड का क्षेत्र 'स्वर्ग' से कुछ घटिया सिद्ध हुआ और उनमें से कुछ लोग अपने श्रम के लिए पश्चात्ताप करते इंग्लैण्ड लौट भी गये फिर भी उनमें से अधिकांश वहीं रह कर जीवन निर्वाह तथा अपने जैसे मजबूत इरादे के व्यक्तियों के समाज की रचना के काम में जुट गये। पहले दस वर्षों के भीतर वहां ६५ विद्वान उपदेशक पहुंचे। वे सभी धर्म-शास्त्र के ज्ञाता थे। अपने नेताओं की विचार-धारा के अनुसार मैसाचुसेट्स में धर्म-तन्त्र का विकास हुआ और यह स्वाभाविक भी था। सिद्धान्ततः धर्म और राज्य दो पृथक संस्थाएं थीं। किन्तु व्यवहार में उन्हें एक माना गया था। सभी संस्थाएं धर्म के अधीन की जा रही थीं।



इस चित्र में बिन्दु-रेखाओं द्वारा अटलांटिक तट पर इंग्लिश बस्तियों का विस्तार दिखलाया गया है। संगठित बस्तियां अभी समुद्र-तट से बहुत दूर तक नहीं फैली थीं और भीतरी प्रदेश में सीमाएं स्थायी रूप से नहीं बनी थीं। ज्यों-ज्यों पश्चिम की ओर बस्तियां बढ़ने लगीं, त्यों-त्यों इन सीमाओं के कारण बार-बार झगड़े होने लगे।

शीघ्र ही एक ऐसे शासनतन्त्र का विकास हुआ जो धर्मतन्त्रीय और सत्तावादी था। फिर भी नगर-सभाओं में सार्वजनिक समस्याओं पर विचार-विनिमय करने के अवसर प्राप्त थे और इस तरह नागरिकों को थोड़ा-बहुत स्व-शासन का अनुभव भी प्राप्त हुआ। नगरों का विकास धर्म-संगठन (चर्च) को केन्द्र मान कर हो रहा था फिर भी समस्त आबादी सीमान्ती जीवन की आवश्यकताओं के कारण नागरिक दायित्वों की पूर्ति और सलाह-मशवरे की सभाओं में पूरा-पूरा योगदान करती थी। तो भी, वर्षों तक पादरी व रूढ़िवादी जन स्थापित चर्च के प्रति आस्था बनाए रखने का प्रयास करते रहे।

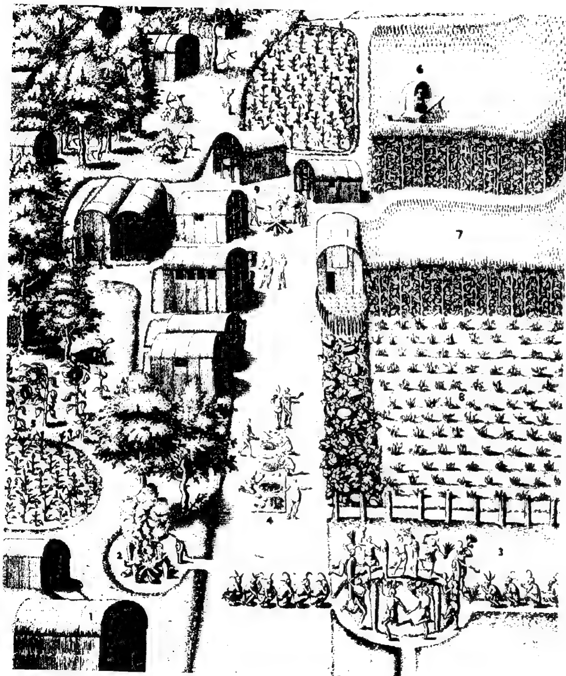
फिर भी, वे प्रत्येक नागरिक के मस्तिष्क को बांधने और प्रेरणायुक्त उत्साहियों का मुंह बन्द करने में सफल नहीं हुए। एक ऐसे ही विद्रोही व्यक्ति रॉजेर विलियम्स थे। वे पादरी थे और उनका जीवन बड़ा ही निष्कलंक एवं दोष रहित था। वे कानून के विषय में पारंगत एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। उन्होंने इण्डियनों (अमरीका के मूल निवासी) पर कब्जा कर लेने के अधिकार और चर्च एवं राज्य को एक बनाकर रखने की बुद्धिमत्ता को ललकारा। "मैजिस्ट्रेटों की सत्ता के विरुद्ध नया और खतरनाक अभिमत" प्रचारित करने के जुर्म में उन्हें महान्यायालय ने निर्वासन का दण्ड दिया। उन्हें रहोड आइलैण्ड के इण्डियनों (अमरीका के मूल निवासी) ने शरण दी। वहां उन्होंने इस विचारधारा के आधार पर एक नयी बस्ती बसायी कि अपने धार्मिक विश्वासों के मामले में व्यक्ति की अपनी इच्छा सर्वोपरि है और धर्म व राज्य सदैव परस्पर पृथक रहेंगे।

किन्तु मैसाचुसेट्स छोड़ने वालों में केवल वे धर्म-विरोधी ही नहीं थे जो विचार व आत्मा की स्वतन्त्रता के हामी थे। रूढ़िवादी प्युरिटनों ने भी अपेक्षाकृत अच्छी भूमि और अवसरों की तलाश में इस बस्ती से प्रस्थान किया। उदाहरणार्थ, कनेक्टिकट नदी की घाटी की उर्वरता के समाचार ने उन किसानों को आकर्षित किया जिन्हें यहां खराब जमीन होने के कारण अनेक दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। ऐसी भूमि के लिए जो समतल हो और जिसमें गहराई तक मिट्टी हो, वे मूल निवासियों के खतरों का मुकाबला करने के लिए तैयार थे। महत्व की बात यह है कि इन समूहों ने शासन-व्यवस्था बनाते समय मताधिकार को अपेक्षाकृत व्यापक बना दिया और मताधिकार प्राप्त करने के लिए चर्च का सदस्य होने की प्राथमिक शर्त को रद्द कर दिया। संयोग से, मैसाचुसेट्स के और भी बहुत से निवासी उत्तरी क्षेत्रों में चले गये और शीघ्र ही स्वतन्त्रता और भूमि की खोज करने वाले लोगों द्वारा बसाई गयी न्यू हैम्पशायर और मेन नाम की बस्तियां नक्शे पर उभर आयीं।

जबकि मैसाचुसेट्स-बे का प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से बाहर विस्तार पा रहा था उसके भीतर भी विकास हो रहा था और उसका व्यापार बढ़ रहा था। शताब्दी के मध्य से वह क्षेत्र तेजी के साथ समृद्ध होता गया। बास्टन अमरीका के सबसे बड़े बन्दरगाहों में गिना जाने लगा। जहाजों का पेटा बनाने के लिए ओक वृक्ष की शहतीरें, बरन और मस्तूलों के लिए लम्बे चीड़ और संधियों में भरने के लिए राल उत्तरी-पूर्वी जंगलों से आती थी। मैसाचुसेट्स-बे के पोत-कप्तान निजी जहाज बनाते और उन्हें संसार भर के बन्दरगाहों पर लाते-ले जाते थे। इस तरह उन्होंने एक देश से दूसरे देश तक माल की ढुलाई के व्यापार की नींव रखी और यह व्यापार निरन्तर बढ़ने के साथ ही उत्तरोत्तर महत्वपूर्ण भी बनता गया। औपनिवेशिक युग के अन्त तक ब्रिटिश झण्डे के नीचे जितने भी पोत थे उनमें से एक तिहाई अमरीका में बनाये गये थे।

दूसरी श्रेणी मध्यवर्ती उपनिवेशों की थी। इन बस्तियों का समाज विविध प्रकार का और मिला-जुला था। न्यू इंग्लैण्ड के समाज की तुलना में वह अधिक सहिष्णु था। पेन्सिलवानिया और उसके पास के उपनिवेश डेलावेयर की प्रारम्भिक सफलता का श्रेय विलियम पेन नामक एक बहुत ही व्यवहारकुशल क्वेकर को था जिनका लक्ष्य था— सम्राट चार्ल्स द्वितीय द्वारा उन्हें अनुदान में दिए गए विस्तृत क्षेत्र में बसने के लिए अनगिनत धर्मों, विश्वासों और राष्ट्रों के लोगों को आकर्षित करना। वे संकल्प कर चुके थे कि यह उपनिवेश इस बात का आदर्श उपस्थित करे कि यहां इंडियनों (मूल निवासियों) के साथ न्यायसंगत और ईमानदारी का व्यवहार किया जाता है। इसलिए उन्होंने उनके साथ लिखित करार किये जिनका पूरी तरह पालन किया गया और इस तरह उस वन्य-प्रदेश में शान्ति कायम रही। बस्ती आसानी के साथ और तीव्र गति से उन्नति करती रही। पेन के आने के एक वर्ष के भीतर ही तीन हजार नये नागरिक पेन्सिलवानिया आकर बस गये। उपनिवेश के केन्द्र में फिलाडेल्फिया नामक नगर था जो शीघ्र ही अपनी छायादार और चौड़ी सड़कों, ईंट व पत्थरों की बनी अपनी इमारतों और व्यस्त रहने वाली गोदियों के लिए विख्यात हुआ। औपनिवेशिक युग के अन्त तक वहां की आबादी ३० हजार हो गयी जिसमें अनेक भाषाओं, धर्मों और व्यवसायों के लोग शामिल थे। क्वेकरों ने अपने गम्भीर और सुविचारित तरीकों से, अपनी लोक-कल्याण की भावना और सफल व्यावसायिक बुद्धि से इस नगर को अट्ठारहवीं शताब्दी के मध्य तक औपनिवेशिक अमरीका की उत्तरोत्तर फलती-फूलती महानगरी बना दिया।

यद्यपि फिलाडेल्फिया में क्वेकरों का प्रभुत्व था तथापि पेन्सिलवानिया के दूसरे स्थानों में अन्य लोगों का भी जोर था। अपने युद्धाक्रान्त देश से एक बड़ी संख्या में जर्मन लोग आये—जीवन निर्वाह के लिए काम-धन्धे की खोज में। वे शीघ्र ही उस प्रान्त के सर्वोत्तम दक्ष किसान सिद्ध हुए। बुनाई, कैबिनेट बनाने आदि के कुटीर उद्योगों में वे बड़े कुशल थे। उनका यह ज्ञान भी उपनिवेश के विकास में बहुत



सोलहवीं शताब्दी के एक कलाकार द्वारा चित्रित एक तत्कालीन इण्डियन (अमरीका के मूल निवासी) बस्ती का रेखा चित्र। इसमें दिखाया गया है : १ मुखिया का घर, २ प्रार्थना-स्थल, ३ पर्व या उत्सव-विशेष पर होनेवाला नृत्य-समारोह, ४ प्रीतिभोज, ५ तम्बाकू, ६ खेत का रखवाला, ७ मक्का का खेत, ८ स्क्वाश का खेत, ९ अनुष्ठान-अग्नि, १० जल-प्रवाह

महत्वपूर्ण साबित हुआ। नयी दुनिया में बड़े पैमाने पर स्काटी-आयरी लोगों के आप्रवासन का मुख्य प्रवेश द्वार भी पेन्सिलवानिया ही था। वे बहुत ही शक्तिशाली सीमान्तवासी थे। जहां चाहते थे भूमि पर कब्जा कर लेते थे। कहीं बन्दूक के जोर पर तो कहीं बाइबिल के अनन्त उद्धरणों के बल पर वे अपने अधिकारों की रक्षा करते थे। वे अक्सर गैर-कानूनी कार्रवाइयां भी करते थे और इसीलिए वे नेकचलन क्वेकरों की दृष्टि में पीड़ा पहुँचाने वाले व्यक्ति थे। उनके इस दांव ने उन्हें इतनी महत्वपूर्ण शक्ति बना दिया कि उसका अनुमान लगाना कठिन है। धर्म, विद्या और जन-प्रतिनिधियों की सरकार में विश्वास करने वाले ये लोग ज्यों-ज्यों वन्य प्रदेश में आगे बढ़ते गये त्यों-त्यों वे सभ्यता के अग्रदूत सिद्ध होते गये।

पेन्सिलवानिया की आबादी मिली-जुली थी ही, न्यूयार्क भी सत्रहवीं शताब्दी के मध्य से ही यह आभास देने लगा था कि अमरीका बहुभाषा भाषी लोगों का राष्ट्र होगा। हडसन के किनारे-किनारे १६८६ तक एक दर्जन से ऊपर भाषाएं सुनायी पड़ने लगी थीं। वहां की आबादी में डच, फ्लेमी, वाल्लूनी, फ्रांसीसी, डेन, नार्वेवासी, स्वेड, अंग्रेज, स्काटी, आयरी, जर्मन, पोलैण्डवासी, बोहेमियन, पुर्तगाली और इतालवी आदि शामिल थे। इनमें से अधिकतर लोग व्यापार द्वारा जीविकोपार्जन करते थे। उन्होंने व्यापारियों की सभ्यता विशेष की स्थापना की जिसमें भावी पीढ़ियों के गुण-धर्म परिलक्षित थे।

डचों का प्रभाव

न्यू निदरलैण्ड, जो बाद में न्यूयार्क के नाम से प्रसिद्ध हुआ, ४० वर्षों तक डचों के अधिकार में रहा। किन्तु ये लोग आप्रवासी प्रकृति के लोग न थे। हालैण्ड में ही इनके पास काफी जमीन थी। उपनिवेश बसाने के काम से उन्हें ऐसा कोई भी राजनीतिक या धार्मिक लाभ नहीं था जो उन्हें पहले से प्राप्त न हो। इसके साथ ही, नयी दुनिया में बस्ती बसाने का काम करने वाली उनकी 'डच वेस्ट इण्डिया कम्पनी' को ऐसे कुशल अधिकारी मिलने कठिन हो गए जो आसानी के साथ उपनिवेश का संचालन कर सकते। फिर, १६६४ में, उपनिवेश सम्बन्धी गतिविधियों में ब्रिटेन की रुचि के पुनः जागरण के कारण डचों की बस्तियों को जीत लिया गया। फिर भी, इसके बहुत अर्से बाद तक डचों का सामाजिक व आर्थिक प्रभाव पड़ना जारी रहा। यहां के मकानों की छतें स्थायी तौर पर उन्हीं की स्थापत्य-कला के अनुसार बनायी गयीं और उनके व्यापारियों ने ही शहर को एक व्यापारिक वातावरण प्रदान किया। यह डच लोगों की आदतें ही थीं जिनसे प्रभावित होकर न्यूयार्क के लोगों में दैनिक जीवन के आनन्दों के प्रति एक उदार भाव पैदा हो सका जो कि बास्टन के प्यूरिटन लोगों के शुष्क जीवन से कतई भिन्न था। छुट्टी के दिन दावतों और आमोद-प्रमोद के आयोजन न्यूयार्क की विशेषता थी। डचों के अनेक रीति-रिवाज, जैसे, वर्ष के पहले दिन पड़ोसी के यहाँ बधाई देने जाना, उसके साथ बैठकर मदिरा पीना, बड़े दिन पर विनोदी सेण्ट निकोलस का आगमन आदि, देश भर में अपनाये गये और वे आज तक प्रचलित हैं।

डचों से ले लेने के बाद एक अंग्रेज प्रशासक ने न्यूयार्क के वैधानिक ढांचे को ऐसा स्वरूप देना शुरू किया कि वह अंग्रेजी परम्पराओं के अनुकूल हो। उसने यह कार्य इतने धीरे-धीरे और ऐसी बुद्धिमानी से किया कि वह डचों और अंग्रेजों दोनों से दोस्ती, सद्भावना व सम्मान प्राप्त करने में सफल हुआ। नगर के शासन-तन्त्र में न्यू इंग्लैण्ड के नगरों की भांति स्वायत्त-शासन की विशिष्टतायें थीं और कुछ वर्षों में ही डचों के अवशिष्ट कानून व रीतिरिवाजों और अंग्रेजों की प्रक्रियाओं और पद्धतियों में एक तर्कसंगत व व्यावहारिक समन्वय हो गया।

१६९६ तक न्यूयार्क निवासियों की संख्या ३० हजार हो गयी। हडसन, मोहॉक और अन्य सरिताओं की उर्वर घाटियों में बड़ी-बड़ी जायदादें फूली-फली। बड़े काश्तकार और पूर्ण स्वामित्व वाले छोटे-छोटे किसान दोनों ने इस क्षेत्र के खेतिहर विकास में योग दिया। घास के मैदानों व जंगलों से वर्ष पर्यन्त ढोरों, भेड़ों, घोड़ों व सुअरों के लिए चारा मिलता रहता था। तम्बाकू और फ्लैक्स की उपज आसानी से और काफी मात्रा में होती थी और फल विशेषतः सेब की, पैदावार तो बेशुमार थी। खेतिहर वस्तुओं की उपज के साथ ही फर का व्यापार भी न्यूयार्क और अलबानी नामक नगरों के विकास में बड़ा महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। अलबानी जैसे सुदूर स्थित नगर से फर और दूसरी कृषिगत वस्तुएं हडसन नदी के जलमार्ग द्वारा आसानी के साथ न्यूयार्क के व्यस्त बन्दरगाह को भेजी जाती थीं जहां से उनका निर्यात किया जाता था।

वर्जिनिया, मेरीलैण्ड, उत्तरी व दक्षिणी कैरोलाइना और जार्जिया नामक दक्षिणी बस्तियां प्रधानतः ग्रामीण थीं। उनका स्वरूप न्यू इंग्लैण्ड और बीच के दूसरे उपनिवेशों की तुलना में सर्वथा भिन्न था। वर्जिनिया में जेम्स टाउन ही वह पहली बस्ती थी जो नयी दुनिया में बच सकी। १६०६ के दिसम्बर के आखिरी दिनों में लन्दन की एक औपनिवेशिक कम्पनी द्वारा प्रेरित १०० व्यक्तियों का एक मिश्रित-समूह अपनी महान साहसिक यात्रा पर निकल पड़ा। उन्होंने स्वर्ण और हीरे जवाहरात पाने तथा पल भर में ही धनी होने के ख्वाब देखे थे। सुनसान वन्य प्रदेश में रहना उनका लक्ष्य न था। उनमें से कैप्टन जान स्मिथ नामक व्यक्ति बड़ा ही जीवटवाला और संकल्प का धनी निकला। आपसी झगड़ों, भुखमरी और इंडियनों (मूल निवासियों) के निरन्तर खतरों के बावजूद उसकी प्रबल इच्छा शक्ति ही उस छोटी-सी बस्ती को उसके प्रारम्भिक

वर्षों में बिखरने से बचाये रही। प्रारम्भिक दिनों में प्रवर्तक कम्पनी ने जो सदैव शीघ्र लाभ के चक्कर में रहती थी, बस्ती में बसने वालों को फसल उगाने की आज्ञा देने या उसके पहले उनके अपने जीवन-निर्वाह के लिए इस बात की मांग की कि वे नौचालन सम्बन्धी वस्तुओं, लट्ठों, जड़ों (कन्द) आदि उन सभी वस्तुओं के निर्यात पर अपने सारे प्रयास केन्द्रित करें जो लन्दन के बाजार में अच्छे दामों पर बेची जा सकती थीं।

कुछ दुर्भाग्यपूर्ण वर्षों के बाद कम्पनी ने अपनी मांगों में कमी की, उपनिवेश के बाशिन्दों में भूमि का वितरण किया और उन्हें अपनी शक्तियों को निजी उद्यमों में लगाने की इजाजत भी दी। १६१२ में एक ऐसी घटना घटी जिसने अंततोगत्वा न सिर्फ वर्जिनिया की बल्कि उस सम्पूर्ण प्रदेश की अर्थ-व्यवस्था में आमूल परिवर्तन कर दिया। वह महत्वपूर्ण घटना थी वर्जिनिया तम्बाकू के पकाने व सुखाने की एक ऐसी नयी विधि की खोज जिससे वह यूरोप के लोगों की रुचि के अनुकूल हो सकी। ऐसी तम्बाकू का पहला जहाज १६१४ में लन्दन पहुँचा और दस वर्षों के भीतर हर तरह से यह सिद्ध हो गया कि तम्बाकू का पौधा आय का एक ठोस एवं लाभकारी साधन हो सकेगा।

दक्षिण में खेती का ज़ोर

तम्बाकू की खेती के लिए नयी और उर्वर भूमि की जरूरत थी क्योंकि जिस मिट्टी में उसे तीन-चार बार बोया या काटा जा चुकना था वह इतनी निर्जीव हो जाती थी कि उसमें उगाई गयी तम्बाकू घटिया किस्म की साबित होने लगती थी। इसलिए तम्बाकू की खेती करने वालों के लिए यह आवश्यक हो गया कि उनके पास इतना विस्तृत भू-खण्ड हो कि वे मौका पड़ने पर नये खेत बना सकें। और चूंकि उपज की ढुलाई और परिवहन की सुविधा की समस्या भी महत्वपूर्ण थी इसलिए वे लोग उस क्षेत्र के अनगिनत जलमार्गों के दोनों ओर फैले। इस क्षेत्र में अब तक नगर नहीं बसे थे। स्वयं जेम्सटाउन में ही जो कि राजधानी थी कुछ थोड़े से मकान थे। तम्बाकू की खेती करने वालों को शीघ्र ही दूर-दूर के स्थानों से व्यापार करने का अभ्यास हो गया। लन्दन, ब्रिस्टल और इंग्लैण्ड के अन्य बन्दरगाहों में उनका माल जाने लगा। वही उनके माल के हाट-केन्द्र थे।

वर्जिनिया के अधिकांश आप्रवासी अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने की दृष्टि से आये थे। किन्तु धार्मिक व आर्थिक कारणों से उसके पड़ोस की बस्ती मेरीलैण्ड का विकास हुआ। वहां कैलवर्ट परिवार उस नये प्रदेश में कैथोलिक सम्प्रदाय के लोगों के लिए एक शरणाश्रम की स्थापना में प्रयत्नशील था। वह ऐसी जायदादें कायम करने में भी दिलचस्पी रखता था जिनसे वह मुनाफा कमा सके। इस उद्देश्य की पूर्ति और अंग्रेजों से किसी प्रकार का झगड़ा न होने देने के लिए उन्होंने कैथोलिक व प्रोटेस्टैण्ट दोनों सम्प्रदाय के लोगों को बसने के लिए प्रोत्साहित किया। सामाजिक ढांचे और शासनतन्त्र में कैलवर्टों ने मेरीलैण्ड को पुरानी परम्परा के अनुसार अमीराना ढंग का बनाने का प्रयत्न किया। उनकी आकांक्षा थी कि वह राजाओं की शान-शौकत के साथ उस प्रदेश का शासन करें। किन्तु सीमान्त समाज के लिये स्वतन्त्रता एक स्वाभाविक आवश्यकता होती है भले ही उसका प्राविधिक ढांचा चाहे कैसा ही क्यों न हो। वह सामंतशाही के बन्धनों के साथ मेल नहीं खाती। दूसरे उपनिवेशों की भांति मेरीलैण्ड में भी अधिकारीगण बाशिन्दों में मौजूद इंग्लैण्ड के सर्व-साधारण कानून द्वारा संस्थापित वैयक्तिक स्वतन्त्रता की गारेण्टी और प्रतिनिधि सभाओं के जरिये शासन तन्त्र में हिस्सा लेने के अधिकार की सुदृढ़ भावनाओं को धूमिल न कर सके।

मेरीलैण्ड में एक ऐसी सभ्यता का विकास हुआ जो वर्जिनिया में विकसित होने वाली सभ्यता से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। दोनों बस्तियां कृषि-प्रधान थीं जिनमें तट-प्रदेश में तम्बाकू की खेती करने वाले बड़े-बड़े बागान मालिकों (प्लांटरों) का प्राधान्य था। दोनों के पीछे ऐसे प्रदेश थे जिनमें पूर्ण स्वामित्वों वाले छोटे किसान आते व जमते जा रहे थे। एक फसल होने की पद्धति के अवरोध से दोनों ही पीड़ित थीं और अट्ठारहवीं शताब्दी के मध्य तक दोनों उपनिवेशों की संस्कृति नीग्रो लोगों की गुलामी से आक्रान्त थी। दोनों उपनिवेशों में अमीर बागान मालिकों ने सामाजिक कर्तव्यों को गम्भीरता से ग्रहण किया। वे अपने क्षेत्र में शान्ति बनाये रखने वाले न्यायाधीशों, सैन्य टुकड़ी के कर्नलों और विधान सभा के सदस्यों के रूप में काम करते थे। किन्तु पूर्ण स्वामित्व के किसानों ने सार्वजनिक सभाओं में भी भाग लिया और इस नाते वे राजनीतिक पदों पर आसानी से कब्जा कर सके। उनकी स्वतन्त्रता सम्बन्धी स्पष्ट एवं मुंहफट भावना बड़े बागान मालिकों की अल्पतन्त्र व्यवस्था को निरन्तर चेतावनी देती रहती थी कि वे स्वतन्त्र इन्सान के अधिकारों को हड़पने की जरूरत से ज्यादा कोशिश न करें।

सत्रहवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों से लेकर अट्ठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों तक मेरीलैण्ड और वर्जिनिया में वे गुण उदय हो चुके थे जो गृह-युद्ध तक कायम रहे। गुलाम मजदूरों की सहायता से राजनीतिक शक्ति और भूमि पर अधिकांशतः बड़े बागान मालिकों का ही कब्ज़ा रहा। उन्होंने बड़े-बड़े मकान बनवाए, जीवन के अमीराना तौर-तरीके अपनाए और समुद्र पार के सुसभ्य संसार से सम्पर्क कायम रखा। सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से दूसरी श्रेणी में वे लोग आते थे जो पीछे के इलाकों में छोटे पैमाने की खेती करते थे और जिनकी सम्पन्न और समृद्ध होने की उम्मीदें पीछे या भीतरी इलाके की नयी भूमि पर टिकी हुई थीं। सबसे कम समृद्ध वे किसान थे जो दासों से खेती कराने वाले समर्थ बागान मालिकों से प्रतिद्वन्द्विता करते हुए अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे थे।

न वर्जिनिया में और न मेरीलैण्ड में ही किसी बड़े व्यापारी वर्ग का विकास हुआ क्योंकि बागान मालिक स्वयं ही सीधे लन्दन से व्यापार करते थे।

ये उत्तरी व दक्षिणी कैरोलाइना के प्रदेश ही थे जो चार्ल्सटन जैसे प्रमुख बन्दरगाह होने के कारण दक्षिण में व्यापार के केन्द्र के रूप में विकसित हुए। यहां के बसने वालों ने शीघ्र ही कृषि और व्यापार में समन्वय करना सीख लिया। यहां स्थापित बाजार के कारण यह उपनिवेश सम्पन्न और समृद्धिशाली हो गया। घने जंगलों से भी आमदनी हुई। लम्बी पत्ती वाले चीड़ से रोजिन और टार का उत्पादन होता था। ये वस्तुएं विश्व-व्यापार की दृष्टि से बड़ी महत्वपूर्ण सिद्ध हुईं। वर्जिनिया की भांति यहां के किसान केवल एक फसल ही उगा पाने के लिए विवश न थे। यहां कई फसलें तैयार होती थीं। कैरोलाइना में चावल, नील और नौ-चालन सम्बन्धी दूसरी वस्तुओं का उत्पादन व निर्यात होता था। १७५० तक उत्तरी व दक्षिणी कैरोलाइना में कोई एक लाख से अधिक बाशिन्दे रहने लगे थे।

दक्षिण में भी दूसरे अन्य उपनिवेशों की भांति—वरमाण्ट पर्वतों से लेकर न्यूयार्क में मोहाक नदी पर कटे हुए जंगलों के क्षेत्र तक, नीचे एलेघेनीज के पूर्वी किनारों तक और वर्जिनिया के शेनानडोहा तक—भीतरी इलाकों का जो कि 'सीमान्त' कहलाते थे, विकास विशेष महत्व का द्योतक बन गया। सागर तट पर बसी मूल बस्तियों की तुलना में आशा की अपेक्षाकृत अधिक आजादी की आकांक्षा रखने वाले लोग उन बस्तियों की सीमाओं को लांघ कर भीतर की ओर बढ़ते गये। जिन लोगों को सागर तट पर उर्वरा भूमि नहीं मिल सकी अथवा जिनकी भूमि बेकार और बंजर हो चुकी थी उन्होंने पश्चिम में और आगे बढ़कर पहाड़ी इलाकों में शरण लेना लाभप्रद समझा। शीघ्र ही भीतरी इलाकों में फार्म दिखायी पड़ने लगे। उनके मालिक किफायत से खेती करने के साथ ही अपनी पुरानी बस्ती के जीवन की तुलना में अधिक आध्यात्मिक स्वतन्त्रता का उपभोग करते थे। भीतरी इलाकों की भूमि की ओर साधारण व छोटे किसान ही आकर्षित नहीं हुए। अमरीका के तीसरे राष्ट्रपति टामस जैफर्सन के पिता पीटर जैफर्सन भी जो एक उद्यमी सर्वेक्षक थे, इस पर्वतीय प्रदेश में बसे थे। उन्होंने एक प्याला शराब के बदले यहां की ८०० एकड़ भूमि खरीदी थी।

पर्वतीय तराइयों में जाकर बसने वालों में हालांकि कुछ बड़े-बड़े भू-मालिक भी थे किन्तु पूर्व की बसी हुई बस्तियों को छोड़कर वहां जाने वालों में ज्यादातर लोग छोटे किसान ही थे। वे लोग इंडियनों (मूल निवासियों) के क्षेत्रों के पड़ोस में रहते थे। इनके कोठर ही इनके दुर्ग थे और आत्मरक्षा के लिए इन्हें अपनी तेज निगाह और विश्वसनीय बन्दूकों का ही भरोसा था। आवश्यकता ने उन्हें दबंग और आत्मविश्वासी बना दिया था। उन्होंने वहां की भूमि साफ की, जंगल काटे, झाड़ियों को जलाकर जमीन को खेती के योग्य बनाया और फिर कटे हुए जंगली पेड़ों के ठूंठों के आस-पास गेहूं व मक्का की खेती की। मर्द शिकारी-कमीजें और पैरों में हिरन की खाल के खोल पहिनते थे। स्त्रियां घर के बुने-सिले पेटीकोट पहिनती थीं। उनका भोजन था : सुअर का गोश्त और मक्के का दलिया, भुना हुआ हिरन का गोश्त, जंगली टर्की, तीतर या चकोर और पड़ोस के जल-स्रोतों में मिलने वाली मछलियां। उनके खेल-तमाशे व आमोद-प्रमोद के तरीके भी अनोखे और जबर्दस्त थे—एक ऐसा उत्सव जिसमें एक पूरा बड़ा चौपाया समूचा भूना जाता था, नव दम्पति के गृह-प्रवेश का जश्न, नाच, मदिरापान, निशानेबाजी के दंगल आदि।

शिक्षा की व्यवस्था कैसे हुई

पुराने और नए, पूर्व और पश्चिम, एटलांटिक के तट पर के बसे हुए इलाकों और भीतरी क्षेत्रों की बस्तियों के बीच की खाइयां प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रही थीं। समय-समय पर ये मतभेद बड़ा व नाटकीय रूप ले लेते थे। फिर भी, प्रत्येक क्षेत्र ने दूसरे पर अपना प्रभाव डाला क्योंकि हर तरह से अलग होने के बावजूद हरेक में निहित विभिन्न तत्वों का दूसरे क्षेत्र के विभिन्न तत्वों के साथ निरंतर मेलमिलाप व आदान-प्रदान होता रहता था। अग्रगामी लोग पश्चिम की ओर बढ़ते गये और अपने साथ अपेक्षाकृत पुरानी सभ्यता की बातें भी लेते गए। उन्होंने नए इलाकों में जिस सभ्यता और संस्कृति का विकास किया उसमें वे परम्पराएं भी शामिल थीं जो उनकी संयुक्त विरासत का ही हिस्सा कही जा सकती थीं। पश्चिम जाने वाले अनेक यात्री लौट कर आते और अपने स्वजनों व मित्रों को अपनी रामकहानी सुना कर उनके मन में सनसनी, जोश व उत्सुकता पैदा कर देते। पश्चिमी प्रदेशों के लोगों ने राजनीतिक बहसों में भी अपनी आवाज बुलन्द की जिससे रीति-रिवाजों व परम्पराओं की निश्चलता भंग हो जाती थी। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह था कि एक स्थापित उपनिवेश का कोई भी व्यक्ति आसानी के साथ सीमान्त पर एक नया घर बना सकता था। यह एक ऐसा शक्तिशाली तथ्य था जिसकी वजह से पुरानी बस्तियों के अधिकारी प्रगति और परिवर्तन को रोकने में सफल नहीं हो सके। इस तरह से तटवर्ती बस्तियों पर आधिपत्य जमाने वाले लोग समय-समय पर राजनीतिक नीतियों, भूमि वितरण व्यवस्था और धार्मिक नियमों को जनता की मांग के अनुसार अपेक्षाकृत उदार बनाने के लिए विवश होते रहे। जनता की इस मांग के पीछे सदैव इस बात की धमकी निहित रहती थी कि यदि उसकी मांगें पूरी न हुईं तो वे बड़ी तादाद में उस बस्ती को छोड़कर सीमान्त

की ओर चले जायेंगे। विस्तार पाते हुए देश के शक्तिशाली समाज में सन्तोष के लिए बहुत थोड़ा ही स्थान था। पर्वतीय प्रदेश की ओर आप्रवासियों का जाना सम्पूर्ण अमरीका के भावी इतिहास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था।

औपनिवेशिक युग में स्थापित अमरीकी शिक्षा और संस्कृति की आधारशिलायें भी भविष्य के लिए उतनी ही महत्वपूर्ण थीं। मैसाचुसेट्स का हार्वर्ड कालेज १६३६ में स्थापित किया गया। इसी शताब्दी में वर्जिनिया में कालेज ऑव विलियम एण्ड मेरी स्थापित किया गया और उसके कुछ साल बाद कैनक्टिकट के विधानानुसार येल विश्वविद्यालय स्थापित हुआ। किन्तु अमरीका के शैक्षणिक इतिहास का सब से महत्वपूर्ण अंग उसकी पब्लिक स्कूल पद्धति का विकास है जिसका अधिकांश श्रेय न्यू इंग्लैण्ड को है। वहां के निवासियों ने सार्वजनिक संस्था के रूप में एक साथ मिल कर पूरे समाज के साधनों को स्कूल के निर्माण में लगाया और १६४७ में मैसाचुसेट्स में कानून के द्वारा अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था की गयी। शीघ्र ही रहोड आइलैण्ड को छोड़ कर न्यू इंग्लैण्ड के सभी उपनिवेशों में इस तरह के कानून बनाये गये।

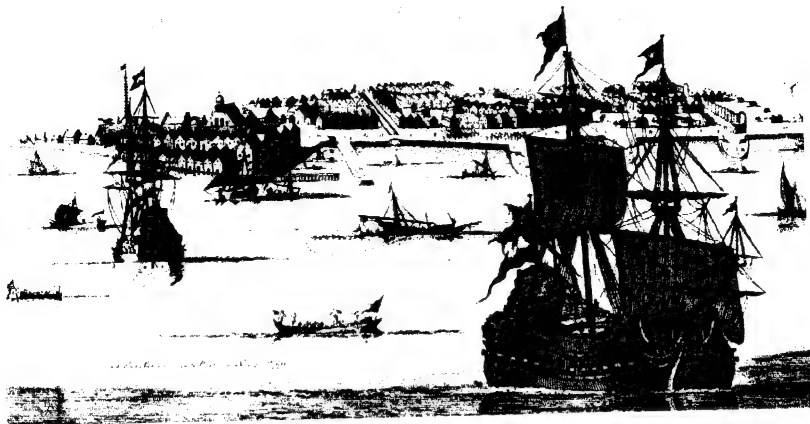
दक्षिण में फार्म और बागानों के दूर-दूर होने के कारण इस तरह के सामुदायिक स्कूल खोलना असम्भव था। बागान मालिक अक्सर अपने निकटतम पड़ोसियों के साथ मिल कर आसपास के सभी बच्चों के पढ़ाने के लिए अध्यापक रख लेते थे। अक्सर पढ़ाने के लिए बालकों को इंग्लैण्ड भेजा जाता था। अपेक्षाकृत घनी आबादियों में कुछ पड़ोसी स्कूलों द्वारा शिक्षा की व्यवस्था की जाती थी। लेकिन आमतौर से अध्यापकों की नियुक्ति आदि का खर्च व दायित्व बागान मालिकों को ही वहन करना पड़ता था।

मध्यवर्ती उपनिवेशों में विविध प्रकार की शिक्षण पद्धतियां प्रचलित थीं। भौतिक उन्नति के लिए अत्यधिक व्यस्त रहने वाले न्यूयार्क के लोगों को सांस्कृतिक मामलों की ओर ध्यान देने की फुरसत न थी। इसीलिए वे लोग शिक्षण व्यवस्था के क्षेत्र में न्यू इंग्लैण्ड और दूसरे मध्यवर्तीय उपनिवेशों से बहुत पीछे थे। स्कूलों की दशा खराब थी और सम्पन्न नागरिक अपने बच्चों को घर पढ़ाने के लिए अध्यापकों की नियुक्ति करते थे। अधिकतर बालकों को सार्वजनिक शिक्षा की सुविधाएं उपलब्ध न थीं। इंग्लैण्ड की शाही सरकार की ओर से इस दिशा में कुछ छुट-पुट प्रयत्न किये गये। लेकिन उनसे वहां की शिक्षा व्यवस्था में कोई विशेष तरक्की नहीं हुई। प्रिन्सटन स्थित न्यूजर्सी कालेज, किंग्स कालेज (जो कोलम्बिया विश्वविद्यालय कहलाता है) और क्वीन्स कालेज (रट्जर्स) १८ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ही स्थापित हुए हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक उद्यमी उपनिवेशों में पेन्सिलवानिया का नाम पहले आता है। वहां १६८३ में खुलने वाले सर्वप्रथम स्कूल में पढ़ाई, लिखाई और हिसाब-किताब की शिक्षा दी जाती थी। इसके बाद प्रत्येक क्वेकर समाज ने अपने बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा के लिए किसी न किसी तरह की व्यवस्था की। प्राचीन भाषाओं, इतिहास और साहित्य के उच्च अध्ययन की व्यवस्था फ्रेन्डस पब्लिक स्कूल में थी। यह स्कूल अब भी फिलाडेल्फिया में विलियम पेन चार्टर स्कूल के नाम से मौजूद है। गरीबों को इस स्कूल में मुफ्त शिक्षा दी जाती थी किन्तु जिन विद्यार्थियों के अभिभावक शुल्क आदि दे सकते थे उनके लिए अपने बच्चों की पढ़ाई का शुल्क देना आवश्यक था। फिलाडेल्फिया में अनेक स्कूल ऐसे थे जो किसी धर्म विशेष से सम्बद्ध नहीं थे। वहां भाषाओं गणित और प्राकृतिक विज्ञान की शिक्षा दी जाती थी। वयस्कों के लिए रात्रि-पाठशालाएं थीं। स्त्री-शिक्षा भी पूरी तरह उपेक्षित नहीं थी क्योंकि फिलाडेल्फिया के सम्पन्न निवासियों की पुत्रियां निजी अध्यापकों से फ्रांसीसी भाषा, संगीत, नृत्य, चित्रकारी व्याकरण और कभी-कभी बहीखाते का काम तक सीखती थीं।

पेन्सिलवानिया के उन्नत बौद्धिक व सांस्कृतिक विकास में मुख्यत: दो महान व्यक्तियों के जबर्दस्त व्यक्तित्व परिलक्षित होते हैं। इनमें एक थे उपनिवेश के मन्त्री जेम्स लोगन जिनके सम्पन्न पुस्तकालय में युवक बेंजामिन फ्रैंकलिन ने नवीनतम वैज्ञानिक ग्रन्थों का अध्ययन किया था। लोगन ने १७४५ में एक संग्रहालय भवन का निर्माण कराया और उसे तथा अपने पुस्तकालय को सार्वजनिक उपयोग के लिए नगर व्यवस्था को सौंप दिया। इसमें भी सन्देह नहीं कि फ्रैंकलिन ने स्वयं भी फिलाडेल्फिया की बौद्धिक गतिविधियों में प्रेरक योगदान किया। उनका योगदान किसी भी अकेले नागरिक के योगदान से कम नहीं कहा जा सकता। उन्हीं की वजह से ऐसी संस्थाएं स्थापित हो सकीं जो न सिर्फ फिलाडेल्फिया बल्कि सभी उपनिवेशों की सांस्कृतिक प्रगति में स्थायी योगदान कर सकीं। उदाहरणार्थ, उन्होंने 'जुण्टो' नाम का एक क्लब बनाया। वही आगे चलकर 'अमेरिकन फिलॉसाफ़िकल सोसाइटी' का जन्मदाता माना गया। उनके प्रयत्नों से ही एक सार्वजनिक अकादेमी की स्थापना हुई जो बाद में पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुई। उन्होंने चन्दे से चलने वाली एक लाइब्रेरी की स्थापना की जिसे वे 'उत्तरी अमरीका में पुस्तकालयों की जननी' कहते थे।

ज्ञानोपार्जन की आकांक्षा भलीभांति स्थापित बस्तियों तक ही सीमित न थी। सीमान्त प्रदेश के स्काटो-आयरी लोग हालांकि प्राचीन ढंग के काठ के कोठरों में रहते थे, फिर भी उन्होंने अज्ञानांधकार में रहना पसन्द नहीं किया। वे हृदय से ज्ञानोपासना के कायल थे। उन्होंने विद्वान पादरियों को अपनी बस्तियों में लाने के प्रयत्न किये। वे इस बात में यकीन करते थे कि उनके जैसे साधारण व आम लोगों को भी दूसरों की



१८वीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल में न्यूयार्क का बन्दरगाह। प्राकृतिक सुविधाओं से सम्पन्न इस उत्तम कोटि के बन्दरगाह को बदोलत इस बस्ती को नए संसार के व्यापारिक केन्द्रों में प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ।



न्यू ऐम्सटर्डम में डच उपनिवेशी अपने साथ विलासपूर्ण जीवन के तौर-तरीके भी लाए जिन पर प्यूरिटन न्यू इंग्लैण्ड के अपेक्षाकृत आत्मसंयमी बाशिन्दे नाक-भौं सिकोड़ते थे।

भांति अपनी समस्त बौद्धिक शक्तियों व क्षमताओं का विकास करना चाहिए।

प्रेस द्वारा अपनी स्वाधीनता पर बल

दक्षिण में, बागान मालिक सभ्य संसार से अपना सम्पर्क बनाए रखने के लिए अधिकतर पुस्तकों पर निर्भर रहते थे। इतिहास, ग्रीक और लैटिन के गौरवग्रंथ, विज्ञान और कानून आदि सभी विषयों की पुस्तकें इंग्लैण्ड से मंगाई जाती थीं और बागान-मालिकों द्वारा उनका आपस में विनिमय होता था। दक्षिणी कैरोलाइना में चार्ल्सटन नामक नगर में १७०० ई० में एक प्रान्तीय पुस्तकालय की स्थापना हुई। वहां संगीत, नाट्यकला और चित्रकला को भी प्रोत्साहन मिला। एक अरसे तक चार्ल्सटन के प्रति अभिनेताओं की विशेष अनुरक्ति रही क्योंकि वहां उन्हें दूसरे उपनिवेशों की तुलना में अधिक स्नेहपूर्ण स्वागत मिलने का विश्वास रहता था।

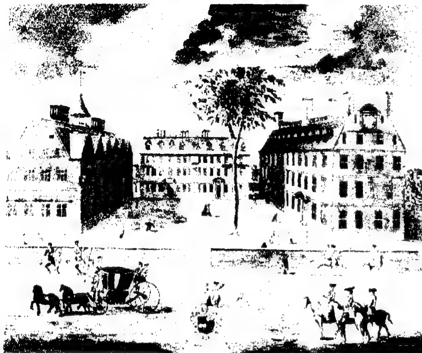
न्यू इंग्लैण्ड के प्रथम आवासी अपने साथ अपने छोटे पुस्तकालय भी लाये। वे लन्दन से भी पुस्तकें मंगाते रहे। प्यूरिटन लोगों में धार्मिक साहित्य के प्रति परम्परा से ही एक जबर्दस्त चाव था। उनका पठन-पाठन केवल उसी विषय तक सीमित न रहा। १६८० के दशक तक बास्टन के पुस्तक विक्रेता शास्त्रीय साहित्य, इतिहास, राजनीति, दर्शन, विज्ञान, धर्मोपदेश (सर्मन्स) धर्मशास्त्र और उदात्त साहित्य की जोरदार बिक्री करने लगे थे।

कैम्ब्रिज (मैसाचुसेट्स) में प्रारम्भ में ही एक छापाखाना खुल गया था। १७०४ में बास्टन से पहले सफल समाचार-पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसके उपरान्त न केवल न्यू इंग्लैण्ड में बल्कि दूसरे क्षेत्रों में भी इस दिशा में कदम बढ़ाया गया। उदाहरणार्थ, न्यू यार्क में एक ऐसी घटना घटी जो अमरीकी प्रेस के इतिहास की महानतम घटनाओं में से एक है। वहां पीटर जेंगर नामक व्यक्ति ने १७३३ में 'न्यू यार्क वीकली जर्नल' नामक एक अखबार निकाला। यह पत्र वहां की सरकार के विरोधी दल का मुखपत्र था। दो वर्षों तक यह पत्र प्रकाशित होता रहा। इस बीच इसने सरकार की खरी आलोचना की। वहां का औपनिवेशिक गवर्नर उसके तीक्षण व्यंग्य-प्रहारों का सहन न कर सका और उसने जेंगर को मानहानि के अभियोग में जेल में बन्दी करा दिया। नौ महीने तक मुकदमा चलता रहा और इस बीच जेंगर जेल में पत्र का सम्पादन करता रहा। फलस्वरूप, उपनिवेशों में सभी जगह उसके मुकदमे के प्रति एक गहरी दिलचस्पी और उत्तेजना सी फैल गयी। एंड्रू हैमिल्टन जैसा सुप्रसिद्ध वकील उसकी पैरवी कर रहा था। उसने दलील दी कि पत्र में जो भी आरोप प्रकाशित किए गए थे वे सभी सत्य थे इसलिए सच्चे अर्थों में उसे मानहानि का मामला कहा ही नहीं जा सकता। जूरियों ने अपना निर्णय उसके हक में दिया और जेंगर को निरपराध घोषित करते हुए आजाद कर दिया गया। इस घटना के बड़े ही दूरगामी परिणाम हुए, जिनसे न सिर्फ औपनिवेशिक अमरीका वरन अमरीका का भावी स्वरूप भी प्रभावित हुआ। इस मुकदमे का फैसला, इस देश में प्रेस की स्वाधीनता के सिद्धान्त की स्थापना के लिए पथ-प्रदर्शक चिन्ह बन गया।

उपनिवेशों में साहित्य प्रकाशन का कार्य बहुत हद तक न्यू इंग्लैण्ड में ही सीमित रहा। यहां मुख्यतः धार्मिक विषयों पर ही ध्यान केन्द्रित रहा। प्रेसों से छप कर निकलने वाली अनगिनत कृतियों में अधिकांशतः धर्मोपदेश की पुस्तक-पुस्तिकाएं ही होती थीं। पादरी रेवरेन्ड काटन मेथर, जो 'हेल एन्ड ब्रिमस्टोन मिनस्टर' के नाम से प्रसिद्ध थे, ने अकेले ही लगभग ४०० ग्रंथों की रचना की। उनका सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ 'मैग्नालिया क्रिस्टी अमेरिकाना' इतनी वृहत् रचना थी कि उसे लन्दन में छपाना पड़ा। इस ग्रंथ में न्यू इंग्लैण्ड के भव्य इतिहास को उसी रूप में प्रस्तुत किया गया जिस रूप में उसके सफल विद्याभिमानी लेखक ने अपनी रुचियों के अनुसार देखा और समझा था। इस जमाने की सर्वाधिक लोकप्रिय अकेली कृति थी—रिवरेण्ड माइकेल विग्लिस्वर्थ की 'द डे आव डूम' शीर्षक लम्बी कविता। इस कविता में कयामत के दिन 'अन्तिम फैसले' का दिल दहला देने वाला तथा दर्दनाक वर्णन किया गया है। हर किसी ने इस भयकारी खण्डकाव्य को पढ़ा और इसकी एक प्रति को खरीद कर अपने पास रखा।

विदेशी शासन का अन्त

औपनिवेशिक विकास के सभी पहलुओं में, एक विलक्षण पहलू अंग्रेजी सरकार के नियन्त्रणकारी प्रभाव का अभाव था। अपने निर्माण काल में सभी उपनिवेश अपनी प्रवृत्तियों और परिस्थितियों के अनुसार विकास करने के लिए बहुत हद तक स्वतन्त्र रहे। जार्जिया को छोड़ कर, प्रायः किसी भी बस्ती को बसाने में अंग्रेजी सरकार ने कोई प्रत्यक्ष भाग नहीं लिया था। इनके राजनीतिक रुख को प्रभावित करने के लिए यदि उसने कोई कार्रवाई की तो वह भी बहुत धीरे-धीरे। इंग्लैण्ड के सम्राट ने नयी दुनिया की बस्तियों के स्थानीय शासनाधिकार कम्पनियों और मालिकों को सौंप दिये थे। किन्तु इसका तात्पर्य यह न था कि अमरीका में उपनिवेश बसाने का काम करने वाली ये कम्पनियां और मालिक बाह्य नियन्त्रण से पूर्णतः या अंशतः स्वतन्त्र थे। उदाहरणार्थ वर्जीनिया और मैसाचुसेट्स के



हार्वर्ड, अमरीका का प्रथम कालेज। इसकी स्थापना १६३६ में मैसाचुसेट्स में हुई। यह आज भी राष्ट्र की सर्वोत्तम विद्यापीठों में से एक है।

चार्टरों में दी गयी शर्तों के अनुसार शासन की सम्पूर्ण सत्ता सम्बद्ध कम्पनियों को दे दी गयी थी और यह अपेक्षित समझा गया था कि ये कम्पनियां इंग्लैण्ड में रह कर ही अपना कार्य-व्यापार करेंगी। ऐसी दशा में, अमरीका के निवासियों की अपनी सरकार में कोई आवाज न रही।

फिर भी, एक न एक तरह से बाहरी एकाधिकारी शासन क्षीण होता गया। इस दिशा में पहला कदम लन्दन (वर्जिनिया) कम्पनी ने उठाया। उसने वर्जिनिया के औपनिवेशकों को शासन में प्रतिनिधित्व प्रदान करने का निर्णय किया। कम्पनी की ओर से १६१९ में अपने तत्कालीन गवर्नर को इस आशय का निर्देश दिया गया कि बड़े-बड़े फार्मों और बागानों के स्वतन्त्र निवासी अपने प्रतिनिधि चुनेंगे और वे प्रतिनिधि बस्ती के कल्याण व उसकी तरक्की के लिए आर्डिनेन्स बनाने व लागू करने में गवर्नर व नामजद 'परिषद' की सहायता करेंगे।

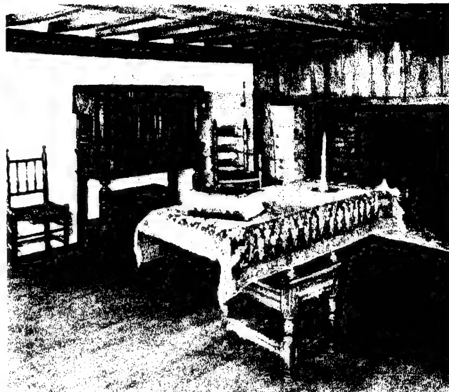
इस घटना का प्रभाव औपनिवेशिक काल की सभी घटनाओं की तुलना में सर्वाधिक दूरगामी सिद्ध हुआ। इसके बाद आमतौर पर यह माना जाने लगा कि उपनिवेश निवासियों को यह अधिकार है कि वे अपनी सरकार में भाग लें। बाद के ज्यादातर अनुदानों में इंग्लैण्ड के सम्राट ने चार्टरों में यह व्यवस्था दी कि बस्ती के सभी सम्बद्ध स्वतन्त्र निवासियों को उन्हें प्रभावित करने वाले विधायन में आवाज होनी चाहिए। इस प्रकार मेरीलैण्ड के सेसिल कालवर्ट, पेन्सिलवानिया के विलियम पेन, दोनों कैरोलाइनाओं तथा न्यूजर्सी के मालिकों को दिये गये चार्टरों में इस बात की स्पष्ट व्यवस्था थी कि उन बस्तियों के विधान 'स्वतन्त्र निवासियों की सहमति' से बनाये जाएं। केवल दो उपनिवेशों में स्व-शासन-व्यवस्था की उपेक्षा की गयी। एक था न्यूयार्क, जो चार्ल्स द्वितीय के भाई ड्यूक आँव यार्क जो बाद में इंग्लैण्ड के सम्राट जेम्स द्वितीय कहलाए, को दिया गया था और दूसरा था जार्जिया जो एक न्यासी समूह को प्रदान किया गया था। फिर भी, इन दोनों मामलों में यह अपवाद अधिक समय तक कायम न रहा, क्योंकि इन उपनिवेशों में विधि-निर्माण में प्रतिनिधित्व की मांग इतना बल पकड़ती गयी कि अधिकारियों ने उसके समक्ष झुक जाना ही कालोचित समझा।

प्रारम्भ में, सरकार की विधि-निर्मात्री शाखा में उपनिवेशवासियों के प्रतिनिधित्व का अधिकार सीमित महत्व का था। तो भी, अन्ततः उसी के आधार पर बस्तियों के निवासियों को प्रशासन में लगभग पूर्ण सत्ता प्राप्त हुई। यह स्थिति निर्वाचित असेम्बलियों द्वारा प्राप्त हुई जिन्होंने पहले वित्तीय मामलों का नियन्त्रण हस्तगत किया और फिर उसका अधिकतम उपयोग किया। एक के बाद दूसरे

उपनिवेश में यह सिद्धान्त अपनाया गया कि निर्वाचित प्रतिनिधियों की सहमति के बिना न तो कर लगाए जायेंगे और न एकत्रित व संचित राजस्व निधि खर्चा जायेगी। यहां तक कि इस सिद्धान्त में गवर्नर और दूसरे नियुक्त अफसरों के वेतन में होने वाले खर्च के लिए भी निर्वाचित प्रतिनिधियों की स्वीकृति आवश्यक मानी गयी। यदि गवर्नर और उपनिवेश के दूसरे नियुक्त अधिकारी निर्वाचित प्रतिनिधि सभा की मर्जी के अनुसार काम नहीं करते थे, प्रतिनिधि सभा धन व्यय करने की अनुमति नहीं देती थी—चाहे वह कोई और आवश्यक कार्य ही क्यों न हो। फलतः ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं कि कुछ स्वच्छन्द दिमाग के गवर्नरों के वेतन के लिए या तो प्रतिनिधि-सभा ने कतई इन्कार कर दिया है या वेतन के रूप में एक पैनी की स्वीकृति दी है। इस धमकी के कारण गवर्नर और दूसरे नियुक्त अधिकारी शीघ्र ही उपनिवेशवासियों की इच्छा के सामने झुकते चले गये।

न्यू इंग्लैण्ड में बहुत वर्षों तक दूसरे उपनिवेशों की अपेक्षा अधिक पूर्ण स्वशासन रहा। यदि धर्मयात्री (पिलग्रिम्स) लोग वर्जिनिया में ही बसे होते तो वे लन्दन (वर्जिनिया) कम्पनी की सत्ता के अधीन होते। किन्तु वे न्यू प्लाइमाउथ की अपनी निजी बस्ती में थे इसलिए वे किसी भी सरकारी अधिकार क्षेत्र के बाहर थे। फलतः उन्होंने अपना अलग राजनीतिक संगठन कायम करने का निर्णय किया। मेफ्लावर नामक जहाज पर ही उन्होंने शासन सम्बन्धी प्रपत्र तैयार किया था। उसका नाम था—'मेफ्लावर काम्पैक्ट'। इस प्रपत्र के अनुसार उन्होंने स्वीकार किया था कि "हम अपनी सुव्यवस्था और सुरक्षा के लिए एक नागरिक संस्था के रूप में संगठित होते हैं...और इस नाते ऐसे न्याय-संगत और समदर्शी विधानों, अध्यादेशों, अधिनियमों, संविधानों और पदों की रचना करते तथा उन्हें लागू करते हैं जो उपनिवेश के सार्वजनिक हित में सर्वाधिक संगत और सुविधाजनक सोचे जायेंगे।" हालांकि इन यात्रियों के पास इस प्रकार के अपने निजी स्वशासन-तन्त्र की स्थापना के लिए कोई वैधानिक आधार नहीं था फिर भी इसकी वैधता को किसीने चुनौती नहीं दी और संविदा के अनुसार प्लाइमाउथ के निवासी अनेक वर्षों तक बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप या निर्देश के अपने निजी मामलों की व्यवस्था स्वयं ही करते रहे।

ऐसी ही स्थिति मैसाचुसेट्स में भी विकसित हुई। यहां के शासन के अधिकार 'मैसाचुसेट्स बे कम्पनी' को सौंपे गये थे। कम्पनी अपना सारा कारोबार लेकर चार्टर सहित अमरीका चली गयी इस तरह पूर्ण सत्ता बस्ती में रहने



न्यूयार्क के केन्द्रीय कला-संग्रहालय में सुरक्षित औपनिवेशिक काल के रसोईघर का प्रामाणिक नमूना। प्रतिवर्ष यहां हजारों दर्शक आते हैं और सुदूर अतीत की जीवन-पद्धति की झांकी देख जाते हैं।



प्यूरिटन न्यू इंग्लैण्ड में कुछ गैर-जिम्मेवार उपनिवेशवासी गाते-नाचते हुए अपने पड़ोसियों को चिढ़ाने और उनका उपहास करने में मज़ा लेते थे। चित्र में एक धर्मनिष्ठ वयोवृद्ध उनलोगों से धर्म का मार्ग अपनाने का अनुरोध करता हुआ दिखाया गया है।

वाले कुछ व्यक्तियों के हाथ में थी। शुरू में अमरीका आने वाले कम्पनी के कोई एक दर्जन संस्थापक सदस्यों ने स्वेच्छाचारी शासन करने का यत्न किया। लेकिन शीघ्र ही उपनिवेश के दूसरे निवासियों ने सार्वजनिक मामलों में हिस्सा लेने के अधिकार की मांग की। उन्होंने इस बात का स्पष्ट संकेत भी दिया कि यदि उनकी यह मांग स्वीकार न की गयी तो वे सामूहिक रूप से इस उपनिवेश को छोड़ कर किसी दूसरे क्षेत्र में जा बसेंगे। कम्पनी के सदस्यों को इस धमकी के सामने झुकना पड़ा और शासनिक नियन्त्रण निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथ में आ गया। न्यू इंग्लैण्ड के पड़ोस की बस्तियों—न्यू हेवेन, र्‌होड आइलैण्ड और कॅनेक्टिकट—के लोग भी अपने-अपने यहां स्वशासन की स्थापना में सफल हुए। उन्होंने इसके लिए इस दलील का सहारा लिया कि वे वैधानिक रूप से किसी भी सरकारी तन्त्र के अधिकार-क्षेत्र में नहीं आते। उन्होंने अपने-अपने यहां न्यू प्लाइमाउथ के धर्म यात्रियों के नव स्थापित स्वशासन को आदर्श मानकर उसी पैमाने पर अपने निजी शासन-तन्त्र स्थापित किये।

उपनिवेश जिस बड़े पैमाने पर स्वशासन का उपभोग कर रहे थे उसका ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा समय-समय पर विरोध भी किया गया। मैसाचुसेट्स चार्टर के विरुद्ध अदालती कार्रवाई की गयी जो १६८४ में रद्द कर दी गयी। इसके बाद न्यू इंग्लैण्ड की सभी बस्तियां शाही नियन्त्रण के अधीन करके उनके शासन की पूर्ण सत्ता एक नियुक्त गवर्नर के हाथों में दे दी गयी। उपनिवेश निवासियों ने घटनाचक्र के इस मोड़ का दृढ़ता से विरोध किया और इंग्लैण्ड में होने वाली १६८८ की क्रान्ति, जिसमें जेम्स द्वितीय को पदच्युत कर दिया गया था, के बाद शाही गवर्नर को भगा दिया। र्‌होड आइलैण्ड और कॅनेक्टिकट, जिनमें अब न्यू हेवेन की बस्ती भी शामिल थी, पुनः स्थायी तौर से अपनी वस्तुतः स्वतन्त्र स्थिति कायम करने में सफल हो सके। लेकिन, मैसाचुसेट्स, शीघ्र ही पुनः शाही अधिकार में ले लिया गया लेकिन इस बार शासन में जनता को भी एक 'हिस्सा' दिया गया। दूसरे उपनिवेशों की भांति यहां भी जनता का 'हिस्सा' समय के साथ बढ़ता गया। यहां तक कि वह स्थिति आ गयी जब शासन में जनता के प्रतिनिधियों का प्राधान्य हो गया और अन्य स्थानों की भांति यहां भी वित्तीय नियन्त्रण का परिणामकारी उपयोग किया गया। तब भी गवर्नरों को ऐसे निर्देश निरन्तर आते रहते थे कि वे उन्हीं नीतियों पर बल दें जो अंग्रेजों के व्यापक हितों के अनुकूल हों। साथ ही, इंग्लैण्ड की प्रीवी कौन्सिल को उपनिवेशों में बनने वाले सभी कानूनों की समीक्षा करने का अधिकार भी प्राप्त था। किन्तु उपनिवेशों के निवासी इन प्रतिबन्धों से जब कभी ये उनके बुनियादी हितों को प्रभावित करते थे, बचकर निकल जाने में प्रवीण थे। इसी तरह से, उपनिवेश वासियों के लिए आमतौर से यह सम्भव हो गया था कि जब कभी भी अंग्रेज उनके वैदेशिक सम्बन्धों को विशेषतः व्यापारिक सम्बन्धों को, विधि द्वारा मर्यादित करने का प्रयास करें, तो वे उन प्रयत्नों को, यदि वे उनके हित में नहीं हैं तो, प्रत्येक सम्भव तरीके से व्यर्थ कर दें। १६५१ और उसके बाद अंग्रेजी सरकार ने उपनिवेशों के व्यापारिक और आर्थिक जीवन के नियमित करने के उद्देश्य से समय-समय पर अनेक कानून बनाये। इनमें से कुछ अमरीका के लिए हितकारी थे लेकिन ज्यादातर ऐसे थे जो अमरीका की लागत पर इंग्लैण्ड को लाभ पहुँचाने वाले थे। जो बहुत ही हानिकारक कानून थे उनकी उपनिवेशवासी आम तौर पर उपेक्षा कर जाते थे। अंग्रेज कभी-कभी उद्विग्न भी हो उठते थे और उन कानूनों को पूरी तरह लागू करने का यत्न भी करते थे किन्तु ये प्रयत्न लगभग निश्चित रूप से हर बार अल्पावधि तक ही जारी रहते थे और अधिकारी शीघ्र ही 'आंख लपेट जाने" की नीति अपनाने लगते थे।

उपनिवेश एक बड़े पैमाने पर राजनीतिक स्वतन्त्रता का उपभोग कर रहे थे। परिणामस्वरूप वे उत्तरोत्तर ब्रिटेन से दूर होते जा रहे थे। उनमें 'अंग्रेज' होने के बजाय 'अमरीकी होने' की भावना निरन्तर बलवती होती जा रही थी। यह प्रवृत्ति दूसरी राष्ट्रीयता और संस्कृतियों के समूहों के उत्तरोत्तर होने वाले मिलन व मिश्रण से और भी मजबूत होती गयी। इस प्रक्रिया और इसके द्वारा किस प्रकार एक नए राष्ट्र की नींव पड़ी इसका विस्तृत और सजीव वर्णन जे० हेक्टर सेन्ट जान क्रेवकुअर नामक एक चतुर फ्रांसीसी खेतिहर ने इस प्रकार किया है——"तब फिर यह इन्सान, 'अमरीकी कौन है?" यह प्रश्न वह अपनी पुस्तक "लेटर्स फ्राम एन अमेरिकन फार्मर" में पूछता है।" वह या तो यूरोपीय है या यूरोपीय लोगों की सन्तान है, अतः रक्त का एक विचित्र मिश्रण, जो आपको किसी देश के वासियों में नहीं मिलेगा मैं आपको एक ऐसा परिवार बता सकता हूं जिसका पितामह एक अंग्रेज था, उसकी पत्नी डच थी और उसके पुत्र ने एक फ्रांसीसी महिला से विवाह किया और उन दोनों के चार पुत्रों की पत्नियां चार विभिन्न राष्ट्रों की हैं। तो, वही अमरीकी है जो अपने पुराने पूर्वाग्रहों और तौर-तरीकों को पीछे छोड़कर नयों को अपनाता है, उस नयी जीवन-पद्धति से जो उसने अपनायी है, नयी सरकार से जिसके प्रति वह वफादार है, उस नये पद से जिस पर वह आसीन है...।"

अध्याय २

स्वतन्त्रता की प्राप्ति

"हम इन सत्यों को स्वयं सिद्ध मानते हैं कि सभी जन जन्मतः एक समान हैं, सबको उनके सिरजनहार ने कुछ ऐसे अधिकार प्रदान किए हैं जिन्हें छीना नहीं जा सकता और इन अधिकारों में जीवन, स्वतन्त्रता और अपनी खुशहाली के लिए प्रयत्नशील रहने के अधिकार भी शामिल हैं।"

स्वतन्त्रता की घोषणा, ४ जुलाई १७७६

संयुक्त राज्य अमरीका के द्वितीय राष्ट्रपति जान ऐडम्स उस परिपक्व वृद्धावस्था तक जीवित रहे जिसमें व्यक्ति अपनी युवावस्था की गतिविधियों को दार्शनिक दृष्टि से आंकने में उल्लास का अनुभव करता है। अपने अन्तिम वर्षों में उन्होंने एक पत्र लिखा था जो अतीत की स्मृति दिलाता है। उस पत्र में उन्होंने घोषित किया था कि "अमरीकी क्रान्ति का सूत्रपात १६२० में हुआ था।" उन्होंने उसमें इस बात पर बल दिया था कि "युद्ध प्रारम्भ होने के पहले ही क्रान्ति शुरू हो चुकी थी। जनता के मन और मस्तिष्क में क्रान्ति जड़ पकड़ चुकी थी।" उन्होंने आगे कहा कि जिन सिद्धान्तों और भावनाओं ने अमरीकी जनता को विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया था उन्हें दो सौ वर्ष पहले का मानना चाहिए। देश के इतिहास में उनकी खोज उस समय से करनी चाहिए जब वहां पहला बाग या फार्म तैयार किया गया था।

फिर भी, व्यावहारिक रूप में, इंग्लैण्ड और अमरीका की राहें १७६३ से अलग-अलग होना शुरू हो गयी थीं। उस समय तक जेम्स टाउन (वर्जीनिया) की पहली बस्ती को स्थापित हुए कोई डेढ़ सौ वर्ष से ऊपर हो चुके थे। इस बीच अनेक बस्तियां आर्थिक शक्ति और सांस्कृतिक उपलब्धियों की दृष्टि से अत्यधिक विकास कर चुकी थीं। लगभग सभी बस्तियों में एक लम्बे अरसे से स्वशासन की व्यवस्था चली आ रही थी। उनकी सम्मिलित जनसंख्या १५,००,००० तक पहुँच चुकी थी अर्थात् सन् १७०० के वर्ष की तुलना में आबादी में २,५०,००० व्यक्तियों की वृद्धि हो चुकी थी।

उपनिवेशों के भौतिक विकास के अभिप्रेत अर्थ जनसंख्या की वृद्धि से प्रकट होने वाले आशय से कहीं अधिक थे। अट्ठारहवीं शताब्दी में औपनिवेशिक विस्तार तक एक नया दौर शुरू हुआ। इस काल में यूरोप से बेशुमार आप्रवासी आये और चूंकि सागर तट के आस-पास की सर्वोत्तम भूमि पहले से ही घिर चुकी थी इसलिए देर से आनेवाले इन लोगों को भीतरी क्षेत्रों की ओर जाना पड़ा। व्यापारियों ने पीछे के क्षेत्रों की खोजपूर्ण यात्राएं कीं और वहां की सम्पन्न-समृद्ध घाटियों की कथाएँ सुनायीं। इन कथाओं ने साहसी किसानों को अच्छी व सस्ती भूमि की खोज में निकल पड़ने तथा सुदूर भीतर जाकर वहां के जंगलों को साफ करके बीहड़-बियाबान में अपने परिवारों सहित रहने के लिए प्रेरित किया। उनकी कठिनाइयों व दिक्कतों का पारावार न था किन्तु कामयाबी के पुरस्कार भी कुछ कम न थे। अतः बसने वाले निरन्तर आते गये जब तक कि भीतरी क्षेत्रों की घाटियां इन स्वावलम्बी अग्रदूतों से भर न गईं। शताब्दी की तीसरे दशक तक पेन्सिलवानिया के सीमाक्षेत्र पर शेननडोहा घाटी तक सीमान्ती लोगों व उनके परिवारों का आना शुरू हो चुका था। यहीं से आप्रवासी व उनके परिवार दूसरे जल मार्गों द्वारा उन सुदूर क्षेत्रों में फैलते गये, जिनको 'पश्चिम' कहते हैं।

१७६३ तक ग्रेट ब्रिटेन ने अपनी औपनिवेशिक मिल्कियतों के लिए कोई सुसम्बद्ध साम्राज्य-नीति नहीं बनायी थी। निदेशक सिद्धान्त केवल व्यापारिक दृष्टिकोण का ही था अर्थात् उपनिवेश अपने मातृ-देश इंग्लैण्ड को कच्चा माल भेजते रहें और माल तैयार करने के मामले में उसके प्रतिद्वन्द्वी न बनें। किन्तु इसे भी लचर ढंग से लागू किया गया और बस्तियों ने कभी भी यह सोचा तक नहीं कि वे अंग्रेजी साम्राज्य की एक सुगठित इकाई के अविभाज्य अंग हैं। इसके विपरीत वे सदा अपने आपको ऐसा 'कामनवेल्थ' व 'राज्य' समझते रहे जो बहुत कुछ इंग्लैण्ड के समान ही हो और जिसका लन्दन के सत्ताधारियों के साथ एक हलका-सा नाता हो। समय-समय पर इंग्लैण्ड में यह भावना उद्वेलित भी हुई और वहां की संसद तथा राजसत्ता की ओर से इस बात के प्रयास भी किये गये कि उपनिवेशों की आर्थिक गतिविधियों व सरकार को इंग्लैण्ड की मर्जी और उसके हित के अधीन व अनुकूल बनाया जाय, किन्तु उपनिवेशों का बहुमत इस

प्रकार की अधीनता के विरुद्ध था। नयी दुनिया और मातृ-देश के बीच तीन हजार मील चौड़ा समुद्र होने के कारण उपनिवेशों को यह आशंका भी कभी बल न पा सकी कि यदि वे इंग्लैण्ड की आज्ञा का उल्लंघन करेंगे तो वह उनसे किसी प्रभावशालीरूप में बदला भी ले सकता है।

इस दूरी के साथ ही अमरीको वनप्रदेश के जीवन की परिस्थितियां भी एक खास महत्व रखती थी। घनी आबादी और खेतों के उन देशों से, जहां स्थान की किल्लत थी, आने वाले आप्रवासियों को यहां बड़ी-बड़ी नदियों व घने जंगलों से सम्पन्न असीम भू-विस्तार प्राप्त हुआ। वे लोग शहरों और गावों में पले थे और यहां आकर उन्हें प्राकृतिक स्थितियों के अनुसार समाज-प्रधान जीवन के बजाय व्यक्ति-प्रधान जीवन अपनाना पड़ा।

सीमान्त द्वारा स्वावलम्बन को बढ़ावा

नयी परिस्थितियों और नये वातावरण की हर वस्तु ने आप्रवासियों को ऐसा बना दिया कि वे ब्रिटिश शक्ति को ही नहीं ब्रिटिश सरकार की आवश्यकता को भी भूल गये। राजनीतिक संगठन का आधार इंग्लैण्ड जैसा ही रहा किन्तु अत्यधिक जटिल अंग्रेजी समाज व्यवस्था बनाए रखने के लिए जो हजारों कानून आवश्यक थे वे यहां के बिखरे हुए समाज के लिए असंगत और अनुपयोगी सिद्ध हुए। उनके स्थान पर उपनिवेश निवासियों ने अपने नए कानून बनाये। सीमान्त निवासियों को न तो सरकार से डरने का कोई खास कारण था और न वे उसे आवश्यक ही समझते थे। अपनी सुरक्षा वे अपने आप करते थे। वे अपने ऊपर लादे गये किसी भी बन्धन या नियन्त्रण से नफरत करते थे। उनमें इच्छानुसार काम करने की प्रवृत्ति उत्तरोत्तर उग्र होती गयी।

राजनीतिक स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने की एक दीर्घकालीन अंग्रेजी विरासत पहले से ही मौजूद थी। उससे प्रतिफलित धारणाएँ वर्जिनिया के पहले चार्टर (अधिकारों का घोषणा-पत्र) में औपचारिक शैली में व्यक्त की जा चुकी थीं। चार्टर में कहा गया था कि अंग्रेजी उपनिवेशों में रहनेवाले सभी जन उन सभी स्वतन्त्रताओं, मताधिकारों व सुविधाओं का उसी प्रकार उपभोग करेंगे जो हमारे इस अंग्रेजी राज्य क्षेत्र में पैदा होने वाले नागरिकों को प्राप्त है। वस्तुतः, उन्हें मैग्नाकार्टा में वर्णित अधिकारों तथा आम कानूनों के सभी लाभ प्राप्त होते थे। प्रारम्भिक काल में उपनिवेश निवासी अपने परम्परागत अधिकारों को कायम रखने में सफल रहे क्योंकि इंग्लैंड के सम्राट की यह धारणा थी कि उपनिवेश ब्रिटिश संसद के नियन्त्रण के बाहर के क्षेत्र हैं। आने वाले अनेक वर्षों तक, इंग्लैण्ड के सम्राट अपने देश में चलनेवाले झगड़े में ही उलझे रहे। यह वह झगड़ा था जो अन्ततः प्यूरिटन क्रान्ति के रूप में सामने आया। इसी झगड़े के कारण उन्हें उनकी इच्छा को लागू करने का मौका नहीं मिल सका और इसके पहले कि ब्रिटिश संसद उपनिवेशों को शाही नीति के अनुकूल बनाने की ओर ध्यान दे सके, उपनिवेश मजबूत और स्वेच्छानुसार चलने के योग्य ही नहीं वरन् अपने चुने मार्ग पर चलकर समृद्धिशाली भी होने लग थे।

नए महाद्वीप पर चरण रखने के पहले वर्ष से ही उपनिवेश-वासियों ने अंग्रेजी कानून व संविधान के अनुसार काम करना शुरू किया था। उन्होंने विधान-सभाएं, प्रतिनिधि सरकार की प्रणाली और वैयक्तिक स्वाधीनता की गारण्टी करने वाले आम कानूनों की मान्यता के आदर्शों का ही अनुसरण किया लेकिन विधायन की प्रक्रिया उत्तरोत्तर अमरीकी दृष्टिकोण की होती गयी। अंग्रेजी प्रथाओं और तरीकों पर कम-से-कम ध्यान दिया गया। फिर भी, उपनिवेशों को प्रभावकारी अंग्रेजी नियन्त्रण से मुक्ति पूरी नहीं मिल गयी। उपनिवेशों के इतिहास ऐसे दृष्टान्तों से भरे पड़े हैं जिनमें जन-प्रतिनिधियों की विधान-परिषदों और इंग्लैण्ड के राजा द्वारा नियुक्त गवर्नरों के बीच झगड़े और संघर्ष हुए थे। उपनिवेशों में गवर्नर एक खतरनाक अनियन्त्रित सत्ता का प्रतिनिधि था। वह उपनिवेशवासियों की स्वाधीनता के लिए हर समय मौजूद रहने वाले संकट का प्रतीक था। फिर भी उपनिवेशवासी अक्सर इन शाही गवर्नरों को शक्तिहीन करने में सफल हो जाया करते थे क्योंकि गवर्नरों को अपने निर्वाह-खर्च के लिए 'परिषदों' के ही अधीन रहना पड़ता था। कभी-कभी गवर्नरों को इस आशय का निर्देश दिया जाता था कि वे प्रभावशाली उपनिवेशवासियों को लाभकारी पद या भूमि-अनुदान देकर शाही परियोजनाओं के लिए उनका समर्थन प्राप्त करें। किन्तु एक नहीं, अनेक अवसरों पर उपनिवेशवासी अधिकारियों ने पद और भूमि-अनुदान प्राप्त करने के बाद अपने स्थानीय हितों का पहले से भी अधिक पोषण किया।

राजतन्त्र के सिद्धान्त और शासन के बाह्य नियन्त्रण के प्रतीक स्थानीय गवर्नरों तथा स्थानीय स्वशासन और लोकतन्त्रीय सिद्धान्त की प्रतीक परिषदों के बीच निरन्तर होनेवाले झड़पें उपनिवेशवासियों में इस भावना को उत्तरोत्तर जागरूक करती गईं कि इंग्लैण्ड और अमरीका के हितों में काफी भिन्नता है। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया परिषद गवर्नर और उसकी परिषदों के कामों को अपने हाथों में लेती गयी। शनैः शनैः उपनिवेशों के शासन का गुरुत्व केन्द्र

लन्दन से हटकर अमरीकी प्रान्तों की राजधानियों में आ गया। १७७० के बाद के पहले कुछ वर्षों में उपनिवेशों और मातृ-देश के इन सम्बन्धों में आकस्मिक और आमूल परिवर्तन लाने की चेष्टा की गयी। घटनाओं के इस मोड़ का प्रधान कारण यह था कि अमरीका के उत्तरी भाग से फ्रांसीसियों को पूर्णतः निकाला जा चुका था।

अंग्रेज़ और फ्रांसीसियों का संघर्ष

जब अंग्रेज लोग एटलांटिक महासागर के तट प्रदेश में फार्मों, बागानों और आबादी से भरे नगरों की स्थापना कर रहे थे उस समय पूर्वी कैनाडा की सेंट लारेंस घाटी के क्षेत्र में फ्रांसीसी लोग एक दूसरे प्रकार का आधिपत्य जमा रहे थे। उन्होंने बाशिन्दे तो कम भेजे किन्तु अन्वेषक, मिशनरी (धर्म प्रचारक) और व्यापारी अधिक संख्या में भेजे। उन्होंने मिसिसिपी नदी पर अधिकार जमा लिया और उत्तर पूर्व में क्यूबेक से लेकर दक्षिण में न्यू आर्लियन्स तक धीरे-धीरे किन्तु मजबूती के साथ दुर्गों व व्यापार-चौकियों की स्थापनाएँ करते हुए एक अर्धचन्द्राकार आकृति का राज्य कायम कर लिया। और इस प्रकार उन्होंने अप्लाशियन पर्वतों के पूर्व की संकरी पट्टी में अंग्रेजों को भींच देना चाहा।

अंग्रेजों ने बहुत पहले ही फ्रांसीसियों की इस गतिविधि का विरोध किया था क्योंकि उनके अनुसार यह फ्रांसीसियों का अतिक्रमण था। अंग्रेज और फ्रांसीसियों के बीच १६१३ में ही कई टक्करें हुई थीं। संगठित रूप से युद्ध भी हुआ था जो कि इंग्लैण्ड और फ्रांस के बीच होने वाले दीर्घावधि संग्राम का एक अमरीकी अंग मात्र था। १६८९ और १६९७ के बीच 'किंग विलियम्स वार' नामक युद्ध लड़ा गया जिसे यूरोप के 'वार आव द पेलाटिनेट' नामक युद्ध के अमरीकी पक्ष के रूप में माना जा सकता है। १७०१ से १७१३ तक यहां 'क्वीन एन्स वार' हुई तो यूरोप में 'स्पेनी उत्तराधिकार युद्ध'। १७४४ से १७४८ तक यहां 'किंग जार्जेज वार' हुई तो यूरोप में 'आस्ट्रियायी उत्तराधिकार युद्ध'। इन युद्धों में हालांकि इंग्लैण्ड को कुछ लाभ हुए किन्तु ये सभी युद्ध आमतौर पर अनिर्णीत रहे और अमरीकी महाद्वीप में फ्रांस की स्थिति बहुत मजबूत हो रही।

१७५० के दशक में यह विवाद अपने अन्तिम दौर में पहुँचा। १७४८ की एक्स-ला-शैपल सन्धि के बाद, फ्रांस ने मिसिसिपी की घाटी में अपनी स्थितियन को और भी मजबूत करना चाहा। उसी जमाने में अलवेनीज के पार अंग्रेज उपनिवेशवासियों का आन्दोलन भी तीव्र हो उठा। इस प्रकार एक ही क्षेत्र पर अधिकार करने की होड़-सी लग गयी। १७५४ में सशस्त्र टक्कर हुई जिसमें बाइस वर्षीय जार्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में वर्जीनिया की मिलिटिया ने फ्रांस की एक पेशेवर प्रशिक्षित सेना से लोहा लिया। यह युद्ध फ्रांसीसियों और इण्डियनों (आदिवासियों) के युद्ध के नाम से पुकारा गया जब कि इसमें अंग्रेज और उनके इण्डियन मित्र फ्रांसीसियों तथा उनके इण्डियन साथियों से लड़े थे। इस युद्ध ने सदा के लिए इस बात का निर्णय कर दिया कि उत्तरी अमरीका में फ्रांसीसियों का प्रभुत्व रहेगा या अंग्रेजों का।

अंग्रेजी उपनिवेशों में एकता और सक्रिय होने की इतनी अधिक आवश्यकता कभी भी न हुई थी। फ्रांस की स्थिति ने न केवल अंग्रेजी साम्राज्य के लिए ही बल्कि अमरीकी उपनिवेशवासियों के लिए भी खतरा पैदा कर दिया था क्योंकि मिसिसिपी घाटी पर उनके अधिकार से फ्रांसीसी अमरीकी आवासियों को पश्चिम की ओर फैलने व बढ़ने से रोक सकते थे और इस प्रकार वे उपनिवेशों की शक्ति और समृद्धि का गला घोंट सकते थे। कैनाडा और लुइजियाना की तत्का-लीन फ्रांसीसी सरकार सशक्त ही नहीं हो चुकी थी साथ ही इण्डियनों (आदि-वासियों) पर भी उसने अच्छा प्रभाव डाल रखा था। यहां तक कि इरोक्वई जाति के लोगों का दिल भी, जो परम्परा से अंग्रेजों के मित्र थे, फ्रांस ने जीत लिया था। नए युद्ध से इण्डियनों (आदिवासियों) के मामलों का ज्ञाता प्रत्येक अंग्रेज आप्रवासी यह जानता था कि विनाश से बचने के लिए नए आकस्मिक और मजबूत कदम उठाने पड़ेंगे।

एकता की पहली तरंग

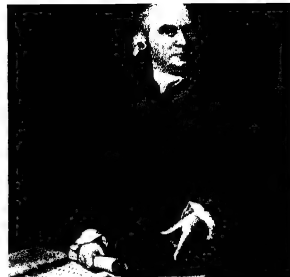
इस मौके पर, ब्रिटिश व्यापार बोर्ड ने, जो एक अरसे से इण्डियनों के साथ उत्तरोत्तर खराब होनेवाले सम्बन्धों के समाचार सुनता आया था, न्यूयार्क के गवर्नर और दूसरे उपनिवेशों के कमिश्नरों को इरोक्वई सरदारों के साथ एक सम्मिलित सन्धि की रूपरेखा तैयार करने के लिए उनकी बैठक बुलाने का आदेश दिया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए १७५४ में न्यूयार्क, पेन्सिलवानिया, मेरीलैण्ड और न्यू इंग्लैण्ड के प्रतिनिधि अलबानी में इरोक्वई सरदारों से मिले। इण्डियनों ने अपनी शिकायतें पेश कीं और प्रतिनिधियों ने उन्हें स्वीकार करते हुए अपनी रिपोर्ट में यथोचित कार्रवाई की मांग की।

लेकिन कांग्रेस इण्डियनों की समस्याएँ हल करने के बुनियादी मकसद से भी आगे बढ़ गयी। उसने घोषणा की कि अनेक अमरीकी उपनिवेशों को मिलाकर

एक संघ बनाना अस्तित्व रक्षाके लिए अतीव आवश्यक है। उपनिवेशों के जो प्रतिनिधि वहां मौजूद थे उन्होंने यूनियन की (संघ बनाने की) अलबानी योजना स्वीकार की। इस योजना का मसविदा बेंजामिन फ्रेंकलिन ने तैयार किया था। योजना में इस बात की व्यवस्था की गयी कि राजा द्वारा नियुक्त राष्ट्रपति उपनिवेशों की परिषदों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों की एक महापरिषद् की सहायता से काम करें। इस महापरिषद् में हरेक उपनिवेश का जनरल ट्रेजरी में उसके वित्तीय योगदान के अनुपात से प्रतिनिधित्व हो और पश्चिम में अंग्रेजों के सभी हित जिसमें इण्डियनों से होनेवाली सन्धि, व्यापार, सुरक्षा, समझौता आदि बातें थीं, सरकार के मातहत हों। किन्तु किसी भी उपनिवेश ने फ्रैंकलिन की यह योजना मंजूर नहीं की क्योंकि किसी को यह स्वीकार नहीं था कि टैक्स लगाने या पश्चिम के विकास पर नियन्त्रण लगाने का अधिकार किसी बाहरी संस्था को सौंपा जाय।

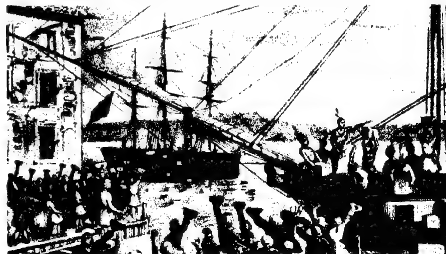
जहां तक उपनिवेशों का सवाल था उनसे युद्ध के लिए सुव्यवस्थित सहायता और समर्थन नहीं मिल रहा था। 'राजा के प्रति कर्तव्य पालन की भावना से प्रेरित करने की सारी योजनाएँ निष्फल हो रही थीं। कुछ फुटकर उपनिवेशों ने यदि इस प्रकार की सहायता दी भी तो वह व्यापक उद्देश्य के अभाव में उत्तरोत्तर अवरुद्ध होती गयी। उपनिवेशवासी युद्ध को दो शाही ताकतों—इंग्लैण्ड और फ्रांस—के बीच का युद्ध ही समझ सकते थे। उन्हें इस बात के लिए जरा भी पश्चात्ताप न था कि औपनिवेशिक युद्धों के लिए ब्रिटिश सरकार को बड़ी तादाद में फौजें भेजनी पड़ रही थीं। न उन्हें इस बात का अफसोस था कि प्रान्तीय सेनाओं के बजाए लाल कोट वाले युद्ध जीत रहे थे। वे इस बात में भी कोई तर्क नहीं पाते कि वे उस व्यापार को बन्द कर दें जिसे 'शत्रु के साथ व्यापार' की संज्ञा दी जाती थी। उपनिवेशों के सम्पूर्ण सहयोग के अभाव तथा अनेक फौजी कमियों के बावजूद श्रेष्ठतम युद्धनीति और नेतृत्व की योग्यता के बल पर जीत इंग्लैण्ड की ही हुई। ८ वर्षों के निरन्तर संघर्ष के पश्चात कैनाडा और मिसिसिपी की घाटी के उत्तरी इलाके पर अंग्रेजों का आधिपत्य हो गया और उत्तरी अमरीका में फ्रांसीसी साम्राज्य का स्वप्न काफूर हो गया।

फ्रांस पर विजय पाने के उपरान्त न केवल अमरीका में बल्कि भारत और संसार के दूसरे उपनिवेशों में भी ब्रिटेन को आखिरकार उस समस्या का सामना करना ही पड़ा जिसकी वह लम्बे अरसे से उपेक्षा करता आया था। वह समस्या थी—साम्राज्य की समस्या। अब यह आवश्यक हो गया कि वह सुरक्षा, भिन्न-



अमरीकी क्रान्ति के सूत्रधार सेम्युअल ऐडम्स, जिन्होंने अमरीका को इंग्लैण्ड से मुक्त कराने की भावनापूर्ण एवं उत्तेजक अपीलें करने में ही अपना सारा जीवन लगा दिया।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी का एकाधिकार समाप्त करने के लिए किए गए शान्तिपूर्ण उपाय जब असफल हो गए तो उपनिवेशवासियों को प्रत्यक्ष कार्रवाई की शरण लेनी पड़ी। वे वहां के मूलनिवासियों का वेश धारण करके जहाजों पर चढ़ गये और तोड़-फोड़ का काम करते हुए उन्होंने चाय की पेटियों को समुद्र में फेंक दिया।





पैट्रिक हेनरी, जो अपने उत्तेजक और प्रवाहपूर्ण भाषणों के लिए प्रसिद्ध थे, वर्जिनिया की विधान सभा में 'स्टाम्प टैक्स' व बिना प्रतिनिधित्व के टैक्स लगाने की व्यवस्था के विरुद्ध भाषण दे रहे हैं।

भिन्न प्रदेशों के लोगों के विविध प्रकार के स्वार्थों के समन्वय और शाही-प्रशासन में होने वाले खर्च के अपेक्षाकृत समान विवरण की दृष्टि से अपने अधीन उपनिवेशों का नये सिरे से संगठन करे। अकेले उत्तरी अमरीका में ही ब्रिटेन का समुद्र पारीय राज्य-क्षेत्र दुगना हो चुका था। एटलांटिक महासागर के तट की पट्टी में अब कैनाडा का लम्बा-चौड़ा मैदानी इलाका और मिसिसिपी से लेकर एलेघेनीज तक का बीच का क्षेत्र भी मिल चुका था और इस तरह ब्रिटेन का साम्राज्य काफी बड़ा आकार ले चुका था। पहले जिसमें प्रधानतः प्रोटेस्टेंट अंग्रेजों और अंग्रेजियत अपनाने वाले यूरोपीय लोगों की आबादी थी, अब विस्तार हो जाने के कारण उसी साम्राज्य में कैथोलिक फ्रांसीसियों और भारी तादाद में अधबने इण्डियन ईसाइयों की वृद्धि भी हुई। पुराने राज्य-क्षेत्रों को यदि छोड़ भी दिया जाय तो-भी सिर्फ नये राज्य-क्षेत्रों की रक्षा और प्रशासन-व्यवस्था के लिए ही अतुल धन राशि और अत्यधिक व्यक्तियों की आवश्यकता थी। पुरानी औपनिवेशिक प्रणाली, जो वस्तुतः अभावपूर्ण थी, स्थिति की मांग को देखते हुए बड़ी ही अपर्याप्त थी। जब युद्ध जैसी उस गम्भीर स्थिति में ही, जिसमें स्वयं उपनिवेश वासियों का अस्तित्व भी खतरे में था, यह पुरानी प्रणाली उनका सहयोग व समर्थन पाने में नाकामयाब हुई तो शान्ति काल में, जब कि किसी बाहरी संकट का अंदेशा भी न था, उससे क्या आशा की जा सकती थी।

कड़े नियंत्रणों का विरोध

यह बात स्पष्ट थी कि ब्रिटिश दृष्टिकोण से नयी शाही-व्यवस्था आवश्यक थी किन्तु अमरीका की स्थिति इस परिवर्तन के अनुकूल न थी। उपनिवेशों की बस्तियां अधिकाधिक स्वाधीनता की एक अरसे से आदी ही नहीं हो चुकी थीं बल्कि वे फ्रांसीसी संकट टल जाने के कारण अपने विकास के उस स्तर तक पहुंच भी चुकी थीं जब उन्हें अपेक्षाकृत अधिक स्वतन्त्रता की आवश्यकता महसूस हो रही थी। उसमें किसी प्रकार की कटौती का तो प्रश्न ही नहीं था। नयी शासन पद्धति को लागू करने में यानी नियन्त्रण को और भी दृढ़ करने में इंग्लैण्ड के राजनयिकों को स्वशासन में प्रशिक्षित और हस्तक्षेप का अधीरता से विरोध करने वाले उपनिवेशवासियों, स्वावलम्बी और साहसी व्यापारियों, राजनीतिक दृष्टि से जागरूक यात्रियों, शाही अनुशासन का दृढ़ता से विरोध करने वाले अभिमानी बागान-मालिकों, कानून से बहुत कुछ अनभिज्ञ तथा उसकी उपेक्षा करने के अभ्यस्त उत्तरी इलाके के लोगों और अपने वैधानिक अधिकारों में जरा

भी हस्तक्षेप न बर्दाश्त करने वाली उपनिवेशों की विधान सभाओं से मोर्चा लेना था। असल बात तो यह है कि ज्यादातर अमरीकी ब्रिटिश साम्राज्य की रत्ती भर परवाह न करते थे। कुछ थोड़े से लोगों को छोड़कर सभी उग्र रूप से यह संकल्प किये हुए थे कि जिस अमरीका को उन्होंने बियाबान जंगल से रहने लायक देश बनाया है उसमें वे अपने ही ढंग से रहेंगे और कार्य करेंगे।

अंग्रेजों ने सर्वप्रथम आन्तरिक क्षेत्रों का संगठन किया। कैनाडा और ओहायो घाटी की विजय से अंग्रेजों के लिए यह जरूरी हो गया कि वे ऐसी सरकारी संरचना और ऐसी धार्मिक व भूमि सम्बन्धी नीति अपनाएं जिससे फ्रांसीसी या इण्डियन निवासी असन्तुष्ट न हों। किन्तु उनका यह कदम तटवर्ती उपनिवेशों के हितों के विपरीत सिद्ध हुआ। इन उपनिवेशों की आबादी तीव्र गति से बढ़ रही थी और यहां के लोग इस बात के लिए कटिबद्ध थे कि जो नए क्षेत्र जीते गए हैं उनके प्रसाधनों का लाभ वे स्वयं उठाएंगे। नयी भूमि की आवश्यकता होने के कारण अनेक बस्तियों ने अपने अधिकार-पत्रों के आधार पर विस्तार करने के हक का दावा किया। विस्तार का यह दावा पश्चिम में मिसिसिपी नदी तक पहुँचना था। विजित प्रदेश को अपना मानते हुए लोग भारी संख्या में पर्वतीय दर्रों को पार करते हुए वहां पहुंचने लगे। उनकी यह बाढ़ उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। लेकिन अंग्रेज सरकार को यह आशंका हुई कि उस नए क्षेत्र में यदि इन अग्रदूत किसानों का प्रवाह लगातार बढ़ता रहा तो वे लोग इण्डियनों के साथ युद्धों की एक लम्बी तालिका को अवश्यम्भावी बना देंगे। अंग्रेजों का खयाल था कि अड़ियल इण्डियनों को शान्त करने के लिए कुछ अधिक समय दिया जाना चाहिए और उपनिवेशवासियों को भूमि धीरे-धीरे दी जानी चाहिए।

फलस्वरूप, १७६३ में एक शाही फरमान द्वारा एलेघेनीज के बीच के तथा फ्लोरिडा, मिसिसिपी और क्यूबेक के इलाके केवल इण्डियनों के उपयोग के लिए सुरक्षित घोषित कर दिए गए। इस तरह, एक ही हाथ से अंग्रेजी सत्ता ने तेरह उपनिवेशों के सभी भूमि-सम्बन्धी पश्चिमी दावों का सफाया करने तथा पश्चिम की ओर होने वाले विस्तार को रोकने का बहुत कुछ उसी प्रकार का प्रयत्न किया जो उन्होंने फ्रांसीसी आधिपत्य की आशंका के समय किया था। यह फरमान हालांकि कभी भी प्रभावपूर्ण ढंग से लागू नहीं किया गया तो भी कुपित औपनिवेशिकों की दृष्टि में यह कदम उनके प्रारम्भिक अधिकार की स्पष्ट अवहेलना थी। उनके अनुसार पश्चिमी इलाके की भूमि पर आवश्यकतानुसार कब्जा करना तथा उसका इस्तेमाल करना उनका बुनियादी अधिकार था।



'सन् '७६ की भावना' नामक इस चित्र से प्रत्येक अमरीकी परिचित है। 'स्वाधीनता की घोषणा' होने के एक शताब्दी बाद इस चित्र को ए. एम. विलर्ड ने बनाया था।

जिस दिन 'स्टैम्प ऐक्ट' लागू हुआ उस दिन स्टाम्पों को सरेआम सड़कों पर जलाया गया। घण्टे बजाए गए, दुकानें बन्द रखी गयीं, झण्डे गिरा दिए गए और समाचार-पत्रों ने स्टाम्प चिपकाने के स्थान पर नर-मुण्डों की तस्वीरें छापीं।



इससे भी अधिक गम्भीर परिणाम हुए ब्रिटेन की नयी वित्तीय नीति के। बढ़े हुए साम्राज्य के संचालन व प्रबन्ध के लिए धन आवश्यक है और यदि इंग्लैण्ड के करदाताओं से यह सबका सब वसूला नहीं जा सकता था तो उपनिवेशों के लिए उसमें अपना योग देना आवश्यक था। लेकिन उपनिवेशों से राजस्व तभी वसूला जा सकता था जब एक मजबूत केन्द्रीय प्रशासन हो। सुदृढ़ केन्द्रीय प्रशासन की व्यवस्था उपनिवेशों के स्वायत्त शासन की कीमत पर ही की जा सकती थी। नयी प्रणाली के प्रारम्भ का पहला कदम था १७६४ का 'शुगर ऐक्ट'। इस ऐक्ट में दो वर्ष बाद संशोधन भी किया गया। इसका एकमात्र उद्देश्य राजस्व की रकम में वृद्धि करना था, व्यापार को नियमित करने से इसका कोई सम्बन्ध न था। वस्तुतः इसे एक व्यापार-नियमन विधि के स्थान पर पास किया गया था। १७३३ के 'मालासेज ऐक्ट' द्वारा गैर-अंग्रेजी देशों से शीरे के आयात पर निषेधात्मक चुंगी लगा दी गयी थी। संशोधित 'शुगर ऐक्ट' के जरिए सभी प्रदेशों से आयात किये जाने वाले शीरे पर एक वाजबी चुंगी लगायी गयी। इस कानून के अन्तर्गत शराबों, सिल्क, काफी तथा दूसरी बहुत-सी विलास की वस्तुओं पर चुंगी लगायी गयी। कानून को लागू करने के लिए चुंगी अधिकारियों को अपेक्षाकृत अधिक क्रियाशीलता और सख्ती बरतने की आज्ञा दी गयी। अमरीकी समुद्रों में मौजूद अंग्रेजी जंगी बेड़ों को तस्करों को पकड़ने के आदेश दिये गये। ब्रिटिश सम्राट की ओर से नियुक्त अधिकारियों को 'बिना नाम के वारण्ट' देकर यह अधिकार दिया गया कि वे प्रत्येक सन्देहास्पद स्थल की अविलम्ब तलाशी ले सकें।

'बिना प्रतिनिधित्व के कर लगाने के अधिकार' का विवाद

न्यू इंग्लैण्ड के व्यापारियों के विस्मित होने का यह कारण नहीं था कि उन पर नये कर लगाये गये। उन्हें असली हैरानी इस बात की थी कि नये कर लागू करने के लिए ठोस कदम उठाए जा रहे थे। यह पूर्णतः एक नयी बात थी। न्यू इंग्लैण्ड के वासी एक पीढ़ी से अधिक काल से ज्यादातर शीरा फ्रांसीसी और डचों के पश्चिमी द्वीप समूहों से बिना किसी तरह की चुंगी दिए आयात करते थे। उनका कहना था कि इस पर नाम मात्र की चुंगी लगाना भी विनाशकारी होगा। 'शुगर ऐक्ट' की प्रस्तावना ने उपनिवेशवासियों को इस बात का अवसर प्रदान किया कि वे अपने असन्तोष का वैधानिक आधार पर औचित्य स्थापित करें। शाही व्यापार के नियमन के लिए औपनिवेशिक वस्तुओं पर कर लगाने का संसद का अधिकार सिद्धान्त रूप से बहुत पहले स्वीकार किया जा चुका था, हालांकि उस पर कभी अमल नहीं किया गया, किन्तु जैसा कि १७६४ के राजस्व-कानून में कहा गया था 'इस साम्राज्य के राजस्व-मद को बढ़ाने के लिए' कर लगाने का अधिकार एक नयी चीज भी थी और विवादास्पद भी।

यह वैधानिक मामला उस बड़े विवाद का मूल सिद्ध हुआ जिसके फलस्वरूप साम्राज्य को अन्ततोगत्वा छिन्न-भिन्न होना पड़ा। एक प्रारम्भ कालीन देशभक्त, जेम्स ओटिस ने लिखा कि 'संसद की इस एक अकेली कार्रवाई ने छः महीनों में इतने अधिक व्यक्तियों को इतना अधिक सोचने के लिए बाध्य कर दिया जितना उन्होंने कदाचित अपने जीवन भर में न सोचा होगा।' व्यापारियों, विधान-सभा के सदस्यों तथा नगर-सभाओं द्वारा इस कानून के औचित्य का विरोध किया गया। सैमुअल ऐडम्स जैसे उपनिवेश के वकीलों ने इस प्रस्तावना में ही 'बिना प्रतिनिधित्व के कर लगाने' की पहली झलक पायी। यह एक प्रेरक नारा बन गया और इसने कितने ही देशभक्तों को मातृदेश के विरोध में खड़ा कर दिया। इसके बाद इसी वर्ष 'करेन्सी ऐक्ट' लागू किया गया जिसके जरिए 'हिज मेजस्टी' के अधीन उपनिवेशों में जारी की गयी हुण्डियां अवैध कर दी गयीं। चूंकि उपनिवेश घाटे के व्यापार-क्षेत्र थे और उनमें निरन्तर दुर्लभ मुद्रा का अभाव रहता था इसलिए इस कानून से औपनिवेशिक अर्थ-व्यवस्था पर एक गहरा बोझ आ पड़ा। उपनिवेशवासियों के दृष्टिकोण से १७६५ में पास होनेवाला 'बिलेटिंग ऐक्ट' भी उतना ही आपत्तिजनक था। इसके अन्तर्गत उपनिवेशों से यह अपेक्षा की गयी कि यदि उनके यहां शाही सेनाएं तैनात की जाती हैं तो वह उपनिवेश उनके लिए घर तथा कुछ अन्य जरूरी सामग्री देने के लिए बाध्य होगा।

इन कानूनों का तीव्र विरोध तो हो ही रहा था, नयी औपनिवेशिक प्रणाली की प्रारम्भिक कार्रवाइयों के रूप में जो अन्तिम कानून पास किया गया उसने उसे संगठित विरोध आन्दोलन का रूप प्रदान कर दिया। यह कानून था—'स्टैम्प ऐक्ट' जिसके अनुसार यह आदेश दिया गया कि सभी समाचार पत्रों, ब्राडसाइडों, पुस्तिकाओं, लाइसेन्सों, इकरारनामों और दूसरे कानूनी आलेखों पर रसीदी टिकट लगाये जाएं। कानून में कहा गया कि इस प्रकार उपार्जित राजस्व उपनिवेश की 'रक्षा, आरक्षा और सुरक्षा' पर खर्च किया जाएगा। इसमें कर वसूली के लिए केवल अमरीकी लोगों की नियुक्ति की व्यवस्था की गयी। यह भार सब पर इतने सरल और समान रूप से डाला गया कि यह कानून संसद में बिना किसी खास बड़े बहस-मुबाहिसे के ही स्वीकृत हो गया।

इसकी ओर किसी ने विशेष रूप से ध्यान तक नहीं दिया।

किन्तु १३ उपनिवेशों में इसका अभिनन्दन इतने उग्र रूप से हुआ कि उससे हर जगह का औसत इन्सान हैरत में पड़ गया। इस कानून का दूसरा दुर्भाग्यपूर्ण पक्ष यह हुआ कि इससे उपनिवेश-समाजों के सबसे प्रभावशाली और विचार व्यक्त करने की क्षमता रखने वाले अंग उदाहरणार्थ, पत्रकार, वकील, पादरी, व्यापारी और व्यवसायी लोग, नाराज हो गये जिसका प्रभाव उत्तर, दक्षिण और पश्चिम, देश के सभी भागों पर समान रूप से पड़ा। शीघ्र ही प्रमुख व्यवसायियों ने, जिन्हें माल के हरेक लदान पर कर देना पड़ता था, मिलकर आयात विरोधी संघ बनाए। व्यापार अस्थायी रूप से ठप्प हो गया और १७६५ की गर्मियों में मातृ-देश से होने वाले व्यापार में भारी गिरावट आ गयी। प्रमुख व्यक्तियों ने 'स्वतन्त्रता के सपूत' नामक दल बनाया और शीघ्र ही राजनीतिक विरोध में हिंसात्मक प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होने लगी। बास्टन के टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर उत्तेजित भीड़ दिखायी देने लगी। मेसाचुसेट्स से साउथ कैरोलाइना तक कानून की भर्त्सना की गयी। जन-समूहों ने जगह-जगह भाग्यहीन अभिकर्ताओं को अपने पद से इस्तीफा देने के लिए विवश किया और चुंगी के स्टैम्प जो फूटी आंख भी नहीं सुहाते थे, स्थान-स्थान पर जलाए व नष्ट-भ्रष्ट किये गये।

'स्टैम्प ऐक्ट' का महत्व केवल क्रांतिकारी विरोधी-आन्दोलन की प्रेरणा देने तक ही सीमित नहीं है। वह इस कारण से भी अतीव महत्वपूर्ण है, क्योंकि उसने अमरीकियों को ऐसे शाही सम्बन्धों की परिकल्पना करने पर विवश किया जो स्थितियों के अनुरूप हों और जिनका स्थितियों के साथ ताल-मेल बैठ सके। उदाहरणार्थ, वर्जिनिया की विधान-सभा ने पैट्रिक हेनरी की प्रेरणा से ऐसे कई प्रस्ताव पास किये जिनमें जन-प्रतिनिधित्व का अधिकार दिये बिना कर लगाने की नीति को अनोखा व खतरनाक परिवर्तन तथा उपनिवेशों की स्वतन्त्रता के लिए एक धमकी कह कर उनकी भर्त्सना की गयी। कुछ दिनों बाद, मेसाचुसेट्स की सभा ने सभी उपनिवेशों को 'स्टैम्प ऐक्ट' के संकट पर विचार करने के लिए न्यूयार्क में आयोजित 'कांग्रेस' के लिए अपने प्रतिनिधि भेजने के लिए आमन्त्रित किया। यह कांग्रेस १७६५ में हुई। यह अमरीकी लोगों द्वारा आयोजित सभी उपनिवेशों की पहली महासभा थी। अमरीकी मामलों में संसदीय हस्तक्षेप के विरुद्ध जनमत तैयार करने के लिए २७ दबंग और योग्य व्यक्तियों ने इस अवसर का उपयोग किया। काफी विचार-विनिमय के बाद कांग्रेस ने कई प्रस्ताव पास किये जिनमें मुख्यतः इस बात पर बल दिया गया कि "हमारी विधान सभाओं के अतिरिक्त, हम पर न कभी किसी ने कर लगाये हैं और न संविधान के अनुसार लगाये जा सकते हैं।" 'स्टैम्प ऐक्ट' के सम्बन्ध में प्रस्तावों में कहा गया कि "इस कानून में उपनिवेशवासियों के अधिकारों व उनकी स्वतन्त्रता को नष्ट-भ्रष्ट करने की प्रवृत्ति साफ झलकती है।"

इस तरह यह संवैधानिक विवाद अन्ततः प्रतिनिधित्व के प्रश्न पर केन्द्रित हो गया। औपनिवेशिकों के मतानुसार जब तक वे स्वयं चुनाव द्वारा वस्तुतः चुन कर अपने प्रतिनिधि पार्लमिण्ट में नहीं भेजते तब तक उनके लिए यह महसूस करना असम्भव था कि पार्लमिण्ट में उनका प्रतिनिधित्व है। 'वास्तविक प्रतिनिधित्व' का अंग्रेजी सिद्धान्त इससे मेल नहीं खाता था क्योंकि उसमें प्रतिनिधित्व स्थान के आधार पर न होकर वर्ग और प्राणियों के आधार पर माना जाता है। अनेक अंग्रेज अफसरों की यह धारणा थी कि ब्रिटिश संसद चूंकि शाही संस्था थी इसलिए वह उपनिवेशों की भी उतनी ही प्रतिनिधि और सत्ताधारी शासिका है जितनी कि मातृ-देश की। यह जिस तरह इंग्लैण्ड के बर्कशायर के लिए कानून बना सकती है उसी तरह अमरीकी महाद्वीप के मेसाचुसेट्स के लिए भी कानून पास कर सकती है। अमरीकी नेताओं का कथन था कि उनके बीच 'शाही संसद' जैसी किसी चीज का अस्तित्व नहीं था। हां, राजा के साथ वैधानिक सम्बन्ध जरूर है। यह राजा ही था, जिसने समुद्र पार उपनिवेश बसाने की आज्ञाएं दी थीं और उसी ने उन्हें एक शासन-तन्त्र प्रदान किया था। इस बात से वे सहमत थे कि राजा इंग्लैण्ड और मेसाचुसेट्स दोनों का राजा था किन्तु अंग्रेजी संसद को मेसाचुसेट्स के लिए कानून पास करने का उसी प्रकार अधिकार नहीं है जिस प्रकार मेसाचुसेट्स की विधान सभा को इंग्लैण्ड के लिए। यदि राजा किसी उपनिवेश से कुछ धन चाहता है तो वह अनुदान मांग सकता है किन्तु एक ब्रिटिश नागरिक पर, चाहे इंग्लैण्ड में हो या अमरीका में, केवल उसके प्रतिनिधियों द्वारा ही कर लगाया जा सकता है। ब्रिटेन के संसदीय अधिष्ठाता, जैसा कि स्वाभाविक ही था, उपनिवेश नेताओं की इन बातों से सहमत होने को तैयार न थे। लेकिन अंग्रेज व्यापारियों ने दबाव डालने में पूरा जोर लगा दिया। अमरीकी बायकाट से प्रभावित होकर उन्होंने पृष्ठभूमि में रहकर कानून को मंसूख कराने के आन्दोलन में अपना सारा जोर लगाया। १७६६ में ब्रिटिश पार्लमिण्ट को झुकना पड़ा। स्टैम्प ऐक्ट मंसूख कर दिया गया और 'शुगर ऐक्ट' में भी काफी संशोधन किए गए। सभी उपनिवेशों में उत्साह और उत्तेजना के साथ खुशियां मनायी गयीं। व्यापारियों ने आयात विरोधी समझौते को खत्म कर दिया, स्वतन्त्रता

के सपूत' नामक संस्था भी शान्त हो गयी। व्यापार पूर्व गति से चलने लगा और ऐसा प्रतीत हुआ कि शान्ति समीप ही है।

किन्तु यह एक क्षणिक विश्राम मात्र था। १७६७ में कुछ नए कानून आए जिन्होंने नए सिरे से विरोध के सभी तत्वों को भड़का दिया। तत्कालीन 'ब्रिटिश चान्सलर आव द एक्सचेकर' चार्ल्स टाउनशेन्ड को सरकार के नए वित्तीय कार्यक्रम का मसविदा बनाने का दायित्व सौंपा गया। उसने अंग्रेजों पर लगे करों को घटाने के उद्देश्य से अमरीकी व्यापार पर पड़ने वाली चुंगी की वसूली को चुस्त करने के साथ ही चुंगी प्रशासन में सख्ती लाने का प्रयास किया। साथ ही, ब्रिटेन से अमरीकी उपनिवेशों को निर्यात होने वाले कागज, कांच, सीसा, चाय आदि पर नयी चुंगी लगा दी। यह काम उपनिवेशों में नियुक्त गवर्नरों, जजों, चुंगी-अधिकारियों और वहां रहने वाली अंग्रेज सेना के खर्च व रखरखाव के लिए आवश्यक रकम की पूर्ति के उद्देश्य से भी किया गया था। टाउनशेन्ड द्वारा एक अन्य कानून का प्रस्ताव भी रखा गया जिसमें उपनिवेशों के उच्च-स्तरीय न्यायालयों को ऐसी व्यवस्था करने के अधिकार दिये गये थे कि वे बिना नाम के तलाशी के वारण्ट जारी कर सकें जिनसे चुंगी अधिकारी जिस समय चाहे सन्देह के आधार पर हर किसी जहाज की तलाशी ले सकें। यह एक ऐसी व्यवस्था थी जिसके प्रति हरेक उपनिवेशवासी घृणा से भर उठा।

टाउनशेन्ड द्वारा लगायी गयी चुंगियों के विरोध में जो आन्दोलन खड़ा हुआ वह हालांकि स्टैम्प ऐक्ट विरोधी आन्दोलन जैसा उग्र न था फिर भी था मजबूत। व्यापारियों ने एक बार पुनः आयात विरोधी समझौते किये। मर्दों ने घर के बने कपड़े (खादी) पहनने शुरू किये, औरतों ने चाय का विकल्प ढूंढ़ निकाला, विद्यार्थी स्वदेशी कागज इस्तेमाल करने लगे। घर अनपुते रहने लगे। बास्टन में, जहां के व्यापार मण्डल पर प्रत्येक प्रकार के हस्तक्षेप की तीव्र व तुरंत प्रतिक्रिया होती थी, इन नए कानूनों के कार्यान्वयन ने हिंसात्मक कार्रवाइयों को भड़काया। वसूली के लिए आये चुंगी अधिकारियों को धमकाया और भगा दिया गया। चुंगी कमिश्नरों की रक्षार्थ वहां दो सैन्य टुकड़ियां भेजी गयीं।

पुराने प्यूरिटन नगर में अंग्रेज सेनाओं की मौजूदगी स्वयं ही एक निरन्तर अव्यवस्था का आधार बनी हुई थी। नागरिकों और सैनिकों की कशमकश १८ मास तक चलने के बाद ५ मार्च, १७७० में खुले दंगे के रूप में भड़क उठी। 'लाल कोट वाले' अंग्रेज सिपाहियों पर किसी ने बरफ के गोले फेंक दिये। यह साधारण-सी बात यहां तक बढ़ गयी कि भीड़ और सैनिकों में मुठभेड़ हो गयी। फिर किसीने गोली चलाने का हुक्म दे दिया और बॉस्टन के तीन निवासी गोलियों के शिकार होकर वहीं बर्फ पर चित हो गये। इस घटना से उपनिवेशों के आन्दोलनकारियों को इंग्लैण्ड के विरुद्ध जनता को प्रभावपूर्ण तरीके से भड़काने का अवसर मिला। 'बॉस्टन हत्याकाण्ड' के नाम से इस घटना को अंग्रेजों की निर्दयता और अत्याचारिता के प्रमाण के रूप में प्रचारित किया गया। सामने इतना तीव्र विरोध देखते हुए ब्रिटिश पार्लमिण्ट ने पीछे हटना ही मुनासिब समझा। चाय पर लगी चुंगी को छोड़कर टाउनशेन्ड द्वारा लगाये गये सभी कर वापस ले लिए गए। 'चाय-कर' इसलिए रखा गया क्योंकि जैसा कि जार्ज तृतीय का कथन था कि अधिकार बनाए रखने के लिए कम-से-कम एक कर लगाए रखना आवश्यक होता है। ज्यादातर उपनिवेशवासियों को यह कार्रवाई शिकायतों के निवारण की दिशा में उठाया गया कदम जैसी ही लगी और इंग्लैण्ड विरोधी आन्दोलन बहुत कुछ छोड़ दिया गया। इंग्लैण्ड से आने वाली चाय के सिलसिले में थोड़ी बहुत रुकावट जरूर थी किन्तु आन्दोलन बहुत ही मन्द था और रुकावट पर पूरी तरह अमल नहीं किया जाता था। शाही सम्बन्धों के लिए स्थिति आमतौर से अनुकूल थी। समृद्धि बढ़ रही थी और उपनिवेशों के अनेक नेता घटनाचक्र के प्रति उदासीन होने के लिए तत्पर थे। दबंग नीति के बजाय उपेक्षा की नीति सफल होती प्रतीत हुई। उपनिवेशों में सर्वत्र औसत वर्गों द्वारा इस शान्तिपूर्ण मध्यान्तर का अभिनन्दन किया गया।

देशभक्तों द्वारा आन्दोलन : बॉस्टन की "टी पार्टी"

तो भी तीन वर्षों के शान्त मध्यान्तर के दौरान में एक तत्व, विवाद को जिन्दा रखने का निरन्तर और अनवरत प्रयास करता रहा। थोड़े से देशभक्तों या 'रेडिकल्स' का यह कहना था कि उपनिवेशों की यह विजय महज एक भ्रांति है। जब तक 'चाय-कर' लागू है तब तक उपनिवेशों पर ब्रिटिश पार्लमिण्ट का अधिकार सिद्धान्त रूप से कायम माना जायगा और भविष्य में किसी भी समय इसी आधार पर यह सिद्धान्त अपने भयानक परिणामों के साथ पूर्ण रूप में लागू करके उपनिवेशों की स्वतन्त्रताओं को खत्म किया जा सकता है।

इन देशभक्तों में सबसे विशिष्ट, और प्रभावशाली थे मैसाचुसेट्स के सेम्युअल ऐडम्स जिनका एकमात्र लक्ष्य था—स्वाधीनता और जो इस लक्ष्य के लिए अनथक परिश्रम करते रहे। हार्वर्ड कालेज की स्नातकीय परीक्षा पास करने के बाद वे सदैव किसी न किसी सार्वजनिक पद पर ही रहे—निर्मनियों के निरीक्षक, टैक्स

उत्तरी न्यूयार्क में टाइकोण्डरोगा के किले पर जो अंग्रेजों का था, वरमाण्ट के ईथन एलन ने स्थानीय स्वयं सेवकों की सहायता से अकस्मात कब्जा कर लिया। यहां काफी गोला-बारूद और बन्दूकें अमरीकियों के हाथ लगीं जिसकी उन्हें बेहद जरूरत भी थी।





अप्रैल १७७५ में कान्कार्ड के फौजी-स्टोर को नष्ट करने का ब्रिटिश-प्रयास बुरी तरह असफल हुआ। इस घटना से प्रेरित होकर कोई १६,००० देशभक्त बास्टन की रक्षार्थ उमड़ पड़े।

कलेक्टर और नगर सभाओं के संचालक। व्यापार में उन्हें हमेशा हानि हुई किन्तु राजनीति में वे बहुत ही दूरदर्शी तथा योग्य सिद्ध हुए। न्यू इंग्लैण्ड की नगर सभा उनके कार्यों की रंगस्थली थी। उसके साधन थे व्यक्ति और उनका विश्वास, शिपयार्ड के कर्मचारियों का समर्थन और पादरी लोग। उनकी सबसे बड़ी कामयाबी यह थी कि वे इन साधारण व्यक्तियों के मन से उनके सामाजिक और राजनीतिक वरिष्ठों का आतंक हटा सके और उनमें उनके अपने महत्व की भावना पैदा कर सके। उनका दूसरा काम था उन्हें सक्रिय होने के लिए जागरूक करना। उन्होंने अखबारों में लेख लिखे और उनकी लोकतन्त्रीय भावनाओं को जाग्रत करने के लिए उन्होंने नगरसभा और प्रान्तीय असेम्बलियों में प्रस्ताव पास कराए और भाषण आयोजित किये। १७७२ में ऐडम्स ने बास्टन की नगरसभा की एक 'पत्रव्यवहार समिति' के निर्माण की प्रेरणा दी जिसका काम था उपनिवेश-वासियों के अधिकारों और उनकी शिकायतों को लिपिबद्ध करना तथा इस सम्बन्ध में दूसरी नगर-सभाओं से पत्रव्यवहार करके उनसे इन प्रश्नों के उत्तरों का मसविदा तैयार करने की प्रार्थना करना। शीघ्र ही, यह विचार विस्तार पा गया। लगभग सभी उपनिवेशों में ऐसी समितियां बन गयीं और यही समितियां आगे चलकर प्रभावशाली क्रांतिकारी संगठनों का आधार बनीं।

१७७४ में ब्रिटेन ने ऐडम्स और उनके साथियों को एक अभीष्ट अवसर प्रदान किया। शक्तिशाली ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपनी शोचनीय वित्तीय स्थिति के कारण ब्रिटिश सरकार से अपील की और सभी उपनिवेशों को निर्यात होने वाली चाय का एकाधिकार प्राप्त कर लिया। टाउनशेन्ड के चाय-कर लगने के बाद उपनिवेशों ने कम्पनी की चाय का बहिष्कार कर रखा था। और १७७० के बाद चाय का गैरकानूनी व्यापार इतना बढ़ गया था कि अमरीका में जितनी चाय की खपत होती थी उसका ९० प्रतिशत भाग विदेशों से आता था और उस पर चुंगी नहीं दी जाती थी। कम्पनी ने अपनी चाय अपने एजेण्टों द्वारा बाजार भाव से सस्ती बेचने का निर्णय किया। इस तरह कम्पनी ने एक तो देश में चोरी से आने वाली चाय के व्यापार को लाभहीन बनाया और दूसरे उपनिवेशों में चाय के स्वतन्त्र व्यापारियों का सफाया कर दिया। इस कुविवेकपूर्ण निर्णय ने उपनिवेश के व्यापारियों को भड़का दिया और उन्होंने देशभक्तों से पुनः सांठ-गांठ करनी शुरू कर दी। उन्हें मिलकर कार्रवाई करने की प्रेरणा देने वाली चीज चाय का व्यापार के बजाय एकाधिकार का सिद्धान्त था। सभी उपनिवेशों में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की योजना को रोकने के लिए कार्रवाई की गयी। बास्टन को छोड़कर दूसरे बन्दरगाहों में कम्पनी के एजेण्टों को एजेन्सी छोड़ने के लिए राजी कर लिया गया और नयी आयी हुई चाय को या तो इंग्लैण्ड लौटा दिया गया या उसे गोदामों में डाल दिया गया। लेकिन बास्टन के एजेंटों ने एजेन्सी छोड़ने से इन्कार कर दिया। उन्होंने इस विरोध की परवाह न करते हुए शाही गवर्नर की सहायता से आने वाली चाय को जहाज से उतारने की तैयारियां कीं। ऐडम्स के नेतृत्व में काम करने वाले देशभक्तों ने इसका उत्तर 'हिंसा' से दिया। १६ दिसम्बर, १७७३ की रात को लोगों का एक गिरोह मोहाक आदिवासियों के वेश में चाय से लदे तीन जहाजों पर चढ़ गया और उसने अपमानजनक चाय के स्टाक को समुद्र की भेंट कर दिया।

उपनिवेश का दमन : दूसरों द्वारा सहायता

ब्रिटेन के सामने एक संकट आ पड़ा। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने तो पार्ला-मेण्ट के एक कानून का पालन किया था। पार्लामेण्ट यदि चाय के इस विनाश पर ध्यान नहीं देती तो दूसरे शब्दों में वह संसार के सामने यह स्वीकार करती कि उपनिवेशों पर उसकी सत्ता नहीं के बराबर है। ब्रिटेन के अधिकारियों ने एक स्वर से 'बास्टन टी-पार्टी' को विनाश और विध्वंस का कार्य घोषित कर उपद्रवी उपनिवेशवासियों को पकड़ कर दण्डित करने के लिए आवश्यक कार्रवाइयों का भरपूर समर्थन किया। फलस्वरूप एक के बाद एक, कई नये कानून लागू किये गये जिन्हें उपनिवेशवासियों ने 'दमनात्मक करतूतें' कह कर पुकारा। पहला था, 'बास्टन पोर्ट बिल' जिसके जरिए बास्टन का बन्दरगाह तब तक के लिए बन्द कर दिया गया जबतक कि नष्ट को गयी चाय का पूरा मूल्य न चुका दिया जाय। इसने नगर के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया क्योंकि बास्टन का बन्दरगाह बन्द करने के मायने थे सारे शहर को तबाह कर देना। इसके बाद शीघ्र ही दूसरे बिलों द्वारा राज को मैसाचूसेट्स के कौन्सिलरों की नियुक्ति के अधिकार दिये गये। पहले इन कौंसिलरों का निर्वाचन होता था। इसके अलावा जो जूरी लोग नगर सभाओं द्वारा चुने जाते थे उन्हें आगे से शेरिफ़ों, गवर्नर के एजेण्टों द्वारा आमन्त्रित करने की व्यवस्था की गयी। आगे से नगर सभा गवर्नर की स्वीकृति से ही बुलाई जा सकती थी। जजों और शेरिफ़ों की नियुक्ति या बर-खास्तगी का अधिकार भी गवर्नर के हाथों में दे दिया गया। 'क्वार्टरिंग ऐक्ट' पास करके ब्रिटिश सैनिकों के रहने के लिए यथोचित क्वार्टर तलाश करने का दायित्व स्थानीय अधिकारियों पर छोड़ा गया। यदि वे अपने इस कर्तव्य की उपेक्षा

करते हैं तो उस दशा में गवर्नर को यह अधिकार दिया गया कि वह सरायों, मदिरालयों या दूसरे उपयुक्त भवनों पर कब्जा करके उनमें सैनिकों के ठहरने की व्यवस्था कर दे। लगभग इसी जमाने में 'क्यूबेक ऐक्ट' भी पास किया गया और कदाचित इसीलिए इसे भी विरोध की दृष्टि से देखा गया। इस कानून के जरिए क्यूबेक प्रान्त की सीमाओं में विस्तार किया गया तथा वहां के फ्रांसीसी निवासियों को धार्मिक स्वाधीनता के साथ ही अपने विधि सम्मत रीति-रिवाजों के अनुसार रहने का अधिकार दिया गया। इस कानून का विरोध इसलिए हुआ क्योंकि औपनिवेशिकों की दृष्टि में यह पश्चिमी भूमि पर उनके दावों को स्वीकार करने वाले चार्टर की खुली उपेक्षा थी। इससे पश्चिम की ओर उनके विस्तार पर रोक लगती थी और उत्तर तथा उत्तर-पश्चिम की सीमाएं रोमन-कैथोलिकों के पूर्ण सत्तावादी प्रान्त द्वारा नियन्त्रित होती-सी प्रतीत होती थीं। हालांकि 'क्यूबेक ऐक्ट' किसी प्रकार की दण्ड की भावना से पास नहीं किया गया था फिर भी उस समय के अमरीकियों ने इसकी गणना भी पांच असहनीय कानूनों में की।

ये कानून मैसाचुसेट्स को दबा नहीं सके हालांकि उनके पीछे उद्देश्य यही था। उलटे, पड़ोसी उपनिवेश उसकी सहायतार्थ संगठित होने लगे। वर्जीनिया बर्जेसस् के सुझाव पर 'उपनिवेशों की मौजूदा दुखद् स्थिति पर विचार करने के लिए सभी उपनिवेशों के प्रतिनिधियों की एक बैठक ५ सितम्बर १७७४ को फिलाडेल्फिया में बुलायी गयी। यह बैठक पहली महाद्वीपीय कांग्रेस थी। यह कानूनी परिधि के बाहर थी क्योंकि इसके प्रतिनिधियों का चुनाव उपनिवेशों की कांग्रेस या सार्वजनिक अधिवेशनों द्वारा किया गया था तथा उन्हींको हिदायतों के अनुसार उसका संचालन किया गया था। दूसरे शब्दों में देशभक्तों के दल ने, जो कानूनी क्षेत्र के अतिरिक्त काम करने के पक्ष में था, स्थिति पर नियन्त्रण पा लिया था और अंग्रेजी कानून के विरोध-आन्दोलन से कोई सरोकार न रखने वाले परम्परावादियों का इसमें कोई प्रतिनिधित्व न था। वैसे, कांग्रेस में शामिल होने वाले सदस्यों में विभिन्न अमरीकी मतों के सभी वर्गों का खासा प्रतिनिधित्व था। जार्जिया को छोड़कर हरेक उपनिवेश ने कम से कम एक प्रतिनिधि जरूर भेजा। कुल ५५ प्रतिनिधि आए। विविध प्रकार के मतों की अभिव्यक्ति के लिए यह संस्था भले ही पर्याप्त थी किन्तु सच्चे विचार विनिमय या प्रभावशाली कदम उठाने की दृष्टि से इसे अपर्याप्त ही माना गया।

उपनिवेशों में मतों की विभिन्नता के कारण कांग्रेस को एक कठिन दुविधा का सामना करना पड़ा। रियायतें देने के लिए ब्रिटिश सरकार को राजी करने के उद्देश्य से कांग्रेस को 'संगठित और एक मत' होने का प्रदर्शन करना था। साथ ही क्रान्तिवाद या स्वतन्त्रता की ऐसी भावना के प्रदर्शन से भी बचना था जिससे नरम विचारों के अमरीकी चौंक न पड़ें। एक अत्यन्त सावधान व सारगर्भित भाषण के उपरान्त प्रस्ताव पास करके इस बात की घोषणा की गई कि दमनकारी कानूनों का पालन करना आवश्यक नहीं है। फिर ग्रेट ब्रिटेन और उपनिवेशों की जनता के नाम 'अधिकारों और शिकायतों' का घोषणापत्र पेश किया गया। ब्रिटेन के राजा के नाम एक प्रार्थनापत्र भी तैयार किया गया जिसमें अमरीकी विरोध के परम्परागत तर्कों के साथ ही बाह्य व्यापार और विशुद्ध शाही मामलों में नियन्त्रण रखने के ब्रिटिश पार्लमेण्ट के अधिकार को स्वीकार किया गया। फिर भी कांग्रेस का सबसे महत्वपूर्ण कार्य था एक ऐसे संघ का निर्माण व गठन जो उसमें दी गयी व्यवस्था के अनुसार व्यापारिक बायकाट का पुनरुद्धार कर सकता था। उसमें हरेक शहर व काउण्टी में निर्यात विरोध, आयात विरोध और इस्तेमाल के विरोध का निरीक्षण करने वाली समितियों की व्यवस्था की गयी। समितियां चुंगी-खाता देख सकती थीं, बायकाट समझौता तोड़ने वाले व्यापारियों का नाम प्रकाशित कर सकती थीं और उनके द्वारा आयात किए गए माल को जब्त भी कर सकती थीं। मितव्ययिता, बचत और उद्योग को प्रोत्साहन देना भी इन समितियों का काम था।

'संघ' से एक संगठित क्रान्तिकारी तत्व का सूत्रपात हुआ। "पत्रव्यवहार समितियों" द्वारा प्रस्तुत आधारशिला पर निर्मित स्थानीय संगठनों ने सभी मामलों का नेतृत्व अपने हाथों में सम्भाल लिया। उन्होंने शाही प्रभाव के अवशेषों का उन्मूलन करने के लिए तीव्र आन्दोलन चलाए। झिझकने वालों को भी वे जन-आन्दोलन में भाग लेने के लिए तैयार कर लेते तथा विरोधियों को निर्द्वंद्व दण्ड देते थे। उन्होंने सैनिक सामग्री एकत्र करना तथा सैनिकों को संगठित करना शुरू किया। जनमत भी उनकी ओर आकर्षित होने लगा।

क्रान्ति का पहला धमाका

'संघ समितियों' की कार्रवाइयों से जनता के बीच की जो खाई धीरे-धीरे बढ़ रही थी, उसने असाध्य रूप धारण कर लिया। पिछले एक अरसे से बहुत से अमरीकी लोग विरोध आन्दोलन में अत्यधिक सावधानी बरतने के पक्षपाती रहे थे। वे बहुत अंशों तक अमरीकी अधिकारों में अंग्रेजों द्वारा किए जाने वाले हस्तक्षेपों के विरोधी जरूर थे लेकिन वे सम्बन्ध तोड़ने के बजाय बातचीत और

समझौते द्वारा विवाद के समाधान के पक्ष में थे। इस तरह के लोगों का समूह विभिन्नताओं से भरा पड़ा था। इसमें ज्यादातर लोग अधिकारी वर्ग के थे (अर्थात् विभिन्न प्रकार के ऐसे अधिकारी जिनकी नियुक्ति ब्रिटिश राजा की ओर से होती थी)। बहुत से छोटे-बड़े क्वेकर, हिंसा के सिद्धान्त के विरोधी दूसरे सम्प्रदायों के सदस्य, बहुत से व्यापारी, (विशेषतः बीच के उपनिवेशों के) दक्षिणी उपनिवेशों के भीतरी इलाकों के कुछ असन्तुष्ट किसान व सीमान्तवासी आदि भी इनमें शामिल थे। दूसरी ओर देशभक्तों को न केवल अल्प-सम्पन्नों से वरन् अनेक व्यवसाय के लोगों से भी समर्थन मिल रहा था। इन लोगों में विशेषतः वकील, दक्षिण के बड़े-बड़े बागान मालिक और वस्तु-विक्रेता शामिल थे।

दमनकारी कानूनों के पास होने की बाद की घटनाओं से राजभक्त तबका व्याकुल और भयभीत हो गया था। ब्रिटिश राजा यदि चाहता तो उनसे मिल कर, उन्हें विशेष सुविधाएँ देकर उनकी स्थिति इतनी सबल बना सकता था कि देशभक्तों के लिए विरोधी आन्दोलन चलाना बहुत कठिन हो जाता। किन्तु जार्ज तृतीय सुविधाएं देने के लिए तैयार न था। सितम्बर, १७७४ में उसने फिलाडेलफिया के क्वेकरों का प्रार्थनापत्र ठुकराते हुए लिखा "अब तो ठप्पा लग चुका है, उपनिवेशों को या तो उसके अनुकूल होकर आत्मसमर्पण करना है या फिर विजय हासिल करना।" इस रुख ने वफादारों या 'टोरियों' को जड़ से हिला दिया। उनके पास अपने साथियों को समझाने के लिए कुछ भी शेष न था सिवा इसके कि वे पूर्ण और अपमानजनक आत्मसमर्पण करने की राय देते। इस तरह मिताचारियों के सामने देशभक्तों का, जिन्हें अब 'ह्विग्स' के नाम से पुकारा जाने लगा था, समर्थन करने के अलावा दूसरा चारा न था क्योंकि दूसरे सभी रास्तों को अपनाने के मायने थे अपनी स्वतन्त्रताओं से हाथ धो लेना। राजभक्तों का पीड़न तीव्र गति से प्रारम्भ हो गया। चक्की वालों ने उनके लिए आटा पीसना बन्द कर दिया, मजदूरों ने उनकी नौकरियां छोड़ दीं। न वे कुछ बेच सकते थे न कुछ खरीद सकते थे। उन्हें 'गद्दार' कहकर पुकारा जाने लगा और समितियों ने उनके नाम प्रकाशित करना शुरू किया जिससे "भावी सन्तानें भी उन अपयश के भागियों से परिचित होती रहें।"

बास्टन में तैनात शाही सेना का सेनाध्यक्ष जनरल टामस गेज नामक एक अंग्रेज था। उसकी पत्नी अमरीका में पैदा हुई थी। नगर की सारी व्यापारिक गतिविधि राजनीतिक हलचल में बदल चुकी थी। डा. जोजेफ वोरन नामक एक प्रमुख स्थानीय देशभक्त ने अपने एक अंग्रेज मित्र को २० फरवरी, १७७५ के दिन लिखा था, "अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है, मामला मिलबैठ कर सुलझ सकता है। मेरी धारणा है कि यदि जनरल गेज को हाल के कानूनों को अमली रूप देने के लिए अपने सैनिकों के साथ एक बार भी ग्रामीण क्षेत्रों में भेज दिया गया तो ग्रेट ब्रिटेन को कम से कम न्यूइंग्लैण्ड के उपनिवेशों से तो जरूर ही और यदि मैं गलती नहीं करता तो समस्त अमरीका से, हाथ धोना पड़ेगा। यदि राष्ट्र में जरा भी विवेक है तो भगवान के नाम पर निवेदन है कि उसका अविलम्ब उपयोग किया जाय।"

लेकिन जनरल गेज का फर्ज था कि दमनकारी कानूनों को लागू कराये। उसे खबर मिली कि २० मील दूर स्थित कांकार्ड में मैसाचुसेट्स के देशभक्त बारूद और सेना का सामान जमा कर रहे हैं। १८ अप्रैल, १७७५ की रात को उसने अपनी सेना की एक मजबूत टुकड़ी को वहां गोलाबारूद जब्त करने तथा सैम्युअल ऐडम्स और जान हैन्काक को, जिन पर इंग्लैण्ड में मुकदमा चलाने का आदेश दिया जा चुका था, गिरफ्तार करने के लिए भेजा। सारा ग्रामीण इलाका सजग हो उठा और जब रात भर चलने के बाद अंग्रेज सेना की टुकड़ी लेक्सिंगटन गांव के निकट पहुँची तो उन्होंने भोर के धुंधलके में पचास सशस्त्र मिनट-मैनों को मुकाबले के लिए सन्नद्ध पाया। क्षण भर के लिए दोनों पक्ष झिझके। दोनों ओर कुछ शोर हुआ, कुछ आदेश दिये गये और इसी शोरगुल के भीतर किसी ने एक गोली चला दी। फिर क्या था दोनों ओर से गोली चलायी जाने लगी। वहाँ की हरी-हरी घास पर अपने आठ आदमियों की लाशें छोड़ कर अमरीकियों को तितरबितर होना पड़ा। अमरीकी स्वाधीनता संग्राम का पहला रक्तपात हो चुका था।

अंग्रेज सैनिक कांकार्ड की ओर बढ़े और एक पुल के पास किसानों ने उनसे मोर्चा लिया। वहां किसानों ने जो गोली वर्षा की उसके "धमाके संसार भर में गूंजते चले गए।" कुछ हद तक अपना उद्देश्य पूरा करने के बाद अंग्रेज सिपाही वापस लौटे। किन्तु सड़क के किनारे बनी पत्थर की दीवारों, मकानों व पहाड़ी टीलों के पीछे गांवों और फार्मों में मिलिटिया के जवान आ धमके और उन्होंने 'लाल कोट वालों' को निशाना बनाना शुरू कर दिया। क्रांति के इस प्रथम युद्ध में सारे ग्रामीण इलाके का योगदान इतना अधिक और व्यापक रहा कि जब तक २५०० अंग्रेज सैनिकों की टुकड़ी नष्ट-भ्रष्ट होती हुई बास्टन पहुँची तब तक उसके आहत सैनिकों की संख्या उपनिवेशवादियों के आहतों की तुलना में तीन गुना से अधिक हो चुकी थी।

कांग्रेस में स्वाधीनता पर बहस

दूसरे उपनिवेशों पर लेक्सिंग्टन और कान्कार्ड के समाचारों का प्रभाव बिजली के झटके की भांति हुआ। यह जाहिर हो गया कि युद्ध—वास्तविक युद्ध—निकट ही है। स्थानीय कमेटियों के जरिए इस बात के संकेत तेरहों उपनिवेशों में भेज दिए गए। उन्हें एक संगठित रक्षाशक्ति के रूप में संघटित होने के लिए केवल लेक्सिंग्टन जैसी एक घटना की ही आवश्यकता थी। इस समाचार ने २० दिन के भीतर ही मेन से लेकर जार्जिया तक सर्वत्र देशप्रेम की भावना जाग्रत कर दी।

अभी लेक्सिंग्टन और कान्कार्ड की चेतावनियां गूंज ही रही थी कि १० मई, १७७५ को फिलाडेल्फिया में दूसरी महाद्वीपीय कांग्रेस की बैठक शुरू हुई। बास्टन का एक अमीर व्यापारी जान हैनकाक उसका अध्यक्ष था। टामस जैफर्सन वहां मौजूद थे। श्रद्धेय बेंजामिन फ्रैंकलिन भी उन्हीं दिनों अनेक उपनिवेशों के प्रतिनिधि के रूप में समझौते के लिए निष्फल प्रयास करने के उपरान्त लन्दन से लौट आए थे। कांग्रेस अभी भली प्रकार संगठित भी न हो पायी कि उसे खुली लड़ाई के प्रश्न का सामना करना पड़ा। हालांकि थोड़ा-बहुत विरोध मौजूद था फिर भी कांग्रेस की वास्तविक प्रवृत्ति 'शस्त्र उठाने के कारण और उसकी आवश्यकता' की उत्तेजनापूर्ण घोषणा में प्रकट हुई। उसमें कहा गया:

"हमारा लक्ष्य न्यायसंगत है। हमारा संघ अपूर्ण नहीं है। हमारे आन्तरिक साधन असीमित हैं और यदि जरूरत पड़ी तो हम विदेशी सहायता भी निस्सन्देह प्राप्त कर सकते हैं...शत्रुओं ने यदि हमें शस्त्र उठाने के लिए विवश किया है तो हम उन्हें अवश्य उठाएंगे...अपनी स्वतन्त्रताओं की रक्षार्थ हम उनका उपयोग करेंगे, एक ही संकल्प के साथ कि गुलाम होकर जीने के बजाय आजाद इन्सान की मौत मरना कहीं अधिक श्रेयस्कर है।"

अभी इस घोषणा पर बहस हो ही रही थी कि कांग्रेस ने मिलिशिया को महाद्वीपीय सेवा के अन्तर्गत लेकर जार्ज वाशिंगटन को अमरीकी सेनाओं का सेनाध्यक्ष नियुक्त कर दिया। अपनी साहसिकता और बहादुरी तथा सुदृढ़, सम्मानपूर्ण और भव्य आचरण के कारण वह अत्यन्त ही कुशल व योग्य व्यक्ति थे। उनके मन में उत्साह और धीरज परस्पर सन्तुलित रहते थे। वह एक पूर्ण नैतिक व शारीरिक साहस के प्रतीक थे। निर्देश देने की उनकी योग्यता देखने योग्य थी। निर्णय करने में उनकी शुद्धता और जानकारी की परिपक्वता ने उन्हें महान बना दिया। उनके सामान्य ज्ञान ने ही उन्हें अद्वितीय विवेक का व्यक्ति बना दिया। वे एक ही रास्ते पर चलने के हामी थे, उसी पर दृढ़ रहना उनकी विशेषता थी। उन्होंने लिखा है कि "पराजय केवल पुनः अपेक्षाकृत अधिक प्रयास करने की प्रेरणा देने वाला कारण मात्र है, अगली बार हम इससे अधिक अच्छे ढंग से काम करेंगे।" इस भावना और उनमें मौजूद सैन्य प्रशासन सम्बन्धी प्रतिभा ही वे सूचक चिन्ह थे जिन्हें देख कर कहा जा सकता था कि भविष्य में विजय का सेहरा उनके मस्तक को ही सुशोभित करेगा।

किन्तु, इस सैनिक उलझाव और सेनाध्यक्ष की नियुक्ति के बावजूद कांग्रेस के बहुत से सदस्यों तथा अमरीकी जनता के एक बड़े हिस्से को इंग्लैण्ड से पूर्ण सम्बन्ध-विच्छेद करने का विचार प्रिय नहीं था। इतनी आकस्मिक और संगीन कार्रवाई के लिए जनमत भी तैयार न था। फिर भी यह स्पष्ट था कि उपनिवेश हमेशा के लिए साम्राज्य के आधे भीतर और आधे बाहर नहीं रह सकते। मिताचारियों ने अपने मन को समझाने के लिए कहा कि वे ब्रिटेन के राजा के विरुद्ध नहीं वरन् मन्त्रिमण्डल के विरुद्ध लड़ रहे हैं। यहां तक कि जनवरी, १७७६ की रातों को सैनिक अफसरों के भोजनालय में जार्ज वाशिंगटन की अध्यक्षता में इंग्लैण्ड के राजा के स्वास्थ्य की मंगल-कामना की जाती थी।

समय के साथ-साथ, ब्रिटिश साम्राज्य का अंग रह कर एक युद्ध का निर्वाह करना उत्तरोत्तर कठिन होता गया। इंग्लैण्ड की ओर से समझौते का कोई लक्षण दिखायी नहीं दिया। २३ अगस्त १७७५ को इंग्लैण्ड के राजा जार्ज की ओर से यह घोषणा कर दी गयी कि उपनिवेश विद्रोह की स्थिति में है। पांच महीने बाद टामस पेन की ५० पृष्ठ की पुस्तिका 'कामनसेन्स' (सामान्य ज्ञान) प्रकाशित हुई। इसमें सशक्त और ओजस्वी शैली में स्वतन्त्रता की आवश्यकता का प्रतिपादन किया गया। पेन की पैनी लेखनी ने अवरोध के असली मुद्दे पर सफाई से चोट की। वंश परम्परा पर आधारित राज्य व्यवस्था के विचार का मजाक उड़ाते हुए उसने राजाओं को भी नहीं बख्शा। उसने लिखा कि पृथ्वी पर अब तक जितने भी मुकुटधारी धूर्त हुए हैं, समाज के लिए उन सब से अधिक मूल्यवान एक साधारण ईमानदार व्यक्ति है।" उसने दो विकल्प पेश किए: अत्याचारी राजा और जर्जर सरकार के सामने निरन्तर आत्मसमर्पण अथवा आत्मनिर्भर स्वतन्त्र गणतन्त्र के रूप में स्वतन्त्रता और सुख का जीवन। पेन की इस पुस्तिका के प्रभाव के बारे में अतिशयोक्ति की गुंजाइश ही नहीं है। कुछ ही महीनों में, सभी उपनिवेशों में हजारों प्रतियां भेज दी गयीं जिन्होंने अनिश्चित दुविधा में पड़े लोगों के विचारों को संगठित किया।

लोग स्वतन्त्रता के विचार को निःसंकोच भाव से ग्रहण करने लगे थे फिर भी एक बात अभी शेष थी और वह थी अंग्रेजी साम्राज्य से सम्बन्ध विच्छेद करने की औपचारिक घोषणा के बारे में सभी उपनिवेशों की स्वीकृति। पेन कह ही चुका था कि उपनिवेश असंगति की पराकाष्ठा तक पहुँच चुके थे। वे पूरी तरह विद्रोह की स्थिति में थे। उनकी अपनी सेना व नौसेना थी। उनकी सरकारें ब्रिटिश राजा व उसकी संसद की उपेक्षा करती थीं। इतना सब होने पर भी अन्तिम व निर्णायक कदम न उठाना विरोधाभास की चरम सीमा ही थी।

इस बात का एक आपसी समझौता-सा था कि महाद्वीपीय कांग्रेस उपनिवेशों से स्पष्ट आदेश पाए बिना स्वाधीनता की घोषणा करने जैसा निर्णायक कदम नहीं उठाएगी। लेकिन कांग्रेस को प्रतिदिन कानून के बाहर की गयी उपनिवेश सरकारों की स्थापनाओं और स्वाधीनता के पक्ष में वोट देने के लिए प्रतिनिधियों की नियुक्ति के समाचार मिलते रहते थे। उन दिनों कांग्रेस में 'रेडिकलों' का प्रभाव बढ़ा हुआ था। पत्र-व्यवहार के काम को विस्तृत करके कमजोर समितियों में प्राण फूंक कर तथा जोश भरे प्रस्तावों द्वारा देशभक्तों का उत्साह बढ़ाकर वे लोग दिन प्रतिदिन शक्तिशाली होते जा रहे थे। अन्ततोगत्वा, १० मई, १७७६ को 'गार्जियन नाट' को काट डालने का प्रस्ताव पास कर दिया गया। अब केवल एक औपचारिक घोषणा करना शेष था। ७ जून, १७७६ को वर्जीनिया के रिचर्ड हेनरी ली ने अपने राज्य के आदेशानुसार स्वाधीनता, विदेशों से मैत्री सम्बन्ध रखने तथा अमरीकी फेडरेशन (राज्यों का महासंघ) स्थापित करने का प्रस्ताव पेश किया। तुरत ही एक समिति नियुक्त की गयी और उसे यह दायित्व सौंपा गया कि वह एक ऐसा औपचारिक घोषणापत्र तैयार करे जिसमें उन कारणों का उल्लेख हो जिन्होंने उन लोगों को ऐसे मजबूत निर्णय पर पहुंचने के लिए बाध्य किया था। टामस जैफर्सन की अध्यक्षता में पांच व्यक्तियों की एक समिति इसका मसविदा बनाने के लिए नियुक्त की गयी।

जैफर्सन जो उस समय केवल ३३ वर्ष के थे वर्जीनिया के 'हाउस आव बर्जेसस' से फिलाडेल्फिया आए। उनकी ख्याति पहले ही दूर-दूर तक फैल चुकी थी। उनका जन्म हालांकि वर्जीनिया के एक रईस घराने में हुआ था फिर भी उनका प्रारम्भिक जीवन पीछे के इलाके के लोकतन्त्रीय वातावरण में बीता था। इसलिए वे अमीराना हकूकों के विरोधी थे। घुड़सवारी, शिकार और फिडिल (एक प्रकार का वाद्ययन्त्र) के शौकीन होते हुए भी उनमें ज्ञान के प्रति अपार प्यास थी, जिसे बुझाने का समय वे निकाल ही लेते थे। इसमें सन्देह नहीं कि जिस घोषणा का मसविदा बनाने के लिए उन्हें चुना गया था उसके महत्व को देखते हुए उस समय उनसे अधिक योग्य उपयुक्त व्यक्ति चुना ही नहीं जा सकता था। जैफर्सन जानते थे कि उससे अमरीका एक भयंकर युद्ध में फंस जायेगा लेकिन उनका विश्वास था कि "स्वाधीनता की बेल को समय-समय पर देशभक्तों और अन्यायियों के खून से सींचना जरूरी होता है।" हालांकि जिस शासन को नष्ट करने का इरादा किया जा रहा था उसके स्थान पर किसी नयी मजबूत शासन पद्धति की व्यवस्था अब तक नहीं हुई थी फिर भी जैफर्सन का ख्याल था कि सरकार सच्चे अर्थों में स्वयं जनता द्वारा ही बनायी जाती है, वही उसकी मुख्य आधार होती है। कदाचित इसीलिए जैफर्सन किसी बहुत ही मजबूत शासन के पक्ष में न थे। उनका कहना था कि कुछ चुने हुए लोगों का आधिपत्य "जनता की सुख समृद्धि के विरुद्ध एक गुटबन्दी मात्र है।" घोषणापत्र में जिन महान सिद्धान्तों का जिक्र किया गया उनके प्रति जैफर्सन ने वैसा ही महसूस किया जैसा कि वे लोग महसूस करते थे जिनके लिए उन्होंने उसे लिखा था। उन्होंने उन्हीं के विचार और उन्हीं की भावनाएँ उन्हीं की भाषा में व्यक्त कीं। एक तत्कालीन लेखक ने कहा भी है, "स्वाधीनता के इस स्मरणीय आलेख में उन्होंने समूचे महाद्वीप की आत्मा भर दी है।"

स्वाधीनता की घोषणा

४ जुलाई, १७७६ को स्वाधीनता की घोषणा हुई। उसने केवल नए राष्ट्र के जन्म की सूचना ही नहीं दी, बल्कि मानवीय स्वाधीनता का एक ऐसा दर्शन भी प्रस्तुत किया जिसे आगे चलकर समूचे पश्चिमी संसार में एक गतिशील प्रेरक शक्ति का रूप लेना था। वह किन्हीं खास शिकायतों पर आधारित न था। उसकी बुनियाद मानव-स्वतन्त्रता के उन व्यापक और मूल सिद्धान्तों पर टिकी हुई थी जिनका समर्थन अमरीका भर में सर्वत्र हुआ। घोषणा में निहित राजनीतिक दर्शन भी स्पष्ट ही था :

"हम इन सत्यों को स्वयंसिद्ध मानते हैं, कि सभी लोग एक समान सिरजे हैं, कि सिरजनहार ने उन्हें कुछ ऐसे अधिकार प्रदान किए हैं जो छीने नहीं जा सकते और इन अधिकारों में जीवित रहने, स्वाधीन रहने और सुख-समृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहने के अधिकार भी शामिल हैं। इन्हीं अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए मानव समाज में शासन-तन्त्रों की स्थापना होती है जिसमें शासितों की स्वीकृति से शासन को यथोचित अधिकार प्रदान किये जाते हैं। जब

कभी कोई शासन-तन्त्र इन लक्ष्यों के प्रति घातक सिद्ध होने लगता है, तब जनता को इस बात का पूरा हक प्राप्त है कि उसे बदले या समाप्त कर दे और एक ऐसे नए शासन की स्थापना करे जिसकी बुनियाद ऐसे सिद्धान्तों पर हो और जिसका गठन इस प्रकार का हो जिससे उन्हें पूर्ण सुरक्षा और प्रसन्नता का आश्वासन मिलता प्रतीत होता हो।"

ये 'सत्य' जैफर्सन के दिमाग की उपज न थे। वे उस राजनीतिक सिद्धान्त के मूलाधार थे जिसे उनके समकालीन और बाद के लोगों ने 'स्वयंसिद्ध' माना था। उनकी इस विशिष्ट विचारधारा और व्यक्त करने की विशिष्ट शब्दावली के सूत्र थे अंग्रेजी राजनीति के दर्शन शास्त्रियों के ग्रन्थ, विशेषतः, जेम्स हैरिंग्टन कृत 'ओसियाना', जान लाक का 'सेकेण्ड ट्रीटाइज आन गवर्नमेण्ट' आदि। लेकिन आलेख के भावना पक्ष का उद्गम-सूत्र थी जनता की वह जागरूकता कि "सरकार लोगों के लिए है न कि लोग सरकार के लिए"। जैफर्सन के अनुसार सरकार का काम है जनता की उनके जीवन की रक्षा, स्वाधीनता की रक्षा और सुख-समृद्धि के लिए उनके प्रयासों में सहायता करना न कि उनका दमन करना या प्राप्त अधिकारों का दुरुपयोग करना।

स्वाधीनता की घोषणा सम्बन्ध-विच्छेद की सूचना से भी कहीं ज्यादा उपयोगी सिद्ध हुई। इसमें व्यक्त किए गए विचारों से जनता में एक नयी चेतना, एक नया उत्साह लहरा उठा। क्योंकि उसने जनता को अपना महत्व समझने के साथ ही अपनी स्वतन्त्रता, स्वशासन और समाज में सम्मानप्रद स्थान के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा भी दी थी। इसमें विशेष रूप से अंग्रेज राजा जार्ज तृतीय को केन्द्रबिन्दु बनाया गया। झगड़े ने व्यक्ति-व्यक्ति के बीच होने वाले विवाद का रूप ले लिया था। अब संघर्ष कुछ निर्जीव कानूनों और अमूर्त संसद के विरुद्ध नहीं रह गया था वरन् हाड़मांस से बने एक व्यक्ति विशेष से था। साधारण जनसमुदाय को संघर्ष का वैयक्तिक कारण और व्यक्तिगत शत्रु प्रदान करके घोषणा-पत्र के विचारों ने क्रान्ति को लोकप्रिय बनाने के साथ जनता की अपरिमित शक्ति से मजबूत बना दिया।

क्रान्ति युद्ध ६ वर्ष से भी ज्यादा काल तक चलता रहा। हरेक उपनिवेश में लड़ाइयां हुईं। कोई एक दर्जन महत्वपूर्ण और घमासान युद्ध हुए। स्वाधीनता की घोषणा के पहले भी कुछ सैनिक कार्रवाइयां की गयी थीं जिन्होंने इस युद्ध की सम्भावना बढ़ाने में काफी महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। १७७६ की फरवरी में नार्थ कैरोलाइना के राजभक्तों को कुचला गया। मार्च में बास्टन से ब्रिटिश सेना को दबाव डालकर बाहर निकाला गया। घोषणा के कुछ महीनों बाद तक अमरीकियों को अनेक असफलताओं का सामना करना पड़ा। पहली नाकामयाबी न्यूयार्क में मिली। वाशिंगटन ने शुरू में ही कह दिया था कि अंग्रेजी सेनाओं का पहला निशाना न्यूयार्क होगा क्योंकि न्यूइंग्लैण्ड को वहीं से सैनिक सामग्री और सहायता मिलती थी। फिर भी, अंग्रेज सेनापति जनरल सर विलियम होव ने तुरंत ही उस पर हमला नहीं किया। अमरीका का मित्र होने के नाते उसने साम व दण्ड दोनों के उपयोग के लिए तैयार होकर यह प्रस्ताव रखा कि यदि विद्रोही लड़ाई बन्द कर दें तो उन्हें राजा की ओर से क्षमा कर दिया जायगा। किन्तु वह स्वाधीनता के उपभोग का आश्वासन न दे सका। उसका प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया गया और ३० हजार अंग्रेज सैनिकों और अंग्रेजी नौसेना का मुकाबला वाशिंगटन के १८ हजार स्थल सैनिकों को करना पड़ा।

न्यूयार्क की रक्षा स्पष्टतः एक दुराशा मात्र थी किन्तु वाशिंगटन ने महसूस किया कि उन्हें उस शहर को बिना युद्ध किए आसानी से नहीं छोड़ना चाहिए। जो युद्ध हुआ उसमें वाशिंगटन की योजना त्रुटिपूर्ण सिद्ध हुई। उसके सेनापतियों ने अपना नियत कार्य नहीं किया। अंग्रेजों की संख्या अधिक थी। स्थिति नाजुक प्रतीत हुई और वाशिंगटन छोटी-छोटी नावों के सहारे नदी पार कर अपनी टुकड़ी सहित ब्रुकलिन से मैनहट्टन तट की ओर आ गया। सौभाग्य से हवा का रुख उत्तर की ओर था इसलिए अंग्रेजों का जंगी बेड़ा ईस्ट नदी के भीतर ऊपर की ओर नहीं आ सका। होव को वस्तुतः कभी पता न चल सका कि हो क्या रहा है और कदाचित इसीलिए अमरीकी लोगों को करारी मात देने का सुनहरा मौका उसके हाथ से निकल गया। क्योंकि यदि उस समय वाशिंगटन की सेना पकड़ी जाती तो कांग्रेस के लिए दूसरी सेना तैयार करना कठिन हो जाता।

हालांकि वाशिंगटन को निरन्तर पीछे हटना पड़ रहा था किन्तु उसने अपनी सेना को वर्ष के अन्त तक पूरी तरह संगठित रखा। ट्रेन्टन और प्रिन्सटन की जीतों से उपनिवेशों की आशा-वल्लरी पुनः हरी हो उठी। किन्तु दुर्भाग्य का एक जबर्दस्त झोंका और आया। सितम्बर १७७७ में होव ने फिलाडेल्फिया पर अधिकार कर लिया और वाशिंगटन को वैलीफोर्ज में अपने सैनिकों सहित मायूसी के साथ सर्दियां बिताने पर विवश होना पड़ा। अपने शिविरों की आग के सामने ठिठुरते तथा बर्फ पर अपने रक्तिम पदचिन्ह छोड़कर भागते हुए निराश देशभक्त सैनिक अपनी पराजय के कगार पर जान पड़ते थे।

दूसरी ओर १७७७ में ही अमरीकियों की एक बड़ी जीत भी हुई। सैनिक

दृष्टि से इसने क्रान्ति को एक मनोवांछित मोड़ प्रदान किया। अंग्रेज सेनापति बरगोयन अपनी सेना के साथ शेम्प्लेन झील से लेकर हडसन नदी तक के क्षेत्र पर अधिकार करके न्यूइंग्लैण्ड को अन्य उपनिवेशों से कतई अलग कर देने के उद्देश्य से केनाडा से भेजा गया। हडसन नदी के उत्तरी भाग में पहुँच कर उसे सितम्बर के मध्य तक रसद आदि की प्रतीक्षा में रुकना पड़ा। अमरीका के भूगोल से अपरिचित होने के कारण उसने सोचा कि वरमाण्ट को पार करके कैनेक्टिकट नदी के किनारे-किनारे जाकर रास्ते में कोई १३ सौ घोड़े तथा मांस, पशु तथा गाड़ियां एकत्र करके लौट आने का काम एक छोटी टुकड़ी द्वारा दो सप्ताह में आसानी के साथ किया जा सकता है। साधन जुटाने के इस साहसिक कार्य के लिए उसने ३७५ होशियन ड्रगून (बिना घोड़े के) और लगभग ३०० टोरी चुने। वे वरमाण्ट पंक्ति तक भी न पहुँच पाए। स्थानीय मिलिटिया से उनकी टक्कर हुई और कुछ थोड़े से होशियन ही जान बचाकर लौट पाए। इसी बीच मोहाक की घाटी में मौजूद अमरीकी सैनिकों ने उन अंग्रेज सेनाओं को भी रोक दिया जो ईरी झील से बरगोयन की सेना से मिलने जा रही थीं।

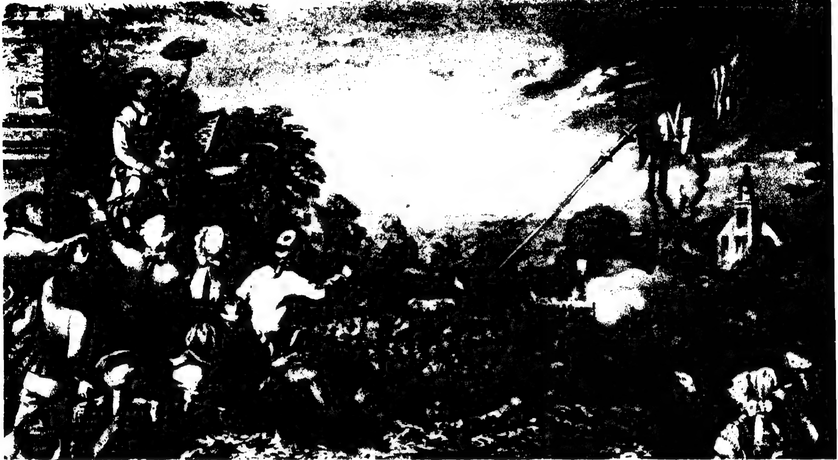
विजय और स्वाधीनता की प्राप्ति

वरमाण्ट के युद्ध में उत्तरी न्यू इंग्लैण्ड के लगभग सभी युद्धचितेरे निवासी शामिल हो गए थे। बरगोयन द्वारा की गयी देर ने वाशिंगटन को हडसन के निचले भागों में नियमित सेना भेजने का मौका प्रदान कर दिया। जब तक बरगोयन अपनी विशाल सेना के साथ आगे बढ़ा उसका सामना करने के लिए वहां की यांकी मिलिटिया तैयार थी। यह सेना अपने साथियों की कामयाबी से उत्साहित थी, इसमें प्रशिक्षित व नियमित सैनिक तो थे ही साथ ही इसे अनुभवी जानकार निर्देशकों का नेतृत्व भी प्राप्त था। सुबह के पाले के साथ ही युद्ध प्रारम्भ हुआ। बरगोयन के दो आक्रमण विफल कर दिए गए। अंग्रेजों को सराटोगा की ओर भागना पड़ा। शरदकालीन वर्षा शुरू हो चुकी थी। अनेक होशियन सिपाही भाग गए। अंग्रेजों को अपने चारों ओर विशाल संख्या में अमरीकी दिखायी देने लगे। १७ अक्तूबर, १७७७ को बरगोयन ने अपने ५ हजार से अधिक सैनिकों की विशाल सेना के साथ अमरीकी सेनापति जनरल गेट्स के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। यह युद्ध का एक निर्णायक प्रहार था क्योंकि इसका न केवल सामरिक महत्व था वरन् इससे प्रभावित होकर इंग्लैण्ड का पुश्तैनी शत्रु फ्रांस अमरीका की ओर आ गया।

फ्रांस अपनी १७६३ की पराजय के बाद से ही बदला लेने की फिराक में मौन बैठा था। अमरीका के मामले में भी उसका उत्साह काफी बढ़ा हुआ था। फ्रांस का बौद्धिक जगत, हालांकि गणतन्त्रवादी विचारधारा से अब भी काफी दूर था फिर भी सामन्तवादी व्यवस्था और विशेषाधिकारों से खिन्न था। स्वाधीनता की घोषणा के उपरान्त फ्रांस के दरबार में बेंजामिन फ्रेंकलिन का भव्य स्वागत हुआ। फ्रांस सरकार शुरू से ही तटस्थ न थी। वह संयुक्त राज्य (अमरीका) को सैन्य सामग्री व रसद की मदद दे रही थी। किन्तु प्रत्यक्षतः इंग्लैण्ड से युद्ध छेड़ने की जोखिम नहीं उठाना चाहती थी। बरगोयन के आत्मसमर्पण के बाद फ्रेंकलिन व्यापार व मैत्री सन्धियां करने में सफल हुआ और दोनों राष्ट्रों ने संकल्प किया कि जब तक अमरीकी स्वाधीनता को मान्यता नहीं मिल जाती वे एक साथ मिल कर उसके लिए संघर्ष करेंगे। इसके पहले ही बहुत से फ्रांसीसी स्वयंसेवक अमरीका के सहायतार्थ चल पड़े थे। इनमें सब से प्रमुख था मार्क्विस द लाफायेत। वह एक नौजवान सेना अधिकारी था। अमरीकी स्वाधीनता को बढ़ावा देने, फ्रांस को ऊँचा सम्मान प्रदान करने, इंग्लैण्ड को नीचा दिखाने और इन सबके साथ ही अपनी सैन्य सम्बन्धी योग्यता का प्रदर्शन करने की महत्वाकांक्षाओं के साथ वह वाशिंगटन की सेना में अवैतनिक जनरल के पद पर भर्ती हुआ। वहां उसने ईमानदारी और लगन के साथ काम किया और जिस 'महान अमरीकी' की वह आदर्श पुरुष की भांति उपासना सा करता था उसी वाशिंगटन ने उसे समुचित सम्मान और आदर प्रदान किया।

१७७९-८० की शरद ऋतु में लाफायेत वर्सिलेज गया। वहां उसने अपनी सरकार को इस बात के लिए राजी करने का ठोस प्रयास किया कि वह अमरीका में चलने वाले युद्ध को समाप्त करने के लिए कुछ वास्तविक प्रयत्न करे। शीघ्र ही लुई १६वें ने जनरल रोशेम्ब्यू के नेतृत्व में ६००० जवानों की श्रेष्ठतम आक्रमक सेना भेजी। साथ ही, फ्रांसीसी नौसेना ने अंग्रेज सेनाओं को भेजी जाने वाली रसद आदि के संभरण को और भी कठिन बना दिया। फ्रांस और अमरीकी ध्वंसकारी जहाजों ने, जिन्हें उस समय 'प्राइवेटियर्स'' के नाम से पुकारा जाता था, अंग्रेजी व्यापार को भी तहस-नहस कर डाला। इस साहसिक कार्य के सिलसिले में बहादुर फ्रांसीसी नौ-कप्तान जान पाल जोन्स का नाम बहुत ही प्रसिद्ध है। स्पेन और निदरलैण्ड के युद्ध-प्रवेश से भी अंग्रेजों की हानि हुई।

फिर भी, अंग्रेजी सेनाओं ने बिना घमासान युद्ध किये मैदान नहीं छोड़ा। १७७८ में उन्हें फ्रांसीसी जंगी बेड़े के भय के कारण फिलाडेल्फिया छोड़ने पर



४ जुलाई १७७६ को फ़िलाडेल्फ़िया में स्वतन्त्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर होने के उपलक्ष में धूमधाम से उत्सव मनाया गया और तरह-तरह के रंगीन झण्डे फहराए गए।



लार्ड कार्नवालिस का आत्मसमर्पण, १९ अक्तूबर १७८१

विवश कर दिया गया। इस साल उन्हें आहायो वैली में और भी कई बार मुंह की खानी पड़ी। इससे उत्तर-पश्चिमी इलाकों में अमरीकी आधिपत्य निर्विघ्न हो गया। किन्तु दक्षिण में अंग्रेजों का दबाव जारी था। १७८० में सुप्रसिद्ध दक्षिणी बन्दरगाह चार्ल्सटन पर उनका कब्जा हो गया। कुछ समय के लिए कैरोलाइना प्रदेश भी उनके हाथ में आ गया। अगले साल उन्होंने वर्जिनिया पर अधिकार करने का प्रयत्न किया परन्तु उस वर्ष की गर्मियों में फ्रांसीसी नौसेना का चेसापीक की खाड़ी और अमरीकी समुद्र तट पर अस्थायी अधिकार हो गया। वाशिंगटन और रोशेम्ब्यू की सेनाएँ जल-मार्ग से खाड़ी के दक्षिण में होती हुई मित्र सेनाओं से मिल गयीं और कुल मिला कर उनकी संख्या १५ हजार हो गयी। इस विशाल सेना ने लार्ड कार्नवालिस के ८ हजार सैनिकों को वर्जिनिया के तट पर यार्कटाउन में घेर लिया। १९ अक्तूबर, १७८१ को कार्नवालिस ने आत्मसमर्पण कर दिया और इसके साथ ही क्रांति को रोकने वाले सैनिक प्रयत्नों का अन्त हो गया।

यार्कटाउन में अमरीका की जीत का समाचार जब यूरोप पहुँचा तो इंग्लैण्ड के हाउस आव कामन्स में युद्ध समाप्त करने का प्रस्ताव पास किया गया। इसके तुरंत बाद प्रधान मन्त्री लार्ड नार्थ ने इस्तीफा दिया और राजा ने एक नयी सरकार बनाकर उसे अमरीकी स्वाधीनता के आधार पर शान्ति-सन्धि करने का दायित्व सौंपा। अप्रैल, १७८२ में शान्ति की वार्ता शुरू हुई और नवम्बर तक चली। नवम्बर में अंग्रेजों के साथ प्रारम्भिक सन्धियों पर हस्ताक्षर हुए। किन्तु इन सन्धियों पर अमल तब तक नहीं हो सकता था जब तक फ्रांस भी इंग्लैण्ड से सन्धि न कर ले। १७८३ में अन्तिम और निश्चित रूप से सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर किए गए। सन्धि में अमरीका के १३ राज्यों की स्वतन्त्रता और सत्ता को मान्यता दी गयी। मिसिसिपी के पश्चिम की चिराकांक्षित भूमि भी उन्हें प्रदान की गयी और उत्तर में लगभग वही सीमा मानी गयी जो आज तक मौजूद है। कांग्रेस से राज्यों से इस बात की सिफारिश करने को कहा गया कि वे राजभक्तों की जब्त सम्पत्तियां वापस कर दें। यूनाइटेड स्टेट्स (संयुक्तराज्य) के लोगों को यह अधिकार मिला कि वे न्यू फाउण्डलैण्ड के समुद्र में मछलियां पकड़ सकें तथा उन्हें नोवा स्कोटिया और लेब्राडोर के अनबसे इलाकों में सुखा सकें।

वैयक्तिक स्वतन्त्रता की भावना का अभिनन्दन

स्वाधीनता ने अमरीकियों को विदेशी आधिपत्य से ही मुक्त नहीं किया, वे नयी परिस्थितियों में विकसित होने वाले नए विचारों व धारणाओं के अनुसार एक नए समाज का निर्माण करने के लिए स्वतन्त्र भी थे। विद्रोह के समय हालांकि उपनिवेश इंग्लैण्ड के संविधान के अनुसार अपने अधिकारों की मांग कर रहे थे किन्तु सच्चे अर्थों में वे अपना एक नया राजनीतिक दर्शन प्राप्त करने का संघर्ष कर रहे थे। वह दर्शन था स्वयं जनता का स्वशासन—अमरीकी लोकतन्त्र का यह बुनियादी सिद्धान्त है। एक दूसरा राजनीतिक सिद्धान्त भी उन्हें प्रिय था—स्थानीय स्वशासन का सिद्धान्त अर्थात् हजारों मील दूर बनाए गए कानूनों से शासित न होने का विचार। अमरीकी भावना ने मनुष्य-मनुष्य के बीच के कानूनी भेदों के उन्मूलन को बढ़ावा दिया। मताधिकार हालांकि क्रान्ति के तुरंत बाद सीमित हो था किन्तु प्रत्येक दशाब्दी में उसका तब तक विस्तार होता रहा जब तक कि हर नागरिक को वह अधिकार प्राप्त न हो गया। 'मनुष्य के अधिकारों' की भावना संसार भर में फैली और ४० वर्षों के भीतर ही महाद्वीपीय अमरीका के स्पेनी उपनिवेशों ने इंग्लैण्ड के उपनिवेशों का ही अनुसरण किया। यूरोप से नयी दुनिया के आप्रवास में उन्हें उनकी चिराभिलाषित राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त हुई। क्योंकि क्रान्ति का उपसंहार होते ही संसार के सभी भागों से स्वतन्त्रता के प्रेमी अमरीका आए। युद्ध के जमाने में ही फ्रैंकलिन ने फ्रांस में यह भविष्यवाणी की थी कि शेष संसार में अत्याचार इतने सामान्य रूप से स्थापित हो चुका है कि अमरीका के स्वतन्त्रता के प्रेमियों का आश्रय स्थान बनने की आशा बड़ी ही मधुर और मोहक है।"

वर्षों बाद नार्वे निवासी हेनरिख स्टिफेन्स ने अपने बचपन के उस दिन के विशेष संस्मरण लिखे जब औपनिवेशिक विजय का समाचार डेनमार्क में पहुँचा था।

उन्होंने लिखा: "मुझे वह दिन भलीभांति याद है जब स्वाधीनता संघर्ष की विजय और शान्ति-समापन का उत्सव मनाया जा रहा था। मौसम साफ था। बन्दरगाह पर सभी जहाज और नौकाएं सजायी गयी थी। उनके मस्तूलों पर झण्डियां लहरा रही थीं।....पिता जी ने घर में कुछ मेहमानों को आमन्त्रित किया था और प्रचलित रिवाज के बिल्कुल विपरीत हम बालकों को भी मेज पर बुला लिया गया था। पिता जी ने उत्सव का महत्व बताया, हमारे गिलासों को भी पंच नामक मदिरा-पेय से भर दिया गया। और हमने नए गणतन्त्र की सफलता की मंगल कामना करते हुए पेय ग्रहण किया। हमारे बागीचे में एक डेनिश और एक उत्तरी अमरीका का ध्वज फहरा रहा था। सभी लोग इस विजय के बाद की सम्भावित महान घटनाओं की परिकल्पना कर रहे थे। वह इतिहास के एक रक्तिम दिवस का मैत्रीपूर्ण विहान था।"

अध्याय ३

राष्ट्रीय सरकार का स्वरूप निर्माण

"धरती के हर व्यक्ति और व्यक्तियों के हरेक समुदाय को स्वशासन का अधिकार है।"

—टामस जैफ़र्सन, १७९०

इंग्लैण्ड के विरुद्ध कामयाब होने वाली क्रान्ति ने अमरीकी जनता को राष्ट्रों के परिवार में एक स्वतन्त्र स्थान प्रदान किया। इससे उनकी समाज-व्यवस्था में भी परिवर्तन हुआ। वंश परम्परा और विशेषाधिकारों का महत्व गिर गया और मानवीय समानता को तरजीह दी गयी। सम्मिलित आशा और संघर्ष की सहस्रों स्मृतियां उनके मन-मानस पर छायी हुई थीं। इनमें सबसे बड़ी देन क्रान्ति की वह चुनौती थी कि उन्हें यह सिद्ध करना था कि उनमें अपना नया स्थान सुरक्षित रखने की योग्यता तथा स्वशासन के लिए अपेक्षित क्षमता मौजूद है।

क्रान्ति की सफलता से अमरीकी-जनों को यह मौका मिला था कि वे स्वतन्त्रता की घोषणा में व्यक्त किए गए विचारों व सिद्धान्तों को वैधानिक रूप व अभिव्यक्ति दे सकें और राज्यों की विधान-सभाओं द्वारा कुछेक शिकायतों को रफ़ा कर सकें। संयुक्तराज्य अमरीका के चौथे राष्ट्रपति जेम्स मेडिसन ने लिखा था, "अमरीका में जिस प्रकार स्वतन्त्र सरकारों की स्थापना हुई है उससे अधिक प्रशंसा किसी ने नहीं प्राप्त की, क्योंकि यह पहला मौका था...जब कि स्वतन्त्र निवासियों को स्वशासन के स्वरूप पर विचार करने तथा उसके संचालन के लिए विश्वासपात्र नागरिकों का चुनाव करते हुए देखा गया था।"

आज अमरीकी जन लिखित संविधान के अनुसार चलने व काम करने के इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि वे उसकी हर बात को सुनते ही सही मान लेते हैं। तो भी, लिखित संविधान की परम्परा का विकास अमरीका में ही हुआ और वह इतिहास के सर्वप्रथम संविधानों में से एक है। अमरीका के दूसरे राष्ट्रपति जान एडम्स ने लिखा था: "सभी स्वतन्त्र राज्यों में संविधान ही अन्तिम प्रमाण है।" हर जगह अमरीकीजनों ने एक ऐसे स्थायी कानून की मांग की जिसके अन्तर्गत मुक्त रूप से जीवन यापन किया जा सके। १० मई, १७७६ को कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पास करके उपनिवेशों को यह अधिकार दे दिया कि वे ऐसी नयी सरकारों का गठन करें जो अपने नागरिक को अधिक से अधिक सुख व सुरक्षा प्रदान कर सकें। कुछ तो पहले ही ऐसा कर चुके थे और स्वाधीनता की घोषणा के उपरान्त वर्ष भर के भीतर तीन को छोड़ कर हरेक राज्य ने संविधान बना लिया।

इन आलेखों की रचना ने लोकतन्त्रीय तत्वों को अपनी शिकायतों के निवारण करने तथा ठोस मजबूत शासन की अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति करने का अवसर प्रदान किया। बनने वाले अधिकतर संविधानों में लोकतन्त्रीय विचारधारा का प्रभाव परिलक्षित होता था हालांकि किसी में अतीत से नाता नहीं तोड़ा गया था क्योंकि उनकी रचना उन अमरीकियों द्वारा की गयी थी जिनकी पृष्ठभूमि में औपनिवेशिक जमाने के अनुभव, अंग्रेजी आचार-व्यवहार और फ्रांसीसी राजनीतिक दर्शन था। निस्सन्देह, राज्यों के संविधानों के मसविदों की रचनाओं से ही क्रान्ति को पूर्णता प्राप्त हुई। जैसा कि स्वाभाविक है संविधान की रचना करने वालों का पहला लक्ष्य उन अनअपहरणीय अधिकारों' की सुरक्षा करना था जिनके अपहरण के कारण उन्हें इंग्लैण्ड से सम्बन्ध तोड़ने पड़े थे। परिणामत:, हरेक संविधान का प्रारम्भ 'अधिकारों की घोषणा' से किया गया। वर्जिनिया के संविधान में, जिसके आधार पर अन्य सभी राज्यों के संविधानों की रचना हुई थी, इस प्रकार के सिद्धान्तों की तालिका भी दे दी गयी थी। उदाहरणार्थ, जनता की प्रभुसत्ता, पदाधिकारियों का बदलते रहना, निर्वाचन की स्वतन्त्रता और मौलिक अधिकारों का विस्तृत उल्लेख—साधारण जमानत और मानवीय दण्ड, स्थायी सेना के बजाय मिलिटिया, मुकदमों का वैधानिक तरीकों से शीघ्र निर्णय, जूरियों द्वारा अभियोग पर विचार करने, लिखने, व प्रकाशन करने की स्वतन्त्रता, बहुमत द्वारा शासन में सुधार करने या उसे बदलने का अधिकार तथा बिना नाम के वारंटों को जारी करने का निषेध। दूसरे राज्यों में इस तालिका में कुछ और वृद्धि की गयी। भाषण व सभा करने की स्वतन्त्रता, प्रार्थना-पत्र या अपील करने का अधिकार, शस्त्र रखने की स्वतन्त्रता, हेबियस कार्पस की अपील दाखिल करने, सबके लिए समान रूप से कानून का उपयोग करने आदि के अधिकार और शामिल किए गए। इसके साथ ही प्रत्येक राज्य के संविधान में शासन की कार्यकारी,

विधिकारी और न्यायकारी शाखाओं के सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए यह माना गया कि इनमें से प्रत्येक शाखा दूसरी दोनों शाखाओं की निगरानी करने के साथ ही आपस में सन्तुलन बनाए रहे।

जिस समय तेरह मूल उपनिवेश राज्यों में परिणत होने के साथ-साथ स्वतन्त्रता की नयी स्थितियों के साथ समञ्जन कर रहे थे उस समय समुद्र तट की बस्तियों के पश्चिम में दूर-दूर तक फैले प्रदेश में नए गणतन्त्रों का विकास हो रहा था। देश की सर्वोत्तम मृगया और समृद्धिशाली भूमि के लालच में अग्रगामी लोग अल्लाचियन पर्वत के पश्चिम की ओर भारी तादाद में बढ़ते चले गए। १७७५ तक जलमार्गों के किनारे-किनारे दूर-दूर तक दसियों हजार लोग बस चुके थे। इन बाशिन्दों और पूर्व के राजनीतिक सत्ता केन्द्रों के बीच पर्वत मालाएँ तथा सैकड़ों मील की दूरी थी। इसलिए उन्होंने अपनी निजी सरकारों का गठन किया और यहां के समाज फूलते-फलते गये। जिन तटों पर समुद्री तूफान से क्षति की आशंका रहती थी वहां के निवासी भीतरी प्रदेशों में नदियों की उर्वर घाटियों, पक्की लकड़ी के जंगलों और 'पैरी' क्षेत्रों में जाकर बसने लगे। १७९० तक अल्लाचियन पर्वतों के पार की आबादी १ लाख २० हजार से ज्यादा हो गयी।

नए राष्ट्र की समस्याएं

क्रान्ति का समापन होते ही संयुक्तराज्य अमरीका के सामने एक पुराना अनसुलझा पश्चिमी प्रश्न मौजूद था। भूमि, फर के व्यापार, आदिवासी इण्डियनों, बस्तियों और अधीन क्षेत्रों की शासन व्यवस्था सम्बन्धी अपनी तमाम जटिलताओं के साथ 'साम्राज्य' की समस्या सामने थी। युद्ध के पूर्व अनेक उपनिवेश अल्लाचियन पर्वतों के आगे की भूमि पर बड़े-बड़े और परस्पर मिश्रित दावे कर रहे थे। इन राज्यों को इस समृद्ध भूमि के मिल जाने की सम्भावना में उन राज्यों को अनौचित्य दीख पड़ा जो पश्चिम के लिए ऐसा कोई दावा नहीं कर सकते थे। इन राज्यों के प्रवक्ता के रूप में मेरीलैण्ड ने एक प्रस्ताव पास करके यह मांग की कि पश्चिमी भूमि को सम्मिलित सम्पत्ति माना जाय और कांग्रेस उसे स्वतन्त्र और स्वाधीन सरकारों में विभाजित कर दे। इस विचार का अच्छा उत्साहपूर्ण स्वागत नहीं हुआ। १७८० में न्यूयार्क ने संयुक्त राज्य के हक में अपना दावा वापस करके मार्ग प्रदर्शन किया। शीघ्र ही अन्य उपनिवेशों ने भी उसका अनुसरण किया और युद्ध के अन्त तक यह प्रतीत होने लगा कि आहायो नदी के उत्तर तथा सम्भवतः अलबेनी पर्वतों के पश्चिम की समस्त भूमि कांग्रेस



अमरीका के तीसरे राष्ट्रपति तथा स्वतन्त्रता की घोषणा के लेखक टामस जेफर्सन।

के अधिकार में आ जायेगी। लाखों करोड़ों एकड़ भूमि की यह सम्मिलित मिल-कीयत एकता और राष्ट्रीयता की प्रत्यक्ष साक्षी थी। युद्धकाल के संकटमय वर्षों में इसने राष्ट्रीय प्रभुसत्ता के विचार को भी बल प्रदान किया। फिर भी, यह एक बड़ी समस्या थी जिसका समाधान आवश्यक था।

यह समाधान 'आर्टिकिल्स आव कान्फेडरेशन' द्वारा प्राप्त किया गया। यह एक ऐसा औपचारिक करार था जिसने १७८१ में उपनिवेशों को एक शिथिल सूत्र में बांध रखा था। इन आर्टिकिलों (अनुच्छेदों) के अनुसार नयी पश्चिमी भूमियों के मसले में स्वशासन की एक सीमित प्रणाली अपनाई गयी। इस प्रकार जंगल जैसी स्थिति और राज्य व्यवस्था के बीच की खाई सन्तोषजनक ढंग से पाटी गयी। यह प्रणाली १७८७ के 'नार्थ वेस्ट आर्डिनेन्स' द्वारा घोषित की गयी और उसके बाद महाद्वीप के सभी राज्यक्षेत्रों तथा संयुक्त राज्य के अधीन ज्यादातर द्वीपों पर लागू की गयी। १७८७ के अध्यादेश में उत्तर-पश्चिम के राज्य क्षेत्र को एक जिले के रूप में संगठित करने तथा कांग्रेस द्वारा नियुक्त गवर्नर और न्यायाधीशों द्वारा उसके प्रशासन की व्यवस्था की गयी थी। अध्यादेश में यह भी कहा गया था कि जब इस राज्य-क्षेत्र में मत देने योग्य आयु के ५ हजार से अधिक पुरुष हो जायेंगे तब इसे दो सदनों की विधान सभा बनाने का अधिकार दिया जायेगा जिसमें से लोअर हाउस (नीचे का सदन) के सदस्य यहां के लोगों द्वारा चुने जायेंगे। साथ ही, उस समय यह राज्य क्षेत्र कांग्रेस को अपना एक प्रतिनिधि भी भेज सकेगा जिसे वहां मत देने का अधिकार नहीं होगा। इस राज्य क्षेत्र में अधिक से अधिक ५ और कम से कम ३ राज्य बनाए जा सकेंगे और जब उनमें से किसी भी राज्य में ६० हजार से अधिक स्वतन्त्र निवासी रहने लगेंगे तो उसे 'सभी मामलों में मूल राज्यों के समान आधार पर' यूनियन में शामिल कर लिया जायेगा। मूल राज्यों और इस राज्य-क्षेत्र के निवासियों के बीच हुए करार के छः अनुच्छेदों द्वारा नागरिक अधिकारों और स्वतन्त्रताओं के आश्वासन के साथ ही शिक्षा को प्रोत्साहन तथा इस बात की गारेण्टी भी दी गयी कि "इस राज्य-क्षेत्र में न तो दास व्यवस्था रहेगी और न किसी से उसकी इच्छा के विपरीत श्रम कराया जायेगा।"

इस तरह समानता के सिद्धान्त पर आधारित एक नयी औपनिवेशिक नीति का समारम्भ हुआ। नयी नीति ने एक जमाने में सम्मान से देखे जाने वाले इस सिद्धान्त का खण्डन किया कि उपनिवेशों का अस्तित्व मातृदेश के लिए ही है और वे राजनीतिक दृष्टि से अधीन व सामाजिक दृष्टि से हीन हैं। इस धारणा के बजाय यह विचार स्वीकार किया गया कि उपनिवेश मूल राष्ट्र के ही विस्तार-भाग हैं, उन्हें समानता सम्बन्धी सभी लाभ विशेष कृपा के रूप में नहीं वरन अधिकार के रूप में प्राप्त होना चाहिए। अध्यादेश की व्यवस्थाओं द्वारा अमरीका की राजक्षेत्र सम्बन्धी पद्धतियों तथा औपनिवेशिक नीति की नींव पड़ी और इन्होंने ही उसे इस योग्य बनाया कि वह पश्चिम में प्रशान्त महासागर तक विस्तार पा सके तथा १३ राज्यों के राष्ट्र से ५० राज्यों के राष्ट्र तक, सापेक्षतया स्वल्प कठिनाइयों के साथ, विकास कर सके।

शासन सम्बन्धी नयी धारणाओं की आवश्यकता

फिर भी, दुर्भाग्यवश अन्य समस्याओं को सुलझाने में 'आर्टिकिल आव कान्फेडरेशन' निराशाजनक सिद्ध हुए। उनमें सर्वथा स्पष्ट कमी यह थी कि वे उन तेरह राज्यों को सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय सरकार नहीं प्रदान कर सके जो १७७६ से, जब कि उनके प्रतिनिधि अंग्रेजी सत्ता के अतिक्रमण से अपनी स्वतन्त्रताओं की रक्षार्थ मिले थे, गम्भीरता के साथ एक होने की चेष्टा में थे। इंग्लैण्ड से हुए युद्ध के दबाव ने उनके बीस वर्ष पहले के उस रवैये को काफी बदल दिया था जब उपनिवेशों की विधान सभाओं ने राज्यों का संघ बनाने की 'अलबानी योजना' को रद्द किया था। उस समय तो वे अपनी स्थानीय स्वाधीनता का क्षुद्र से क्षुद्र भाग भी किसी संस्था को देने के तैयार न थे, भले ही उस संस्था के लोगों का चुनाव उन्होंने स्वयं ही क्यों न किया हो। किन्तु, क्रान्ति के दौरान में पारस्परिक सहायता फलोत्पादक व हितकारी सिद्ध हुई और वैयक्तिक अधिकार लिप्सा अनेक क्षेत्रों में बहुत हद तक घट गयी।

१७८१ में अनुच्छेद लागू किए गए। यद्यपि महाद्वीपीय कांग्रेस-पद्धति द्वारा जो शासन व्यवस्था की गयी थी उससे इन अनुच्छेदों द्वारा व्यवस्थित तन्त्र काफी प्रगतिशील था, फिर भी इस शासन-तन्त्र में भी अनेक खामियां थीं। सीमारेखाओं को लेकर झगड़े होते थे। न्यायालयों के निर्णय एक-दूसरे के साथ टकरा जाते थे। मेसाचुसेट्स, न्यूयार्क और पेनसिलवानिया की विधान सभाओं ने सीमाकर सम्बन्धी ऐसे कानून बनाए जिनसे छोटे पड़ोसियों को ठेस पहुँची। अन्तर्राज्यीय व्यापार पर लगाए गए प्रतिबन्धों से परस्पर कटुता उत्पन्न हुई। उदाहरणार्थ, एक कानून के अनुसार न्यूजर्सी के लोग हडसन नदी पार करके बिना भारी चुंगी दिए न्यूयार्क के बाजारों में सब्जी आदि नहीं बेच सकते थे।

यथोचित सीमा शुल्क लगाना राष्ट्रीय सरकार का काम है, व्यापार को निय-

मित व नियन्त्रित करना भी उसी का फर्ज है लेकिन अनुच्छेदों में ऐसी कोई व्यवस्था न थी। राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कर लगाने का अधिकार भी उसे होना चाहिए, यह भी उसे प्राप्त न था। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के नियन्त्रण का अधिकार एकमात्र उसे ही होना चाहिए था, परन्तु अनेक राज्यों ने विदेशों के साथ स्वतन्त्र रूप से समझौता वार्ताएं चला रखी थीं और अनेक राज्यों के पास अपनी छोटी-छोटी नौसेनाएं भी थीं। मुद्राओं के बारे में भी एक विचित्र चपला था। लगभग एक दर्जन विदेशी राष्ट्रों ने सिक्के चला रखे थे। साथ ही राष्ट्रीय सरकार व राज्यों की ओर से विविध प्रकार के नोट व कागजी हुण्डियां भी जारी थीं जिनका उत्तरोत्तर अवमूल्यन होता जा रहा था।

युद्ध के पश्चात् की आर्थिक कठिनाइयों के कारण सर्वत्र और विशेषत: किसानों में असन्तोष फैल रहा था। बाजार में खेतिहर पैदावार की भरमार थी। कर्जदार किसानों में बेचैनी थी। वे गिरवी रखी गयी अपनी सम्पत्ति को अवधि के भीतर ही छुड़ा लेने अथवा कर्ज न देने पर कैद भुगतने के विरुद्ध कुछ ठोस कारंवाइयों की मांग कर रहे थे। अदालतों में कर्जा सम्बन्धी मुकदमों का तांता लगा था। १७८६ की गर्मियों में कई राज्यों की जनता ने विशेष परिषदें बनाकर और सभाएँ बुलाकर राज्यों को प्रशासन में सुधार की मांग पेश की। बहुत से किसान कर्ज न दे पाने के कारण जेल भुगतने या वंशपरम्परागत खेती की हानि से घबराकर हिंसा पर उतर आये।

मैसाचुसेट्स में तो एक भूतपूर्व सैनिक कैप्टेन डैनियल शेज के नेतृत्व में किसानों के झुण्ड के झुण्ड १७८६ की शरद ऋतु में जिला अदालतों को, राज्य का अगला चुनाव होने तक कर्ज सम्बन्धी मुकदमों का निर्णय करने से रोकने लगे। राज्य सरकार ने उनका कठोर विरोध किया। कुछ दिनों तक तो यह आशंका बनी रही कि कहीं बास्टन का राजकीय दफ्तर उत्तेजित किसानों द्वारा घेर न लिया जाय। किन्तु विद्रोहियों को राज्य की मिलिटिया ने पहाड़ियों तक खदेड़ कर तितर-बितर कर दिया। विधानसभा ने विद्रोह शान्त होते ही किसानों की शिकायतों के औचित्य तथा उनके निवारण पर विचार किया।

इस समय वाशिंगटन ने लिखा कि राज्यों की एकता बालू की नींव पर टिकी हुई है और कांग्रेस का प्रभाव अत्यन्त क्षीण हो चुका है। पोटोमैक नदी में नौ-चालन के प्रश्न पर मैरिलैण्ड और वर्जिनिया के झगड़े के कारण १७८६ में ऐनापोलिस में पांच स्टेटों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन हुआ। इनमें से एक प्रतिनिधि ऐलेग्जैण्डर हैमिल्टन भी था जिसने अपने साथियों को इस बात से सहमत करा दिया कि व्यापार का प्रश्न अन्य बहुत से प्रश्नों से इतना उलझा हुआ है कि मौजूदा जटिल समस्या को यह छोटा-सा सम्मेलन नहीं सुलझा सकता। उसने उपस्थित प्रतिनिधियों से कहा कि वे सभी राज्यों से ऐसे प्रतिनिधि नियुक्त करने को कहें जिनका सम्मेलन ऐसी व्यवस्था पर विचार कर सके जो यूनियन की सभी आवश्यकताओं को पूरा करने वाला संघीय शासन प्रदान करने में समर्थ हो। महाद्वीपीय कांग्रेस पहले तो इस दबंग कार्रवाई पर खिन्न हुई परन्तु यह समाचार सुनकर शान्त हो गयी कि वर्जिनिया ने जार्ज वाशिंगटन को अपना प्रतिनिधि चुना है। अगली शीत ऋतु तक रहोड आइलैण्ड को छोड़कर शेष सभी राज्यों में प्रतिनिधियों के चुनाव हुए।

जटिल प्रश्नों पर विचार

मई, १७८७ में फिलाडेलफिया स्टेट हाउस में जो संघीय अधिवेशन हुआ उसमें विशिष्ट व्यक्तियों ने भाग लिया। राज्यों की विधान सभाओं ने चुन कर अनुभवी नेताओं को भेजा था। जार्ज वाशिंगटन क्रान्तिकाल में अपने सैनिक नेतृत्व और अपनी ईमानदारी तथा ख्याति के कारण समस्त देश के सम्मानित नागरिक माने जाते थे। उन्हें इस अधिवेशन का अध्यक्ष चुना गया। साधु आत्मा बेंजामिन फ्रैंकलिन अब ८१ वर्ष के हो चुके थे। बुढ़ापे ने उन्हें बहुत नम्र बना दिया था। उन्होंने अधिकतर बातचीत नवयुवकों को ही करने दी। परन्तु उनके दयालु हँसमुख स्वभाव और व्यापक अनुभव से अनेक प्रतिनिधियों को अनेक कठिनाइयां हल करने में सहायता मिली। अन्य सक्रिय सदस्यों में प्रमुख थे: गवर्नियर मौरिस, जो योग्य और साहसी थे और एक राष्ट्रीय शासन की आवश्यकता में असन्दिग्ध रूप से यकीन करते थे, जेम्स विल्सन, पेनसिलवानिया से आये थे और राष्ट्रीयता के विचार को पुष्टि के लिए निरन्तर व्यस्त रहते थे; वर्जिनिया का जेम्स मेडिसन जो एक व्यवहार कुशल नवयुवक राजनीतिज्ञ था और राजनीति तथा इतिहास का विद्वान था। अपने एक साथी की सम्मति में वह अपने श्रम, अध्यवसाय और तन्मयता के कारण विवाद के किसी भी प्रश्न पर सर्वाधिक जानकार व्यक्ति सिद्ध होता था। मैसाचुसेट्स ने रूफस किंग और एलब्रिज गेरी को भेजा था। वे दोनों योग्य और अनुभवी युवक थे। कनेक्टिकट का प्रतिनिधि राजर शेरमैन था जो मोची के पेशे से तरक्की करते-करते जज बन चुका था। न्यूयार्क से ऐलेग्जैण्डर हैमिल्टन आये थे। तब उनकी आयु केवल ३० वर्ष की थी परन्तु उन्हें प्रसिद्ध हुए अनेक वर्ष बीत चुके थे। औपनिवेशिक

अमरीका के जो महापुरुष वहां अनुपस्थित थे उनमें से एक टामस जैफर्सन भी थे। वे उस समय राष्ट्र के किसी काम से फांस गए हुए थे। पचपन प्रतिनिधियों में अधिकतर युवक थे और उनकी औसत आयु केवल ४२ वर्ष थी।

अधिवेशन को सिर्फ "आर्टिकिल्स आव कान्फेडरेशन" में संशोधन करने का अधिकार दिया गया था। परन्तु प्रतिनिधियों ने मैडिसन के शब्दों में 'देश के प्रति बहादुराना यकीन के साथ' उसे एक किनारे रख दिया और वे शासन के सर्वथा नए रूप की परिकल्पना में जुट गए। प्रतिनिधियों ने अनुभव किया कि इस समय सर्वाधिक आवश्यकता दो विभिन्न सत्ताओं में तालमेल लाने की है। 'पहली सत्ता है स्थानीय नियन्त्रण की जो १३ राज्यों द्वारा पहले से काम कर रही है और दूसरी सत्ता है केन्द्रीय सरकार की। उन्होंने यह सिद्धान्त स्वीकार किया कि राष्ट्रीय शासन के कर्तव्य और अधिकार चूंकि वह नए, सर्वसाधारण और सर्व सम्बद्ध है, इसलिए उन्हें स्पष्ट रूप से और सावधानी के साथ परिभाषित होना चाहिए। बाकी सभी कर्तव्य व अधिकार राज्यों के हाथ में छोड़ देने चाहिएं। उन्होंने राष्ट्रीय शासन को वास्तविक अधिकार देने की आवश्यकता भी अनुभव की और इसीलिए उन्होंने इस तथ्य को भी मान्यता दी कि अन्य कार्यों के साथ ही मुद्रा ढालने, व्यापार नियन्त्रित करने, युद्ध घोषित करने तथा सन्धि करने का अधिकार राष्ट्रीय शासन को ही रहेगा। इन कर्तव्यों की पूर्ति के लिए अनिवार्यतः राष्ट्रीय शासन के संगठन की आवश्यकता थी।

नेताओं द्वारा अधिकारों व कर्तव्यों के विभाजन का समर्थन

१८वीं शताब्दी के जो राजनयिक फिलाडेल्फिया में एकत्र हुए थे वे राजनीति में शक्ति-सन्तुलन की माण्टेस्क्यूवादी विचार धारा के समर्थक थे। इस सिद्धान्त का समर्थन औपनिवेशिक-अनुभव से तो होना ही था, साथ ही लॉक के लेख भी, जिनसे प्रतिनिधि लोग भली प्रकार परिचित भी थे, इसकी पुष्टि करते थे। इन प्रभावों के कारण सभी इस बात पर सहमत हो गए कि शासन को तीन स्पष्ट विभागों में बांट दिया जाय और उनमें प्रत्येक एक-दूसरे के समान तथा उसका पूरक हो। विधि निर्माण, प्रशासन और न्यायपालिका के अधिकारों को इस प्रकार से संजोना और परस्पर सम्बद्ध करना था कि वे एक-दूसरे के बाधक न होकर पूरक सिद्ध हों तथा परस्पर सन्तुलन बनाए रहें। साथ ही इस बात की व्यवस्था भी आवश्यक है कि इनमें कोई दूसरे पर हावी न हो सके। प्रतिनिधियों द्वारा यह मान लेना भी स्वाभाविक ही था कि उपनिवेशों की विधान सभाओं में अंग्रेजी संसद की भांति दो सदन हों।

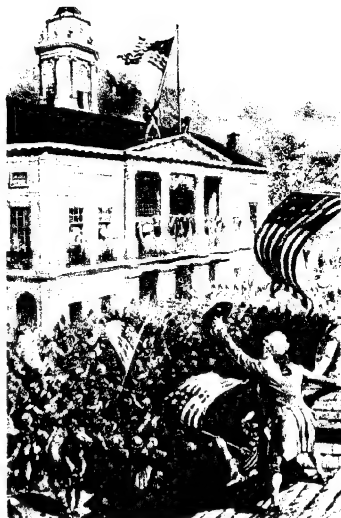
इन मोटे-मोटे और सामान्य विचारों पर सभी सहमत थे। परन्तु अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचने के उपायों पर सभा में तीव्र मतभेद खड़ा हो गया। न्यूजर्सी जैसे छोटे राज्यों के प्रतिनिधियों ने, 'आर्टिकिल्स आव कान्फेडरेशन' की राज्य के आधार पर प्रतिनिधि चुने जाने की परम्परा को बदल कर आबादी के आधार पर प्रतिनिधियों के चुनाव का विरोध किया और कहा कि इससे संघीय शासन में उनका प्रभाव घट जायगा। इसके विपरीत वर्जिनिया जैसे बड़े राज्यों के प्रतिनिधियों ने आबादी के अनुपात से प्रतिनिधित्व के सिद्धान्त का दृढ़ता से समर्थन किया। इस प्रश्न पर ऐसी बहस हुई कि लगता था मानो वह कभी खत्म ही न होगी। अन्त में, कैनेक्टिकट के प्रतिनिधि ने एक बहुत ही योग्य तर्क प्रस्तुत किया अर्थात 'कांग्रेस के एक सदन में प्रतिनिधित्व राज्यों की आबादी के अनुपात के अनुसार रखा जाय और दूसरे में सभी राज्यों के बराबर-बराबर प्रतिनिधि हों।'

इससे बड़े राज्यों का छोटे राज्यों के विरुद्ध गठबन्धन भंग हो गया। लगभग सभी नए प्रश्नों पर नए कारणों से नए गुट बनते और फिर नए समझौतों द्वारा ही मिटते। कुछ सदस्य चाहते थे कि संघीय शासन की कोई भी शाखा जनता द्वारा सीधी निर्वाचित न की जाय। दूसरे लोग चाहते थे कि निर्वाचन का आधार यथासम्भव व्यापक रहे। कुछ प्रतिनिधि फैलते हुए पश्चिमी प्रदेश को राज्य का स्तर प्राप्त करने के अवसर से वंचित रखना चाहते थे। अन्य १७८७ के अध्यादेश में निहित समानता के सिद्धान्त के पक्षपाती थे। कागज़ी मुद्रा, टेण्डर, कानूनों और इकरार-नामों की जिम्मेदारी को हानि पहुँचाने वाले कानूनों जैसे आर्थिक प्रश्नों पर अधिक तीव्र मतभेद नहीं था। किन्तु विभिन्न स्थानीय आर्थिक स्वार्थों में समन्वय लाने, कार्यपालिका विभाग के अधिकारों, कार्यकाल और अधिकारियों के चुनाव, सम्बन्धी तीव्र विवादों को हल करने तथा न्यायाधीशों के कार्य काल तथा अदालतों की किस्मों से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान की आवश्यकता सामने आई।

फिलाडेल्फिया के कठोर ग्रीष्म ऋतु में हुए इस अधिवेशन में इन समस्याओं को ईमानदारी और दृढ़ता से सुलझाया गया। अन्ततः, एक सन्तोषजनक मसविदा तैयार किया गया जिसमें अब तक की मनुष्य निर्मित सरकारों में सर्वाधिक जटिल सरकार के संगठन का संक्षेप में उल्लेख किया गया था—एक ऐसी सरकार का संगठन जो अपने क्षेत्र में सर्वोपरि थी और जिसके सीमित क्षेत्र की सुस्पष्ट परिभाषा कर दी गयी थी। १७९१ में १० वें संशोधन द्वारा यह स्पष्ट कर दिया गया था, कि जो अधिकार संविधान द्वारा संयुक्तराज्य को नहीं सौंपे गए हैं अथवा

'आर्टिकिल्स ऑव कान्फेडरेशन' में संशोधन करने के लिए जो संघीय सम्मेलन हुआ। उसकी अध्यक्षता जार्ज वाशिंगटन ने की।





३० अप्रैल १७८९ को जनसाधारण के हर्षोल्लास के मध्य जार्ज वाशिंगटन ने अमरीका के पहले राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली।

राज्यों के लिए निषिद्ध नहीं किए गए हैं वे राज्यों अथवा जनता के लिए सुरक्षित हैं। और संघीय कानूनों की सर्वोच्चता इस बात तक सीमित है कि वे "संविधानानुकूल बनाए गए हों।" राज्य अपने-अपने क्षेत्रों में समान रूप से सर्वोपरि हैं। वे किसी भी संवैधानिक अर्थ में अधीन इकाइयां नहीं हैं। चाहे वह संघीय शासन हो या राज्यीय शासन, दोनों की नींव जनता की प्रभुसत्ता के व्यापक आधार पर स्थित है। बाद के वर्षों में, संघीय अधिकार-क्षेत्र संशोधनों, निहित अर्थों, न्यायालयों द्वारा की गयी व्यवस्थाओं और राष्ट्रीय संकटों की आवश्यकताओं द्वारा व्यापक होता गया। यही बात राज्यों के अधिकार क्षेत्रों के विषय में भी कही जा सकती है। आज बीसवीं शताब्दी में भी, अमरीकी नागरिक का वास्ता संघ शासन की अपेक्षा राज्य सरकार के साथ अधिक पड़ता है। क्योंकि नगरपालिका और स्थानीय प्रशासन का नियन्त्रण, पुलिस, कारखानों व मजदूर सम्बन्धी विधायन, कम्पनियां बनाने की स्वीकृति लिखित कानून का विकास, दीवानी और फौजदारी के मामलों में न्याय, शिक्षा का नियन्त्रण और जनता के स्वास्थ्य, उसकी सुरक्षा और सुखसुविधा का ध्यान रखने आदि के सारे काम राज्य सरकारों द्वारा ही किए जाते हैं।

अधिकारों का निर्णय करते हुए अधिवेशन ने मुक्त और पूर्णरूप से संघीय शासन को कर लगाने, ऋण लेने, एक जैसी चुंगी तथा उत्पादन कर लागू करने का अधिकार दिया। संघ-सरकार को यह अधिकार भी दिया गया कि वह सिक्के चलाए, नाप-तौल के मानक निर्धारित करे, पेटेण्ट और कापीराइट की स्वीकृति दे, डाकघरों की स्थापना, संचार सम्बन्धी व्यवस्थाएं करे। स्थल व नौ सेनाएं संगठित करने और रखने तथा अन्तर्राज्यीय व्यापार को नियमित और नियन्त्रित करने के अधिकारों के साथ संघ सरकार को आदिवासी इण्डियनों के लिए व्यवस्था करने, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को बनाने, कायम रखने व तोड़ने के तथा युद्ध सम्बन्धी सभी अधिकार भी दिए गये। वह विदेशियों को नागरिक बनाने के कानून पास कर सकती थी, सार्वजनिक भूमियों पर नियन्त्रण रख सकती थी और पुराने राज्यों की बराबरी के स्तर पर नये राज्यों के संघ में शामिल कर सकती थी। इन परिभाषित अधिकारों को पूरा करने के लिए आवश्यक व सही कानून बनाने की शक्ति ने संघ-सरकार को इतना लोचशील और सुयोग्य बना दिया कि वह भावी पीढ़ियों तथा भविष्य के बहुत विस्तृत राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकी।

मंजे हुए सिद्धान्त

सरकार की इस संरचना के निर्माण में हरेक बात पर ब्रिटिश साम्राज्य के अलिखित संविधान का प्रभाव दिखायी पड़ता था। साथ ही, ऐसी एक भी धारा न थी जो तेरहों अमरीकी राज्यों में से किसी एक न एक के संविधान में अथवा औपनिवेशिक व्यवहार में सूत्र रूप में न मिलती हो। सरकारी शक्तियों को अलग-अलग विभागों में बांटने के सिद्धान्त से बहुत-सी औपनिवेशिक सरकारें परिचित थीं, अनेक राज्यों के संविधानों में उन्हें सफलतापूर्वक आंका जा चुका था। इसीलिए अधिवेशन ने एक ऐसी शासन प्रणाली निर्धारित की जिसकी विधिनिर्मात्री, कार्यकारी और न्यायकारी शाखाएँ अलग-अलग होते हुए भी एक-दूसरे पर नियन्त्रण रखती थीं। कांग्रेस द्वारा पास किए गए विधेयक तब तक कानून नहीं बन सकते थे, जब तक कि राष्ट्रपति उन पर हस्ताक्षर न कर दे। राष्ट्रपति को अपने द्वारा की गयी सारी नियुक्तियां और सन्धियां अनुसमर्थन के लिए सिनेट में पेश करनी थीं। दूसरी ओर कांग्रेस राष्ट्रपति को हटा भी सकती है और उस पर महाभियोग भी लगा सकती है अथवा कांग्रेस उस पर अभियोग लगा कर उसे दण्ड भी दे सकती है। कानून व संविधान के अन्तर्गत आने वाले सभी मुकदमों की सुनवाई न्यायपालिका का काम था। इसलिए न्यायालयों को मौलिक व विधान सभाओं द्वारा निर्मित कानूनों की परिभाषा करने का हक था। किन्तु, राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त और सेनेट द्वारा अनुसमर्थित न्यायपालिका पर कांग्रेस अधिक्षेप भी कर सकती है।

संविधान में संशोधन व परिवर्तन की भावी आवश्यकता का ध्यान रखते हुए अधिवेशन ने एक ऐसे अनुच्छेद की व्यवस्था भी की जिसमें इस प्रकार के परिवर्तन की विधि और पद्धति का उल्लेख किया गया। इस अनुच्छेद की क्रम-संख्या ५ है और इसमें संविधान को अनापशनाप परिवर्तनों से बचाने की व्यवस्था भी की गयी। तब से अब तक इसका सफल उपयोग केवल २३ बार ही हो सका है। अनुच्छेद में कहा गया है कि कांग्रेस के दोनों सदनों के दो तिहाई सदस्य अथवा अधिवेशन में शामिल राज्यों के दो तिहाई सदस्य ही संविधान में संशोधन का प्रस्ताव रख सकते हैं। ये प्रस्ताव दो तरीके से कानून बन सकते थे: तीन चौथाई राज्यों की विधान सभाओं या तीन चौथाई राज्यों के अधिवेशनों द्वारा परिशोधन करके स्वीकृत किए जाने पर। इन दोनों में से कौन-सा तरीका अपनाया जाय, इस बारे में कांग्रेस सुझाव देती है।

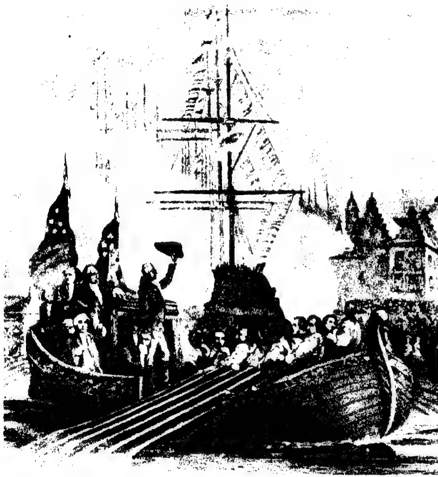
अन्ततः अधिवेशन को सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या का सामना करना पड़ा :



१८०३ में लुइजियाना क्षेत्र की खरीद से अमरीका का क्षेत्रफल दुगना हो गया और देश को मिसिसिपी नदी की घाटी का उर्वर क्षेत्र प्राप्त हुआ।



टामस जेफर्सन ने मेरीवेदर लेविस और विलियम क्लार्क के नेतृत्व में एक दल मिसिसिपी नदी के पश्चिम के अज्ञात क्षेत्रों का पता लगाने के लिए भेजा।



संयुक्त राज्य अमरीका की प्रथम राजधानी न्यूयार्क में राष्ट्रपति वाशिंगटन का अभिनन्दन। कुछ समय बाद शासनाधिष्ठान फ़िलाडेल्फ़िया को स्थानान्तरित हो गया। फिर दस वर्ष बाद वाशिंगटन डी. सी. को राजधानी बनाया गया।

नयी सरकार को दिए गए अधिकार व्यवहार में कैसे लाए जाएं? पुराने 'आर्टिकिल्स आव कान्फ़ेडरेशन' के अन्तर्गत राष्ट्रीय सरकार को बहुत से अधिकार दिए गए थे, किन्तु वे सब 'कागजों' तक ही सीमित थे। व्यवहार में उसके अधिकार नहीं के बराबर सिद्ध हुए क्योंकि राज्यों ने उन पर कतई ध्यान नहीं दिया। नयी सरकार को ऐसी बाधा से बचाने के लिए क्या किया जाय? ज्यादातर प्रतिनिधियों का एक यही उत्तर था कि ऐसी दशा में शक्ति का उपयोग किया जाय। किन्तु शीघ्र ही यह भी महसूस किया गया कि राज्य के विरुद्ध शक्ति के उपयोग से संघ का अस्तित्व भी खतरे में पड़ सकता है। बहस होते-होते इस नतीजे पर पहुंचा गया कि शासन को राज्यों पर कार्रवाई न करके राज्य के नागरिकों पर कार्रवाई करनी चाहिए। अर्थात, राष्ट्र भर के प्रत्येक निवासी के लिए कानून बनाना व उस पर लागू करना उसका काम है। अधिवेशन में संविधान की आधारशिला के रूप में एक उच्चकोटि का संक्षिप्त और महत्वपूर्ण उपाय स्वीकार किया गया।

"कांग्रेस को अधिकार होगा...कि वह ऐसे सभी तरह के कानून बनाए जो संयुक्त राज्य अमरीका की सरकार को संविधान द्वारा प्राप्त सभी अधिकारों के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक और उचित माने जायें।" (अनु. १, धारा ८)

"यह संविधान, इसके अनुसार बनाए गए संयुक्त राज्य (अमरीका) के सभी कानून तथा संयुक्तराज्य द्वारा की गयी सभी सन्धियाँ इस देश के सर्वोच्च कानून होंगे...और प्रत्येक राज्य के न्यायाधीश, उस या किसी राज्य के संविधान या कानूनों में किसी बेमेल बात के बावजूद उक्त सर्वोच्च कानूनों से बाधित होंगे। (अनु. ६)

इस तरह संयुक्त राज्य के कानूनों का राष्ट्रीय न्यायालयों तथा उसके द्वारा नियुक्त जजों और मार्शलों द्वारा पालन करना अनिवार्य हो गया। साथ ही वे राज्यों के न्यायालयों में राज्यों के जजों और कानून अधिकारियों द्वारा लागू करने योग्य भी हो गए। विचार विमर्श के १६ सप्ताह के अन्त में १७ सितम्बर, १७८७ को संविधान पूरा हुआ और सभी उपस्थित राज्य-प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से स्वीकार करते हुए उस पर हस्ताक्षर किए। प्रतिनिधिगण मौके की संजीदगी से प्रभावित थे और वाशिंगटन गम्भीर चिन्तन में खोए हुए थे। फ्रैंकलिन ने इस गम्भीरता को एक विनोदपूर्ण उक्ति से भंग किया। वाशिंगटन की कुर्सी की पीठ पर सुनहरे रंग से एक अर्ध-सूर्य का चित्र बना हुआ था। उसकी ओर संकेत करते हुए फ्रैंकलिन ने कहा कि कलाकारों को उदय होने वाले और अस्त होने वाले सूर्य में भेद करने में सदा ही कठिनाई हुई है।

उन्होंने कहा "मैं इस बैठक या विचार विनिमय के दौरान में तथा इसके सम्बन्ध में अपनी आशाओं व आशंकाओं में डूबता-उतराता हुआ बारबार राष्ट्रपति की कुर्सी की पीठ पर बने अर्धाकार सूर्य को देखता रहा हूँ। परन्तु मैं अभी भी यह निश्चय नहीं कर सका कि यह चित्र उदय होने वाले सूर्य का है या अस्त होने वाले सूर्य का। किन्तु अब इतनी देर बाद मुझे यह जानकर हर्ष हुआ है कि यह चढ़ता हुआ सूरज है, ढलता हुआ नहीं।" अधिवेशन विसर्जित हुआ, भाग लेने वाले प्रतिनिधियों ने विश्राम की सांस ली, एक साथ खाया-पिया और एक-दूसरे से विदा ली। किन्तु, पूर्ण यूनियन के निर्माण के कठिन संघर्ष का कठिनतम हिस्सा अभी शेष था। क्योंकि इस आलेख को लागू करने के पहले राज्यों के जन-निर्वाचित अधिवेशनों द्वारा उसकी स्वीकृति आवश्यक थी।

अधिवेशन में यह निर्णय किया गया कि १३ में से ९ राज्यों के अधिवेशनों द्वारा स्वीकार होते ही संविधान पर अमल करना शुरू हो जायेगा। १७८७ के अन्त तक तीन राज्यों ने उसे स्वीकार कर लिया था। अनेक सर्वसाधारण लोगों को यह आलेख खतरों से भरा जान पड़ता था। उन्हें डर था कि इसके द्वारा जो शक्तिशाली केन्द्रीय व्यवस्था की जा रही है वह उन पर कहीं अत्याचार न करे, उन पर भारी कर न लगाए या उन्हें युद्धों में न घसीटे। इन प्रश्नों को लेकर दो दल सामने आए। एक फेडरलिस्ट (संघवादी) जो मजबूत संघ-सरकार के पक्ष में था और दूसरा एण्टी फेडरलिस्ट (संघ-विरोधी) जो विभिन्न राज्यों के एक ढीले-ढाले संघ के पक्ष में था। समाचारपत्रों में, विधान सभाओं में और राज्यों के अधिवेशनों में इस पर काफी बहसें हुईं। दोनों पक्षों की ओर से आवेशपूर्ण दलीलें पेश की गईं। इनमें से सब से योग्यतापूर्ण 'फेडरलिस्ट पेपर्स' थे जिन्हें संविधान के समर्थन में हेमिल्टन, मैडिसन, और जान जे ने लिखा था। मैसाच्यूसेट्स में, जहां की ग्रामीण जनता में असन्तोष फैला हुआ था, होने वाले तीव्र विवाद के परिणामस्वरूप संविधान में संशोधन के रूप में एक अधिकार-पत्र जोड़ा गया। अन्य राज्यों ने भी संविधान में इस प्रकार के संशोधनों को जोड़ने को महत्व दिया और वे अधिकार जो पहले राज्यों के संविधान में थे देश के संविधान में भी जोड़ लिए गए। इस तरह संविधान के मूल आलेख में जुड़ने वाले संशोधनों की संख्या दस हो गयी और ये संशोधन, 'पहले दस संशोधन,' के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनके जरिए संयुक्तराज्य अमरीका के नागरिकों को निम्नलिखित अधिकारों की गारेण्टी की गयी: धर्म, भाषण, प्रेस और सभा करने की स्वतन्त्रता; स्थायी सेना के स्थान पर मिलिशिया रखने का अधिकार; जूरियों द्वारा सुनवाई का हक; देश के कानूनों के अनुसार शीघ्र सुनवाई व निर्णय और बिना नाम के वारण्टों का निषेध। इस अधिकार-पत्र को स्वीकार करने के फलस्वरूप जो राज्य संविधान का समर्थन करने में हिचक रहे थे, उन्होंने भी उसे तुरन्त स्वीकार कर लिया और वह २१ जून, १७८८ के दिन अन्तिम रूप से स्वीकार कर लिया गया। कान्फेडरेशन की कांग्रेस ने राष्ट्रपति के पहले चुनाव की व्यवस्था की और यह घोषणा करके कि नयी सरकार ४ मार्च, १७८९ से काम शुरू करेगी, वह शान्ति के साथ विसर्जित हो गयी।

वाशिंगटन की विवेकपूर्ण आयोजना

राष्ट्र के प्रधान के पद के लिए हरेक आदमी की ज़बान पर एक ही नाम था। वाशिंगटन को सर्वसम्मति से राष्ट्रपति चुना गया। ३० अप्रैल, १७८९, को उन्होंने अपने पद की शपथ लेते हुए कहा कि वे वफादारी के साथ संयुक्त-राज्य अमरीका के राष्ट्रपति पद की जिम्मेदारियां निभाएँगे तथा अपनी सारी योग्यता व सामर्थ्य के साथ, 'संयुक्त राज्य के संविधान का परिरक्षण, संरक्षण और प्रतिरक्षण करेंगे।'

जीवन पथ पर अग्रसर होने वाला वह एक जीवन्त गणतन्त्र था। युद्ध जनित आर्थिक समस्या अपने समाधान के पथ पर थी और देश मजबूती के साथ विकास कर रहा था। बसने के उद्देश्य से यूरोप से आने वालों की संख्या बहुत बढ़ गयी थी। बढ़िया फार्म सस्ते दामों में मिल रहे थे। मजदूरों की मांग निरन्तर बढ़ रही थी। उत्तरी न्यूयार्क, पेन्सिलवानिया और वर्जिनिया की समृद्ध घाटी शीघ्र ही गेहूँ की पैदावार के लिए प्रसिद्ध हो गयी। हालांकि बहुत-सी वस्तुएँ अब भी घरों में ही बनायी जाती थीं फिर भी वस्तु-निर्माताओं की संख्या बढ़ रही थी। मेसाचुसेट्स और रहोड आइलैण्ड में वस्त्र उद्योग की नींवें डाली जा रही थीं। कैनेक्टिकट में टीन के सामान का और घड़ियों का उत्पादन होना शुरू हो गया था। न्यूयार्क, न्यूजर्सी और पेन्सिलवानिया में कागज, कांच और लोहे का उत्पादन हो रहा था। जहाज उद्योग का विकास इतना हो गया था कि समुद्रों पर इंग्लैण्ड के बाद अमरीका का ही नम्बर था। १७९० के पहले से ही अमरीकी जहाज 'फर' बेचने चीन तक जाते थे और वापसी पर वे चाय, मसाले और रेशम लाते थे।

अमरीकी शक्ति मुख्यतः पश्चिम की ओर उन्मुख थी। न्यू इंग्लैण्ड और पेन्सिलवानिया के लोग आहायो में बढ़ रहे थे। वर्जिनिया और दोनों कैरोलाइनाओं

के निवासी केन्टुकी और टेनेसी की ओर बढ़ रहे थे। अलबेनीज की लम्बी ढलानों पर आप्रवासियों की सफेद छत वाली गाड़ियों की कतारें चढ़ती नज़र आती थीं। केन्टुकी में चमड़े की पोशाकों वाले शिकारी तथा अग्रगामी लोग, फर्नीचर, बीज, सामान्य कृषि उपकरणों से लदी गाड़ियों और पालतू चौपायों के साथ नज़र आते थे। अनेक ऐसे स्थानों पर, जहां के जंगल मामूली तौर पर साफ किए गए थे, सीमान्ती किसानों ने लट्ठों के खोखे बना लिए थे। मिसिसिपी के रास्ते न्यू आर्लियन्स जाने वाले अन्न, गोश्त, नमक और पोटाश से भरी नावों व बेड़ों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती गयी। पश्चिमी नगरों का महत्व उत्तरोत्तर बढ़ता गया। हालांकि जंगली जानवरों, रोगों, व अन्य आपदाओं तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था फिर भी बसने वालों की सहस्र धाराएँ उसी वन्य प्रदेश की ओर प्रवाहित होती गयीं। प्रारम्भिक काल का लोकप्रिय वाक्य कि 'साम्राज्य की राह पश्चिम की ओर है ' अब भी लोगों को आकर्षित किए हुए था।

वाशिंगटन ने जब पदग्रहण किया उस समय देश की यह स्थिति थी। नया संविधान भावी गतिविधियों की सांकेतिक रूपरेखा ही माना जा सकता था। उसके पीछे न तो कोई परम्परागत विरासत थी और न संगठित जनमत का समर्थन। संघवादी दल सुदृढ़ केन्द्रीय सरकार के समर्थकों, उन्नतिशील व्यापारियों, और व्यावसायिक स्वार्थों का दल था। संघवाद के विरोधी दल में राज्य के अधिकारों के समर्थक तथा ग्राम्यवादी लोग थे। नई सरकार को स्वयं ही अपनी कार्य व्यवस्था का विकास करना था। करों की वसूली हो नहीं रही थी। न्यायपालिका के अभाव में कानून लागू कराने का कोई साधन मौजूद न था। सेना छोटी थी और नौ-सेना तो समाप्त प्राय: ही थी।

इस समय वाशिंगटन के विवेकपूर्ण नेतृत्व की सख्त आवश्यकता थी। जिन गुणों ने उन्हें क्रान्ति का सर्वप्रथम सैनिक बनाया था उन्हीं योग्यताओं के आधार पर वे नवगठित राष्ट्र के पहले राजनयिक भी माने गए। वे दूरदर्शी थे, एक सफल नियोजक थे और उनमें असीमित काम करने की क्षमता थी। उन्होंने लोगों में प्रेरणा और विश्वास का संचार किया। उनमें चतुराई की अपेक्षा सीधी सही बात कहने की आदत थी, लोचशीलता की अपेक्षा दृढ़ता थी। वे तेजस्वी और गम्भीर होते हुए भी संकोचशील, नम्र, और आत्मसंयमी थे।

दो मज़बूत दृष्टिकोणों की होड़

सरकार का संगठन कोई छोटा-मोटा काम न था। कांग्रेस ने शीघ्र ही 'डिपार्टमेण्ट आव स्टेट्स' (विदेश मन्त्रालय) और 'डिपार्टमेण्ट आव ट्रेज़री (राज्यकोष मन्त्रालय) की स्थापना की। वाशिंगटन ने टामस जैफर्सन को 'सेक्रेटरी आव स्टेट्स' (विदेश मन्त्री) और अलेग्ज़ेण्डर हैमिल्टन को, जो क्रान्ति काल में उनके सहायक रह चुके थे, सेक्रेटरी आव ट्रेज़री (वित्त मन्त्री) के पद पर नियुक्त किया। इसी दौरान में कांग्रेस ने न्यायपालिका की स्थापना भी की। उसने एक सुप्रीम कोर्ट (सर्वोच्च न्यायालय) स्थापित किया जिसमें एक महान्यायाधीश तथा पांच सहायक न्यायाधीशों की व्यवस्था की गयी। (महान्यायाधीश के लिए जॉन जे की नियुक्ति हुई)। सर्वोच्च न्यायालय के अलावा ३ सरकिट कोर्ट और १३ जिला कचहरियां भी स्थापित की गयीं। प्रथम प्रशासन में ही युद्ध मन्त्री और महान्यायाधिकारी की नियुक्तियां भी की गयीं। चूंकि वाशिंगटन कोई निर्णय लेने के पहले आमतौर से उन लोगों की सलाह लेना पसन्द करते थे जिनकी निर्णय लेने की क्षमता पर उन्हें विश्वास था इसलिए अमरीकी मन्त्रिमण्डल (जिसमें कांग्रेस द्वारा बनाए गए विभागों के शीर्ष-अधिकारी शामिल होते थे), बना, हालांकि वैधानिक रूप से उसे १९०७ तक मान्यता प्राप्त नहीं हुई।

जैसे क्रान्तिकालीन अमरीका ने विश्वव्यापी ख्याति के दो महान् व्यक्तित्व—वाशिंगटन और फ्रैंकलिन प्रदान किए उसी प्रकार उदीयमान अमरीकी गणतन्त्र के युग में दो अत्यन्त ही योग्य व विवेकशील व्यक्ति—हैमिल्टन और जैफर्सन—ने प्रसिद्धि प्राप्त की। इनका यश भी समुद्र पार के देशों तक फैला। इतिहास में उनका महत्व केवल इसलिए ही नहीं माना गया कि उनमें महान वैयक्तिक योग्यताएं थीं। उन्हें सम्मान मिला मुख्यत: इसलिए कि उन्होंने अमरीकी जीवन के दो शक्तिशाली और अनिवार्य तत्वों का प्रतिनिधित्व किया था जो कुछ हद तक परस्पर विरोधी भी थे। हैमिल्टन ने और भी सुगठित यूनियन और अपेक्षाकृत मज़बूत केन्द्रीय सरकार के लिए काम किया और जैफर्सन का झुकाव अपेक्षाकृत व्यापक और स्वतन्त्र लोकतन्त्र की ओर था।

हैमिल्टन के सार्वजनिक जीवन का मुख्य आधार था—कार्यकुशलता, व्यवस्था और संगठन के प्रति उसका प्रेम। १७७५ से १७८९ तक कमज़ोरी और कार्यकुशलता के अभाव की जो मिसालें उसने देखी थीं उन्हीं के कारण उसमें अपने नए राष्ट्र की सेवा करने की उग्र भावना पैदा हुई थी। हैमिल्टन के पास साहसिक योजनाएँ और सुनिश्चित नीतियां थीं जबकि दूसरों के पास फूंक-फूंक कर कदम रखने के विचार और अस्पष्ट सिद्धान्त थे। प्रतिनिधि सभा द्वारा जब 'सार्वजनिक साख के पर्याप्त समर्थन के लिए योजना बनाने की मांग की गयी तो

हैमिल्टन ने सार्वजनिक मितव्ययिता के साथ ही सुदृढ़ शासन के सिद्धान्तों का प्रतिपादन और समर्थन किया। औद्योगिक विकास, व्यापारिक गतिविधियों और सरकारी कामकाज के लिए अमरीका को साख ऊँची रहना जरूरी था। उसे जनता का पूर्ण समर्थन और विश्वास प्राप्त होना था। बहुत से लोग राष्ट्रीय ऋण की अदायगी न करने या आंशिक अदायगी करने के पक्ष में थे। परन्तु हैमिल्टन ने यूनियन सरकार के ऋण को पूरा किए जाने पर ज़ोर देने के साथ ही एक ऐसी योजना भी पेश की जिसके अनुसार राज्यों द्वारा क्रान्ति की सहायता के लिए दिए गए ऋणों के भुगतान की जिम्मेदारी भी संघ सरकार ने अपने ऊपर ले ली। उसने, 'बैंक आव यूनाइटेड स्टेट्स', की स्थापना कराई और उसे देश के विभिन्न भागों में अपनी शाखाएँ खोलने का अधिकार दिया। राष्ट्रीय टकसाल की स्थापना का सूत्रपात भी उसीने किया। राष्ट्रीय उद्योगों के विकास को बढ़ावा देने के लिए उसने संरक्षण के सिद्धान्त पर आधारित तटकर व्यवस्था के समर्थन में बहस की। इन कार्रवाइयों का तुरंत ही प्रभाव पड़ा। संघ शासन की साख सुदृढ़ हो गयी और उसे जितने राजस्व की ज़रूरत थी वह भी उपलब्ध हो गया। व्यापार एवं उद्योग को प्रोत्साहन मिला जिसके फलस्वरूप व्यापार में लगे लोगों का एक विशाल झुण्ड तैयार हो गया जो राष्ट्रीय सरकार का समर्थक होने के साथ ही उसे कमज़ोर करने के किसी भी प्रयास का मुकाबला करने के लिए हर समय तत्पर रहने लगा।

दूसरी ओर टामस जैफर्सन क्रियाशील होने के बजाय विचारशील व्यक्ति था। हैमिल्टन में प्रशासनिक गुण थे। जैफर्सन की प्रतिभा चिन्तन सम्बन्धी और दार्शनिक थी। सम-सामयिक राजनीतिक विचारकों और लेखकों में वह बेजोड़ था। राजनीतिक दृष्टि से, उसका हैमिल्टन से सामान्यतः मतभेद रहता था। जब वह अमरीका का राजदूत बन कर फ्रांस गया तब उसने वैदेशिक सम्बन्धों के मामले में एक सुदृढ़ केन्द्रीय सरकार का महत्व महसूस किया। फिर भी दूसरे बहुत से मामलों में वह उसकी दृढ़ता का समर्थक नहीं रहा क्योंकि उसे भय था कि वह दृढ़ता मनुष्य के लिए अवरोध भी बन सकती है। उसका जन्म रईसी में हुआ था। किन्तु उसकी प्रवृत्तियां और विचार समानतावादी लोकतन्त्र की भावना से आप्लावित थे। वह सदैव अंग्रेजी सिंहासन, चर्च के नियन्त्रण, ज़मींदारों और सम्पत्ति की विषमता के विरुद्ध स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करता रहा।

हैमिल्टन का लक्ष्य देश को एक अपेक्षाकृत कुशल संगठन प्रदान करने का था और जैफर्सन का लक्ष्य था हरेक व्यक्ति को अपेक्षाकृत व्यापक स्वाधीनता दिलाने का; क्योंकि उसका यकीन था कि "धरती के प्रत्येक व्यक्ति और व्यक्तियों के प्रत्येक समुदाय को स्वशासन का अधिकार है।" हैमिल्टन को अराजकता का भय था और वह शान्ति और व्यवस्था की भाषा में सोचता था; जैफर्सन को अनाचार का भय था और वह स्वतन्त्रता-स्वाधीनता की भाषा में सोचता था। संयुक्त राज्य अमरीका को दोनों प्रभावों की आवश्यकता थी। उसे अपेक्षाकृत मज़बूत सरकार की आवश्यकता भी थी और बन्धनमुक्त नागरिकों की भी। इसे देश का सौभाग्य ही कहना चाहिए कि उसे दोनों प्रकार के व्यक्तित्व प्राप्त थे और वह कालान्तर में दोनों के विशेष योगदानों से लाभ उठाने के साथ ही, बहुत हद तक, उनमें तालमेल बिठा सका।

जैफर्सन द्वारा विदेश मन्त्री का पद सम्भालने के कुछ समय पश्चात ही उन दोनों का मतभेद प्रकट हो गया, जिसके परिणामस्वरूप संविधान की एक नयी और ठोस परिभाषा हो सकी। हैमिल्टन ने राष्ट्रीय बैंक की स्थापना के लिए विधेयक प्रस्तुत किया, जैफर्सन ने उसका विरोध किया और राष्ट्रीय बैंक के विरुद्ध राज्यों के अधिकारों तथा बड़े कार्पोरेशनों को आशंका से देखने वालों का पक्ष लिया। उसने कहा कि संविधान में संघ सरकार ने अपने सभी अधिकारों की स्पष्ट तालिका प्रस्तुत की है, शेष सारे अधिकार राज्यों के लिए सुरक्षित हैं। बैंक स्थापित करने का अधिकार उसे कहीं नहीं दिया गया है। हैमिल्टन का कहना था कि राष्ट्रीय सरकार के सभी अधिकार शब्दशः नहीं दिए जा सकते थे। क्योंकि इसके लिए बहुत ही विस्तार में जाना आवश्यक हो जाता। उसने कहा कि अनेक अधिकार उसके आम अनुच्छेदों में निहित होते हैं और इनमें से एक के द्वारा कांग्रेस को यह अधिकार दिया गया है कि वह 'आवश्यक व उचित समझने पर हर तरह के कानून बना सकेगी।' संविधान में घोषित किया गया है कि राष्ट्रीय शासन को कर लगाने, उसे वसूल करने, ऋण लेने व उसे चुकाने का अधिकार होगा। राष्ट्रीय बैंक राष्ट्रीय सरकार के इन कर्तव्यों को पूरा करने में सहायक सिद्ध होगा। अतः कांग्रेस को इन 'निहित अधिकारों के आधार पर बैंक स्थापित करने का पूरा अधिकार प्राप्त है।' वाशिंगटन और कांग्रेस ने विधेयक को स्वीकार करने के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत कर दिया।

यद्यपि देश के सामने उसका पहला काम घरेलू अर्थ-व्यवस्था को मज़बूत करके यूनियन को सुरक्षित करना था फिर भी वह उदीयमान देश बाहर की राजनीतिक घटनाओं के प्रति उदासीन नहीं रह सका। वाशिंगटन की विदेश नीति का मूलाधार शान्ति को कायम रखना था। युद्ध से देश को जो क्षति पहुँची थी उसकी



"हम शत्रुओं का सामना कर चुके हैं और वे हमारे ही हैं" कैप्टन ओलिवर पेरी ने बताया। कैप्टन पेरी की शक्ति और निपुणता से ही अमरीकी फौजें 'लेक एरी का युद्ध' जीत सकीं।

पूर्ति तथा राष्ट्रीय एकता के कार्य को द्रुत गति से चलाने के लिए शान्ति आवश्यक थी। किन्तु यूरोप की घटनाओं ने इसके लिये खतरा पैदा कर रखा था। अनेक अमरीकी फ्रांसीसी क्रान्ति को बड़ी दिलचस्पी और सहानुभूति से देख रहे थे। अप्रैल, १७९३ में एक ऐसा समाचार आया जिसने इस संघर्ष को अमरीकी राजनीति का प्रश्न बना दिया। फ्रांस ने इंग्लैण्ड और स्पेन के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी थी। सिटिजन जीने फ्रांसीसी गणतन्त्र का राजदूत बन कर अमरीका आ रहा था।

अमरीका अब भी औपचारिक रूप से फ्रांस का मित्र था। इस युद्ध से अमरीकी लोगों को फ्रांस के प्रति अपनी कृतज्ञता सिद्ध करने तथा इंग्लैण्ड के प्रति अपने रोष-प्रकाशन का मौका मिलता था। लेकिन जहां अमरीका के ज्यादातर प्रशासक फ्रांस के हिताकांक्षी थे वहीं वे अमरीका को युद्ध से अलग रखने की चिन्ता में भी थे। यही कारण था कि वाशिंगटन ने इस मामले में अमरीका की तटस्थता की घोषणा कर दी और जब जीने अमरीका पहुँचा तो उसका स्वागत कोरी आवभगत तक ही सीमित रहा। इस व्यवहार से रुष्ट होकर उसने अमरीका को इस आज्ञा का उल्लंघन करने का प्रयास किया कि अमरीकी बन्दरगाहों को फ्रांसीसी प्राइवेटियर अपनी कार्रवाई का अड्डा नहीं बनाएंगे। कुछ समय पश्चात् फ्रांस की सरकार ने उसको वापस बुला लेने की प्रार्थना स्वीकार कर ली।

१७९३ से १७९५ की अवधि में अमरीकी लोकमत के दो पक्ष सामने आए। कुछ लोगों की दृष्टि में फ्रांसीसी क्रान्ति राजतन्त्र और गणतन्त्र, दमन और स्वाधीनता, एकतन्त्र और लोकतन्त्र के बीच का निर्णायक संघर्ष था। लेकिन कुछ दूसरे लोग इसे अराजकता और व्यवस्था, नास्तिकता और आस्तिकता, गरीबी और अमीरी के बीच एकाएक खड़ा हो जाने वाला संघर्ष समझते थे। पहला पक्ष रिपब्लिकन दल के साथ हो गया। दूसरा फेडरलिस्टों का साथ। अमरीका के मौजूदा दोनों बड़े दल इन्हीं दलों के रूपान्तर हैं। मौजूदा डेमोक्रेटिक दल उस युग के रिपब्लिकन दल का तथा आज की रिपब्लिकन पार्टी उस समय के फेडरलिस्टों के ही बदले हुए रूप हैं।

'जीने-काण्ड' के परिणामस्वरूप फ्रांस के प्रति अमरीकी उत्साह मन्द पड़ गया। इंग्लैण्ड के साथ अब भी सन्तोषजनक सम्बन्ध नहीं हो पाए थे। ब्रिटिश सेनाएं अब भी पश्चिमी किलों पर कब्जा किए हुए थीं। क्रान्तिकाल में अंग्रेज सैनिक जो सम्पत्तियां ले गए थे वे अब तक वापस नहीं हुई थीं, न उनका मुआवजा ही दिया गया था और अंग्रेज नौ-सेना अब भी अमरीकी व्यापार को क्षति पहुँचा रही थी। इन प्रश्नों को सुलझाने के लिए वाशिंगटन ने अपना एक असाधारण राजदूत लन्दन भेजा। वह थे अनुभवी राजनयज्ञ जान जे, जो उस समय के सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश भी थे। जान जे ने वहां संयम से काम लिया। वह एक ऐसी संधि करने में कामयाब हुए जिसके द्वारा पश्चिमी किलों पर से अंग्रेज सेनाएं हट गयीं और अमरीका को कुछ व्यापारिक सुविधाएं मिलीं। फिर भी, सम्पत्ति की वापसी, भविष्य में अमरीकी जलयानों की पकड़-धकड़ तथा अमरीकी नौ-चालकों की अंग्रेजी नौ-सेना में जबरन भर्ती के विषय में इस सन्धि में कुछ भी नहीं कहा गया।

इस तथाकथित 'जे-सन्धि' से आमतौर पर असन्तोष फैला। किन्तु वाशिंगटन के द्वितीय कार्यकाल की समाप्ति के पहले ही यह उत्तरोत्तर स्पष्ट होता गया कि दूसरे अनेक क्षेत्रों में अनेक महत्वपूर्ण कामयाबियां प्राप्त की जा चुकी थीं। शासन सुगठित हो चुका था, राष्ट्रीय साख जमाई जा चुकी थी, समुद्री व्यापार में वृद्धि हो रही थी, उत्तर पश्चिम के इलाकों पर कब्जा किया जा चुका था और सर्वत्र शान्ति और व्यवस्था थी।

१७९७ में वाशिंगटन ने अवकाश ग्रहण किया। राष्ट्र के सर्वोच्च प्रधान के रूप में आठ वर्ष से अधिक काम करने से दृढ़तापूर्वक इन्कार कर दिया। जान ऐडम्स राष्ट्रपति चुना गया, वह योग्य और ऊँचे विचारों वाला किन्तु दृढ़ और हठी व्यक्ति था। उसका राष्ट्रपति बनने से पूर्व ही उसी हैमिल्टन से झगड़ा हो चुका था जो शासन के प्रथम दो कार्यकालों में बहुत ही योगदान कर चुका था। इसलिए ऐडम्स के सामने एक विकट रुकावट थी। उसके पीछे एक विभाजित दल था और सामने एक विभाजित मन्त्रिमण्डल। यही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय गगन में भी घने काले बादल छा रहे थे। फ्रांस ने, अमरीका द्वारा इंग्लैण्ड के साथ की गयी 'जे-सन्धि' से नाराज होकर अपने यहां अमरीका का राजदूत रखने से इन्कार कर दिया था। ऐडम्स ने तीन दूसरे कमिश्नरों को पेरिस भेजा। उन्हें भी नए-नए अपमानों का सामना करना पड़ा। इससे अमरीकी लोगों का रोष अत्यधिक बढ़ गया। सैनिकों की भर्ती शुरू हो गयी, नौ-सेना संगठित की जाने लगी। १७९८ में फ्रांसीसियों के साथ अनेक समुद्री मुठभेड़ें हुई जिनमें अमरीकी पोत हमेशा विजयी भी हुए। इन सारी घटनाओं से युद्ध अवश्यम्भावी प्रतीत होने लगा। हैमिल्टन युद्ध के पक्ष में था। उसकी राय न मानते हुए ऐडम्स ने पुनः एक दूत फ्रांस भेजा। नेपोलियन ने लगभग उसी समय राज्य की बागडोर सम्भाली थी। उसने अमरीकी दूत का हार्दिक स्वागत किया और युद्ध की आशंका टल गयी।

जैफर्सन के लोकतन्त्रीय विचार

घरेलू मामलों में ऐडम्स लोकप्रिय नहीं था। सन् १८०० में देश परिवर्तन के लिए परिपक्व प्रतीत होता था। वाशिंगटन और ऐडम्स के नेतृत्व में फेडरलिस्टों ने सरकार का संचालन योग्यतापूर्वक किया था और उसे मजबूत बनाया था। लेकिन उन्होंने कुछ ऐसी नीतियों का अनुसरण भी किया था जिनसे जनता का एक बड़ा भाग उनसे रुष्ट हो गया था। जैफर्सन ने, जो एक जन्मजात लोकप्रिय नेता थे, अपने पीछे छोटे-छोटे किसानों, दूकानदारों और दूसरे बहुत से कार्यकर्ताओं की एक खासी संख्या एकत्र कर रखी थी। १८०० के निर्वाचन में उन्होंने अपनी असाधारण शक्ति का परिचय दिया। उन्होंने अपने एक मित्र को लिखा था कि "हमारे पोत के मजबूत पार्श्वों की पूर्णतः परीक्षा हो चुकी है। अब हम उसे गणतन्त्रीय मार्ग पर बढ़ायेंगे और वह अपने गति-सौन्दर्य से अपने निर्माताओं की दक्षता का परिचय देगा।"

जैफर्सन, निस्सन्देह, असाधारण रूप से लोकप्रिय हो रहे थे, क्योंकि उनसे अमरीकी आदर्शवाद, सादगी, यौवन, और आशापूर्ण भविष्य की प्रेरणा मिलती थी। १८०१ में जिस ढंग से वह राष्ट्रपति के पद के लिए निर्वाचित हुए थे उससे स्पष्ट हो गया था कि लोकतन्त्र सत्ता प्राप्त कर चुका है। जैफर्सन अपनी आदत के अनुसार लापरवाही की वेशभूषा में अपने कुछ मित्रों के साथ, पहाड़ी पर स्थित अपने निवास स्थान से कांग्रेस भवन गए। सिनेट भवन में प्रवेश करते ही उन्होंने उप-राष्ट्रपति बर से हाथ मिलाया जो पिछले चुनावों में उनके प्रतिद्वन्द्वी उम्मीदवार थे। सर्वोच्च-न्यायालय के नव-नियुक्त महान्यायाधीश जान मार्शल ने उन्हें उनके पद की शपथ दिलायी। अपने उद्घाटन अभिभाषण में उन्होंने 'मितव्ययिता और विवेक से शासन का संचालन करने का संकल्प किया। उन्होंने कहा कि "वे देशवासियों को अपने कामकाज और उद्योग में उन्नति करने के मामले में मुक्त रहने देंगे।"

ह्वाइट हाउस में जैफर्सन की उपस्थिति मात्र से ही लोकतन्त्रीय प्रणालियों को प्रोत्साहन मिला। उनकी दृष्टि में साधारण व्यक्ति की उतनी ही इज्जत थी जितनी कि ऊँचे-से-ऊँचे अफसर की। उन्होंने अपने मातहतों को सिखलाया कि वे अपने-आपको जनता का विश्वासपात्र सेवक समझें। उन्होंने कृषि कार्यक्रम और पश्चिम की ओर विस्तार को प्रोत्साहित किया। नागरिक बनाने के कानून को भी उदार कर दिया, क्योंकि उनका विश्वास था कि अमरीका अत्याचार पीड़ितों के लिए स्वर्ग है। १८०९ के अन्त में उनके दूरदर्शी अर्थमन्त्री एलबर्ट गैलाटिन ने राष्ट्रीय ऋण को घटाकर ६ करोड़ से भी कम कर दिया। राष्ट्र में 'जैफर्सनवादी' भावना की लहर चल जाने के परिणामस्वरूप एक के पीछे दूसरा राज्य मताधिकार के लिए सम्पत्ति की योग्यता को समाप्त करने के और कर्जदारों तथा अपराधियों के लिए अधिक मानवीय कानून बनाने लगा।

जैफर्सन के एक काम ने देश का क्षेत्रफल दुगना कर दिया। मिसिसिपी नदी का पश्चिमवर्ती प्रदेश उसके मुहाने पर स्थित न्यूऑलियन्स बन्दरगाह सहित चिरकाल से स्पेन के अधिकार में था। जैफर्सन के पदारूढ़ होने के तुरन्त पश्चात् नैपोलियन ने दुर्बल स्पेनी सरकार को लुइजियाना नाम का एक बड़ा प्रदेश फ्रांस को वापस करने के लिए विवश किया। ज्यों ही उसने ऐसा किया, अमरीकी लोग भय और आशंका से कांपने लगे, क्योंकि न्यू ऑलियन्स का बन्दरगाह उनके लिए अत्यावश्यक था। संयुक्तराज्य के ठीक पश्चिम में औपनिवेशिक साम्राज्य बसाने की नैपोलियन की योजनाओं से, भीतर की अन्य सब बस्तियों के व्यापारिक अधिकारों और सुरक्षा के लिए खतरा पैदा हो गया।

जैफर्सन ने बलपूर्वक कहा कि यदि लुइजियाना फ्रांस के अधिकार में चला जाय तो "उसी क्षण से हमें ब्रिटिश बेड़े और ब्रिटिश राष्ट्र से गठबन्धन कर लेना चाहिए", और यूरोपीय युद्ध में पहला गोला न्यू ऑलियन्स पर एंग्लो-अमरीकी सेनाओं की चढ़ाई का संकेत होगा। नैपोलियन को निश्चय हो गया कि अमरीका और इंग्लैण्ड मिलकर प्रहार करेंगे। वह जानता था कि 'आमियन्स की अल्पकालीन सन्धि' के पश्चात् ग्रेट ब्रिटेन के साथ पुनः युद्ध होने वाला है और जब यह होगा तब लुइजियाना उसके हाथ से निकल जायगा, इसलिए उसने लुइजियाना को अमरीका के हाथ बेचकर अमरीकी मित्रता प्राप्त कर लेने का निश्चय कर लिया। डेढ़ करोड़ डालर में यह विस्तृत प्रदेश लोकतन्त्र के हाथ में आ गया। इसे खरीदने के लिए जैफर्सन ने संविधान को 'इतना खींचा कि वह चरचराने लगा' क्योंकि संविधान की कोई भी धारा उसे विदेशी प्रदेश खरीदने का अधिकार नहीं देती थी। उसने यह कार्य कांग्रेस की अनुमति लिए बिना ही कर डाला। इसके परिणामस्वरूप संयुक्तराज्य को १८०३ में दस लाख वर्गमील से अधिक बड़ा प्रदेश और उसके साथ न्यू ऑलियन्स का बन्दरगाह प्राप्त हो गया। देश को सम्पन्न मैदानों का बहुत बड़ा प्रदेश मिल चुका था,। जो आगामी ८० वर्षों के भीतर संसार का सबसे बड़ा अन्न-भण्डार बनने वाला था। इसके द्वारा महाद्वीप के बीच की समस्त नदियों का नियन्त्रण भी किया जा सकता था। कुछ ही वर्षों में धुंआ उड़ाते हुए जहाज भूमि पर बसने के अभिलाषी

आप्रवासियों को लेकर पश्चिमी जलमार्गों पर बढ़ते नजर आए। लौटते हुए वे अपने साथ फर, अन्न, सूखा मांस और अन्य सैकड़ों पदार्थ लाने लगे।

इङ्ग्लैण्ड से द्वितीय युद्ध के कारण

अपने प्रथम शासनकाल की परिसमाप्ति के समय भी जैफर्सन की व्यापक लोकप्रियता अक्षुण्ण रही। उनका पुनर्निर्वाचन निश्चित था। अपने द्वितीय शासनकालमें, जैफर्सन ने दुबारा संघीय सत्ता का असाधारण प्रयोग किया और ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस के भयंकर युद्ध में अमरीकी तटस्थता को सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया। दोनों शक्तियों ने व्यापार को भारी चोट पहुँचायी थी। अंग्रेजों ने यत्न किया कि वे अमरीकी जहाजों द्वारा फ्रांसीसी वेस्ट इण्डीज के माल का लाना रोक दें, और इसलिए उन्होंने ब्रेस्ट से लेकर एल्बे नदी तक यूरोपियन तट की घेराबन्दी घोषित कर दी। फ्रांसीसियों ने आज्ञा दी कि जो अमरीकी जहाज अंग्रेजों को अपनी तलाशी लेने देगा या किसी बन्दरगाह का स्पर्श भी करेगा उसे वे पकड़ लेंगे। युद्ध शीघ्र ही ऐसी स्थिति में पहुँच गया था कि कोई भी अमरीकी जहाज फ्रांस द्वारा नियन्त्रित विस्तृत प्रदेश के साथ व्यापार नहीं कर सकता था क्योंकि उसे अंग्रेजों द्वारा पकड़े जाने का भय था और इसी प्रकार इंग्लैण्ड के साथ व्यापार करने में फ्रांस का भय बना हुआ था। इन परिस्थितियों में व्यापार डूब गया।

एक शिकायत और भी थी जिसने अमरीकी भावनाओं को ग्रेट-ब्रिटेन के विरुद्ध भड़का दिया। युद्ध जीतने के लिए अंग्रेज लोग अपनी जलसेना इतनी अधिक बढ़ा रहे थे कि उसमें युद्धपोतों की संख्या ७०० से ऊपर पहुँच चुकी थी जिन पर डेढ़ लाख सैनिक तथा कर्मचारी थे। इससे ब्रिटेन सुरक्षित रहता था, उसके व्यापार की रक्षा होती थी और उसके उपनिवेशों के साथ उसका यातायात बना रहता था, परन्तु उसके बेड़े के आदमियों को इतना कम वेतन व खराब भोजन मिलता था, उनके साथ ऐसा दुर्व्यवहार होता था कि स्वतन्त्र भरती द्वारा नाविकों का मिलना असम्भव हो गया था। बहुत-से नाविक भाग कर अधिक सुखी और सुरक्षित अमरीकी जहाजों पर आश्रय लेने लगे। इन परिस्थितियों में ब्रिटिश अधिकारी अमरीकी जहाजों की तलाशी लेने और ब्रिटिश जनों को वहां से हटा लेने का अधिकार अपने हाथ में लेना अत्यन्त आवश्यक समझने लगे। जब अंग्रेजी बोलने वाला प्रत्येक नागरिक ब्रिटिश प्रजाजन था तब तो 'जबरन भर्ती' में भूल प्रायः नहीं होती थी। परन्तु अब, संयुक्तराज्य एक स्वतन्त्र राष्ट्र बन चुका था और बात बदल चुकी थी। अमरीकी जहाजों के लिए ब्रिटिश क्रूजरों की तोपों के सामने सिर झुका कर, उनके एकाध लैफ्टिनेण्ट और नाविक दल के सामने अपने कर्मचारियों को पंक्ति बनाकर तलाशी के लिए पेश करना अपमानजनक था। इसके अतिरिक्त बहुत से ब्रिटिश अफसर उद्धत और अशिष्ट व्यवहार के अपराधी थे और वास्तविक अमरीकी नागरिकों को जबरदस्ती भर्ती कर लेते थे।

जैफर्सन ने बिना युद्ध के ग्रेट-ब्रिटेन और फ्रांस को उचित रुख अख्तियार कराने के लिए कांग्रेस को प्रेरित किया कि वह 'एम्बार्गो ऐक्ट' पास कर दे जिससे वैदेशिक व्यापार सर्वथा निषिद्ध कर दिया गया। इसके परिणाम भयंकर हुए। एक ओर तो इससे जहाजों का रोजगार प्रायः नष्ट हो गया और न्यू-इंग्लैण्ड और न्यूयार्क में असन्तोष अपनी सीमा पर पहुँच गया और दूसरी ओर खेती करने वाले भी यह अनुभव करने लगे कि उन्हें बहुत हानि हो रही है। जब दक्षिण और पश्चिम से किसान अपना अन्न, मांस और तम्बाकू समुद्र पार भेजने में असमर्थ हो गए तब वस्तुओं के मूल्य गिरने लगे। एक वर्ष के भीतर अमरीकी निर्यात-व्यापार गिर कर पिछले साल की तुलना में पंचमांश रह गया। यह आशा व्यर्थ हुई कि 'एम्बार्गो' के कारण भूखा होकर ग्रेट-ब्रिटेन अपनी नीति बदल देगा। जब आन्तरिक असन्तोष बढ़ने लगा तब जैफर्सन ने एक नरम उपाय का अवलम्बन किया। उससे आन्तरिक जहाजी व्यापार कुछ सन्तुष्ट हो गया। 'एम्बार्गो' ऐक्ट के स्थान पर एक 'नॉन इन्टरकोर्स' अर्थात् असहयोग कानून लागू किया गया जो ब्रिटेन, फ्रांस और उसके अधीन देशों के अतिरिक्त सबके साथ व्यापार की इजाजत देता था और राष्ट्रपति को अधिकार देता था कि इन दोनों देशों में से जो कोई अमरीकी व्यापार पर प्रतिबन्धों को उठा ले उसके विरुद्ध कानून का अमल रोक दिया जाय। १८१० में नेपोलियन ने प्रतिबन्धों को उठाने की नियमपूर्वक घोषणा कर दी, किन्तु असल में वे जारी रहे। लेकिन संयुक्तराज्य ने उस पर विश्वास करके उसके पश्चात् अपना असहयोग केवल ब्रिटेन से जारी रखा।

१८०९ में जैफर्सन का द्वितीय कार्यकाल समाप्त हो गया और जेम्स मेडिसन राष्ट्रपति बना। ग्रेट-ब्रिटेन के साथ सम्बन्ध और भी बिगड़ गए और दोनों देश शीघ्र युद्ध की ओर झुकने लगे। राष्ट्रपति ने कांग्रेस के सामने एक विस्तृत रिपोर्ट पेश की जिसमें दिखलाया गया था कि अंग्रेजों ने तीन वर्ष के भीतर ६०५७ बार अमरीकी नागरिकों को बलपूर्वक भर्ती किया। इसके अतिरिक्त उत्तर-पश्चिमी प्रदेश के निवासियों को इण्डियनों के आक्रमणों से कष्ट पहुँचा

था और उनका विश्वास था कि उन आक्रमणों के पीछे कनाडा-स्थित ब्रिटिश एजेण्टों का हाथ है। १८१२ में ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया गया।

घेन्ट की संधि द्वारा युद्ध का अंत

परन्तु अमरीका इस समय अत्यन्त गम्भीर आन्तरिक मतभेदों से पीड़ित था। दक्षिण और पश्चिम तो युद्ध के पक्षपाती थे परन्तु न्यूयार्क और न्यू इंग्लैण्ड उसके विरुद्ध थे। जब युद्ध घोषित किया गया तब सेना की तैयारी सर्वथा अपूर्ण थी। नियमित सैनिक सात हजार से कम थे और वे भी समुद्र के किनारे, कनाडा की सीमा पर और सुदूर-मध्यवर्ती प्रदेश में दूर-दूर बिखरे पड़े थे। इनकी सहायता कई स्टेटों की अशिक्षित तथा अनुशासनहीन नागरिक सेना को करनी थी।

युद्ध का आरम्भ कनाडा पर तीन स्थानों पर आक्रमण की तैयारी के साथ हुआ। यदि वह ठीक समय पर और ठीक प्रकार किया जाता तो मॉण्ट्रियल के विरुद्ध सम्मिलित कार्रवाई हो सकती थी। परन्तु सब काम बड़ी अव्यवस्था से हुआ और उसका फल डेट्रॉयट पर ब्रिटिश अधिकार के रूप में सामने आया। परन्तु जहां स्थलीय कार्रवाई में असफलता हुई वहां समुद्र में अमरीका की साख अंशतः पुनः जम गयी। अमरीकी फ्रिगेट 'कान्स्टिट्यूशन' ने कैप्टेन आइजक हल के संचालन में १९ अगस्त को बास्टन के दक्षिण पूर्व में ब्रिटिश जहाज 'गेरिअर' का सामना किया और तीस मिनट की लड़ाई के पश्चात् हल ने शत्रु के जहाज को पकड़ कर सर्वथा नष्ट कर दिया। दो महीने बाद अमरीकी स्लूप 'वास्प' ने ब्रिटिश स्लूप 'फ्रोलिक' से टक्कर ली और उसे पूर्णतया नष्ट कर दिया। अमरीकी जलसेना के इस प्रभावशाली कार्य से संसार चकित हो गया। इसके अतिरिक्त अमरीकी प्राइवेटियरों ने एटलांटिक में फैल कर १८१२-१३ की शरद और शीत-ऋतु में ५०० ब्रिटिश जलपोतों को पकड़ लिया।

१८१३ का युद्ध न्यूयार्क स्टेट में ईरी झील के आसपास केन्द्रित रहा। जनरल विलियम हैनरी हैरिसन ने नागरिकों, सैनिकों, स्वयंसेवकों और नियमित सैनिकों की एक सेना लेकर डेट्रॉइट को पुनः जीतने के लिए केण्टुकी से चढ़ाई की। १२ सितम्बर को वह अभी ओहायो के ऊपरी प्रदेश में ही था कि उसे समाचार मिला कि कमांडर ऑलिवर पेरी ने ईरी झील पर शत्रु के जहाजों को नष्ट कर दिया है। पेरी केवल दो दिन पूर्व ब्रिटिश जहाजों के समीप पहुंचा था और केवल ढाई घण्टे की वीरतापूर्ण कार्रवाई के पश्चात् उसने अपने इस सन्देश द्वारा देश में सनसनी फैला दी कि "हमने शत्रु का सामना किया और वह हमारा हो चुका है।" इसके पश्चात् यह झील अमरीकी अधिकार में ही रही। अब हैरिसन आक्रमण कर रहा था और एक मास से भी कम समय में उत्तरी कनाडा अमरीकी अधिकार में आ गया। परन्तु वर्ष के अन्त में ऑण्टेरियो झील ब्रिटिश अधिकार में ही थी। आगामी डेढ़ वर्ष में जो अनेक स्थल और जल युद्ध हुए उनके बाद भी सामरिक स्थिति प्रायः यथापूर्व रही।

युद्ध की समाप्ति घेण्ट की सन्धि से हुई। अमरीका ने फरवरी १८१५ में इसे स्वीकार कर लिया। सन्धि वार्ता के प्रसंग में दिन-प्रतिदिन इंग्लैण्ड और अमरीका अपनी मांगों को अधिकाधिक छोड़ते चले गए, जिसका विचित्र परिणाम यह हुआ कि अन्तिम सन्धि में दोनों में से किसी ने भी न कुछ खोया और न कुछ पाया। इसमें केवल युद्ध बन्द करने, विजित प्रदेशों को वापस कर देने और सीमा निर्धारित कर देने के लिए एक कमीशन नियत कर देने की बात कही गयी थी। नाविकों की जबरन भर्ती और तटस्थता के अधिकारों के विषय में जिनके कारण कि यह महंगा युद्ध हुआ था, एक शब्द भी नहीं कहा गया था। न्यू ऑर्लियन्स में प्रबल योद्धा एण्ड्रू जैक्सन के नेतृत्व में सीमावर्ती लोगों की अव्यवस्थित परन्तु विशाल सेना ने बलवान ब्रिटिश सेना पर जो नाटकीय विजय प्राप्त की उसके कारण अमरीका को प्रसन्न होने का एक वास्तविक कारण मिल गया था। विचित्र बात यह थी कि यह विजय ८ जनवरी, १८१५ को हुई जबकि शान्तिसन्धि पर हस्ताक्षर हो चुके थे, परन्तु अमरीकी जनता को उसका ज्ञान नहीं था।

सब युद्धों की भांति इस युद्ध में भी बहुत हानियां हुईं, विशेषतः एक युवा और बढ़ते हुए देश के लिए २१,००० नाविकों और ३०,००० सिपाहियों के मरने अथवा घायल होने की हानि बहुत बड़ी थी। इसके अतिरिक्त १४०० जहाज नष्ट हो गए थे और असाधारण आर्थिक हानि हुई थी। परन्तु इस विषय में इतिहासकारों का एकमत है कि १८१२ के युद्ध का एक महत्वपूर्ण परिणाम राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति का दृढ़ीकरण हुआ। इस युद्ध में विविध राज्यों के जवान कन्धे-से-कन्धा मिलाकर लड़े और वर्जिनिया-निवासी विनफील्ड स्कॉट का उत्तरी सेनाओं का योग्यतम सेनापति होने के कारण राष्ट्रीय एकता की भावना और भी दृढ़ हो गयी। पश्चिमी सेनाएँ पूर्वी समुद्र-तट के अपने सह-देशभक्तों के साथ मिलकर लड़ीं और तभी से राष्ट्रीय भावनापूर्ण पश्चिम का महत्व अमरीकी जीवन में और भी बढ़ गया।

एलबर्ट गैलाटिन १८०१ से १८१३ तक अर्थमन्त्री रहा था। उसका कथन

था कि इस युद्ध से पूर्व अमरीकी लोग अत्यधिक स्वार्थी और स्थानीय हितों की अत्यधिक चिन्ता करने वाले होने जा रहे थे। उसने कहा था "क्रान्ति ने जो राष्ट्रीय भावना और चरित्र प्रदान किए थे उनका दिन-प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा था। उन्हें इस युद्ध ने पुनर्जीवित और दृढ़ कर दिया। अब लोगों की प्रवृत्ति ऐसे सार्वजनिक उद्देश्यों की ओर होती जा रही है जिनका उन्हें अभिमान है और जिनके साथ उनके राजनीतिक विचारों का सम्बन्ध है। वे अब अधिक अमरीकी बन गए हैं, वे अब एक राष्ट्र की भांति अधिक सोचने और काम करने लगे हैं, और मुझे आशा है कि इस प्रकार अब यूनियन की स्थिरता अधिक सुरक्षित हो गयी है।"

१८१२ में 'कान्स्टिट्यूशन' नामक अमरीकी जहाज ने एक घमासान युद्ध में शत्रु के जहाज को नष्ट कर दिया। इस नाटकीय जीत के बाद यह जहाज 'ओल्ड आयरन साइड्स' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।



अध्याय ४

पश्चिम दिशा में विस्तार और प्रादेशिक मतभेद

"युवक, पश्चिम की ओर जाओ और देश के साथ-साथ अपना भी विकास करो।"

—हॉरेस ग्रीली, १८५०

१८१२ का युद्ध एक प्रकार से दूसरा स्वाधीनता संग्राम था क्योंकि तब तक अमरीका को राष्ट्रों के कुटुम्ब में समानता प्राप्त नहीं हुई थी। युद्ध को समाप्त करने वाली सन्धि के बाद किसी राष्ट्र ने भी अमरीका के साथ वैसा व्यवहार करने से इन्कार नहीं किया जैसा कि एक स्वतन्त्र राष्ट्र से किया जाता है। क्रान्ति के समय से अब तक इस नवजात गणतन्त्र को जो कठिनाइयां सहनी पड़ी थीं वे सब अन्तर्धान हो गयी। राष्ट्रीय एकता स्थापित हो चुकी थी, स्वाधीनता और व्यवस्था में सन्तुलन बन चुका था, राष्ट्र पर नाममात्र का ऋण था, महाद्वीप की पवित्र धरती हल की प्रतीक्षा में थी और शान्ति, समृद्धि तथा सामाजिक उन्नति का आलोक विकसित हो रहा था।

राजनीतिक दृष्टि से, समकालीन लोगों की शब्दावली में "सद्भावना का युग" था और शान्ति के बाद होने वाले पुर्ननिर्माण कार्यों में व्यापक एकता की भावना स्पष्ट थी। वाणिज्य अमरीकी जनता को एक राष्ट्रीय इकाई के रूप में संगठित कर रहा था। युद्ध काल के अभावों ने यह जता दिया था कि उत्पादकों को तब तक संरक्षण प्राप्त होना जरूरी है जब तक वे विदेशों की होड़ के सामने अपने पैरों आप खड़े होने योग्य न हो जाएं। यह भी कहा गया कि आर्थिक स्वाधीनता उतनी ही आवश्यक है जितनी राजनीतिक स्वतन्त्रता; आर्थिक आत्म-निर्भरता के बिना राजनीतिक स्वाधीनता अर्थहीन थी और चूंकि वह क्रान्तिकारी लड़ाई पहले उद्देश्य के लिए लड़ी गयी थी इसलिए अब दूसरे को पाने का संकल्प किया गया। अमरीकी कांग्रेस के दो तत्कालीन नेता हैनरी क्ले और जान सी. कैलहान 'संरक्षण' अर्थात् एक ऐसी कर-व्यवस्था जो अमरीकी उद्योग के विकास का मार्ग प्रशस्त करे, के समर्थक थे।

आयात-निर्यात कर बढ़ाने का यह एक समुचित अवसर था। वरमाण्ट और ओहायो का भेड़-पालक समुदाय देश में बहुतायत से आने वाली अंग्रेजी ऊन के विरुद्ध संरक्षण चाहता था; केण्टुकी में स्थानीय पटसन के बोरे बनाने के नए उद्योग को स्काटलैण्ड के बोरों के उद्योग से भय था; पिट्सबर्ग, जो लोहे की ढलाई का केन्द्र बन चुका था, अकेले ही उस सम्पूर्ण मांग की पूर्ति करना चाहता था जो ब्रिटेन और स्वीडन के लोहे से पूरी होती थी। और, इसीलिए १८१६ में स्वीकृत आयात-कर द्वारा चुंगी की दर इतनी बढ़ा दी गयी कि उद्योगपतियों को संरक्षण का वास्तविक स्वाद मिल सके। साथ-साथ कुछ ऐसे लोग, जिनका विश्वास था कि यातायात के उत्तम साधन पूर्व और पश्चिम को अधिक दृढ़ता से बांध सकेंगे, सड़कों और नहरों की एक राष्ट्रव्यापी व्यवस्था की वकालत कर रहे थे।

सुप्रीम कोर्ट की तत्कालीन घोषणाओं से संघ सरकार को बहुत बल मिला। वर्जिनिया के एक पक्के संघवादी जान मार्शल, १८०१ में मुख्य न्यायाधीश बनाए गए और आजीवन यानी सन् १८३५ तक उसी पद पर रहे। जो न्यायालय उनके पहले प्रभावहीन था उसे, उन्होंने, कांग्रेस और राष्ट्रपति जैसे महत्वपूर्ण पद के समान प्रभावशाली बना दिया। अपने सारे ऐतिहासिक निर्णयों में मार्शल इस मौलिक सिद्धान्त—संघ शासन की सर्वोपरिता—से कभी भी विचलित न हुए।

मार्शल केवल एक महान् न्यायाधीश ही नहीं वरन् एक विधानशास्त्री राजनयज्ञ भी थे। अपने लम्बे सेवा-काल में उन्होंने लगभग पचास ऐसे मुकदमों के निर्णय दिए जिनसे महत्वपूर्ण संवैधानिक प्रश्न सम्बद्ध थे। इसके उपरान्त सारे देश में न्यायालयों ने जिस संविधान का प्रयोग किया वह वही था जिसकी व्याख्या मार्शल ने की थी। उनके सुप्रसिद्ध फैसलों में सबसे मुख्य है उनकी वह सम्मति जो उन्होंने सन् १८०३ में मार्बरी बनाम मेडीसन के मुकदमे में दी थी। उसमें उन्होंने इस नियम की प्रतिष्ठा की थी कि कांग्रेस अथवा किसी भी राज्य की सरकार द्वारा स्वीकृत किसी भी कानून की समीक्षा करने का अधिकार सुप्रीम कोर्ट को है। १८१९ में, मैक्युलाक बनाम मेरीलैण्ड के मामले में उन्होंने संविधान में निहित सरकार के अधिकारों से सम्बन्धित पुराने प्रश्न पर विचार किया। यहां उन्होंने हैमिल्टन के इस सिद्धान्त का स्पष्ट समर्थन किया कि संविधान जो अधिकार स्पष्टतः सरकार को देता है उनके साथ ही कुछ अलिखित प्रासंगिक अधिकार

स्वभावतः उसे प्राप्त हो जाते हैं। अपने इन फैसलों के जरिए मार्शल ने अमरीका की केन्द्रीय सरकार को सजीव और विकासमान शक्ति बनाने में किसी भी नेता से कम काम नहीं किया।

साहित्य और सीमांत

एक सर्वथा भिन्न क्षेत्र में, राष्ट्रीय जागृति के स्पष्ट प्रमाण मिले, क्योंकि इसी काल में सच्चे अर्थों में अमरीकी साहित्य का सृजन हुआ। इस नयी अमरीकी धारा के प्रमुख लेखक थे वाशिंगटन इर्विंग और जेम्स फेनीमोर कूपर। १८०९ में इर्विंग लिखित 'हिस्ट्री आव न्यूयार्क बाई डीड्रिख निकरबॉकर' नामक हास्यपूर्ण इतिहास प्रकाशित हुआ। उसकी प्रेरणा उसे स्थानीय अमरीकी गतिविधियों से मिली थी। इर्विंग की 'रिप वैन विन्किल' की कथा जैसी कई उत्तम रचनाओं की पृष्ठभूमि न्यूयार्क की हडसन घाटी है। इसमें, अमरीका की वीरगाथाओं और साहसिक कहानियों की भूमि के रूप में चित्रित किया गया है। इसी प्रकार कूपर की प्रतिभा भी स्वदेशी सामग्री द्वारा अभिव्यक्त हुई। परम्परागत अंग्रेजी शैली का एक उपन्यास लिखने के पश्चात् उसने 'दि स्पाई' नामक अमरीकी क्रान्ति की कथा प्रकाशित की जो तुरंत ही बड़ी लोकप्रिय बन गयी। इसके बाद 'दि पायोनियर्स' प्रकाशित हुई जो सीमावर्ती अमरीकी जीवन का एक गद्यचित्र है। १८२३ से १८४१ तक कूपर ने 'लेदरस्टॉकिंग टेल्स' नामक सिरीज़ के द्वारा अग्रणी 'नैटीबम्पो' तथा दबे पाँव चलनेवाले इण्डियन सरदार अन्कास जैसे विश्व साहित्य के अमर पात्र पेश किये। कूपर ने समुद्री कहानियां भी लिखीं जिनमें अमरीकी प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। १८१५ में 'दि नार्थ अमेरिकन रिव्यू' की स्थापना साहित्य जगत की एक और महत्वपूर्ण घटना थी। अपने योग्य सम्पादक जैरेड स्पार्क्स के नेतृत्व में इसने साहित्य का एक ऊँचा स्तर स्थापित किया। न्यू इंग्लैण्ड के अनेक प्रतिभाशाली लेखक इसमें अपने लेख दिया करते थे जिनके द्वारा इसने शीघ्र ही राष्ट्र की उदीयमान संस्कृति में अमिट स्थान प्राप्त कर लिया।

अमरीकी जीवन को उसका विशेष रूप प्रदान करने में जिसकी आकर्षण शक्ति ने अद्वितीय योग दिया वह था सीमान्त। समस्त एटलांटिक तट की परिस्थितियों ने लोगों को नए प्रदेशों में जा बसने के लिए आकर्षित किया। न्यू इंग्लैण्ड की पहाड़ी भूमि, सस्ती और उर्वर पश्चिमी धरती की बराबरी नहीं कर सकती थी। फलतः स्त्री-पुरुषों का प्रवाह भीतरी क्षेत्रों की समृद्ध धरती का लाभ उठाने के उद्देश्य से उधर को बह चला। दक्षिण की स्थितियों ने भी आप्रवासन को प्रोत्साहन दिया। कैरोलाइना और वर्जिनिया की भीतरी बस्तियों के लोग तटवर्ती बाजारों तक पहुँचने के लिए सड़कों और नहरों की कमी अनुभव करते थे। वे समुद्र तट के बागान मालिकों की राजनीतिक शक्ति के कारण भी क्षुब्ध थे। अस्तु, वे भी धीरे-धीरे एटलांटिक तट से राकीज़ की ओर बढ़ने लगे। इस आप्रवासन का अमरीकी चरित्र पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इससे व्यक्तिगत सूझ-बूझ को प्रोत्साहन मिला, राजनीतिक और आर्थिक जनतन्त्र का विकास हुआ, शिष्टाचार पर असर पड़ा, सनातनी विचारधाराएँ टूटीं और स्थानीय स्वायत्त-संकल्प तथा राष्ट्रीय सत्ता के प्रति आदर भावना का जन्म हुआ।

पश्चिम की ओर बहने वाली धारा बेरोकटोक बहती हुई पहले सीमान्त के पार एटलांटिक तट की पट्टी तक पहुँच गयी, किनारे की नदियों के उद्गमों से भी आगे, अपलेशियन के ऊपर तक। सन् १८०० के लगभग मिसिसिपी तथा ओहायो घाटियां भारी सीमान्त क्षेत्र बन रही थीं। "हायो, अवे वी गो, फ्लोटिंग डाउन दि रिवर ऑन द ओहायो" (हायो, हम जा रहे हैं, ओहायो नदी की लहरों पर तिरते हुए) यह गाना हजारों आप्रवासियों की जबान पर था। सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में आबादी के इस भारी प्रवाह के कारण पुराने प्रदेशों का विभाजन और नयी सीमाओं का निर्धारण आश्चर्यजनक शीघ्रता से हो गया। नए राज्यों के प्रवेश के साथ ही मिसिसिपी के पूर्व की भूमि का राजनीतिक मानचित्र भी स्थिर हो गया। छः वर्षों में छः नए राज्य बने: इण्डियाना १८१६ में, मिसिसिपी १८१७ में, इलीनॉय १८१८ में, अलाबामा १८१९ में, मेन १८२० में और मिसूरी १८२१ में। पहला सीमान्त, यूरोप के साथ रहा और दूसरा तटवर्ती बस्तियों के साथ। पर मिसिसिपी घाटी स्वतन्त्र रही। इसके निवासियों की दृष्टि पूर्व की अपेक्षा पश्चिम की ओर रहती थी। सीमान्त प्रदेशों के निवासी विविध प्रकार के थे। आप्रवासियों के आगे-आगे शिकारी और बनैले पशुओं को पकड़ने वाले लोग चलते थे। एक अंग्रेज यात्री फोर्डहम ने उनके विषय में लिखा है, "यह लोग साहसी और परिश्रमी हैं जो छोटे-छोटे खोखों में रहते हैं ... ये शिष्टाचार नहीं जानते किन्तु अतिथि का सत्कार करना जानते हैं, ये अपरिचितों के प्रति दयालु, ईमानदार और विश्वास योग्य हैं। ये देशी मक्का और कद्दू की थोड़ी बहुत खेती करते हैं। किसी-किसी के पास एक दो गाएँ भी होती हैं ... पर इनके निर्वाह का प्रमुख साधन है रायफिल।" यह लोग कुल्हाड़ी, फन्दे और मछली पकड़ने वाली बंसी के प्रयोग में निपुण थे। रहने के लिए लकड़ी के खोखे सर्वप्रथम इन्होंने ही बनाए। ये इण्डियनों को दूर रखने में भी समर्थ थे।



१८२३ में जेम्स मुनरो ने विदेश नीति की घोषणा की जो आगे चलकर 'मुनरो डाक्ट्रिन' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

सीमान्त की मांग थी—स्वावलम्बन

जंगलों में प्रवेश करने के बाद नए निवासी किसान और शिकारी बन जाते थे। छोटे-छोटे खोखों की बजाय अब ये लोग शहतीरों के बड़े-बड़े मकान बनाने लगे। झरनों को छोड़कर वे कुएं खोदने लगे। पुरुषार्थी तो थे ही, वे जंगल साफ करके उसकी लकड़ी को पोटाश के लिए जला देते थे और ठूंठों को छीजने के लिए छोड़ देते थे। वे अपने लिए अन्न, सब्जियां और फल स्वयं उगाते थे, हिरन के मांस, टर्कियों और शहद के लिए जंगलों को छान डालते थे और आस-पड़ोस की जलधाराओं से मछलियां पकड़ते थे। जो बहुत अधीर थे वे सस्ती धरती के बड़े-बड़े टुकड़े मोल लेकर जब उनका मूल्य बढ़ जाता तो उन्हें बेच कर पश्चिम की ओर बढ़ जाते थे।

शीघ्र ही किसानों के अतिरिक्त डाक्टर, वकील, दुकानदार, सम्पादक, उपदेशक, मैकेनिक और राजनीतिज्ञ आदि भी आने लगे। इनमें किसान सर्वाधिक महत्वपूर्ण थे। वे जहां बस जाते थे वहीं आजीवन रहना चाहते थे और आशा करते थे कि उनकी सन्तानें भी वहीं रहें। वे अपने पहले आनेवालों की तुलना में बड़ी बड़ी खत्तियां और ईंटों अथवा लकड़ी के ढांचों के दृढ़ मकान बनाते थे, वे पशुओं की अच्छी नस्लें लाते थे, धरती को कुशलता से जोतते थे और अधिक उपज के लिए उत्तम बीज बोते थे; आटा पीसने और लकड़ी चीरने की कलें और आसवनशालाएं भी खड़ी कर लेते थे। वे अच्छी सड़कें, गिरजाघर और स्कूल बनाते थे। पश्चिम की तरक्की इतने वेग से हुई कि वहां कुछ ही वर्षों में कायाकल्प हो गया। उदाहरण के लिए, शिकागो जिसमें यद्यपि एक दुर्ग था पर जो एक निरा व्यापारी गांव था, अपने अनेक आदिवासियों के जीवनकाल में ही राष्ट्र के महानतम और सम्पन्नतम् नगरों में गिना जाने लगा था। नए पश्चिम में विभिन्न वर्गों के लोगों का रक्त मिल-जुल गया। दक्षिण के ऊँची धरती वाले प्रदेश के किसान इनमें प्रमुख थे और इसी कुटुम्ब की सन्तान थे। अब्राहम लिंकन जिनका जन्म कण्टुकी के एक लट्ठों के खोखे में हुआ था, इसी घराने के थे। स्काच-आयरिशों, पेन्सिलवानिया के जर्मनों, न्यू इंग्लैण्ड निवासियों तथा अन्य उद्गमों के लोगों ने भी योगदान दिया। १८३० तक, अमरीका के आधे से अधिक निवासी एक ऐसी जलवायु में पल चुके थे जिसमें पुरानी रीतियां और रूढ़ियां या तो थीं ही नहीं या बहुत दुर्बल हो चुकी थीं। पश्चिम में लोगों का मूल्यांकन विरासत में मिली पैत्रिक सम्पत्ति अथवा ऊँची शिक्षा के आधार पर नहीं किया जाता था बल्कि इसलिए कि वे क्या थे और क्या कर

सकते थे। फार्मों के मूल्य ऐसे थे कि उन्हें कोई भी मितव्ययी व्यक्ति सुगमता से खरीद सकता था; सरकारी धरती सन् १८२० के बाद सवा डालर प्रति एकड़ के भाव मिल जाती थी और सन् १८६२ के बाद बसने वालों को बिना मूल्य के ही प्राप्त हो जाती थी। भूमि के संवारने के औजार भी सुगमता से उपलब्ध थे। यह वह समय था जब पत्रकार हॉरेस ग्रीली के शब्दों में, "युवक लोग पश्चिम जा सकते थे और देश के साथ स्वयं भी तरक्की कर सकते थे।" आर्थिक अवसर की समानता से, सामाजिक और राजनीतिक समानता की भावना का प्रादुर्भाव हुआ और स्वाभाविक नेताओं को तुरंत ही सामने आ जाने का अवसर प्रदान किया। एक सफल पथप्रदर्शक के लिए, पहल करने का विवेक, साहस, व्यक्तिगत प्रभाव तथा सुदृढ़बुद्धि अनिवार्य थे।

जैसे-जैसे न्यू इंग्लैण्ड के लोग पश्चिम जा कर बसते गए वे अपने अनेक आदर्श और अपने प्रदेश की संस्थाओं को भी ले आये। दक्षिण के लोगों ने भी ऐसा ही किया और एक तरह से, पश्चिम को बसाने का कार्य इन दोनों प्रभावों की एक होड़ के रूप में हुआ। दासता की प्रथा ने, जिसकी ओर जनता का अभी तक ध्यान नहीं गया था, सहसा असाधारण महत्व धारण कर लिया; जैफर्सन के शब्दों में उसने "रात के समय आग-सूचक चेतावनी घण्टी" जैसा काम किया। गणतन्त्र के प्रारम्भिक वर्षों में जब उत्तरी राज्य दासता के तात्कालिक अथवा क्रमिक उन्मूलन की व्यवस्थाएं कर रहे थे तो अनेक नेताओं को आशा हो गयी थी कि सभी जगह दासता का अन्त हो जाएगा। १७८६ में वाशिंगटन ने लिखा "मैं धर्म से चाहता हूँ कि कोई योजना अपनायी जाय जिससे कि दासता, धीरे-धीरे, निश्चित रूप से यूँ समाप्त हो जाय कि पता भी न चले।" और जैफर्सन, मेडीसन, मुनरो तथा अन्य दक्षिणी राजनीतिज्ञों ने ऐसी ही घोषणाएं कीं। और जब सन् १८०८ में दास-व्यवसाय समाप्त कर दिया गया तो बहुत से दक्षिणी लोगों को लगा कि दासता अब कुछ ही दिनों की मेहमान रह गयी थी।

कपास के कारण दासता को प्रोत्साहन

पर अगली पीढ़ी में दक्षिण एक ऐसे वर्ग में परिणत हो गया जो लगभग सम्पूर्ण रूपसे दासता को कायम रखने के मामले पर एकमत था। यह परिवर्तन अनेक कारणों से हुआ। क्रान्ति के समय दार्शनिक उदारता की जो भावना प्रज्वलित हो उठी थी, वह उत्तरोत्तर दुर्बल हो चली और कट्टरपन्थी न्यू इंग्लैण्ड तथा दासता-समर्थक दक्षिण का परस्पर विरोध स्पष्ट रूप में सामने आने लगा।

उद्यमी और साहसिक अग्रणी जन पूर्वी गांवों की आबादियां छोड़कर मध्यपश्चिम के उपजाऊ और अनबसे प्रेरी-प्रदेशों में रहने-बसने के लिए ढंकी हुई गाड़ियों में आगे बढ़ते गए।



इन सबसे बढ़ कर, बात यह कि कुछ नयी आर्थिक बातों ने, दासता को उससे भी अधिक लाभदायक बना दिया जितनी कि वह १७९० से पहले थी।

इस आर्थिक परिवर्तन का एक आधार था दक्षिण में एक महान कपास उत्पादन उद्योग का आविर्भाव। इस परिवर्तन के अनेक कारण थे। अच्छे रेशे वाली उन्नत किस्मों की कपास पैदा होने लगी थी। सन् १७९३ में एली ह्विटने के कपास ओटने वाले युगान्तरकारी 'जिन' नामक यन्त्र के आविष्कार ने उत्पादन को अत्यधिक बढ़ा दिया। साथ-ही-साथ उद्योगक्रान्ति ने सूती कपड़ा बनाने के काम को एक व्यापक कारोबार बनाकर कपास की मांग को अत्यधिक बढ़ा दिया। पश्चिम में १८१२ के बाद जो नयी जमीनें हल के नीचे लायी गई उनकी वजह से कपास की खेती का अत्यधिक विस्तार हो गया।

कपास की खेती वेग से समुद्रतटवर्ती राज्यों के आगे पश्चिम की ओर बढ़ी और निचले दक्षिण में फैलती हुई मिसीसिपी नदी तथा अन्त में टैक्सास तक पहुँच गयी। दासता को आधार प्रदान करनेवाली दूसरी चीज थी गन्ने की खेती। अठारहवीं शती के उत्तरार्ध में दक्षिण पूर्वी लुईजियाना की धरती गन्ने की खेती के लिए आदर्श भूमि सिद्ध हुई और १८३० तक यह राज्य देश भर के लिए आवश्यक चीनी की लगभग आधी देने लगा था। इसके लिए दास चाहिए थे। वे पूर्वीतट से लाए गए। अन्त में तम्बाकू की खेती भी दासता को अपने साथ लेकर पश्चिम की ओर बढ़ी। फलतः ऊपरी दक्षिण के दास, निचले दक्षिण और पश्चिम की ओर लाए गए।

उत्तर का स्वतन्त्र समाज और दक्षिण का दास समुदाय ज्यों-ज्यों पश्चिम की ओर फैलता गया त्यों-त्यों ऐसा प्रतीत हुआ कि नए राज्यों में साधारण रूप से समानता की स्थापना अधिक हितकर होगी। सन् १८१८ में जब इलीनोय नामक राज्य संघ-सरकार में सम्मिलित हुआ तब दस राज्यों में दासता की आज्ञा थी और ग्यारह ने उसका निषेध कर दिया था। जब अलाबामा एक दास पोषक राज्य के रूप में शामिल हुआ तो सन्तुलन पुनः स्थापित हो गया। बहुत से उत्तरी लोग तुरंत एक हो कर मिसूरी संघ में मिसूरी के प्रवेश का विरोध करने के लिए तैयार हो गए जब तक कि वह राज्य दासता सम्बन्धी अपनी नीति न बदल दे। देश में विरोध की एक आंधी आ गयी। कुछ समय के लिए कांग्रेस में गतिरोध आ गया। आखिरकार हैनरी क्ले के शान्तिपूर्ण नेतृत्व में एक समझौता हुआ। मिसूरी दासता पोषक राज्य के रूप में संघ में शामिल किया गया पर उसी समय मेन ने एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में संघ में प्रवेश किया। कांग्रेस ने घोषणा की कि मिसूरी की दक्षिण सीमा के उत्तर में लुइजियाना-क्रय से जो धरती प्राप्त की गयी थी उसमें से दासता की प्रथा सदैव के लिए अलग कर दी जाय। यह एक अस्थायी समाधान सिद्ध हुआ। जैफर्सन ने कहा कि रात में लगने वाली आग की चेतावनी घण्टी चुप तो कर दी गयी किन्तु कुछ ही देर के लिए। उन्होंने लिखा "यह तो केवल स्थगित करना हुआ। अन्तिम निर्णय नहीं। एक भौगोलिक रेखा जो एक नैतिक तथा राजनीतिक सिद्धान्त के अनुरूप हो, और जो एक बार खींच कर लोगों के आवेश के सामने रख दी जाय वह कभी धुंधली नहीं हो सकती। वह हर झुंझलाहट के साथ और भी गहरी होती जायगी।

अमरीका की सीमा के बाहर टैक्सास में होनेवाले आप्रवासन को छोड़कर, कृषि प्रधान सीमान्त प्रदेश का पश्चिमोत्तरीय विस्तार मिसूरी के आगे १८४० तक नहीं हुआ। इसी समय सुदूर पश्चिम फर के व्यापार का एक बड़ा केन्द्र बन गया जिसका ऐतिहासिक महत्व खालों के एकत्रीकरण से कहीं बढ़कर होने वाला था। जैसा कि मिसीसिपी घाटी की फ्रांसीसी-खोज के प्रारम्भिक दिनों में हुआ था और हां, जैसाकि एटलांटिक तट से अंग्रेजों और डचों के द्वारा पश्चिम दिशा में उठाये पगों में हुआ, बसने वालों का पथप्रदर्शन व्यापारियों ने ही किया। फ्रांसीसी तथा स्काच-आयरिश 'ट्रैपरों' (शिकारियों) ने बड़ी-बड़ी नदियों और उनकी सहायक सरिताओं की तथा रॉकी और सियरा पर्वतों के सारे दर्रों की खोज की। पश्चिमी प्रदेशों के भूगोल का जो ज्ञान उन्होंने प्राप्त किया उसके आधार पर व्यापारियों द्वारा १८४० से १८४९ तक का आप्रवासन तथा बाद में भीतरी प्रदेशों पर कब्जा सम्भव हो सका। पश्चिम की ओर बढ़ने के अलावा १८१९ में अमरीका ने स्पेन से फ्लोरिडा और दूर पश्चिम के ओरेगान प्रदेश पर स्वामित्व प्राप्त कर लिया। यह इलाका अमरीका ने स्पेन पर अमरीकी नागरिकों के पचास लाख डालर के दावों के बदले में लिया था।

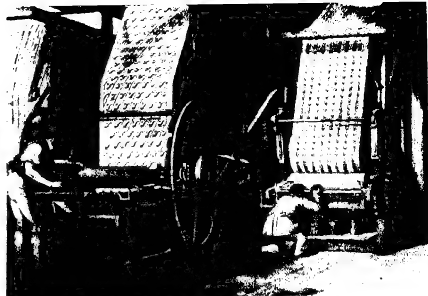
लैटिन अमरीको स्वाधीनता

सन् १८१७ में, राष्ट्रपति जेम्स मेडीसन के बाद जेम्स मुनरो राष्ट्रपति चुने गए। इनमें दो असाधारण गुण थे—तीव्र व्यवहारकुशलता तथा दृढ़ इच्छा-शक्ति। जैसा कि उनके उत्तराधिकारी जान क्विन्सी एडेम्स ने कहा था, वह 'एक ऐसे कुशल मस्तिष्क का व्यक्ति था जो सदैव ठीक निर्णय करता था और किए हुए निर्णयों पर अटल रहता था।' उनकी शासन अवधि की जिस घटना ने उनका नाम अमर बना दिया वह था तथाकथित 'मुनरो-सिद्धान्त'।

इस नीति के तीनों मूलतत्व अलग-अलग भलीभांति जाने-माने अमरीकी सिद्धान्त थे। प्रथम, जैसा कि वाशिंगटन, जैफर्सन और मेडीसन ने कहा भी था, यह कि किसी भी स्थायी अथवा "उलझाने वाली सन्धि" में न फंसा जाय। दूसरे जब स्पेन ने लूइजियाना को किसी अन्य राष्ट्र के हाथ बेचना चाहा तो जैफर्सन ने उसका विरोध किया और घोषणा की कि सम्बद्ध धरती के साथ संयुक्त राज्य अमरीका के सर्वोच्च हित निहित हैं। तीसरा मूलतत्व था, आत्मनिर्णय का सिद्धान्त जिसे अमरीका की जनता ने स्पेनिश-अमरीकी उपनिवेशों के स्वाधीनता-संघर्ष-रत निवासियों के साथ सहानुभूति के रूप में व्यक्त किया था।

जब से अंग्रेजी उपनिवेश स्वाधीन हुए तब से लैटिन अमरीका के लोगों में भी स्वाधीनता की ऐसी ही आशा उभर उठी थी। सन् १८२१ के पूर्व अर्जेण्टाइना और चिली अपनी स्वाधीनता पुष्ट कर चुके थे और १८२२ में जोस डी सैन मार्टिन तथा साइमन बोलीवर के नेतृत्व में अन्य कई दक्षिण अमरीकी राज्य स्वाधीनता पा चुके थे। १८२८ में केवल वेस्ट इण्डीज में और दक्षिण अमरीका के उत्तरी तट पर कई यूरोपीय राष्ट्रों के छोटे-छोटे उपनिवेश बच रहे थे। ये और इनके साथ एक दो बर्तानिया के अधीन प्रदेश ही अमरीका में यूरोपीय उपनिवेश रह गए थे। अमरीका के लोगों को, उसमें स्वाभाविक और गहरी रुचि महसूस हुई क्योंकि इसमें उन्हें सबल यूरोपीय सरकार से नाता तोड़ने के अपने अनुभव की पुनरावृत्ति-सी प्रतीत हुई। १८२२ में राष्ट्रपति मुनरो ने भारी सार्वजनिक दबाव के बाद कुछ देशों को मान्यता देने के अधिकार प्राप्त किए। इनमें कोलम्बिया, चिली, मैक्सिको, ब्राजील भी थे। इनके साथ तुरत उसने मन्त्रियों का आदान-प्रदान आरम्भ कर दिया। इस पग ने संयुक्त राज्य अमरीका को इस सिद्धान्त से बांध दिया कि ये देश स्वावलम्बी, स्वशासित, वास्तव में स्वाधीन और अपने पुराने यूरोपीय सम्पर्कों से नितांत दूर हैं। वे समान रूप से प्रतिष्ठित बन्धु-राज्यों के रूप में स्वाधीन अमरीका के अंग मान लिए गए।

लगभग इसी समय मध्य यूरोपीय शक्तियों का एक समुदाय, जिसे साधारणतः 'होली एलायन्स' (पवित्र मैत्री) कहा जाता था, यूरोप के न्याय संगत शासकों के हितों को क्रान्ति से बचाने के लिए संगठित किया गया। इस आशा से कि यह क्रांतियां उनके अपने अधिकृत क्षेत्रों तक न फैल पाएं इस संगठन ने उन देशों में हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया जहां सार्वजनिक आन्दोलन शाही सिंहासनों को आतंकित कर रहे थे। यह नीति आत्मनिर्णय के अमरीकी सिद्धान्त से बिल्कुल विपरीत थी। दक्षिण अमरीका की नयी सरकारों के स्थायित्व में अमरीकी



उत्तरी इलाके की एक मिल में कपड़े की छपाई। कपड़ा बनाने की मशीनों की बदौलत अमरीका विदेशी आयात की आवश्यकता से मुक्त हो गया। १८४० तक अमरीका में सूती कपड़े की १२०० फैक्टरियां खुल चुकी थीं।

३६३ मील लम्बी इरी नहर पूरी हो जाने पर एक शानदार उत्सव मनाया गया जिसमें न्यूयार्क राज्य के गवर्नर द विट क्लिण्टन ने इरी झील के पानी से भरे एक कुप्पे को अटलांटिक महासागर में उंडेला।



भरोसे को भारी धक्का तब लगा जब इस संगठन ने स्पेन तथा नयी दुनिया में उसके उपनिवेशों की ओर भी ध्यान दिया। अमरीका की दृष्टि में इसका आशय यह हुआ कि कई यूरोपीय शक्तियां घूम कर उन क्षेत्रों पर आधिपत्य जमाना चाहती थीं जो अपने आपको स्पेन के पंजों से मुक्त कर चुके थे। वर्षों तक अमरीकी सरकार ने उस एकाकी नीति का अनुसरण किया जो वाशिंगटन, हैमिल्टन, जेफर्सन, जान एडम्स आदि पहले के राजनीतिज्ञों ने बनायी थी। इसका तात्पर्य यह था कि यूरोपीय राजनीतिक गुटबन्दियों में अमरीका का कोई भाग न था। वह यूरोपीय युद्धों में तटस्थ था और वह एक अमरीकी राष्ट्र के रूप में विकसित करने की नीति का अनुसरण ही करेगा। इस नीति से उस पूरक सिद्धान्त को अपनाना सरल था कि यूरोपीय शक्तियां को अमरीका के मामले में दखल नहीं देना चाहिए।

अमरीका द्वारा यूरोप की धमकियों का विरोध

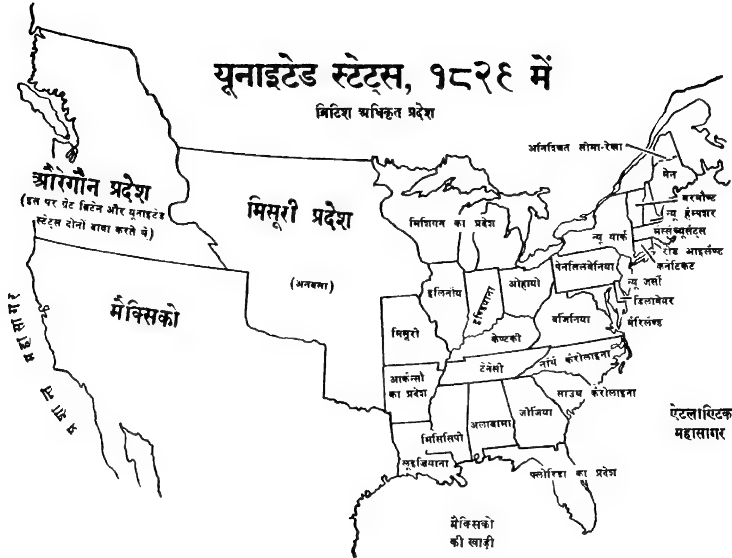
१८२३ में, ऐसा प्रतीत होने लगा कि एक ऐसी कार्रवाई का समय आ गया था जिससे लैटिन अमरीका पर स्पेन की बजाय उसकी ओर से किसी तीसरे पक्ष के आक्रमण की आशंका समाप्त हो जाय। दो दिसम्बर को राष्ट्रपति मुनरो ने कांग्रेस के समक्ष अपना वार्षिक संदेश पढ़ा जिसके कुछ वाक्य मिल कर मूल 'मुनरो सिद्धान्त' बन जाते हैं। इस घोषणा के प्रमुख वाक्य मुनरो के अपने शब्दों में इस प्रकार हैं :— (१) "अमरीकी महाद्वीप के देशों को जिन्होंने अपनी स्वाधीन और स्वतंत्र स्थिति बना ली है और उसका पोषण भी कर रहे हैं, आगे किसी भी यूरोपीय शक्ति द्वारा पुनः उपनिवेश बनाये जाने के विषय नहीं माना जायगा। (२) "सम्मिलित शक्तियों की राजनीतिक पद्धति निश्चय ही...हमारी अमरीकी प्रणाली से भिन्न है...हमको चाहिए कि अपनी रीतियों को इस गोलार्द्ध के किसी भाग में फैलाने के उनके प्रयास को हम अपनी शान्ति और सुरक्षा के लिए एक आतंक समझें।" (३) "किसी भी यूरोपीय शक्ति के वर्तमान उपनिवेशों अथवा अधीन बस्तियों में हमने कोई हस्तक्षेप नहीं किया है और न आगे ही करेंगे।" (४) "यूरोपीय शक्तियों की उन लड़ाइयों में जो उनके पारस्परिक मामलों के कारण हुईं, हमने कोई भाग नहीं लिया और न ऐसा करना हमारी नीति के अनुकूल है।"

जब कि मुनरो सिद्धान्त विश्व के मामलों में अपनी नीति स्पष्ट कर रहा था तो देश की जनता का ध्यान राष्ट्रपति के आगामी चुनाव पर केन्द्रित हो रहा था। पांच उम्मीदवारों में कड़ा मुकाबला हुआ जिनमें न्यू ऑर्लियन्स युद्ध के विजेता ऐण्ड्रू जैक्सन भी थे। विद्वान, अनुभवी और राजनीतिकुशल पर ढीठ और हठी जॉन क्विन्सी एडेम्स विजयी हुए। वह असाधारण प्रतिभावान, चरित्रवान, और उच्च जन-भावना के व्यक्ति थे। पर उनमें बर्फ जैसी किफायत-शारी, व्यावहारिक रूखापन तथा उग्र पक्षपात जैसी दुर्बलताएं भी थीं। उनके शासन-काल में नए दलों की रूप-रेखाएं बनीं। एडम्स के अनुयायियों ने 'नेशनल रिपब्लिकन' नाम अपनाया जो बाद में बदलकर "ह्विग्ज' हुआ और जैक्सन के अनुयाइयों ने 'डेमोक्रेटिक पार्टी' को नया चरित्र प्रदान किया। एडम्स ने ईमानदारी और कुशलता के साथ शासन किया। फिर भी उन्होंने सड़कों और नहरों की एक राष्ट्रीय-व्यवस्था का निष्फल अनुमोदन किया। उनकी प्रशासन नीति अगले चुनाव के लिए एक लम्बा आन्दोलन रही, पर अपने असंवेदनशील बौद्धिक स्वभाव के कारण वे बहुत से मित्र भी न बना सके और १८२८ का चुनाव भूचाल सिद्ध हुआ जिसमें जैक्सन की शक्तियों ने एडम्स तथा उसके समर्थकों को बुरी तरह पराजित किया।

ऐलीगैनी के पश्चिम के राष्ट्रतन्त्रों की रचना करने वाले स्वावलम्बी वन-वासियों ने अपने संविधानों में सीमान्त के लोकतन्त्रीय विचार लिख दिए थे। १८२८ तक उनके विचारों के प्रभाव से अधिकतर पुराने राज्यों में जनता को मताधिकार प्राप्त हो चुका था। १८१२ के युद्ध से संघ का सन्तुलन पश्चिम के हाथों में रहा। अब आबादी के केन्द्र की भांति राजनीतिक प्रभाव का आकर्षण-बिन्दु भी पश्चिम के युवा लोकतन्त्र को स्थानान्तरित हुआ। पूर्व के समर्थकों की सहायता से उसने सीमान्त-भावना के अवतार जैक्सन को सर्वोच्च प्रशासक के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया।

जैक्सन एक सबल राष्ट्रपति

जैक्सन के पदासीन होने के समय वाशिंगटन की जनता का उत्साह उनके इस विश्वास का द्योतक था कि सरकार उनके हाथों में आ गयी है। देश के कोने-कोने से दस हजार दर्शक इस समारोह को देखने के लिए एकत्रित हुए। उस दिन जैक्सन, जो लम्बे छरहरे बदन के व्यक्ति थे और जिनके घने सफेद और आकर्षक बालों के नीचे बाज जैसा सतर्क प्रतीत होने वाला चेहरा था, काली पोशाक में अपार जनसमुदाय की भीड़ के बीच पैन्सिलवानिया एवेन्यू की कीचड़ भरी सड़क से पैदल गुजरे। उनके साथ कुछ गिने-चुने मित्रों को छोड़कर



यूनाइटेड स्टेट्स, १८२९ में
ब्रिटिश अधिकृत प्रदेश
औरेगौन प्रदेश
(इस पर ग्रेट ब्रिटेन और यूनाइटेड स्टेट्स दोनों दावा करते थे)
मिसूरी प्रदेश
(अनबसा)
मैक्सिको
प्रशान्त महासागर
अनिश्चित सीमा-रेखा
मेन
वरमौन्ट
न्यू हैम्पशार
मैसेच्यूसेट्स
रोड आइलैण्ड
कनेटिकट
न्यू यार्क
न्यू जर्सी
डिलावेयर
मैरिलैण्ड
पेनसिलवेनिया
मिशिगन का प्रदेश
इलिनॉय
इण्डियाना
ओहायो
वर्जीनिया
मिसूरी
केण्टकी
टेनेसी
नार्थ कैरोलाइना
आर्कन्सो का प्रदेश
साउथ कैरोलाइना
जौर्जिया
अलाबामा
मिसिसिपी
लुइजियाना
फ्लोरिडा का प्रदेश
ऐटलाण्टिक महासागर
मैक्सिको की खाड़ी

कोई अंगरक्षक न थे। 'कैपीटाल' भवन के पूर्वी पोर्टिको के विशाल पत्थर की सीढ़ियों वाले मार्ग की चोटी पर खड़े होकर उन्होंने अपने पद की शपथ ली और उद्घाटन भाषण पढ़ा। बड़ी मुश्किल से वह उस शोर मचाती हुई भीड़ में से निकल सके, जिसमें हर व्यक्ति उनसे हाथ मिलाना चाहता था। घोड़े पर सवार होकर वह शहरी घोड़ागाड़ियों, खेती में काम आनेवाली गाड़ियों और हर आयु एवं हर वर्ग के लोगों के एक अनौपचारिक जुलूस के आगे चलते हुए ह्वाइट हाउस गये।

जैक्सन, मन और आत्मा से पूर्णतया साधारण जनता के साथ थे। भीषण गरीबी में उनका जन्म हुआ था और उनके पिता उनके जन्म से पहले ही मर चुके थे। विपत्तियों के बीच पल कर उन्होंने प्रखर सहृदयता तथा दुखियों के प्रति चिरन्तन संवेदनशीलता पायी थी। वे बालक ही थे जब उन्होंने उस क्रान्ति में सक्रिय भाग लिया जिसमें उनके दो भाई मारे गए। चौदह वर्ष की अवस्था में वह दुनिया में अकेले थे। सीमान्त के वकील, किसान और दूकानदार के रूप में उन पूर्वी वित्त संस्थाओं के प्रति उनके मन में गहन अविश्वास पैदा हुआ जिनका पश्चिम के अधिकतर वाणिज्य पर व्यापक प्रभाव था। इसके अलावा वे साधारण मनुष्य की असाधारण कार्य करने की क्षमता में विश्वास करते थे। सब मिला कर उनका पन्थ सरल और व्यापक था। जनता जनार्दन और राजनीतिक समानता, सबको समान आर्थिक अवसर देने में उनका अटल विश्वास था। एकाधिकार तथा विशेष स्वत्वों से उन्हें बड़ी घृणा थी।

पद सम्भालने के बाद जैक्सन ने वेग के साथ अपने विचारों को अमली रूप दिया। १८२८ में उन्होंने संरक्षण-कर के प्रश्न पर साउथ कैरोलाइना के साथ सख्ती बरती। दक्षिण के किसान तो बढ़े हुए भावों का बोझा उठाते थे, और संरक्षण के सारे लाभ उत्तर के कारखानेदारों को होते थे। कांग्रेस द्वारा बनाए गए नियमों से जैसे-जैसे चुंगी के नियम बढ़ते गये वैसे-वैसे सारा देश धनवान होता गया किन्तु साउथ कैरोलाइना की समृद्धि गिरती गयी। साउथ कैरोलाइना के लोगों को आशा थी कि वे जिस चुंगी का विरोध लगातार करते आए थे उसे बदलने में जैक्सन अपने पद की शक्ति का उपयोग करेंगे। पर यह आशा व्यर्थ गयी क्योंकि वह संरक्षण को अवैधानिक मानने वाली दक्षिणी विचारधारा से सहमत नहीं थे। १८३२ में जब कांग्रेस ने एक नया चुंगी कानून बनाया तो जैक्सन ने उस पर निस्संकोच हस्ताक्षर कर दिए। साउथ कैरोलाइना के लोगों ने एक 'स्टेटस राइट्स पार्टी' (राज्यों के अधिकार सम्बन्धी दल) संगठित की। यह पार्टी उन लोगों की अगुआ थी जो निषेधात्मक सिद्धान्त में विश्वास रखते थे—कि किसी भी राज्य में उसके प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन यदि यह निर्णय कर दे कि कांग्रेस द्वारा निर्मित अमुक कानून विधान की दृष्टि में अनावश्यक है तो उनके इस निर्णय के बाद उस राज्य में वह कानून समाप्त हो जाये। राज्य की नयी संसद का निर्वाचन इसी विचारधारा के आधार पर हुआ और निर्वाचित संसद ने भारी बहुमत से 'नलिफिकेशन आर्डिनेन्स' पास किया जिसके द्वारा सन् १८२८ और १८३२ के चुंगी कानून इस राज्य में अवैध और अनधिकृत घोषित कर दिए गए तथा राज्य के प्रत्येक अधिकारी को आदेश हुआ कि वह इस आर्डिनेन्स की आज्ञा का पालन करने की शपथ उठाये। यह भी धमकी दी गयी कि यदि कांग्रेस, इस राज्य के विरुद्ध बल प्रयोग करने के लिए कोई कानून पास करेगी तो यह राज्य, संघ से अलग हो जायगा।

नवम्बर १८३२ में जैक्सन ने सात छोटे जलपोत और एक युद्धपोत इस आदेश के साथ चार्ल्सटन भेजे कि वे किसी भी सामयिक कार्रवाई के लिए तैयार रहें। दस दिसम्बर को उन्होंने कर विरोधियों के लिए एक घोषणा भी की। उन्होंने कहा, "साउथ कैरोलाइना, विप्लव और देशद्रोह के किनारे खड़ा है।" उन्होंने राज्य के लोगों से अपील की कि जिसके लिए उनके पूर्वजों ने संघर्ष किया था वे उस संघ के प्रति अपनी निष्ठा फिर से संगठित व मजबूत करें। डेनियल वेब्सटर की तरह उन्होंने भी इसकी पुष्टि की कि संयुक्तराज्य अमरीका "सत्ताधारी राज्यों का एक गठबन्धन" नहीं है वरन् "एक ऐसी सरकार है जिसमें सभी राज्यों के लोगों का सामूहिक प्रतिनिधित्व है।"

संघ सिद्धान्त की जीत

इसी बीच तटकर कानून का प्रश्न फिर से कांग्रेस के सामने आया। शीघ्र ही यह ज्ञात हो गया कि एक ही व्यक्ति ऐसा था जो कांग्रेस से ऐसी कार्रवाई पास करा सकता था जिसे समझौते का कदम कहा जाय। यह व्यक्ति था सेनेटर हैनरी क्ले जो संरक्षण का बड़ा समर्थक था और जिसका समझौते वाला चुंगी-कानून १८३३ में आसानी से पास हो गया। इसके अनुसार आने वाले माल के मूल्य से बीस प्रतिशत से अधिक की चुंगी को क्रमशः इतना घटाना था कि वह सन् १८४२ तक उस सामान्य स्तर पर आ जाय जो १८१६ में लागू था।

"नलिफिकेशन" वादी नेताओं को आशा थी कि दक्षिण के अन्य राज्य उनका समर्थन करेंगे पर इन सबने साउथ कैरोलाइना की कार्रवाई को विवेकहीन और



अमरीका के सातवें राष्ट्रपति एण्ड्रू जैक्सन नए और लोकतन्त्रीय पश्चिमी क्षेत्र के सपूत थे। वे सीमान्त की स्फूर्ति और शक्ति के प्रतीक थे।

अवैध ठहराया। 'नलिफिकेशन आर्डिनेन्स' पर फरवरी से कार्य किया जाना था पर जनवरी में होनेवाली 'राज्य अधिकार नेताओं" की सार्वजनिक सभा ने उसे कांग्रेस की कार्रवाई होने तक स्थगित कर दिया। मार्च में 'साउथ कैरोलाइना कन्वैन्शन' में वह आर्डिनेन्स वापस ले लिया गया।

इस विवादस्थल से दोनों पक्ष अपनी-अपनी विजय का दावा करते हुए लौटे। प्रशासन ने संघीय सरकार की संघ की सर्वोच्चसत्ता के इस सिद्धान्त को पूरी तरह जमा दिया था कि संघ ही सर्वशक्तिमान है। पर दूसरी ओर साउथ कैरोलाइना ने विरोध प्रदर्शन की सहायता से अपनी बहुत-सी मांगें स्वीकार कराके यह सिद्ध कर दिया था कि एक अकेला राज्य अपनी राय कांग्रेस के ऊपर थोप सकता है। 'नलिफिकेशन' घटना का राज्यों के अधिकार सम्बन्धी कल्पना के विकास पर आगे चल कर बड़ा प्रभाव पड़ा। दक्षिण के नेताओं ने देख लिया कि 'नलिफिकेशन' व्यावहारिक नहीं है। अस्तु अगले तीस वर्षों में उन्होंने अधिकतम बल इस बात पर दिया कि पीड़ित राज्य को यूनियन से अलग हो जाने का अधिकार हो।

'नलिफिकेशन' विवाद अभी तय भी नहीं हो पाया था कि 'बैंक आव यूनाइटेड स्टेट्स' के पट्टे को दुहराने के सम्बन्ध में भीषण संघर्ष छिड़ गया जो जैक्सन के नेतृत्व की कड़ी परीक्षा थी। हैमिल्टन के निर्देशन में अमरीका का प्रथम बैंक १७९१ में स्थापित हुआ और उसे बीस वर्ष का पट्टा दिया गया। यद्यपि इसकी कुछ पूंजी सरकार की थी पर यह बैंक सरकारी नहीं था। यह एक गैर-सरकारी निगम था जिसका लाभ साझीदारों में बंट जाता था। हालांकि इसका उद्देश्य देश की मुद्रा को स्थिर करना तथा वाणिज्य को प्रोत्साहित करना था पर कुछ ऐसे लोगों ने इसका विरोध किया जो यह समझते थे कि सरकार कुछ शक्तिशाली लोगों को विशेष सुविधाएँ दे रही है। जब इस बैंक का पट्टा सन् १८११ में पूरा हुआ तो कांग्रेस ने उसका नवकरण नहीं किया। अगले कुछ वर्षों तक बैंक व्यवसाय राज्यों के पट्टेदार बैंकों के हाथ में रहा जो इतनी मुद्रा चालू कर देते थे जिसका मूल्य वे अदा नहीं कर सकते थे और इस प्रकार भारी गड़बड़ी की स्थिति पैदा कर देते थे। यह स्पष्ट हो गया कि राज्यों के बैंक समूचे देश में समरूप से मुद्रा संचार करने में असमर्थ हैं और १८१६ में दूसरा 'बैंक आव यूनाइटेड स्टेट्स' जो पहले बैंक जैसा ही था, बीस साल के पट्टे पर खोल दिया गया।

नींव पड़ने के समय से ही यह दूसरा बैंक विशेष कर देश के नए भागों में और असम्पन्न जनता में सर्वत्र अप्रिय सिद्ध हुआ। यह माना गया कि देश की

पूंजी तथा मुद्रा नीति पर बैंक का पूर्ण अधिकार है और व्यवहार में वह गिने-चुने धनाढ्यों का प्रतिनिधित्व करता है। सब मिला कर बैंक सुसंचालित था और देश की अमूल्य सेवा कर रहा था पर जैक्सन को इसके जनविरोध के नेता के रूप में चुना गया था और उसके पट्टे के नवीनीकरण प्रस्ताव को उसने पूरे बल से अस्वीकार कर दिया। उसने इसकी वैधानिकता तथा वांछनीयता दोनों पर सन्देह प्रकट किया। यदि जैक्सन ने अपनी इस अस्वीकृति में बैंक-व्यवसाय तथा अर्थशास्त्र के अज्ञान का परिचय दिया तो उसने "किसानों, मिस्त्रियों और मजदूरों" के सामने यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह अटल रूप से ऐसे कानून बनाने का विरोधी है जिनसे "बड़े लोग और भी शक्तिशाली" हो जाएं। इस अस्वीकृति से भारी खलबली मच गयी। समाचार-पत्र "वाशिंगटन ग्लोब" ने घोषणा की कि इसने देश को धनवानों के एकाधिकार से बचा लिया है परन्तु अन्य राजनीतिज्ञ तथा साहूकारों ने इस घटना-प्रवाह का व्यापक विरोध किया। कांग्रेस अथवा राष्ट्रपति ने जनता की इच्छा को ठीक मापा था या नहीं इसका निर्णय राष्ट्रपति के आगामी चुनाव में होना था।

जो चुनाव आन्दोलन हुआ उसमें जो प्रश्न सबसे ऊपर था वह बैंक का था जिस पर एक ओर व्यापारी, उत्पादक तथा साहूकार वर्ग और दूसरी ओर मजदूरों और किसानों में—अर्थात् उनमें, जो नए लोकतन्त्रीय विप्लव से आशंकित थे और उनमें जो जैक्सन को हार्दिक समर्थन देना चाहते थे, आधारभूत मतभेद था। परिणाम हुआ जैक्सनवाद का उत्साहपूर्ण अनुमोदन।

जैक्सन ने अपने पुनर्निर्वाचन का अर्थ यह माना कि जनता ने, उस बैंक का नाम निशान मिटा देने की उसे आज्ञा दी है। सामने ही था वह हथियार—बैंक के ठेके की एक शर्त जिसके द्वारा जनता का धन हटा लिया जा सकता था। सितम्बर, १८३३ में आज्ञा हुई कि संयुक्तराज्य बैंक में सरकारी धन जमा न किया जाय और जो पहले से जमा था वह धीरे-धीरे सरकारी व्यय के कामों को चलाने के लिए निकाल लिया जाय। इसके स्थान पर राज्यों के समृद्ध बैंकों की खोज की गयी और उन पर कठोर नियन्त्रण लगा दिए गए।

जिस चुस्ती और स्फूर्ति से जैक्सन ने आन्तरिक मामले निपटाये उतनी ही योग्यता से उसने वैदेशिक मामले भी सम्भाले। जब, फ्रांस ने अमरीका के प्रति अपने उत्तरदायित्वों की अदायगी रोक दी तो उसने फ्रांसीसी जायदाद को जब्त करने की आज्ञा दी और उसे ठीक कर दिया। जब टैक्सास ने मैक्सिको के विरुद्ध विद्रोह किया और अमरीका से यूनियन में सम्मिलित कर लेने का अनुरोध किया तो उसने दूरदर्शिता से प्रतीक्षा का मार्ग अपनाया। अपने दूसरे कार्यकाल की अवधि के अन्त तक उसकी लोकप्रियता कम नहीं हुई।

जैक्सन विरोधी राजनीतिक गुटों को तब तक सफलता की कोई आशा नहीं थी जब तक वे असंगठित बने रहें और परस्पर विरोधी काम करते रहें। परिणामस्वरूप समस्त असन्तुष्ट तत्वों को 'ह्विग' नामक एक साधारण दल के अन्तर्गत एक साथ लाने का प्रयोग किया गया। यद्यपि उन्होंने अपना संगठन १८३२ के चुनाव-आन्दोलन के बाद ही किया फिर भी उन्हें अपने विभिन्न मतों को मिलाने और एक मंच की घोषणा करने में दस वर्ष से अधिक लग गए। ह्विगों के पास हैनरी क्ले और डेनियल वैब्सटर नाम के दो सुयोग्य और प्रतिभाशाली राजनीतिज्ञ थे और अधिकतर उनके व्यक्तित्व के आकर्षण के सहारे ही इस दल का ठोस सदस्यवर्ग बनाया जा सका। साधारणतः काम और ख्याति के आदमी 'ह्विगों' के साथ थे। १८३६ के चुनाव में ह्विग अब भी परस्पर बहुत अलग-अलग थे और उनमें एक आदमी को नेता मानने तथा एक सर्वस्वीकृत कार्यक्रम बना लेने की क्षमता नहीं थी। मार्टिन वान ब्यूरेन जिसको जैक्सन का समर्थन प्राप्त था, चुनाव जीत गया पर उस आर्थिक गिरावट ने जो उसके पद सम्भालने के साथ-साथ आयी तथा उससे पहले के राष्ट्रपति के ओजस्वी व्यक्तित्व ने उसकी योग्यताओं को धुंधला कर दिया। वान ब्यूरेन के सार्वजनिक कार्यों में—जैसे कि सरकारी कर्मचारियों के लिए दस घण्टे का दिन—किसी ने कोई रुचि नहीं ली क्योंकि उसमें उकसाने वाले वे गुण और वह नाटकीय प्रेरणा नहीं थी जिसका परिचय जैक्सन अपने हर कदम पर दिया करता था। १८४० के चुनाव के वक्त देश के सामने कठिन समस्याएं थीं। महंगाई के दिन थे और मजदूरी कम थी। डेमोक्रेट अपनी रक्षा की चिन्ता में थे।

राष्ट्रपति पद के लिए ह्विग उम्मीदवार, ओहायो का विलियम हैनरी हैरीसन अपने आपको जैक्सन जैसा लोकतन्त्रीय पश्चिम का प्रतिनिधि समझता था। १८१२ की टिपेकनोइ की लड़ाई के विजेता के रूप में उसे जनता का आदर भी प्राप्त था। जॉन टाइलर जिसके राज्यों के अधिकारों तथा हल्की चुंगी सम्बन्धी विचार दक्षिण में लोकप्रिय थे, उपराष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार था। ह्विगों का प्रचार-कार्य हर्षातिरेक और धमाचौकड़ी जैसा था। सर्वत्र भारी सभायें और मेले हो रहे थे और सड़कों पर मशालों के जुलूस निकाले जा रहे थे। नारियां भी उतनी ही सक्रिय थीं जितने कि पुरुष। उमंगें संगीत बनी जा रही थीं और 'ओल्ड टिपेकनोई' हर एक की जबान पर था। परिणाम हुआ ह्विगों

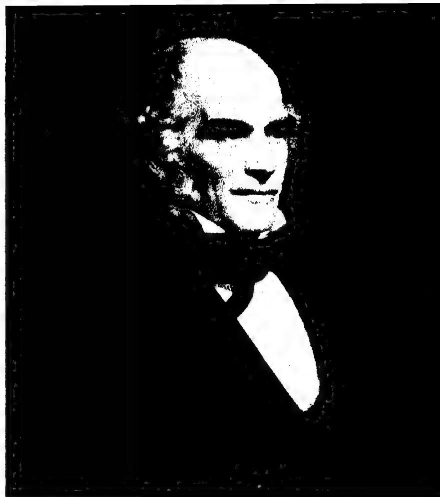
की सर्वत्र विजय। परन्तु ह्विग यद्यपि अपने उम्मीदवारों के लिए एकमत थे, लेकिन अपनी लोकनीति के विषय में नहीं थे। जिस दायित्वहीन अवसरवादिता का उपयोग उन्होंने अपने प्रचार में किया था उसके लिए उन्हें खामियाजा भरना पड़ा। उद्‌घाटन उत्सव के एक मास के भीतर अड़सठ वर्षीय हैरीसन का स्वर्ग-वास हो गया और राष्ट्रपति पद पर आया टाइलर जिसके विश्वास उन क्ले और वेब्सटर से भिन्न थे जो अब तक देश के सबसे प्रभावशाली व्यक्ति थे। यह मतभेद टाइलर की अवधि में ही खुली फूट का रूप लेने वाले थे और जिस दल ने राष्ट्रपति को चुना था उसीने उसका परित्याग कर दिया।

सम्पूर्ण समाज में राजनीतिक जागरूकता

१८२९ में जब ऐण्ड्रू जैक्सन राष्ट्रपति बने तो समस्त पश्चिमी जगत में असन्तोष और विद्रोह की धारा बह रही थी। सुधार भावना को जब अमरीका में समर्थन मिल रहा था तो वह तत्कालीन विश्व के प्रवाह के भी अनुकूल थी। राजनीति का वह लोकतन्त्रीय विप्लव जो उस आन्दोलन में चरितार्थ हुआ था जिसके द्वारा जैक्सन राष्ट्रपति चुना गया था, बड़े अधिकारों और अवसरों की दिशा में जनसाधारण के प्रस्थान का केवल एक आकार था। इस शताब्दी की तीसरी और चौथी दशाब्दी के वर्षों की विशेषता थी मानवजाति की पूर्णता की प्राप्ति में उत्साहपूर्ण आस्था और इसका परिणाम हुआ जनता जनार्दन के बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा भौतिक जीवन का उद्धार।

उदार राजनीतिक आन्दोलन के साथ-साथ मजदूरों के संगठन भी आरम्भ हो रहे थे। १८३६ तक संगठनों की सदस्य संख्या कोई तीन लाख हो चुकी थी जो अनेक स्थानों पर मजदूरों की दशा में सुधार करवा लेने में सफल हो चुकी थी। १८३५ में फिलाडेल्फिया के मजदूर अपने सर्वाधिक आकांक्षित सुधार को स्थापित करने में सफल हो चुके थे। यह था सुबह के अन्धेरे से रात के अन्धेरे तक के कार्यदिवस के स्थान पर दिन में दस घण्टे का कार्यकाल। यह तो केवल श्री गणेश था अन्यान्य स्थानों में इसी प्रकार के सुधारों का जैसे न्यू हैम्पशायर, र्‌होड आइलैण्ड, ओहायो और कैलीफोर्निया जो सन् १८५० में यूनियन में शामिल हुआ था।

मजदूरों की कार्यशीलता तथा मानवीय सुधारों के प्रति उनका उत्साह ये दोनों उस काल के प्रगतिशील आन्दोलनों के अनिवार्य अंग थे। शिक्षा के मामले में उसकी लोकतन्त्रीय भावना के लिए संघर्ष विशेष कर महत्वपूर्ण था। बालिग



बीस वर्ष की आयु में ही विलियम कुलेन ब्रायेन्ट को अमरीका का प्रमुख कवि माना जाने लगा। उन्होंने ४६ वर्ष तक 'न्यूयार्क ईवनिंग पोस्ट' नामक पत्र का सम्पादन किया। वे तत्कालीन अमरीकी पत्रकारिता के क्षेत्र में एक विशिष्ट व्यक्ति माने जाते थे।



जान लेविस क्रिमेल द्वारा चित्रित फ़िलाडेल्फ़िया के नगर चुनाव (१८१६) का दृश्य। दाहिनी ओर की पंक्ति में खड़े मतदाता भीतर बैठे क्लर्कों को अपने मत-पत्र दे रहे हैं।

मताधिकार के प्रसार ने शिक्षा की कल्पना को एक नयी दिशा प्रदान की क्योंकि स्पष्ट दृष्टा राजनीतिज्ञों ने समझ लिया कि अशिक्षा और सार्वजनिक मताधिकार मिलकर कैसी आपत्ति उत्पन्न कर सकते हैं। न्यूयार्क के डी विट क्लिन्टन, इलीनोय के अब्राहम लिंकन, मैसाचुसेट्स के हारेस मान, जैसे व्यक्तियों के प्रयत्नों को नगरों में संगठित किए जाने वाले अविरल मजदूर प्रदर्शनों और आन्दोलनों से बड़ा बल मिला। मजदूर नेताओं ने मांग की कि बिना किसी दानशीलता की भावना के ऐसे कर-समर्थित और निशुल्क स्कूल स्थापित किए जाएं जिनमें हर बच्चे का निस्संकोच प्रवेश हो सके। १८३० में फिलाडेल्फिया के कामगारों ने कहा, "...सच्चे ज्ञान के व्यापक प्रसारण के बिना वास्तविक स्वाधीनता नहीं हो सकती...जब तक सर्वसाधारण के लिए समान शिक्षा तथा समान साधन उपलब्ध नहीं हो जाते तब तक स्वाधीनता एक अर्थहीन शब्द है और समानता एक खोखली छाया।" धीरे-धीरे एक राज्य के बाद दूसरे में वैधानिक कार्रवाई के द्वारा निःशुल्क शिक्षा संयोजित की गयी। १८४०-५० के बीच उत्तर में पब्लिक स्कूलों की पद्धति सर्वसामान्य हो चुकी थी और अन्य क्षेत्रों में उसकी प्राप्ति के लिए संघर्ष होता रहा जब तक कि उनकी जीत नहीं हो गयी।

उस आदर्शवाद ने, जिसने पुरुषों को प्राचीन बेड़ियों से मुक्त कराया, नारियों को समाज में अपनी असमान स्थिति को समझने के लिए बाध्य किया। उपनिवेशकाल में अविवाहित स्त्री को लगभग उतने ही कानूनी अधिकार थे जितने पुरुष को। पर रिवाज के अनुसार शीघ्र ही विवाह कर लेना जरूरी माना जाता था जिसके बाद कानून की दृष्टि में उसका अपना व्यक्तित्व लुप्तप्रायः हो जाता था। स्त्री शिक्षा अधिकतर पढ़ने-लिखने, गाने-नाचने और सीने-काढ़ने तक ही सीमित थी। और हां, स्त्रियों को मतदान का अधिकार भी नहीं था। एक उन्नत विचारों वाली स्काटिश महिला फ्रांसिस राइट के अमरीका आगमन के बाद वहां नारियों में जागृति आरम्भ हुई। बड़ी-बड़ी भीड़ों के बीच उसके जाने तथा धर्मशास्त्र और स्त्रियों के अधिकारों पर व्याख्यान देने से जनता को बहुत आश्चर्य हुआ। फिर भी उसको देखादेखी फिलाडेल्फिया की क्वेकेरेस लूक्रेटिया मोट, सूसन बी. ऐन्थनी और एलीजाबेथ केडी स्टैन्टन जैसी बड़ी विभूतियों को सक्रिय होने को प्रेरणा दी। उन्होंने पुरुषों तथा बहुत-सी स्त्रियों की घृणा को झेलते हुए दासता-उन्मूलन, नारी अधिकार तथा मजदूर-कल्याण के क्षेत्रों में अपनी शक्ति लगाई। १८४८ में संसार के इतिहास का सर्वप्रथम नारी अधिकार सम्मेलन सेनेका फाल्स, (न्यूयार्क) में हुआ। प्रतिनिधियों ने घोषणा-पत्र तैयार किया

जिसमें यह मांग की गयी कि कानून की दृष्टि में, शिक्षा, आर्थिक अवसरों तथा मताधिकार के मामलों में स्त्रियां पुरुषों के बराबर समझी जाएं। नारी अधिकार आन्दोलन के नेताओं को मित्रों का अभाव नहीं था। रैल्फ वाल्डो इमर्सन, लिंकन तथा हारेस ग्रीली जैसे प्रसिद्ध व्यक्तियों ने उनके लिए काम तथा प्रचार किया। यद्यपि यह समय सिद्धि का नहीं, संघर्ष का था फिर भी निश्चित सुधार हुए। १८३९ में मिसिसिपी ने अपने राज्य की स्त्रियों को अपनी जायदाद के नियन्त्रण का अधिकार दिया और अगले दस वर्षों में अन्य सात राज्यों की सरकारों ने भी ऐसे कानून बनाए। १८२० में ऐमा विलार्ड ने एक कन्या शिक्षालय खोला; १८३७ में कालेज के स्तर की एक महिला संस्था 'माउण्ट होलियोक' स्थापित हुई। इससे भी अधिक साहसिक बात हुई कोएजुकेशन (सहपठन) जिसमें ओहायो के तीन कालेजों ने पहले कदम उठाये—१८३३ में आबर्लिन ने, १८५० में अबोना ने और १८५३ में एण्टिओक ने।

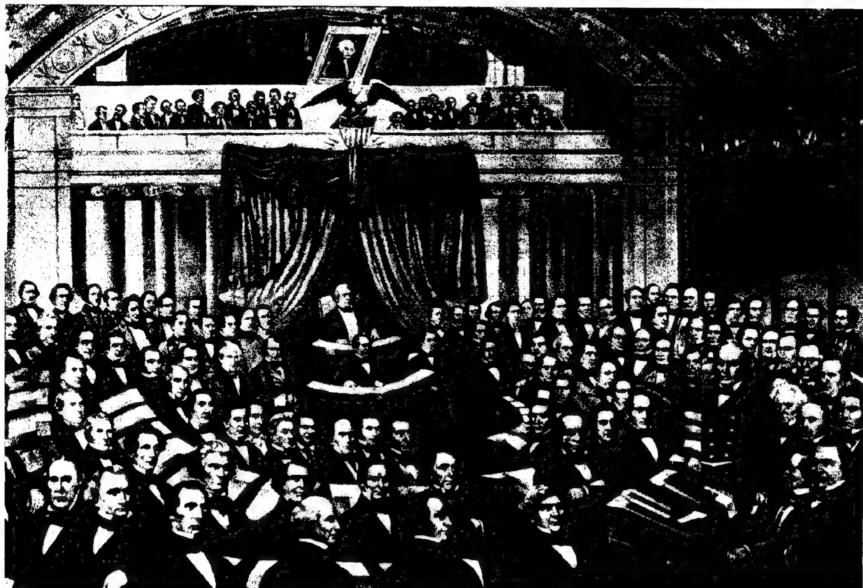
संस्कृति तथा उद्योग द्वारा नई शक्ति का प्रदर्शन

जैसी कि आशा की जा सकती थी राष्ट्रीय आत्मविश्वास की भावना उस समय के प्रकाशित साहित्य में व्यक्त की जा रही थी। १८३० के बाद के दस वर्षों में लेखकों तथा साहित्यिकों की भारी संख्या सामने आयी। हैनरी वेड्सवर्थ, लांगफेलो, जान ग्रीनलीफ ह्विटियर, आलिवर वैण्डेल होम्स और जेम्स रसेल लॉवेल ने अपने-अपने कवि जीवन का प्रारम्भ इसी काल में किया। अमर छन्दों तथा गद्य में इमर्सन ने व्यक्ति की मौलिकता तथा महानता के सिद्धान्तों का उपदेश दिया। नैथेनियल हाउथोर्न तथा ऐडगर एलैन पो ने मनुष्य के विषादपूर्ण तथा दिव्य अनुभवों को अपने साहित्य द्वारा व्यक्त करके अमरीकी विचारधारा की सर्वतोमुखी प्रतिभा को प्रमाणित किया।

यद्यपि ऐसे अधिकतर लोगों ने अपनी रचनाओं से चिरंतन ख्याति पायी पर उनमें से बहुतों ने अपने युग के मानवतावादी तथा राजनीतिक संघर्षों में सक्रिय भाग लिया। ह्विटियर दासता विरोधी संग्राम का प्रतिनिधि कवि था; लांगफेलो ने अपनी 'दासता सम्बन्धी कवितायें' १८४२ में प्रकाशित की; लॉवेल ने "पेन्सिलवानियन फ्रीमैन" का सम्पादन कार्य किया; जार्ज बेन्क्रोफ्ट एक उत्साही बैंक-विरोधी था; और ब्रायन्ट ने अपनी ओजस्वी काव्य प्रतिभा के साथ ही साथ १८२९ से १८७८ तक "न्यूयार्क ईवनिंग पोस्ट" का सफलता के साथ सम्पादन भी किया।



१९ वीं शताब्दी के मध्य में महिला आन्दोलन की कार्यकर्त्री सुसेन एन्थोनी ने महिलाओं को राजनीतिक समानता की मांग को काफी बल प्रदान किया।



एक वाग्मितापूर्ण वाद-विवाद में सेनेटर डेनिअल वेब्सटर निषेधात्मक कार्रवाई के समर्थन में पेश की गयी तथा सेनेटर हेन द्वारा समर्थित दलीलों का खण्डन कर रहे हैं ।

समय के रुख ने गणतन्त्र के इतिहास में एक नयी रुचि पैदा की और ऐतिहासिक मनन का श्री गणेश किया। १८३० के बाद के वर्षों में जेरेड स्पार्कस ने जिसने वर्षों पहले "नार्थ अमरीकन रिव्यू" आरम्भ किया था, ऐतिहासिक लेखों का संपादन आरम्भ किया और उन्हें प्रकाशित किया। इनमें उल्लेखनीय हैं वाशिंगटन तथा फ्रैंकलिन के लेखों तथा कांतिकालीन राजनयिक पत्र-व्यवहार के संकलन। १८३४ में जार्ज बैन्क्रोफ्ट ने संयुक्तराज्य अमरीका के प्राथमिक आविष्कारों से लेकर संविधान बनने तक के इतिहास का प्रथम खण्ड प्रकाशित किया। यह अमरीका का प्रथम विस्तृत इतिहास था जो उपलब्ध पुरातन सूत्रों के आधार पर लिखा गया था। इस दशक के पूरे होने से पहले बैन्क्रोफ्ट और विलियम प्रेसकाट ने इतिहास को साहित्यिक विशेषता के साथ लिखने की अमरीकी योग्यता को सिद्ध कर दिया था।

१८२५ से १८५० तक के वर्षों में जनता के दैनिक जीवन की कुशलता स्पष्ट रूप से बढ़ती जा रही थी। १८२५ के पश्चात् कूटने की मशीन और उसके तुरत बाद मॉवर और रीपर आदि काटने की मशीनों का आविष्कार हुआ। वेग से होते हुए भौगोलिक विस्तार के समय राष्ट्र को एक रखने की कठिनाई को लोगों की यान्त्रिक सूझबूझ ने बहुत कुछ सरल बना दिया। १८३० में घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले लोकवाहन के पश्चात रेलों का विस्तार निरन्तर बढ़ता गया। १८५० में कोई भी मेन से 'नार्थ कैरोलाइना' तक, एटलांटिक समुद्र तट से ईरी झील के किनारे बफैलो तक तथा उस झील के पश्चिमी सिरे से शिकागो और सिनसिनाटी तक रेल से यात्रा कर सकता था।

विद्युत टेलीग्राफ जिसका आविष्कार एस. एफ. बी. मोर्स ने १८३५ में किया था, का प्रथम उपयोग १८४४ में हुआ। १८४७ में रिचर्ड हो द्वारा निर्मित रोटरी छापाखाना काम में लाया गया। इसने प्रकाशन पद्धतियों में एक क्रान्ति ला दी और समाचारपत्रों को अमरीकी जीवन में प्रभुत्वशाली स्थान दिलाने में बड़ा काम किया।

देश की जनसंख्या भी जो १८१२ से १८५२ तक ७२,५०,००० से बढ़कर लगभग २,३०,००,००० हो गयी थी, राष्ट्र के विकास की द्योतक थी। इसी बीच बसने योग्य उपलब्ध भूमि भी १७ लाख वर्ग मील से बढ़कर यूरोप के बराबर यानी लगभग ३० लाख वर्गमील हो गयी थी। सफल कृषि के अतिरिक्त विविध प्रकार के उद्योग पूर्वी समुद्र तट पर ही नहीं बल्कि पश्चिम के नगरों में भी तीव्रगति से विकास कर रहे थे। राष्ट्र की पायेदारी और उसकी अर्थव्यवस्था एवं संस्थाओं की जीवनीशक्ति सबल हो चुकी थी। फिर भी, विभिन्न गुटों के आपसी मत-भेदों पर आधारित मौलिक संघर्ष जो अब तक नहीं सुलझ पाये थे, आगामी दस वर्षों में गृहयुद्ध की आग को भड़काने वाले थे।

अध्याय ५

प्रादेशिक संघर्ष

"जिस घर में फूट हो वह टिक नहीं सकता, मेरा विश्वास है कि यह शासन आधे (लोगों को) दास और आधे (लोगों को) स्वतन्त्र रख कर स्थायी नहीं रह सकता।"

—अब्राहम लिंकन
स्प्रिंग फील्ड, इलीनोय. १७ जून, १८५८

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में, संसार का कोई भी देश दूसरे देशों की दृष्टि में इतना आकर्षक नहीं था जितना संयुक्त राज्य अमरीका था। इस बीच अमरीका आने वाले लोगों की संख्या भी दूसरे देशों की तुलना में अधिक रही। फ्रांसीसी राजनीतिक लेखक अलिक्सिस डी. टोकविल कृत 'डेमोक्रेसी इन अमेरिका' (अमरीका में लोकतन्त्र) नामक पुस्तक यूरोपीय महाद्वीप भर में लोकप्रिय हुई और उस नए देश के सम्बन्ध में अभिमत उत्तरोत्तर अनुकूल होता गया। बास्टन की खाड़ी और उसी नाम के रमणीक नगर को देखने के लिए, वन प्रदेश को यूटिका, सिराक्यूज एवं आबर्न जैसे उन्नतिशील नगरों में परिवर्तित हुआ देखकर आश्चर्य चकित होने के लिए, तथा विशेषतः हर जगह कृषि, व्यापार, और बड़े-बड़े सार्वजनिक निर्माण कार्यों में होने वाली तीव्र प्रगति एवं समृद्धि के असंदिग्ध प्रमाणों से अवगत होने के लिए देश-देश के यात्री आए। उन्होंने, बेशक, इस राष्ट्र को निरन्तर समृद्धि का उपभोग करते पाया। विदेशी यात्री, चाहे वह न्यूयार्क में उतरा हो या फिलाडेल्फिया अथवा बास्टन में, लोगों की हलचल, उनका उद्यम और उनका उत्साह देखकर विस्मित रह जाता था। न्यूयार्क अपनी ऊंची अट्टालिकाओं और दुकानों की चमचमाती हुई प्रदर्शन-मंजूषाओं सहित अपनी समुज्ज्वल प्रभा के कारण विशिष्टता प्राप्त कर चुका था और फिलाडेल्फिया अपने खूबसूरत बागीचों, चौड़ी सायेदार सड़कों तथा लाल ईंटों के मकानों जिनके द्वारों पर सफेद पत्थरों की पैड़ियां बनी होती थीं, के लिए प्रसिद्ध हो रहा था।

राष्ट्रीय राज्य-क्षेत्र महाद्वीप भर में फैला हुआ था, उसमें वन, मैदान और पर्वत सभी शामिल थे। इन दूर-दूर तक फैली सीमाओं के भीतर ३१ राज्यों का एक संघ था जिसमें कुल मिलाकर लगभग २ करोड़ ३० लाख लोग आबाद थे। आश्वासनों की यह भूमि कभी भी इतने प्रत्यक्ष रूप से निष्पादनों की भूमि नहीं प्रतीत हुई थी। पूर्व में उद्योग की प्रत्येक शाखा फलवती हो रही थी। मध्य-पश्चिम और दक्षिण में खेती लाभकर थी। रेलों ने देश के बसे हुए भागों को पहले की अपेक्षा घने तौर से परस्पर पिरो दिया था। कैलिफोर्निया की खानें व्यापार के सभी माध्यमों में स्वर्णिम धारा प्रवाहित कर रही थीं।

फिर भी, सभी यात्री शीघ्र ही इस बात से परिचित हो जाते थे कि अमरीका वस्तुतः दो है—एक उत्तरी और दूसरा दक्षिणी। प्रादेशिक सामंजस्य कायम रखने में बाधक अदृष्ट खतरे स्वयं प्रगति की गति में ही निहित थे। न्यू इंग्लैण्ड और मध्य-एटलांटिक राज्य वस्तु-निर्माण, वित्त और व्यापार केन्द्र थे। इस इलाके के प्रमुख उत्पादन थे, आटा और दलिया, जूते, सूती कपड़ा, लकड़ी का सामान, पोशाकें, मशीनें, चमड़ा और ऊनी वस्तुएं। जहाजरानी की समृद्धि अपने पूर्ण यौवन पर थी। अमरीकी पताका फहराते हुए अमरीकी जहाज सातों समुद्रों में घूम-घूम कर सभी राष्ट्रों से माल का आदान-प्रदान कर रहे थे।

अर्थ-व्यवस्था में दास-प्रथा की जड़ें मज़बूत हुईं

दक्षिण में खेती की उन्नति हुई। हालांकि सागर तट के इलाकों में धान की, लुइज़ियाना में गन्ने की, सीमावर्ती राज्यों में तम्बाकू और दूसरी सामान्य चीजों की खेती होती थी और जहां-तहां वस्तु-निर्माण का काम भी होता था फिर भी इस सम्पूर्ण क्षेत्र में दौलत कमाने का सर्व-प्रमुख सूत्र कपास की खेती ही थी। खाड़ी प्रदेश के उर्वर काली मिट्टी वाले मैदानों के पूर्ण विकास से शताब्दी के पांचवें दशक में कपास का उत्पादन लगभग दूना हो गया और उसकी बड़ी-बड़ी गांठों को गाड़ियों, स्टीमरों और रेलों में लाद कर उत्तर और दक्षिण के बाजारों में ले जाया जाने लगा। राष्ट्र का आधे से अधिक निर्यात कपास पर आधारित था। उत्तर की कपड़ा मिलों की मांग भी उसी से पूरी की जाती थी।

मध्य-पश्चिम का इलाका जहां दूर-दूर तक प्रेरी-प्रदेश फैले हुए थे और जहा की आबादी उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थी, समृद्धि को इस काल में अपना पूरा योगदान कर रहा था। वहां पैदा होने वाले गेहूं और गोश्त की चीजों की

मांग यूरोप में भी थी और अमरीका की पुरानी आबादियों में भी थी। इसी जमाने में श्रम को बचाने वाले उपकरणों का तेजी से विकास हुआ और उन्हें द्रुतगति से अपनाया गया जिससे उत्पादन में अतुलनीय वृद्धि हुई। नए उपकरणों में मैक्कार्मिक द्वारा ईजाद की हुई कटनी मशीनें भी थीं। १८४८ की फसल के समय कोई ५०० तथा १८६० में एक लाख से ऊपर कटनी मशीनें काम में लायी गयी थीं। राष्ट्र में गेहूँ का उत्पादन १८५० के १० करोड़ बुशल से १८६० में १७ करोड़ ३० लाख बुशल तक बढ़ गया। इस मात्रा का आधा भाग मध्य-पश्चिम के इलाकों में पैदा होता था। परिवहन की सुविधाओं में होने वाले महान सुधारों से पश्चिमी समृद्धि को महत्वपूर्ण उद्दीपन प्राप्त हुआ। १८५० से १८५७ तक रेलों की ५ ट्रंक लाइनें एप्लाचियेन पर्वत के आर-पार बिछायी जा चुकी थीं। उत्तर और पश्चिम को मिलाने वाले इन लौह-पथों ने दो पक्षों के परस्पर लाभदायक व्यापार को प्रवर्धित किया। साथ ही, दोनों प्रदेशों की परस्पर अधीनता पर जोर देते हुए उन्होंने दोनों क्षेत्रों के राजनीतिक दृष्टिकोणों में सामंजस्य पैदा करने में सहायता दी। रेलों का विस्तार दक्षिण में कम हुआ। शताब्दी के छठे दशक के अन्तिम वर्षों में जाकर एक ऐसी रेल की लाइन बिछायी जा सकी जिसने मिसिसिपी नदी के नीचे के इलाके को एटलांटिक समुद्र तट से मिलाया।

ज्यों-ज्यों वर्ष बीतते गए, उत्तर और दक्षिण के स्वार्थ उत्तरोत्तर उभरते गए। कपास की उपज के विपणन के फलस्वरूप उत्तरी व्यापारियों के बड़े मुनाफों से क्षुब्ध होकर दक्षिण के लोग अपने प्रदेश की अविकसित अवस्था का सारा दोष उत्तर वालों के अभ्युदय के माथे मढ़ने लगे। दूसरी ओर उत्तर वालों ने यह घोषित किया कि दास प्रथा की 'अजीबोगरीब संस्था' ही जिसे दक्षिण वाले अपनी अर्थ-व्यवस्था के लिए अनिवार्य बताते हैं, उस प्रदेश के अपेक्षाकृत पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार थी।

१८३० से ही दास प्रथा के प्रश्न पर प्रादेशिक मतभेद तीव्र हो रहे थे। उत्तरी राज्यों में दासता उन्मूलन की भावना पहले से कहीं अधिक उग्र हो गयी थी। साथ ही साथ, 'स्वतन्त्र-भूमि आन्दोलन' का विकास भी हुआ। इस आन्दोलन का अभिप्राय यह था कि जो प्रदेश अभी राज्यों के रूप में संगठित नहीं हुए थे उनमें दास-प्रथा का विस्तार न होने दिया जाय। १८५० के दक्षिण वासियों को यह प्रथा विरासत में मिली थी। इसलिए वे उसके लिए उत्तरदायी नहीं थे। सागर तटवर्ती कुछ प्रदेशों में तो दास-प्रथा १८५० में ही २०० वर्ष पुरानी हो चुकी थी और वहां की सभ्यता का अविच्छिन्न अंग बन चुकी थी। पांच-छः पीढ़ियों से अमरीकी भूमि पर रहने वाले कुछ नीग्रो श्वेत समाज की न केवल भाषा बल्कि उनकी दक्षता, पूर्वधारणाओं, धार्मिक तथा सामाजिक विश्वासों को अपना चुके थे। १५ दक्षिणी तथा सीमान्त राज्यों में नीग्रोजनों की संख्या श्वेतों की तुलना में लगभग आधी थी, जब कि उत्तर के राज्यों में बहुत ही कम थी।

१८वीं शताब्दी के ५वें दशक के आखिरी ५ वर्षों में दास प्रथा का प्रश्न अमरीकी राजनीति पर छाया हुआ था। एटलांटिक से मिसिसिपी नदी तक और उसके आगे का इलाका भी एक अपेक्षाकृत संगठित राजनीतिक इकाई था जहां कपास की खेती और दास-प्रथा को प्रभावित करने वाली बुनियादी नीतियों के बारे में सभी लोग लगभग एक मत रहते थे। सच तो यह है कि दक्षिण के ज्यादातर बागान-मालिक दास-प्रथा को अपनी अर्थ-व्यवस्था का बुनियादी तत्व मानने लगे थे। कपास की खेती के लिए दासों का उपयोग अनिवार्य सा हो गया था। वह अभी पुराने परम्परागत उपकरणों से हो होती थी और साल में ९ महीनों का रोजगार प्रदान करती थी। साथ ही, इस काम में औरतों व बच्चों को भी इस्तेमाल किया जा सकता था।

दास-प्रथा सम्बन्धी विवाद में वृद्धि

दक्षिण के राजनीतिक नेता, व्यावसायिक लोग और अधिकतर पादरी लोग उत्तर के लोगों के दासता-विरोधी दबाव से जूझते-जूझते अब इस स्थिति को प्राप्त हो चुके थे कि उनके मन में दास-प्रथा के लिए रत्तीमात्र अफसोस न था। वे इसके लिए डटकर वकालत करने को तत्पर थे। उनका कहना था कि दास-प्रथा नीग्रो लोगों पर समृद्धि की वर्षा करने वाली संस्था है। दक्षिण के प्रचार माध्यम द्वारा इस बात का जमकर प्रचार होता था कि दास-प्रथा के अन्तर्गत मालिक और मजदूरों के सम्बन्ध उत्तर की वेतन-प्रणाली की तुलना में अधिक मानवीय हैं। १८३० के पहले, बागान-प्रशासन में पुरानी पितृसत्तात्मक प्रणाली ही चालू थी जिसमें स्वयं मालिकों द्वारा गुलामों की निगरानी होती थी। १८३० के बाद, एक निश्चित परिवर्तन दिखायी देने लगा। दक्षिण के नीचे के इलाकों में कपास की खेती के लिए बड़े पैमाने की प्रणालियां शुरू होते ही मालिकों द्वारा अपने गुलामों पर निजी और करारी निगरानी कम होने लगी थी। वे उनके ऊपर पेशेवर ओवरसियर रखने लगे जिसकी योग्यता और प्रसिद्धि इसी बात पर निर्भर करती थी कि वे गुलामों से अधिकाधिक कितना काम ले सकते थे।

जहाँ बहुत से बागान-मालिक अपने नीग्रो गुलामों के साथ उदारता से पेश

आते थे वहाँ हृदयहीनता एवं निर्दयता की मिसालें भी मौजूद थी। यह प्रथा आवश्यक रूप से पारिवारिक रिश्तों को आए दिन छिन्न-भिन्न करने वाली प्रथा थी। दास प्रथा के विरुद्ध सबसे तीव्र शिकायत निरीक्षकों के अमानवीय व्यवहार की नहीं, बल्कि यह थी कि उससे प्रत्येक मनुष्य के स्वतन्त्र रहने के मौलिक अधिकार का उल्लंघन होता है और दासता की सब प्रथाओं में पशुता और क्रूरता के व्यवहार की सम्भावनाएं बनी रहती हैं। एफ. एल. ओमस्टेड के अनुसार दासता "मजदूर में अपनी योग्यता और कुशलता बढ़ाने का उत्साह नष्ट कर देती है, आत्म-सम्मान की भावना को दबा देती है, उसकी महत्वाकांक्षाओं को पथ-भ्रष्ट कर देती है और जो भावनाएं मनुष्यों को अपने देश के लिए और संसार के लिए अपने-आपको अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए प्रेरित करती हैं उन्हें समाप्त कर देती है।"

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, कपास की खेती और उसकी उपज सम्बन्धी व्यवस्था पर पूंजी का विनियोग बढ़ता गया। उपेक्षणीय परिमाण से आरम्भ होकर, रुई का उत्पादन बढ़ते-बढ़ते १८०० में लगभग ३ करोड़ ५० लाख पौंड, १८२० में १६ करोड़ पौण्ड और १८४० में ६७ करोड़ पौण्ड से भी ज्यादा होने लगा। १८५० में तो संसार की समस्त कपास का ७/८ भाग दक्षिणी संयुक्त राज्य में उत्पन्न होने लगा। दासता भी इसी परिमाण में बढ़ी। इन सब कारणों से राष्ट्र की राजनीति में दक्षिणवासियों का प्रधान लक्ष्य कपास की खेती से सम्बद्ध दास-प्रथा की रक्षा और उसका विस्तार बन गया। इस प्रकार उनका एक प्रधान प्रयत्न कपास की खेती के क्षेत्र को उसकी वर्तमान सीमाओं से आगे बढ़ाना हो गया। कपास की एक ही फसल होने की प्रथा के कारण भूमि की उर्वरता शीघ्र ही कम हो जाती थी और नयी उपजाऊ भूमि की आवश्यकता महसूस होने लगती थी। अपने राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाने के लिए भी दक्षिण वालों को नए-नए प्रदेश की आवश्यकता रहती थी, जिससे कि वे नए स्वतन्त्र राज्यों के प्रवेश का सन्तुलन करने के लिए गुलामी समर्थक नए राज्य सामने ला सकें। दासता-विरोधी उत्तर वाले राष्ट्रीय राजनीति में उनकी इस चाल को जल्दी ही भांप गए। वे इसे दासता को कायम रखने का षड्यन्त्र समझने लगे।

१८३० से १८३९ तक उत्तर के दासता-विरोधी आन्दोलन ने उग्र रूप धारण कर लिया। पहले वाला दासताविरोधी आन्दोलन अमरीकी क्रान्ति की ही एक शाखा थी। उसकी अन्तिम विजय १८०८ में हुई थी जब कि कांग्रेस ने अफ्रीकी-दासों के व्यापार को निषिद्ध कर दिया था। उसके पश्चात दासता का विरोध क्वेकरों तक ही सीमित रह गया। वे नम्रतापूर्वक इसका असफल विरोध करते रहे। परन्तु कॉटन-जिन के आविष्कार के कारण दासों की मांग निरन्तर बढ़ने लगी। उन्नीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में आन्दोलन का एक नया रूप सामने आया, जिसका प्रधान कारण उस समय के लोकतन्त्रीय आदर्शों की तीव्रता और सब वर्गों के लिए सामाजिक समानता की भावना थी।

दासता-उन्मूलन आन्दोलन अमरीका में जहां कहीं तीव्र हो जाता था, वहां वह दास-प्रथा की रक्षा की लिए दी हुई सब वैधानिक और कानूनी गारण्टियों की उपेक्षा करके लड़ने-मरने तक की सीमा पर पहुँच जाता था और उसे उठाने वाले लोग दासों को तुरन्त स्वतन्त्र कर देने की मांग करने लगते थे। इस समय इस आन्दोलन का नेता विलियम लॉयड गैरिसन नामक मैसाचुसैट्स का एक नवयुवक था, जिसमें एक शहीद की-सी उग्र वीरता और एक सफल गिरोहबाज के समान आन्दोलन करने के गुण विद्यमान थे। उसके समाचार-पत्र 'लिबरेटर' का प्रथम अंक १ जनवरी १८३१ को प्रकाशित हुआ और उसमें घोषणा की गयी: "मैं अपने देश के दास-जनों को तुरन्त मताधिकार दिलाने के लिए दृढ़तापूर्वक लड़ूंगा...मैं इस विषय पर सोचने, बोलने और लिखते हुए नरमी का प्रयोग नहीं करना चाहता...मैं सचाई पर हूँ...मैं गोलमोल बातें नहीं करूँगा...मैं माफ नहीं करूँगा...मैं एक इंच भी पीछे नहीं हटूंगा...और लोग मेरी बात सुनेंगे।" बहुत से उत्तर वाले इस प्रथा को पुरानी जमी हुई और अपरिवर्तनीय मानने लगे थे। उन्हें गैरिसन के सनसनी भरे तरीकों ने इस प्रथा की बुराइयों के प्रति पुनः सजग कर दिया। उसकी नीति यह थी कि नीग्रो दासों के साथ बीती हुई अत्यन्त घृणोत्पादक और असाधारण घटनाओं को जनता की दृष्टि के सामने लाया जाय और दासों के स्वामियों को मानव-जीवन का उत्पीड़न और व्यापार करने वालों के रूप में पेश किया जाय। वह मालिकों के किसी अधिकार को नहीं मानता था, उनसे कोई समझौता नहीं करता था और विलम्ब को नहीं सहता था। जो उत्तर वाले इतने उग्र नहीं थे वे उसकी कानून की उपेक्षा करने वाली बातों का साथ देने को तैयार नहीं थे। उनका कहना था कि सुधार विधि-सम्मत और शान्तिमय तरीकों से कराया जाय।

दासता-विरोधी आन्दोलन का एक रूप यह भी था कि जो दास मालिकों से बच कर भागें उनको रातोंरात उत्तर में सुरक्षित स्थानों पर अथवा सीमा के पार कैनाडा में पहुँचा दिया जाय। शताब्दी के चतुर्थ दशक में, उत्तर के सब भागों में इस प्रकार के भागने वाले दासों के लिए गुप्त मार्गों का एक जाल

बिछ चुका था और इस व्यवस्था को 'अण्डरग्राउण्ड रेल-रोड' के नाम से पुकारा जाता था। उत्तर-पश्चिमी प्रदेश में ये कार्रवाइयां बहुत सफलता से हो रही थीं। १८३० से १८६० तक अकेले ओहायो में ४० हजार से ज्यादा दासों को इस प्रकार स्वतन्त्र होने में सहायता दी गयी। स्थानीय दासता-विरोधी संस्थाओं की संख्या में भी वृद्धि होती गयी, यहां तक कि १८४० में लगभग २,००० ऐसी संस्थाएं हो गयी थीं और उनके सदस्यों की संख्या कदाचित २ लाख थी।

यद्यपि सक्रिय उन्मूलनवादियों का एकमात्र लक्ष्य यह था कि दासता को प्रत्येक पुरुष और स्त्री के लिए नैतिक प्रश्न बना दिया जाय, परन्तु सब मिलाकर, उत्तर के लोग दासता-विरोधी आन्दोलन में भाग नहीं ले रहे थे। उनका ख्याल था कि दासता का सम्बन्ध केवल दक्षिणवासियों से है और उन्हें इस समस्या को राज्यीय विधान द्वारा हल करना चाहिए। उन्हें भय था कि जोशीले उन्मूलन-वादियों का बेलगाम आन्दोलन कहीं यूनियन की एकता को भंग न कर दे। परन्तु, १८४५ में संयुक्तराज्य में टैक्सास के मिल जाने और मैक्सिकन युद्ध के पश्चात दक्षिण-पश्चिमी प्रदेश जीत लिए जाने के कारण दासता का नैतिक प्रश्न एक ज्वलन्त राजनीतिक समस्या में परिणत हो गया। अब तक सम्भावना यही थी कि दासता केवल उस प्रदेश तक सीमित रहेगी जहां अभी तक यह रही है। १८२० में मिसूरी के समझौते द्वारा इसकी सीमा बांध दी गयी थी और अब तक उसके उल्लंघन का कोई अवसर नहीं आया था। किन्तु अब नए प्रदेश के विषय में यह कल्पना की जाने लगी कि उसकी अर्थ-व्यवस्था भी दासता से सम्बद्ध है, और इस 'विचित्र प्रथा' का पुनर्विस्तार एक सच्ची सम्भावना प्रतीत होने लगा।

बहुत से उत्तर वालों का विश्वास था कि यदि इसे प्रदेश विशेष तक ही सीमित रखा जाय तो यह प्रथा अन्ततः अपने आप ही नष्ट हो जायगी। दास-प्रथा समर्थक नए राज्यों को बढ़ाने के विरोध में उन्होंने वाशिंगटन और जैफर्सन के वक्तव्यों और १७८७ के अध्यादेश को अपने समर्थन में पेश करते हुए कहा कि उक्त निर्णय सब पर अनिवार्य रूप से लागू है। टैक्सास में दास-प्रथा पहले से ही थी, इसलिए यूनियन में उसका प्रवेश दास-राज्य के रूप में हुआ। परन्तु कैलिफोर्निया, न्यू मैक्सिको और यूटा में दास-प्रथा नहीं थी। जब १८४८ में संयुक्त राज्य इन प्रदेशों को अपने साथ मिलाने लगा तब चार मुख्य दलों द्वारा परस्पर-विरोधी सुझाव उपस्थित किए गए। अतिवादी दक्षिणी लोगों ने कहा कि मैक्सिको से लिए हुए सब प्रदेश दास रखने वालों के लिए खुले छोड़ जाएं।



कैलीफोर्निया का 'गोल्डरश'। १८४९ में, याने, सक्रामेण्टो वैली में सोना पाए जाने के एक वर्ष पश्चात् सोना पाने के लिए लालायित ८०,००० से भी अधिक लोग पशु-पालकों के शान्तिप्रिय समाज को उत्तेजनापूर्ण गतिविधियों के क्षेत्र में बदलने आ गए।

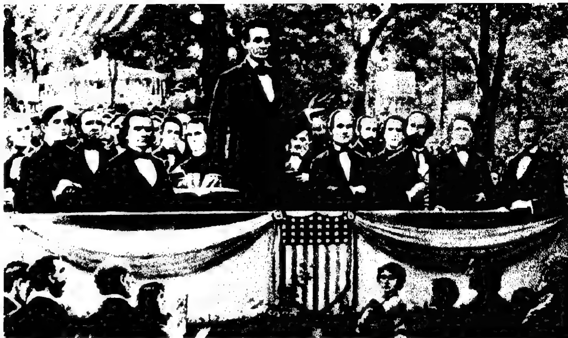
दासता-विरोधी जोशीले उत्तर वालों ने कहा कि सभी नए प्रदेशों का द्वार दास-प्रथा के लिए बन्द कर दिया जाय। नरम विचारों के एक दल ने कहा कि मिसूरी समझौते की रेखा प्रशान्त महासागर तक बढ़ा दी जाय, और इसके उत्तर के राज्यों को स्वतन्त्र तथा दक्षिण के राज्यों को दास माना जाय। एक अन्य नरम दल ने यह सुझाव रखा कि जो नए प्रदेश में जाकर बसें उन्हें दास रखने या न रखने की स्वतन्त्रता दी जाय और जब नए प्रदेश को राज्यों के रूप में संगठित किया जाय तब वहां के निवासी इस प्रश्न का निर्णय स्वयं कर लें। दक्षिण वालों का मत अधिकाधिक इस विचार की ओर झुकता गया कि सभी प्रदेशों में दासता को बनाए रखने का अधिकार दिया जाय। उत्तर वालों का विचार अधिकाधिक यह होता गया कि दासता कहीं भी न रहने दी जाय। १८४८ के चुनाव में लगभग ३ लाख मतदाताओं ने 'फ्री स्वॉयल पार्टी' (स्वतन्त्र भूमि दल) के उम्मीदवारों को मत दिया जिसकी घोषणा थी कि सर्वोत्कृष्ट नीति यह है कि "दासता को सीमित, स्थानबद्ध और निरुत्साहित किया जाय।"

जनवरी, १८४८ में कैलिफोर्निया में सोने का पता लगने पर संसार के सब भागों से लोग सोने की तलाश में आंख मींच कर उधर ही भागे और उनकी संख्या अकेले १८४९ में ८० हजार से ऊपर पहुँच गयी। कैलिफोर्निया का प्रश्न एक कसौटी बन गया, क्योंकि वहां संगठित शासन स्थापित होने से पूर्व कांग्रेस के लिए उसकी स्थिति का निश्चय कर देना आवश्यक था। राष्ट्र की आशाएं सेनेटर हैनरी क्ले पर केन्द्रित थीं, क्योंकि वह दो बार संघर्ष के अवसरों पर समझौते का मार्ग निकाल चुका था। उसने एक बार पुन: भयंकर प्रादेशिक विग्रह को एक सुसंगत योजना द्वारा रोक दिया। उसके समझौते में अन्य बातों के अतिरिक्त ये बातें थीं कि कैलिफोर्निया को एक स्वतन्त्र भूमि वाले (दासता-निषेधक) संविधान के साथ एक राज्य के रूप में सम्मिलित किया जाय और शेष नयी भूमि को न्यू मैक्सिको और यूटा के दो प्रदेशों में बांटकर उनके विषय में दासता का कोई जिक्र न किया जाय; न्यू मैक्सिको के कुछ भाग पर टैक्सास का दावा उसे एक करोड़ डालर देकर शान्त कर दिया जाय; भागे हुए दासों को पकड़ने के लिए, और उन्हें पकड़ कर उनके मालिकों के सुपुर्द करने के लिए अधिक प्रभावशाली व्यवस्था की जाय, और कोलम्बिया के डिस्ट्रिक्ट में दास-व्यापार (न कि दासता) समाप्त कर दिया जाय। ये उपाय—जो कि अमरीकी इतिहास में '१८५० का समझौता' के नाम से प्रसिद्ध हैं—स्वीकृत हो गए और देश ने सन्तोष की सांस ली।



टाम काका की कुटिया' नामक उपन्यास की लेखिका हैरियट बीचर स्टो। इस उपन्यास ने उत्तरी क्षेत्रों के जनमत को अत्यधिक प्रभावित किया। दास-प्रथा में अनिवार्यत: निहित अन्याय और अत्याचार का जो स्पष्ट चित्रण इस उपन्यास में किया गया उसने बसियों लाख लोगों के हृदयों को विचलित कर दिया।

सिनेट के एक पद के चुनाव के अवसर पर अपने प्रतिद्वंद्वी स्टीफेन डगलस (लिंकन के दाईं ओर) के साथ हुई एक वाद-विवाद माला में हिस्सा लेते हुए अब्राहम लिंकन (खड़े हुए)। इस माला के अन्तर्गत दोनों उम्मीदवारों को 'दास-प्रथा' सम्बन्धी अपने-अपने विचार पेश करने का अवसर मिला।



१९ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में दक्षिण के एक भीतरी इलाके का दृश्य। इस तरह के कपास के बागानों का सारा काम नीग्रो लोग करते थे। हालांकि तम्बाकू, चीनी और चावल का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता था फिर भी दक्षिणी अर्थव्यवस्था की मूलाधार कपास की खेती ही थी।



तीन वर्ष तक तो ऐसा लगा कि समझौते ने प्रायः सब मतभेद समाप्त कर दिए हैं, परन्तु अन्दर-अन्दर तनाव जारी रहा और बढ़ता गया। नए भगोड़े-दास-कानून से बहुत-से उत्तर वाले अत्यन्त क्षुब्ध थे। उन्होंने दासों को पकड़ने में सहायता देने से इन्कार कर दिया। इसके विपरीत वे भगोड़ों की भागने में सहायता करने लगे। 'अण्डर-ग्राउण्ड रेल-रोड' अधिक चुस्त और निस्संकोच हो गयी और उससे सहायता पाने वालों की संख्या बढ़ गयी।

नागरिक संघर्ष निकट आने लगा

इसी समय, अकस्मात ही साहित्यिक प्रेरणा ने अमरीका के घरेलू मतभेद को पुनः भड़का दिया। संघ के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा करने वाली दासता को उसने मानवता की दृष्टि में अपराधी ठहराया और उसके विरुद्ध लोगों की भावनाओं को उभारा। जो लोग समझते थे कि दासता के प्रश्न को आराम से टाला जा सकता है उनकी दृष्टि केवल राजनीतिज्ञों और सम्पादकों तक पहुँची थी। उन्होंने यह कल्पना भी नहीं की थी कि अकेला एक उपन्यास तमाम विधान सभाओं के सदस्यों और दैनिक समाचारपत्रों से बढ़ कर प्रभावशाली सिद्ध होगा। ह्विटियर, लौवैल, ब्राएण्ट, एमर्सन और लौंगफेलो जैसे कवियों ने दासता के विरुद्ध घृणा के भाव पहले भी प्रभावशाली रूप में प्रकट किए थे, परन्तु १८५१ से पूर्व बहुत कम लोगों ने यह कल्पना की थी कि इस विषय पर एक लोकप्रिय उपन्यास भी लिखा जा सकता है। उस साल एक लोकप्रिय पत्र 'नेशनल इरा' में 'अंकिल टाम' नामक एक दास की मृत्यु का कल्पित वर्णन प्रकाशित हुआ। यह इतना लोकप्रिय हुआ कि लेखिका हैरियट बीचर स्टो ने धारावाहिक रूप से 'टाम काका की कुटिया' (अंकिल टाम्स केबिन) की कथा लिखना आरम्भ की।

कई दृष्टियों से इस पुस्तक ने प्रायः जादू-सा कर दिखाया। प्रसिद्ध पादरी लाइमन बीचर की पुत्री 'हैटी' बीचर में साहित्यिक प्रतिभा भी है, यह बात केवल उसके पति को ही ज्ञात थी। जब उसने 'अंकिल टाम्स केबिन' लिखना आरम्भ किया तब वह लेखन कार्य में प्रायः सर्वथा अनभ्यस्त थी, परन्तु अपने काम के लिए उसकी नैतिक तैयारी बहुत थी और भगोड़े दासों से सम्बद्ध विधेयक पास होने से आत्माभिव्यक्ति के लिए उसको भारी प्रेरणा मिली। इस पुस्तक की कहानी साहित्य के इतिहास में अत्यन्त आश्चर्यजनक घटनाओं में से है। यह १८५२ में प्रकाशित हुई और वर्ष की समाप्ति से पूर्व ही इसकी ३ लाख प्रतियां बिक गयीं और 'पावर' से चलने वाले ८ प्रेसों को इसकी मांग पूरी करने के लिए दिन और रात काम करना पड़ा। 'अंकिल टाम्स केबिन' में बहुत-से उदार और मानवतापूर्ण दास-स्वामियों के साथ पूरा न्याय किया गया था; एक क्रूर दास-व्यापारी साइमन लैग्री उत्तर का निवासी था। मिसेज स्टो ने दिखलाया कि किस प्रकार निर्दयता को दासता से पृथक् नहीं किया जा सकता और किस प्रकार स्वतन्त्र और दास समाजों में मूलतः समझौता नहीं हो सकता।

इस उपन्यास ने उत्तर के मतदाताओं की नयी पीढ़ी को हिला दिया। पुस्तक ने केवल अमरीका में ही नहीं, ब्रिटेन, फ्रांस और अन्य देशों में भी अपने उद्देश्य को पूर्ण कर दिया। संसार की आधी से अधिक मुख्य भाषाओं में उसका अनुवाद हुआ। इसने दासता-विरोध के लिए सर्वत्र प्रबल उत्साह जाग्रत कर दिया।

इस समय के बाद दासता का प्रश्न दबाया न जा सका। १८५० के समझौते ने उबलते हुए लावा को जिस पतली पपड़ी से ढक दिया था वह निरन्तर चटकने लगी और १८५४ में दासता का प्रश्न प्रदेशों में—इस समय नेब्रास्का के विस्तृत प्रदेश में—पुनः उठ खड़ा हुआ। विवाद तीक्ष्ण हो गया। दक्षिण के उग्र-पन्थी मिसूरी समझौते को मिटाने पर तुले हुए थे जिससे सम्पूर्ण उत्तरी मिसूरी घाटी के द्वार दास-प्रथा के लिए बन्द हो गए थे। परन्तु ज्यों ही उन्होंने इसके लिए कदम उठाए त्यों ही सारा उत्तर भड़क गया। जो प्रदेश आज के उपजाऊ कैन्सास और नेब्रास्का राज्यों से मिल कर बनता है वह बसने की इच्छा रखने-वालों को पहले से ही अपनी ओर आकृष्ट कर रहा था। वहां स्थायी शासन की स्थापना हो जाने पर द्रुत विकास की सम्भावना और भी बढ़ गयी। उत्तर वालों को विश्वास था कि यदि यह प्रदेश संगठित हो गया तो बसने वाले इधर को उमड़ पड़ेंगे और इसमें होकर शिकागो से प्रशान्त महासागर तक रेलवे लाइन बन सकेगी।

मिसूरी समझौते के अनुसार यह सारा प्रदेश दासता के लिए बन्द था। परन्तु मिसूरी के प्रभावशाली दास-स्वामियों ने इसके पश्चिमवर्ती कैन्सास प्रदेश के स्वतन्त्र होने देने का विरोध किया, क्योंकि वैसा हो जाने पर मिसूरी तीन स्वतन्त्र पड़ोसियों से घिर जाता और पहले से ही प्रबल एक आन्दोलन के सामने झुक जाने का परिणाम यह होता कि मिसूरी भी स्वयं स्वतन्त्र राज्य बनने के लिए विवश हो जाता। कुछ समय तक, मिसूरी वाले कांग्रेस में दक्षिण के लोगों की सहायता से इस प्रदेश को संगठित करने के प्रयत्नों को विफल करते रहे।

गृह-युद्ध का रणक्षेत्र

व्यवस्था-हीन प्रदेश

इण्डियनों के लिये
सुरक्षित प्रदेश

रिचमंड

चार्ल्सटन
फोर्ट समटर

मोबील

न्यू
ऑरलीयन्स

उत्तरी स्टेटें

सीमावर्ती स्टेटें

दक्षिणी स्टेटें

खाई चौड़ी होती गयी

तब इलिनॉय के वरिष्ठ सेनेटर स्टीफेन ए. डगलस ने १८५४ में एक बिल पेश करके विरोधियों को काटने का प्रयास किया। इस बिल से स्वतन्त्र भूमि के सभी पक्षपाती क्रुद्ध हो गए। डगलस की दलील यह थी कि चूंकि १८५० के समझौते ने यूटा और न्यू मेक्सिको को दासता का निर्णय स्वयं करने के लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया है इस कारण मिसूरी का समझौता उसी क्षण से स्वयं समाप्त हो गया है। उसकी योजना कैन्सास और नेब्रास्का के दोनों प्रदेशों का संगठन करके वहां के वासियों को दासों को अपने साथ ले जाने की अनुमति देती थी। निवासियों को यह निश्चय स्वयं करना था कि वे यूनियन में स्वतन्त्र-राज्यों के रूप में सम्मिलित होंगे या दास-राज्यों के रूप में। उत्तर वालों ने डगलस पर आक्षेप किया कि उसने यह बिल १८५६ में राष्ट्रपति के चुनाव में दक्षिण वालों के मत प्राप्त करने के लिए पेश किया है। निस्सन्देह उसकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं बहुत प्रबल थीं। परन्तु यदि उसका यह यकीन रहा हो कि उत्तरी भावना उसकी योजना चुपचाप सहन कर लेगी तो उसका यह भ्रम तुरन्त ही दूर हो गया। लाखों आदमियों को ऐसा लगा कि पश्चिम के समृद्ध मैदानों को दासता के लिए खोल देना अक्षम्य अपराध है। बिल पर अनेक आवेशपूर्ण बहसें हुईं। स्वतन्त्र-भूमि-पक्षपाती समाचार-पत्रों ने इसकी जोरदार निन्दा की। उत्तर के पादरियों ने इसका विरोध किया। जो व्यापारी अभी तक दक्षिण के मित्र थे उन्होंने एकदम मुंह मोड़ लिया, तो भी मई मास के एक प्रातःकाल यह बिल सेनेट में पास हो गया। दक्षिण के उत्साही लोगों ने इस प्रसन्नता में तोप के गोले छोड़े। परन्तु उसी समय दासता-विरोधी नेता सैलमॉन पी. चेस ने यह भविष्यवाणी की: "वे इस समय तो जीत मना रहे हैं परन्तु इसकी गूंज तब तक शान्त नहीं होगी जब तक कि स्वयं दासता का अन्त न हो जायगा।" बाद में जब डगलस अपने पक्ष में भाषण करने के लिए शिकागो पहुँचा तब बन्दरगाह पर खड़े जहाजों ने अपने झण्डे नीचे गिरा दिए, गिरजाघरों के घण्टे घण्टा-भर बजते रहे और दस हज़ार लोगों की भीड़ ने इतना शोरगुल किया कि वह अपनी बात किसी को न सुना सका।

डगलस के दुर्भाग्यपूर्ण कानून के परिणाम तुरन्त ही सामने आए। ह्विग पार्टी जो कि अब तक दासता-विस्तार के प्रश्न को टालती रही थी, सर्वथा मृत हो गयी और उसके स्थान पर एक नए बलवान संगठन रिपब्लिक दल का जन्म हुआ। उसकी प्रथम मांग यह थी दासता का सभी प्रदेशों से अन्त कर दिया जाय। १८५६ में इस दल ने राष्ट्रपति-पद के लिए साहसी जान फ्रेमोण्ट को नामजद किया। यद्यपि वह दल चुनाव में हार गया परन्तु उत्तर के बहुत बड़े भाग में उसका विस्तार हो गया। चेस और विलियम सेवर्ड सरीखे स्वतन्त्र-भूमि-आन्दोलन के नेताओं का प्रभाव पहले से कहीं अधिक बढ़ गया और उनके साथ ही इलिनॉय का एक ऊंचा, दुबला-पतला वकील अब्राहम लिंकन सामने आया जिसने नयी समस्याओं पर विचार करने में आश्चर्यजनक तर्कों का प्रदर्शन किया। कैन्सास में दक्षिण के दासता समर्थक और उत्तर के दासता-विरोधी मनुष्यों के प्रवेश ने तीव्र विरोध उत्पन्न कर दिया था, और परस्पर की सशस्त्र टक्करों से वह प्रदेश 'लहूलुहान कैन्सास" कहलाने लगा।

मिसेज स्टो ने लिखा था, "जो राष्ट्र अपने हृदय में किसी बड़े और अप्रतिकृत अन्याय को लिए रहता है उसमें सदा भयंकर उथल-पुथल का भय बना रहता है।" समय बीतता गया और घटनाएँ राष्ट्र को अनिवार्य संघर्ष के समीप पहुँचाती गयीं। १८५७ में सर्वोच्च न्यायालय ने ड्रेड स्कॉट के विषय में अपना प्रसिद्ध निर्णय सुनाया। स्कॉट मिसूरी का एक दास था जिसे बीस वर्ष पूर्व उसका स्वामी इलिनॉय और विस्कॉन्सिन प्रदेशों में रहने के लिए ले गया था। वहां दासता निषिद्ध थी। मिसूरी में लौट कर वह अपनी दासावस्था से असन्तुष्ट हुआ और उसने इस आधार पर मुकदमा दायर किया कि चूंकि मैं स्वतन्त्र भूमि में रह चुका हूँ इसलिए मुझे मुक्त किया जाय। दक्षिण-प्रभावित न्यायालय ने निर्णय दिया कि स्कॉट दास-राज्य में स्वेच्छापूर्वक लौटा है, इसलिए उसको स्वतन्त्रता के जो कुछ अधिकार थे भी, वे नष्ट हो गए और साथ ही यह व्यवस्था भी दी कि कांग्रेस इन प्रदेशों में दासता के निषेध के लिए जो कोई प्रयत्न करेगी वह अवैध होगा।

इस निर्णय से उत्तर में सर्वत्र एक भयानक जोश फैल गया। इससे पूर्व न्याय-विभाग की इतनी निन्दा कभी नहीं हुई थी। दूसरी ओर इस निर्णय में दक्षिणी डेमोक्रेटों की बहुत बड़ी जीत भी थी। इससे दक्षिणी प्रदेशों में दासता को जारी रखने के उनके विचार को न्यायालय की अनुमति प्राप्त हो गयी। अब्राहम लिंकन अभी तक मध्य-पश्चिम के अन्य वकील राजनीतिज्ञों से प्रायः भिन्न नहीं थे। वह दासता को चिरकाल से एक बुराई मानते थे। १८५४ में पियोरिया (इलिनॉय) में एक भाषण देते हुए उन्होंने बलपूर्वक कहा था कि सभी राष्ट्रीय कानून लोकतन्त्र के जनकों के इस सिद्धान्त के आधार पर बनने चाहिएं कि दासता एक ऐसी प्रथा है जिसको धीरे-धीरे कम करते हुए अन्ततः

समाप्त कर देना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि जनता की प्रभुता का सिद्धान्त मिथ्या है, क्योंकि पश्चिमी प्रदेशों की दासता का प्रश्न केवल स्थानीय निवासियों द्वारा नहीं, अपितु समस्त संयुक्तराज्य संघ द्वारा विचारणीय है। इस भाषण से वे बढ़ते हुए पश्चिम में प्रसिद्धि पाने लगे। चार वर्ष बाद इलिनॉय से सेनेट के चुनाव में वह स्टीवन ए. डगलस के प्रतिस्पर्धी उम्मीदवार के रूप में खड़े हुए। १७ जून, १८५८ को उन्होंने अपने चुनाव आन्दोलन का जो प्रथम भाषण दिया था उसमें उन्होंने आगामी सात वर्षों के अमरीकी इतिहास की मुख्य ध्वनि को गुंजित कर दिया था।

लिंकन द्वारा दास-प्रथा की भर्त्सना

"जिस घर में फूट हो वह टिक नहीं सकता। मेरा विश्वास है कि यह शासन आधे (लोगों को) दास और आधे (लोगों को) स्वतन्त्र रखकर स्थायी नहीं रह सकता। मैं नहीं कहता कि संघ विघटित हो जायेगा, मैं नहीं कहता कि सदन ढह जायेगा—परन्तु मुझे यह आशा अवश्य है कि इसमें फूट नहीं रहने पायेगी।"

लिंकन और डगलस के बीच १८५८ की ग्रीष्म और शरद ऋतुओं में सात वाद-विवाद हुए। लहलहाते हुए खेतों के बीच बसे हुए इलिनॉय के सूखे व गर्म छोटे कस्बों में कमीजों की बाहें ऊपर चढ़ाए हुए किसान और उनके परिवार गाड़ियों में बैठे और जमीन पर खड़े हुए इन विवादों को सुनने की प्रतीक्षा में रहते थे। सेनेटर डगलस स्थानीय डेमोक्रेटिक क्लब के सित्रों से घिरा हुआ एक खुली गाड़ी में आता और मंच पर चढ़ जाता। उसका शरीर स्वस्थ और पांच फुट ऊँचा था। उत्कृष्ट वक्ता के रूप में उसकी दूर-दूर तक ख्याति थी और वह 'छोटे दैत्य' के नाम से प्रसिद्ध था। उसके, प्रत्येक अंग से आत्मविश्वास और अधिकार प्रकट होता था। एब् लिंकन बहुधा पैदल आते थे। उनका झुर्रियों से ढका चेहरा और लम्बी गरदन भीड़ में दूर से ही दिखलाई देती थी। वह जब श्रोताओं के सामने आते तो उनका चेहरा उदास रहता था। उस पर आक्रमण का बोझ रहता था। वह न केवल डगलस के सेनेट में रहने के अधिकार को चुनौती देते थे, बल्कि नयी पार्टी के प्रवक्ता भी थे। ये दोनों वक्ता जो दलीलें पेश करते थे उनसे बढ़ कर चतुर, चमत्कारी और प्रबल युक्तियां अंग्रेजी भाषा में शायद ही कभी कहीं दी गयी हों। यद्यपि डगलस एक बार पुनः सेनेटर चुना गया तथापि लिंकन को राष्ट्रव्यापी ख्याति प्राप्त हुई।



एन्टीटम के निर्णायक युद्ध के तुरंत बाद लिंकन ने युद्ध की प्रगति पर विचार करने के लिए यूनियन के जनरल मक्क्लेलन से उनके युद्ध शिविर में भेंट की।

शीघ्र ही प्रादेशिक संघर्ष पुनः तीव्र हो गया। जॉन ब्राउन ने आवश्यकता से अधिक जोश में आकर तीन वर्ष पूर्व केन्सास में दासता पर एक खूनी प्रहार किया था; वह अब भी उस की बुराइयां सोचने में लीन रहता था। अब उसने न्यू इंग्लैण्ड के कुछ उन्मूलनवादी लोगों की सहायता से एक साहसिक कदम उठाया। १८ अनुयायियों का एक गिरोह इकट्ठा करके, जिसमें पांच नीग्रो भी थे, उसने १६ अक्तूबर, १८५९ की रात को हार्पर्स फेरी (वर्जिनिया) के संघीय शस्त्रागार पर अधिकार कर लिया। प्रातःकाल, हार्पर्स फेरी कस्बे के नागरिक विविध शस्त्रों से सज्जित होकर गांव में उमड़ पड़े और नागरिक सेना की कुछ कम्पनियों की सहायता से उन्होंने प्रत्याक्रमण आरम्भ कर दिया। ब्राउन और उसके बचे हुए साथी कैद हो गए। राष्ट्र-भर में सनसनी फैल गयी। ब्राउन की कार्रवाई ने बहुत से दक्षिण वालों की बुरी-से-बुरी आशंकाओं को सत्य सिद्ध कर दिया। दूसरी ओर, दासता विरोधी उग्र जनों ने ब्राउन को एक प्रशंसनीय उद्देश्य की पूर्ति पर न्यौछावर हो जाने वाला 'महान् शहीद' कह कर पुकारा। परन्तु अधिकतर उत्तर वालों ने इस दुस्साहस का विरोध किया। उन्हें इसमें दक्षिण पर आक्रमण नहीं, अपितु लोकतन्त्रीय प्रणालियों पर आक्रमण होता दिखलाई दिया। ब्राउन पर षड्यन्त्र, विद्रोह और कत्ल का मुकदमा चला और २ दिसम्बर, १८५९ को उसे फांसी पर लटका दिया गया। उसका अपने अन्तिम क्षण तक यही विश्वास रहा कि वह एक दैवी कार्य का निमित्त-मात्र था।

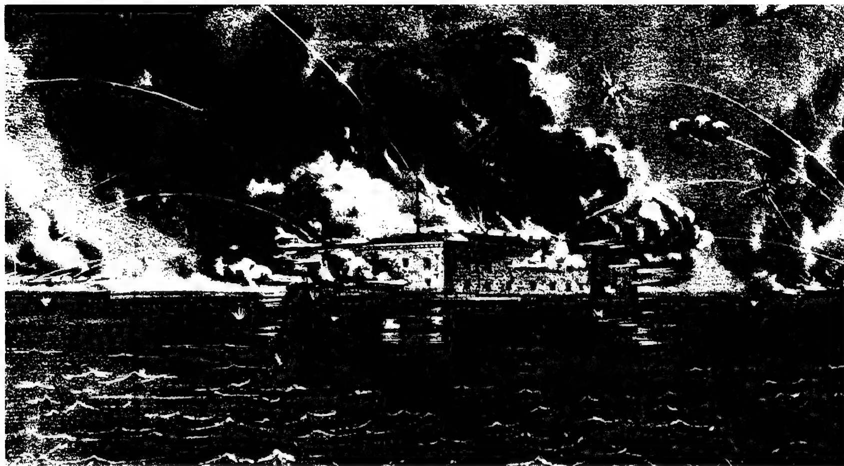
देश के प्रारम्भिक काल से उत्तर और दक्षिण में जो भेद चले आ रहे थे इस घटना से और भी गहरे होकर वे उदीयमान राष्ट्र की संरचना में जुड़ गए। दक्षिण का लगभग पूरा प्रदेश ग्रामीण था। उत्तर का बहुत-सा भाग शहरी हो चुका था। उत्तर के लोग चाहते थे कि विकासमान उद्योग की रक्षा के लिए तैयार माल पर तट-कर लगाया जाना चाहिए। कृषि-प्रधान दक्षिण उससे घृणा करता था। उत्तर सार्वजनिक भूमि को शीघ्रातिशीघ्र छोटे स्वामियों में बांट देने का पक्षपाती था। सभी बाशिन्दों के लिए मुफ्त कृषि-भूमि की मांग प्रबलतर होती जा रही थी। 'खेत पाने के लिए बांट दो' का नारा लोकप्रिय होता जा रहा था। दक्षिण चाहता था कि राष्ट्रीय भूमि को ऊँचा मूल्य पाने के लिए रोका और बेचा जाय। उत्तर राष्ट्र के लिए कुशल बैंकिंग पद्धति का पक्षपाती था। दक्षिण केन्द्रीय बैंक व्यवस्था का विरोधी था। उत्तर में एक बलवान मध्यम श्रेणी विकसित हो चुकी थी, इसी कारण वह दक्षिण की अपेक्षा अधिक लोकतन्त्रीय था।

गृह-युद्ध का सूत्रपात

१८६० के राष्ट्रपति के चुनाव के समय उत्तर और दक्षिण के इन आपसी भेदों का प्रकाशन राजनीतिक रूप में हुआ। रिपब्लिकन पार्टी इस आन्दोलन में सर्वथा एक होकर सामने आई। शिकागो में एक उत्साहपूर्ण अधिवेशन करके उन्होंने मध्य-पश्चिम के सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्ति अब्राहम लिंकन को अपना उम्मीदवार नामजद किया। लाखों मतदाता इस दृढ़ निश्चय द्वारा प्रेरित थे कि वे दासता को और नहीं बढ़ने-फैलने देंगे। पार्टी ने उद्योगों के संरक्षण के लिए तट-कर लगाने की भी प्रतिज्ञा की और भूमि के भूखे उत्तर वालों से अपील करते हुए प्रतिज्ञा की कि वे सब वासियों को मुक्त कृषि भूमि देने का कानून पास कराएंगे। दूसरी ओर विरोधी दल बिखरा हुआ था इसलिए चुनाव के दिन लिंकन और रिपब्लिकनों की जीत हुई।

यह पहले से ही निश्चित था कि यदि लिंकन जीते तो साउथ कैरोलाइना यूनियन से अलग हो जायगा। यह राज्य एक लम्बे अरसे से शुभ अवसर की प्रतीक्षा में था जिसमें सारा दक्षिण एक नयी कानफेडरेसी में संगठित किया जा सके। ज्यों ही चुनाव के परिणामों का निश्चय हो गया त्यों ही साउथ कैरोलाइना की ओर से एक विशेष अधिवेशन में यह घोषणा कर दी गयी कि 'संयुक्त राज्य अमरीका' के नाम के अन्तर्गत साउथ कैरोलाइना व अन्य राज्यों के बीच जो संघ सम्बन्ध चले आ रहे थे उन्हें खत्म किया जाता है। दक्षिण के अन्य राज्यों ने भी तुरन्त इसका अनुकरण किया और ८ फरवरी १८६१ को उन्होंने 'कान-फेडरेट स्टेट्स ऑव अमेरिका' का संगठन किया।

इसके एक महीने से भी कम समय पश्चात् ४ मार्च, १८६१ को अब्राहम लिंकन संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति पद पर आसीन हुए। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने दक्षिण की पृथकता को स्वीकार करने से इनकार कर दिया और उसे "अवैध" कह कर पुकारा। उन्होंने अपने भाषण के अन्त में प्रेम के पुराने बन्धनों को फिर जोड़ने की हृदयस्पर्शी व भावुकतापूर्ण अपील की, परन्तु दक्षिण ने उस अपील को नहीं सुना और १२ अप्रैल, को चार्ल्सटन (साउथ कैरोलाइना) बन्दरगाह के फोर्ट सुमटर पर तोपों ने आग उगलनी शुरू कर दी। अब उत्तर-वालों के मन में किसी भी प्रकार संकोच नहीं रहा। प्रत्येक गांव और नगर में ढोल बजने लगे और सर्वत्र नौजवान शस्त्रों से सुसज्जित हो गए। इसी समय अलग होने वाले सात राज्यों की जनता में भी उनके राष्ट्रपति जैफर्सन डेविस की



१२ अप्रैल, १८६१ को सुबह, एक भयानक विस्फोट से चार्लसटन बन्दरगाह की शान्ति भंग हुई। 'कान्फेडरेटों' ने सुमटर के किले पर (चित्र में) गोलाबारी करके गृह-युद्ध प्रारम्भ कर दिया।

अपील की प्रतिक्रिया हुई। बहुत कम लोगों ने आगामी संघर्ष की भयंकरता और गम्भीरता की कल्पना की थी। युद्ध समाप्त होने तक दक्षिण की ओर से लगभग ८ लाख व्यक्ति लड़े थे और उत्तर की ओर से इससे दुगने या तिगुने। उत्तर की सेनाओं में ५० हजार से अधिक गोरे और १ लाख से अधिक नीग्रो अलग होने वाले राज्यों से आकर भर्ती हुए थे।

दोनों फिरके चिन्तापूर्वक उन दास-राज्यों की कार्रवाइयों की प्रतीक्षा कर रहे थे जो कि अब तक राजभक्त रहे थे। वर्जिनिया ने १७ अप्रैल को भाग्य-निर्णायक कदम उठाया और आर्कन्सास तथा नार्थ कैरोलाइना ने तुरन्त ही उसका अनुगमन किया। कोई भी राज्य यूनियन से इतनी अनिच्छा-पूर्वक पृथक नहीं हुआ जितना वर्जिनिया। उसके राजनीतिज्ञ न केवल स्वतन्त्रता-प्राप्ति और संविधान-निर्माण के लिए अनिवार्य रहे थे, बल्कि उसने राष्ट्र को पांच राष्ट्रपति भी दिए थे। वर्जिनिया के साथ ही कर्नल रॉबर्ट ई. ली भी चला गया। उसने अपने राज्य के प्रति निष्ठा के कारण यूनियन की सेना का सेनापतित्व ग्रहण करने से इनकार कर दिया। विस्तारित कॉनफेडरेसी और उत्तर के स्वतन्त्र-भूमि-पक्षपाती इलाके के बीच में वे सीमावर्ती राज्य थे, जिन्होंने अप्रत्याशित रूप से अपने को राष्ट्रीयतावादी सिद्ध किया और यूनियन के ही साथ अपना सम्बन्ध बनाए रखना पसन्द किया।

पूर्व और पश्चिम में खूनी लड़ाइयां

दोनों पक्षों के लोग शीघ्र ही विजय-प्राप्ति की प्रबल आशा से युद्ध में सम्मिलित हुए, परन्तु प्राकृतिक साधन-सम्पन्नता में उत्तर की स्थिति निर्विवाद रूप से अच्छी थी। २ करोड़ २० लाख आबादी वाले २३ उत्तरी राज्य ९० लाख आबादी के ११ दक्षिणी राज्यों के विरुद्ध खड़े थे। उत्तर की औद्योगिक श्रेष्ठता उसकी आबादी की अधिकता से भी बढ़ कर थी। ग्रामीण दक्षिण की तुलना में उत्तर के पास शस्त्रास्त्र, गोला-बारूद, वस्त्र और अन्य सामान के निर्माण की सुविधाएं अधिक थीं। उत्तर की रेलवे लाइनों के शीघ्रातिशीघ्र विस्तार ने भी संघीय सामरिक सफलता में सहायता दी। दूसरी ओर कॉनफेडरेसी एक गठा हुआ और जलीय सुविधाओं वाला प्रदेश था। चूंकि युद्ध उसकी अपनी ही भूमि पर हो रहा था, अतः वह अपने सामरिक मोर्चे की रक्षा उत्तर की तुलना में कम श्रम और कम खर्च में कर सकता था।

युद्ध के तीन मुख्य क्षेत्र थे—समुद्र, मिसिसिपी घाटी और पूर्वी समुद्र-तट के राज्य। युद्ध के आरम्भ में प्रायः सारी जल सेना यूनियन के हाथ में थी परन्तु वह बिखरी हुई और निर्बल थी। जल-सेना के योग्य मंत्री गिडियन वेल्ज ने इसे तुरन्त पुनर्गठित करके बलवान बना दिया। लिंकन ने दक्षिणी तट की घेराबन्दी घोषित की। यद्यपि आरम्भ में इसका प्रभाव उपेक्षणीय रहा, परन्तु १८६३ में इसने यूरोप को रुई का निर्यात और वहां से बारूद, वस्त्र और औषधि आदि जिन वस्तुओं की दक्षिण को अत्यन्त आवश्यकता थी उनका आयात, पूर्णतया रोक दिया। इसी समय एक प्रतिभाशाली जल सेनापति डेविड फैरागट मैदान में आया। उसने दो उल्लेखनीय कार्रवाइयां कीं। वह यूनियन के बेड़े को मिसिसिपी के मुहाने पर ले गया और दक्षिण के सबसे बड़े नगर न्यू ऑर्लियन्स को आत्मसमर्पण करने के लिए विवश कर दिया। उसका दूसरा काम यह था कि वह मोबाइल खाड़ी के दुर्ग-बद्ध द्वार को पार करके आगे बढ़ गया और कानफेडरेसी के एक शस्त्र-सज्जित पोत पर कब्जा करके उसने इस बन्दरगाह पर घेरा डाल दिया। सब मिलाकर दक्षिण को पराजित करने में जल सेना ने यूनियन की प्रशंसनीय सेवा की।

मिसिसिपी घाटी में यूनियन की सेनाओं की प्रायः लगातार अनेक जीतें हुईं। युद्ध के आरम्भ में ही उन्होंने टेनेसी में कॉनफेडरेसी की लम्बी पंक्तिबद्ध मोर्चेबन्दी को भंग कर दिया और इस प्रकार राज्य के प्रायः समस्त पश्चिमी भाग पर सरलतापूर्वक अधिकार कर लिया। मिसिसिपी के महत्वपूर्ण बन्दरगाह मेम्फिस को लेने के पश्चात् यूनियन की सेनाएँ कॉनफेडरेसी के भीतरी इलाकों में दो सौ मील तक चली गयीं। उनका सेनापति यूलिसीज एस. ग्राण्ट था जो दृढ़ और हठी था और उसे सैन्य-कला के मुख्य सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञान था। टेनेसी नदी की ऊँची घाटियों में शाइलो नामक स्थान पर जब आक्रमण किया गया तो वह अपने स्थान पर तब तक डटा रहा जब तक कि नयी मदद पाकर वह शत्रु को पीछे ढकेल देने में समर्थ नहीं हो गया। इसके पश्चात् उसकी सेनाएं धीरे-धीरे परन्तु दृढ़ता से दक्षिण की ओर बढ़ने लगीं। उनका लक्ष्य मिसिसिपी पर नियन्त्रण कर लेना था। उसके निचले भाग तो फैरागट द्वारा न्यू ऑर्लियन्स पर अधिकार कर लेने के पश्चात् कॉनफेडरेटों से पहले ही साफ हो चुके थे। कुछ समय तक ग्राण्ट को विक्सबर्ग में रुक जाना पड़ा। वहां के टीलों पर कॉनफेडरेट दृढ़ता से जम गए थे। उन पर जल सेना आक्रमण नहीं कर सकती थी। परन्तु १८६३ में ग्राण्ट ने एक आश्चर्यजनक काम किया। वह विक्सबर्ग को घेर कर नीचे की ओर आगे बढ़ गया और छः सप्ताह तक

उसने कॉनफेडरेटों को अपने घेरे में रखा। ४ जुलाई को उसने नगर पर और पश्चिम में कॉनफेडरेटों की सर्वाधिक शक्तिशाली सेना पर अधिकार कर लिया। अब समस्त नदी यूनियन के अधिकार में थी। कॉनफेडरेसी दो हिस्सों में तोड़ दी गयी थी और आर्कन्सास और टैक्सास के सम्पन्न प्रदेशों से नदी को पार करके पूर्व में सामग्री का पहुँचाना प्रायः असम्भव हो गया था।

दूसरी ओर वर्जिनिया में यूनियन की सेनाओं को एक के बाद दूसरी पराजय का सामना करना पड़ रहा था। वहां बार-बार खूनी-युद्ध हुए जिनमें यूनियन की सेनाओं ने कॉनफेडरेटों की राजधानी रिचमण्ड (वर्जिनिया) पर अधिकार करने और कॉनफेडरेट सेनाओं को नष्ट करने का बार-बार प्रयत्न किया परन्तु वे बार-बार पीछे ढकेल दी गयीं। रिचमण्ड और वाशिंगटन में दूरी केवल १०० मील की है। परन्तु बीच के प्रदेश में अनेक जल-धाराएं हैं जिनके कारण दक्षिण के लोगों को रक्षा-व्यवस्था मजबूत थी। कॉनफेडरेटों के दो सेनापति थे—राबर्ट ई. ली और टामस जे. (स्टोनवाल) जैक्सन। वे दोनों ही यूनियन के आरम्भिक सेनापतियों की तुलना में कहीं चतुर नेता थे। यूनियन के सेनापति मैक्लेलन ने रिचमण्ड पर अधिकार करने का जो तोड़ प्रयत्न किया। एक बार तो उसके सिपाहियों को कॉनफेडरेट गिरजाघरों में बजते हुए घण्टे तक सुनायी दे गए। लेकिन २५ जून से १ जुलाई तक के सात दिनों के युद्ध में यूनियन की सेनाएं पीछे ढकेल दी गयीं और दोनों पक्षों को भयंकर हानि उठानी पड़ी।

ज्वार उठा और शांत हो गया

१८६३ का अभियान उत्तर के लिए अच्छा सिद्ध नहीं हुआ। परन्तु उसी वर्ष की प्रथम जनवरी को एक उल्लेखनीय घटना घटी। उस दिन राष्ट्रपति लिंकन ने अपनी सुप्रसिद्ध 'मुक्ति-घोषणा' (इमैन्सिपेशन प्रोक्लेमेशन), जिसके अनुसार सब दास स्वतन्त्र कर दिए गए और उन्हें राष्ट्रीय सेनाओं में सम्मिलित होने के लिए आमन्त्रित किया गया। अब तक युद्ध का प्रत्यक्ष कारण राष्ट्र की एकता करना रहा था। अब उसके साथ देश की सीमाओं से दासता को सदा के लिए समाप्त करना भी जुड़ गया। स्थल-मार्ग से रिचमण्ड की ओर का बढ़ाव अब तक रुका हुआ था। चान्सलर्सविल में एक खूनी युद्ध हुआ जिसमें उत्तर वालों की भारी हार हुई। परन्तु कॉनफेडरेटों को यह जीत बहुत महंगी पड़ी, क्योंकि इसमें स्टोनवाल जैक्सन मारा गया, जो ली के बाद दक्षिण का योग्यतम सेनापति था।

कॉनफेडरेटों की इन जीतों में से एक भी निर्णायक नहीं थी। जुलाई १८६३ में युद्ध का पासा पलट गया। ली ने समझा कि चान्सलर्सविल की पराजय ने यूनियन की कमर तोड़ दी है। उसने उत्तर की ओर बढ़ कर पेन्सिलवानिया पर आक्रमण किया। उसकी सेना प्रायः राज्य की राजधानी तक पहुँच गयी परन्तु यूनियन की एक शक्तिशाली सेना ने उसकी गति को गेटिसबर्ग पर रोक दिया। यहां तीन दिन के युद्ध में कॉनफेडरेटों ने यूनियन की पंक्ति को तोड़ने का वीरतापूर्ण प्रयत्न किया परन्तु वे असफल रहे और जब ली के अनुभवी सिपाही भारी हानि के कारण स्थायी रूप से शक्तिहीन होकर पोटोमैक की ओर पीछे लौटे तब यह स्पष्ट हो चुका था कि "गेटिसबर्ग का ज्वार" कॉनफेडरेटों की सभी आशाओं की पराकाष्ठा थी। ग्राण्ट की सेना उस समय मिसिसिपी नदी पर विक्सबर्ग पर अधिकार करने जा रही थी। दक्षिणी समुद्रतट की घेराबन्दी लोहे की दीवार बन चुकी थी। कॉनफेडरेटों के साधन समाप्त हो रहे थे। दूसरी ओर उत्तरी राज्यों की मिलें और कारखाने पूरी क्षमता के साथ चल रहे थे। उनके खेत यूरोप को माल भेज रहे थे और उनका जन-बल नए आप्रवासियों के कारण निरन्तर बढ़ता जा रहा था।

रिचमण्ड की ओर ग्राण्ट की मन्द परन्तु मजबूत प्रगति से १८६४ में युद्ध का अन्त स्पष्ट दीखने लगा। सब दिशाओं से उत्तरी सेनाएं घेरा बनाकर आगे बढ़ रही थीं। १ फरवरी १८६५ को जनरल शरमन की पश्चिमी सेना ने जार्जिया से उत्तर की ओर अभियान आरम्भ कर दिया। निराश शत्रु ने प्रत्येक स्थान पर उसकी प्रगति को रोकने का यत्न किया। १७ फरवरी को कॉनफेडरेटों ने साउथ कैरोलाइना की राजधानी कोलम्बिया को खाली कर दिया, चार्ल्सटन बिना युद्ध के ही यूनियन के बेड़े के हाथ लगा, क्योंकि भीतरी प्रदेश के साथ उसके रेल-सम्बन्ध कट चुके थे। पीटर्सबर्ग और रिचमण्ड में कॉनफेडरेटों की स्थिति अरक्षणीय हो चुकी थी और २ अप्रैल को ली ने उन्हें खाली कर दिया। एक सप्ताह बाद वह एपोमाटोक्स (वर्जिनिया) में शत्रु द्वारा घिर गया और उसके सामने आत्मसमर्पण के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रहा।

आत्मसमर्पण की शर्तें सम्मानपूर्ण थीं। ग्राण्ट ने सम्मेलन से लौट कर अपने सिपाहियों का कोलाहलपूर्ण प्रदर्शन यह समझाकर शान्त कर दिया कि "विद्रोही फिर हमारे देशवासी बन गए हैं।" दक्षिण की स्वतन्त्रता की मांग की हार हो चुकी थी।

परन्तु इस पराजित युद्ध का नायक निर्विवाद रूप से राबर्ट ई. ली था। अपनी संगठन-शक्ति, छोटी-से-छोटी बातों के बारे में भी अपनी गहरी दिलचस्पी,

अपने आदमियों के सुख-दुख की चिन्ता और अपने साहस तथा सुन्दर व्यक्तित्व के कारण उसने अपने सिपाहियों की भक्ति और विश्वास को जीता था। उसके प्रतिभाशाली नेतृत्व, समस्त युद्ध में उसके मानवतावादी दृष्टिकोण और पराजय में भी उसकी शान की सर्वत्र प्रशंसा हुई। जार्ज वाशिंगटन के समान, वह शान्ति और युद्ध दोनों में महान रहा। युद्ध के बाद वह ५ वर्ष तक जीवित रहा। यह सारा समय उसने दक्षिण की आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उन्नति करने में बिताया। जनता को वह प्रेरणा देता रहा कि वह अपने भूतपूर्व शत्रु की निष्ठावान साझीदार बनी रहे।

उत्तर में, युद्ध ने इससे भी बड़े नायक अब्राहम लिंकन को पेश किया। आरम्भ के महीनों में बहुत कम लोगों ने इस असुन्दर पश्चिमी वकील की वास्तविक ऊँचाई का अन्दाज़ा लगाया था, परन्तु धीरे-धीरे राष्ट्र उनकी गम्भीर बुद्धिमत्ता को समझने लगा जो सतर्क अध्ययन और गम्भीर चिन्तन पर आधारित थी। वह सत्य के उपासक तथा अनन्त धीरता और असीम उदारता के गुणों से युक्त थे। यदि वह कभी-कभी झिझकते और डगमगाते भी प्रतीत हुए तो यह भी सही है कि वह यह जानते थे कि राष्ट्रीय लाभ के लिए प्रतीक्षा कैसे करनी चाहिए और दृढ़ता के साथ कुशलता का सामंजस्य किस प्रकार करना चाहिए। उन्हें देश को ज़ोर-ज़बर्दस्ती के आधार पर नहीं बल्कि प्रेम और उदारता के आधार पर मिलाकर एक कर देने की चिन्ता थी। उनकी विदेश-नीति में दृढ़ता, सत्यता और आत्मसम्मान के गुण थे। वह हृदय से लोक-तन्त्रीय स्वशासन में विश्वास रखते थे। जनता का उन्हें पूर्ण विश्वास प्राप्त था और इसीलिए वह १८६४ में पुनः राष्ट्रपति चुने गए।

'किसी से भी द्वेष नहीं'

लिंकन ने द्वितीय बार पद ग्रहण करते हुए अपना उद्घाटन भाषण इन शब्दों के साथ समाप्त किया: "...किसी से भी द्वेष न रखते हुए, सब के प्रति उदार रहकर, सत्य पर दृढ़ रहकर जैसी कि उसे देखने की ईश्वर ने हमें शक्ति दी है, हमें उस कार्य को पूरा करने का प्रयत्न करना चाहिए जो हमने हाथ में लिया है। राष्ट्र के घावों को भरने के लिए, उसकी सेवा करने के लिए, युद्ध का बोझ जिसने अपने सिर पर उठाया उसके, उसकी विधवा और उसके अनाथों की सेवा के लिए और वह सब कुछ करने के लिए हमें यत्नवान रहना चाहिए जिससे हम सबको, और सब राष्ट्रों को स्थायी शान्ति प्राप्त हो और जिससे हम उसकी रक्षा कर सकें।" तीन सप्ताह पश्चात् लिंकन ने अपना अन्तिम सार्वजनिक भाषण किया, जिसमें उन्होंने अपनी पुनर्निर्माण की नीति प्रकट की—उसकी शर्तें ऐसी उदार थीं कि शायद ही किसी विजेता ने अपने असहाय पराजित के सामने वैसी शर्तें पेश की होंगी। लिंकन अपने आपको विजेता नहीं समझते थे। वह १८६१ से अमरीका के राष्ट्रपति थे। वह कहते थे कि विद्रोह को भूलकर प्रत्येक दक्षिणी राज्य को उसके पूर्ण अधिकारों के साथ यूनियन में मिला लेना चाहिए। १३ अप्रैल, गुरुवार को वाशिंगटन में ली के आत्मसमर्पण के उत्सव की दीवाली मनायी गयी और प्रसन्न जनता ने गलियों में जुलूस निकाले। १४ को राष्ट्रपति ने अपने मन्त्रि-परिषद की अन्तिम बैठक की जिसमें घेराबन्दी उठा लेने का निश्चय किया गया। उसने अपने मन्त्रियों को अपना ध्यान रक्तपात और उत्पीड़न से हटाकर शान्ति की ओर लगा देने की प्रेरणा दी। उसी रात को जब वह थियेटर में एक बाक्स में बैठे हुए थे तब किसी सिरफिरे ने उनका खून कर दिया।

तब कवि जेम्स रसैल लोवेल ने लिखा था: "अप्रैल के उस स्तब्ध करने वाले प्रातःकाल से पूर्व, इतनी बहुसंख्यक जनता ने किसी ऐसे व्यक्ति की मृत्यु पर, जिसे उसने कभी देखा तक नहीं था, इतने आँसू नहीं बहाए थे; ऐसा लगता कि उनकी मृत्यु से उसके जीवन में से एक मित्र का लोप हो गया और वह निर्जीव और अन्धकार-निमग्न हो गयी थी। उस दिन परस्पर अपरिचित लोगों ने एकत्र होकर अपनी सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियों के विनिमय द्वारा मृत महापुरुष के प्रति प्रशंसा के भावों की जैसी मूक अभिव्यक्ति की वैसी इससे पहले कभी न की गयी होगी। मानव-परिवार अपना एक प्रिय जन खो बैठा था।"

अब राष्ट्र को पुनर्व्यवस्था और पुनर्निर्माण की कठिन समस्या का सामना एण्ड्रू जान्सन सरीखे एक नए, अपरीक्षित और अपर्याप्त रूप से साधन-सज्जित व्यक्ति के नेतृत्व में करना पड़ा। युद्ध की विरासत में देश को भलाई और बुराई दोनों ही मिली थीं। उसने यूनियन की रक्षा तो कर दी थी और उसे अमर कीर्ति भी प्रदान की थी परन्तु देश युद्धाग्नि में से निश्चय ही बिना झुलसे हुए नहीं निकल सका था।

विजेता उत्तर के सामने सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्न उन राज्यों की स्थिति के निश्चय का था जो संघ से पृथक हो गए थे। इस सम्बन्ध में गड़बड़ी थी कि इस प्रश्न का निर्णय करने का अधिकार कांग्रेस को है या राष्ट्रपति को। लिंकन का विचार था कि दक्षिणी राज्य कानूनन कभी पृथक नहीं हुए, वरन

उनकी जनता को कुछ अभक्तिमान नागरिकों ने गुमराह कर दिया था। लिंकन के अनुसार युद्ध कुछ व्यक्तियों का काम था। संघीय शासन को उन व्यक्तियों से भुगताना था, राज्यों से नहीं। लिंकन का विश्वास था कि स्थल और जल-सेना के प्रधान सेनापति और शत्रु को क्षमा करने का अधिकारी होने के नाते राष्ट्रपति को स्थिति सम्बन्धी पूर्ण अधिकार प्राप्त है। इसी विचार पर चलते हुए उन्होंने १८६३ में इस आशय की घोषणा की थी कि यदि किसी राज्य में १८६० के दस प्रतिशत वोटर ऐसे शासन का संगठन कर लें जो संविधान के प्रति निष्ठावान हो और कांग्रेस के कानूनों और राष्ट्रपति की आज्ञाओं का पालन करने की प्रतिज्ञा करे तो मैं उस शासन को राज्य का कानूनसम्मत शासन मान लूंगा।' कांग्रेस ने इस योजना को अस्वीकार कर दिया और बिना उसकी सलाह के इस समस्या को हल करने के लिंकन के अधिकार को चुनौती दी और उन पर यह आरोप लगाया कि उन्होंने कानून-निर्माण के अधिकार को असंवैधानिक रूप से हड़प लिया है। दूसरी ओर, कांग्रेस ने १८६४ में इससे भी अधिक कठोर बिल पास किया। लिंकन ने उस पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया।

वस्तुतः युद्ध की समाप्ति से पूर्व ही वर्जिनिया, टेनेसी, आर्कन्सास और लुइ-जियाना में लिंकन नए शासन स्थापित कर चुके थे। कांग्रेस के कई सदस्यों ने उनकी इस कारंवाई को नापसन्द किया और सब कॉनफेडरेट राज्यों को कठोर दण्ड देना चाहा। इनमें से एक कांग्रेस-सदस्य, प्रतिनिधि सभा में रिपब्लिकन पार्टी के नेता, थैडियस स्टीवन्स का मत तो यह था कि दक्षिण के बागान मालिकों को कुछ समय तक सैनिक शासन में रखना चाहिए। अन्य लोग नीग्रो लोगों को तुरन्त ही मत-दान का अधिकार देने के लिए कृत-संकल्प थे। वस्तुतः इस समय कांग्रेस की चिन्ता का मुख्य विषय, दक्षिणी राज्यों को यूनियन में पुनः प्रविष्ट करने की अपेक्षा, पुनरुद्धारित नीग्रो लोगों की स्थिति बन गया था। मार्च १८६५ में उसने एक 'फ्रीडमेन्स ब्यूरो' (स्वतन्त्र लोगों का ब्यूरो) स्थापित किया, जिसे नीग्रो लोगों का संरक्षक बनाकर उन्हें स्वावलम्बी बनाने का काम सौंपा गया। साथ ही, कांग्रेस ने संविधान में तेरहवां संशोधन प्रस्तुत करके नीग्रो लोगों की स्वतन्त्रता पर कानूनी छाप लगा दी। संशोधन की पुष्टि दिसम्बर, १८६५ में हुई।

पुनर्निर्माण के विषय में विरोध

पुनर्निर्माण की नीति पर, कार्यपालिका और विधानसभा के बीच भावी संघर्ष का भान लिंकन को पहले ही हो गया था। परन्तु इस समस्या को सुलझाने का काम उनके उत्तराधिकारी एण्ड्रू जान्सन के सिर पड़ा। उसका सार्वजनिक जीवन का अनुभव पुराना, साहस बुद्धिसंगत और लक्ष्य अडिग था, परन्तु दुर्भाग्यवश, उसमें सामने उपस्थित समस्या को सुलझाने के लिए धैर्य और चतुराई के जिन गुणों की आवश्यकता थी वे नहीं थे।

१८६५ की गर्मियों-भर जान्सन कांग्रेस से सलाह लिए बिना (क्योंकि उस समय उसका अधिवेशन नहीं चल रहा था), कुछ बातों को छोड़ कर, लिंकन की ही पुनर्निर्माण योजना पर चलता रहा। राष्ट्रपति की हैसियत से उसने दक्षिण के कई राज्यों में गवर्नर नियुक्त कर दिए और क्षमा करने के अपने विशेषा-धिकार का प्रयोग करके उसने कानफेडरेटों की बहुत बड़ी संख्या को राजनीतिक अधिकार पुनः प्रदान कर दिए। दक्षिणी राज्यों में अधिवेशन बुलाए गए, जिनमें पृथक् होने के अध्यादेश रद्द कर दिए गए, युद्ध-ऋण को अस्वीकार किया गया और नए संविधानों की रचना की गयी। समय आने पर प्रत्येक राज्य की जनता ने एक-एक गवर्नर और राज्य की विधान-सभा का भी निर्वाचन किया। जब किसी राज्य की विधान सभा संविधान के तेरहवें संशोधन को स्वीकार कर लेती थी तब जान्सन उस राज्य में नागरिक शासन को पुनः स्थापित हुआ मान लेता था और उस राज्य के यूनियन में पुनः मिल जाने की घोषणा कर देता था। १८६५ के दिसम्बर में जब कांग्रेस का सत्र आरम्भ हुआ तब यह क्रम कुछेक को छोड़कर सब दक्षिणी राज्यों में पूरा हो चुका था। परन्तु दक्षिणी राज्यों को यूनियन में अपना अधिकारपूर्ण स्थान पुनः प्राप्त नहीं हुआ था क्योंकि कांग्रेस ने अब तक उनके सेनेटरों और प्रतिनिधियों को, जो उस समय तक वाशिंगटन आ चुके थे, अमरीका के विधि निर्माण में पुनः भाग लेने की अनुमति प्रदान नहीं की थी।

लिंकन और जान्सन दोनों मानते थे कि दक्षिणी प्रतिनिधियों को कांग्रेस में आसन ग्रहण करने की अनुमति न देने का संविधान की उस धारा के अनुसार कांग्रेस को अधिकार है जिसमें कहा गया है कि, "अपने सदस्यों......की योग्यता की निर्णायक प्रत्येक सभा स्वयं होगी।" (आर्टिकल १, सेक्शन ५)। जो लोग दक्षिण को दण्डित करना चाहते थे उन्होंने पेन्सिलवानिया के थैडियस स्टीवन्स के नेतृत्व में दक्षिणी प्रतिनिधियों को बैठने की अनुमति नहीं दी और आगामी महीनों में उन्होंने कांग्रेस के पुनर्गठन की ऐसी योजना बनानी आरम्भ कर दी जो लिंकन द्वारा आरम्भ की गयी और जान्सन द्वारा पूर्ण की गई योजना से सर्वथा भिन्न थी।

कांग्रेस ने जान्सन की योजना को अनेक मिश्रित कारणों से अस्वीकार कर दिया। युद्ध काल में परिस्थितियों के कारण राष्ट्रपति के अधिकार और प्रभाव प्रायः बढ़ जाते हैं परन्तु युद्ध के पश्चात् कांग्रेस अपने अधिकार को पुनः स्थापित करने का यत्न करती है। १८६५ में यह अनुभव किया जाने लगा कि कांग्रेस अब तक तो प्रशासकों के अधिकार-प्रयोग को सहन करती चली आयी है किन्तु अब इसे सीमित करने का समय आ गया है। उत्तर में यह भावना भी फैली हुई थी कि दक्षिण को कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए। इस भावना को कांग्रेस के उग्रपन्थियों ने प्रोत्साहन दिया। उन्होंने इस बात का लाभ उठाया कि दक्षिण-वासियों में से जो लोग अब पद ग्रहण करना चाहते थे उनमें से बहुत से केवल दस मास पूर्व यूनियन के विनाशक युद्ध में भाग ले रहे थे। उदाहरणार्थ, कॉनफेडरेसी का वाइस-प्रेसिडेण्ट जार्जिया का सेनेटर निर्वाचित होकर आया था।

इसके अतिरिक्त, यह दावा भी किया जा रहा था कि नीग्रो लोगों को रक्षण की आवश्यकता है। धीरे-धीरे यह विचार अधिकाधिक व्यापक होता गया कि नीग्रो लोगों को मत-प्रदान और पद-ग्रहण का अधिकार दिया जाना चाहिए और सामाजिक और राजनीतिक मामलों में उनके साथ गोरे नागरिकों के समान ही व्यवहार होना चाहिए। दूसरी ओर वे लोग थे—और उसमें लिंकन भी सम्मिलित थे—जो कि मताधिकार का विस्तार मन्द गति से करने के पक्षपाती थे। परन्तु जान्सन-योजना के अनुसार दक्षिण में जो विधान-सभाएं निर्वाचित हुई थीं उन्होंने अनेक ऐसे कानून पास कर दिए जो कि नवीन स्वतन्त्र हुए लोगों की सुविधाओं और अधिकारों को नियमित करते थे। दक्षिण के लोगों के सामने उन ३५ लाख नीग्रो जनों की समस्या थी जो हाल में ही दासता से मुक्त हुए थे। उन्हें यह आवश्यक जान पड़ा कि राज्य उनकी हलचलों को सूक्ष्मता से नियन्त्रित करें और उन्होंने अनेक नियन्त्रक "काले कानून" बना डाले। उत्तर में बहुतों को ऐसा लगा मानो युद्ध के लाभों को समाप्त किया जा रहा है। उत्तर के उग्र-पन्थियों ने इन कानूनों के आपत्तिजनक भागों का हवाला देकर यह सिद्ध करना चाहा कि दक्षिण दासता को पुनः स्थापित करना चाहता है।

युद्ध के कुपरिणाम

धीरे-धीरे उत्तर में बहुत से लोग ऐसा अनुभव करने लगे कि राष्ट्रपति का बर्ताव बहुत नरम रहा है। उनकी सहानुभूति कांग्रेस के उग्र-पन्थियों के साथ बढ़ने लगी। इन लोगों ने मिलकर जान्सन के 'वीटो' की परवाह न करते हुए एक 'सिविल राइट्स बिल' अप्रैल, १८६६ में और दूसरा 'फ्रीडमेन्स ब्यूरो बिल' जुलाई, १८६६ में पास किया। इन दोनों का प्रयोजन यह था कि दक्षिण का विधायन किसी प्रकार के भेद-भावों को कानूनी शकल न दे सकें। अन्त में कांग्रेस ने संविधान में चौदहवां संशोधन प्रस्तुत किया जिसमें कहा गया था : "संयुक्त राज्य में उत्पन्न अथवा नागरिक बने हुए और उसके शासनाधिकार के अधीन सभी लोग संयुक्त राज्य के और उसके अन्तर्गत उस राज्य के नागरिक होंगे जिसमें वे रहते हैं।" निस्सन्देह इसके निर्माताओं की नियत नीग्रो लोगों को तुरन्त ही नागरिकता के अधिकार प्रदान कर देने की थी।

टेनेसी को छोड़ कर सभी दक्षिणी राज्यों की विधान-सभाओं ने इस संशोधन को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। कुछ राज्यों ने तो इसको सर्वसम्मति से अस्वीकार कर दिया। इस कार्रवाई को उत्तर के कई वर्गों ने अपने इस विचार का पोषक समझा कि कठोर दण्ड दिया जाना अनिवार्य है और उत्तर को स्वतन्त्र हुए मनुष्यों के अधिकारों की रक्षा के लिए हस्तक्षेप करना चाहिए। कांग्रेस के उग्रपन्थी दक्षिण पर अपनी योजना बलपूर्वक लादने के लिए आगे बढ़ गए और उन्होंने मार्च, १८६७ में एक 'रिकॉन्स्ट्रक्शन ऐक्ट' पास किया जिससे दक्षिण में स्थापित नागरिक प्रशासनों की उपेक्षा की गयी। इस ऐक्ट के अनुसार दक्षिण को पांच जिलों में विभक्त करके उन्हें सैनिक प्रशासन में रखा गया। इसमें स्थायी सैनिक प्रशासन से बचने की राह भी सुझाई गयी, जिसके अनुसार स्थायी सैनिक शासन से वही कॉनफेडरेट राज्य बच सकता था जिसकी जनता यूनियन के प्रति निष्ठा की शपथ ले, जो चौदहवें संशोधन को स्वीकार करे और नीग्रो लोगों को मताधिकार दे। ऐसे राज्य अपने यहां नागरिक शासन स्थापित करके यूनियन में पुनः प्रवेश कर सकते थे। जुलाई १८६८ में चौदहवां संशोधन स्वीकृत हो गया और अगले वर्ष कांग्रेस ने संविधान में पन्द्रहवां संशोधन पास किया जिसका उद्देश्य यह था कि किसी भावी कांग्रेस को भी दक्षिण के नीग्रो लोगों से मताधिकार वापिस लेने का अधिकार न रहे। इस संशोधन का राज्यों की विधानसभाओं द्वारा १८७० में समर्थन किया गया। इसमें व्यवस्था की गयी कि "संयुक्त राज्य के नागरिकों के मतदान के अधिकार को, जाति, रंग या पूर्ववर्ती दासानुबन्ध के आधार पर, संयुक्त राज्य या उसके किसी राज्य द्वारा अपहृत या न्यून नहीं किया जा सकेगा।"



उत्तर और दक्षिण के बीच चलने वाली ४ वर्ष पुरानी लड़ाई को समाप्त करते हुए 'कान्फे-डरेसी' के जनरल राबर्ट ई. ली ने एपोमाटोक्स कार्ट हाउस (वर्जिनिया) में ९ अप्रैल १८६५ को यूनियन सेनाओं के जनरल यूलिसेस ग्रांट के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।



अब्राहम लिंकन के व्यक्तित्व में जो आकर्षण था, मानवता के प्रति उनमें जो लगाव था और साथ ही नीति-निपुणता के जो दुर्लभ गुण उनमें विद्यमान थे, उन सबसे प्रेरित होकर कहानियां, नाटक, जीवन-परिचय आदि अनगिनत साहित्यिक कृतियों की रचना हुई। चित्र : अपने पुत्र टाड के साथ अब्राहम लिंकन।

कांग्रेस ने 'रिकांस्ट्रक्शन ऐक्ट' को पास करने में जिन कारणों से अनथक परिश्रम किया उनमें एक यह भी था कि इससे राष्ट्रपति जान्सन पराजित और अपमानित होता था। वस्तुत: कांग्रेस जान्सन के इतने विरुद्ध थी कि अमरीकी इतिहास में आज तक केवल उसी को प्रधान शासक के पद से हटाने की कार्रवाई आरम्भ की गयी थी। उसका एकमात्र अपराध यह था कि वह कांग्रेस की नीतियों का विरोधी था और उनकी कठोर भाषा में आलोचना करता था। उसके शत्रु उस पर यह गम्भीरतम आक्षेप लगा सकते थे कि 'टेन्योर आव आफिस ऐक्ट' (कार्य-काल-विधायक कानून) के बावजूद उसने अपने मन्त्रिमण्डल से कांग्रेस के एक दृढ समर्थक को पृथक कर दिया था। परन्तु जब सेनेट ने महाभियोगा-रोपण का मुकदमा आरम्भ किया तब यह सिद्ध हो गया कि युद्ध मन्त्री को अपने पद से हटाने में राष्ट्रपति ने अपने अधिकारों की सीमा का उल्लंघन नहीं किया था और इससे भी बढ़कर महत्वपूर्ण बात यह हुई कि यह बात प्रभावोत्पादक ढंग से बतायी गयी कि यदि कांग्रेस ने राष्ट्रपति को केवल इस कारण पद से हटा दिया कि उसका कांग्रेस के प्रबल बहुमत से मतभेद था तो एक भयंकर परम्परा का सूत्रपात हो जायगा। यह प्रयत्न असफल रहा और जान्सन अपने कार्यकाल के अन्त तक अपने पद पर प्रतिष्ठित रहा।

१८६८ की गर्मियों तक कांग्रेस राष्ट्रपति के विरोध के बावजूद 'रिकांस्ट्रक्शन ऐक्ट' के अन्तर्गत, आर्कन्सास, नौर्थ कैरोलाइना, साउथ कैरोलाइना, लुईजियाना जार्जिया, अलबामा और फ्लोरिडा राज्यों को यूनियन में पुन: सम्मिलित कर चुकी थी। इन सातों राज्यों का नए शासन में कितना प्रतिनिधित्व था इसका अन्दाजा इससे लगाया जा सकता है कि निर्वाचित गवर्नरों, कांग्रेस सदस्यों और सेनेटरों में बहुसंख्या उन उत्तरी व्यक्तियों की थी जो युद्ध के पश्चात् अपने राजनीतिक भाग्य की परीक्षा के लिए दक्षिण में आ बसे थे। लुईजियाना, साउथ कैरोलाइना और मिसिसिपी की विधान-सभाओं पर पूर्ण अधिकार नीग्रो लोगों का था। अन्य कई राज्यों में यद्यपि विधानसभाओं में उनका अल्पमत था तथापि मतदाताओं में उनकी प्रबलता थी। दक्षिणी विधानसभाओं में गोरे सदस्य संख्या में कम और बिखरे हुए थे, इसलिए वे नवीन मताधिकार-प्राप्त नीग्रो लोगों और उत्तर-वालों का गठबन्धन नियन्त्रित करने में असमर्थ थे। यद्यपि उन्होंने सड़कों और पुलों के निर्माण और शिक्षण तथा धर्मार्थ कार्यों के सम्बन्ध में अच्छे कानून बनाने का काम हाथ में लिया तथापि सब मिलाकर वे अयोग्य रहे और सार्वजनिक धन का अपव्यय करने वाले सिद्ध हुए।

निराश होकर दक्षिणी गोरों ने समझ लिया कि उनकी पुरानी सभ्यता संकट में है और वे नए शासन को कानून द्वारा नहीं रोक सकते; अतः उन्होंने गैर-कानूनी उपायों का अवलम्बन आरम्भ कर दिया। समय बीतने के साथ-साथ बल का प्रयोग अधिक व्यापक होता गया और ज्यादती और गड़बड़ी को बढ़ता देखकर १८७० में कांग्रेस ने एक 'एनफोर्समेण्ट ऐक्ट' पास किया जिसके अनुसार उन लोगों को कठोर दण्ड दिया जा सकता था जो किसी भी प्रकार से नीग्रो लोगों को उनके नागरिक अधिकारों से वंचित करने का प्रयत्न करते थे।

ठोस कार्य का प्रारंभ

इस प्रकार के कानूनों की बढ़ती हुई कठोरता और प्रत्येक राज्य के पुलिस अधिकारों पर कांग्रेस के बढ़ते हुए हस्तक्षेप ने उत्तर के साथ दक्षिण का दिल मिलने की उस प्रक्रिया में बाधा डाल दी जो देश के प्रति सर्वसाधारण का प्रेम पुनः जाग्रत करने के लिए आवश्यक थी। दक्षिण के गोरे सामूहिक रूप से रिपब्लिकन पार्टी के विरुद्ध हो गए। वे उसे नीग्रो लोगों की पार्टी कहने लगे और इसके फलस्वरूप दक्षिण में डेमोक्रेटिक पार्टी का जोर बढ़ गया। समय बीतने के साथ-साथ यह प्रत्यक्ष होता गया कि कठोर कानूनों द्वारा और भूतपूर्व कॉनफेडरेटों के प्रति अनवरत घृणा और द्वेष से दक्षिण की समस्या को सुलझाने में सफलता नहीं मिल रही है। इसलिए मई, १८७२ में कांग्रेस ने एक 'अमनेस्टी ऐक्ट' पास किया जिससे लगभग ५०० कॉनफेडरेटों को छोड़कर सबको पूर्ण राजनीतिक अधिकार प्रदान कर दिए गए। केवल इन पांच सौ को पद-ग्रहण और मत-दान के अधिकार से वंचित रखा गया। क्रमशः एक के बाद दूसरे राज्य ने डेमोक्रेटिक पार्टी वालों को पदों पर निर्वाचित कर दिया। १८७६ तक केवल तीन दक्षिणी राज्यों में रिपब्लिकन सत्तारूढ़ रह गए। उस वर्ष का चुनाव अमरीकी इतिहास में सबसे अधिक मुकाबले का और अत्यन्त गड़बड़ी का था। उससे स्पष्ट हो गया कि जब तक सेनाएं नहीं हटायी जाएंगी तब तक दक्षिण में शान्ति नहीं होगी। इसलिए अगले वर्ष राष्ट्रपति रदरफोर्ड बी. हेज ने सेनाएं हटा लीं और उग्रपन्थियों की पुनर्निर्माण नीति की असफलता स्वीकार कर ली। इस नीति को मुख्यतः इस कारण अपनाया गया था कि पार्टी के आदर्शवादी तो नीग्रो लोगों की रक्षा करना चाहते थे और भौतिकवादी लोग दक्षिण पर वोटों, पदों और शक्ति के लिए अधिकार रखना चाहते थे।

दक्षिण पर उत्तरी शासन का अन्त हो गया परन्तु दक्षिण अब तक युद्ध के विनाश से पीड़ित, कुप्रशासन द्वारा लिए गए ऋणों से दबा हुआ और वर्षों के जातीय युद्ध के कारण नीति भ्रष्ट हुआ पड़ा था। १८६५ से १८७७ तक के 'मिथ्या' पुनर्निर्माण के १२ वर्षों के पश्चात् दक्षिण में निर्माण के वास्तविक प्रयत्न का आरम्भ हुआ। युद्धोत्तर अव्यवस्था के कारण हुई हानि की पूर्ति करना हृदयविदारक कठिनाई का कार्य था। गृह-युद्ध और बाद की घटनाएं अमरीकी इतिहास की भारी दुःखान्त घटनाओं में से था। सच तो यह है कि युद्ध, उसके कारणों और युद्धोत्तर घटनाओं का अध्ययन करने से ही अमरीका के उस महान् प्रदेश अर्थात् दक्षिणी संयुक्तराज्य की वे समस्याएं भलीभांति समझ में आ सकती हैं जो कि आज भी विद्यमान हैं।

अध्याय ६

विस्तार और सुधार का युग

हम ऐसी प्रत्येक वस्तु को समाप्त कर देना चाहिए जो विशेषाधिकार जैसी जान पड़ती है।

—वुडरो विल्सन
कांग्रेस के नाम सन्देश, ८ अप्रैल, १९१३

दो महायुद्धों—गृहयुद्ध तथा प्रथम विश्वयुद्ध—के बीच संयुक्त राज्य अमरीका बालिग हो गया। पन्द्रह साल से कम समय में ही वह एक ग्रामीण गणतन्त्र से एक शहरी राष्ट्र में बदल गया। सीमान्त लुप्त हो गए। बड़े कारखाने और इस्पात की मिलें, महाद्वीप के आरपार रेल की लाइनें, समृद्ध नगर और विस्तृत खेत देश भर में फैले हुए थे। साथ-साथ इनके अनुवर्ती दोष भी आ गए थे: एकाधिकार पैदा होने लगा था, कारखानों में काम करने वालों की दशा दीन थी, नगर इतनी शीघ्रता से बनते थे कि वे अपनी वेग से बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए न तो समुचित आवास व्यवस्था कर पाते थे और न उन्हें व्यवस्थापित ही कर पाते थे।

कारखानों का उत्पादन कभी-कभी वास्तविक खपत से अधिक हो जाता था। इन बुराइयों के विरुद्ध अमरीका की जनता में तथा क्लीवलैण्ड, ब्रायन, थियोडोर रूजवेल्ट, विल्सन जैसे उसके नेताओं में प्रतिक्रिया हुई। जिन सुधारों का उन्होंने स्पष्ट रूप से प्रचार किया वे दार्शनिक दृष्टि से आदर्श भी थे और व्यावहारिक भी। वे यह सिद्धान्त मानकर चलते थे कि "जहां से बुराई आरम्भ होती है वहीं से कानून का भी शुरू होना चाहिए।" सच तो यह है कि सुधार काल की सफलताओं ने विस्तार काल में पैदा हुए दोषों को रोकने में बड़ी सहायता की। एक लेखक ने लिखा "गृह युद्ध ने देश के इतिहास पर एक गहरा सफेद निशान डाला है; पिछले बीस या तीस वर्ष में जो परिवर्तन होने लगे थे उन्हें इसने एक हाथ में ही नाटकीय ढंग से प्रदर्शित किया।" युद्ध की आवश्यकताओं ने उत्पादन को व्यापक प्रोत्साहन दिया और एक ऐसी आर्थिक प्रक्रिया को गति प्रदान की जिसके आधारभूत तत्व थे, लोहा, भाप और बिजली का विदोहन तथा विज्ञान और आविष्कार की प्रगति।

१८६० से पहले जो ३६,००० पेटेण्ट स्वीकार किए जा चुके थे। वे आविष्कारों की भावी बाढ़ के अग्रदूत मात्र थे। १८६० से १८९० तक ४,४०,००० पेटेण्ट जारी किए गए और बीसवीं शती की पहली तिमाही में उसकी संख्या दस लाख तक पहुँच गयी। डायनमो के सिद्धान्त ने जो बहुत पहले १८३१ में बनाया जा चुका था, १८८० के बाद अमरीकी जीवन में क्रान्ति ला दी जब कि टामस एडीसन तथा अन्य लोगों ने उसे व्यावहारिक रूप दिया। १८४३ में जब एफ. बी. मोर्स ने बिजली की टेलीग्राफी को पूर्णतः उपयोगी बना दिया तो महाद्वीप के दूर-दूर के प्रदेश खम्भों और तारों द्वारा परस्पर सम्बद्ध हो गए। १८७६ में एलेक्जेण्डर ग्राहम बेल ने टेलीफोन यन्त्र का प्रदर्शन किया और पचास वर्ष के भीतर १,६०,००,००० टेलीफोन राष्ट्र के आर्थिक तथा सामाजिक जीवन को गतिशील बनाने लगे। १८६७ में टाइपराइटर, १८८८ में ऐडिंग मशीन और १८९७ में कैश रजिस्टर के आविष्कारों ने व्यापार की गति को और भी तीव्र कर दिया। १८८६ में लाइनो टाइप कम्पोजिंग (टाइप जमाने की मशीन) मशीन, रोटरी प्रेस तथा कागज मोड़ने वाले यन्त्रों द्वारा एक घण्टे में आठ पृष्ठ वाले समाचार-पत्र की २,४०,००० प्रतियां छापना सम्भव हुआ। १८८० के बाद एडिसन द्वारा आविष्कृत उत्ताप दीप से लाखों घर इतने अच्छे, सुरक्षित और सस्ते प्रकाश से जगमगा उठे, जैसा कभी देखा तक नहीं गया। बोलने की मशीन को भी एडिसन ने ही पूरा किया और उसने जार्ज ईस्टमेन के साथ मिलकर चलचित्र का विकास किया। इन सब और विज्ञान तथा सूझ-बूझ के अन्य प्रयोगों के फलस्वरूप प्रायः सभी क्षेत्रों में उत्पादिता का एक नया स्तर प्राप्त हुआ।

साथ-साथ, राष्ट्र का आधारभूत उद्योग—लोहा और इस्पात—भारी तटकर की संरक्षणता में वेग से विकास करता जा रहा था। पहले यह उद्योग पूर्वी राज्यों तक ही सीमित था क्योंकि वहां की भूमि में कच्चे लोहे का भण्डार था किन्तु, जैसे-जैसे भूगर्भशास्त्रियों ने यहां कच्चे लोहे के नए भण्डार खोज निकाले यह उद्योग पश्चिम की ओर विस्तार पाता गया। विशेष रूप से उल्लेखनीय है सुपीरियर झील की निकटवर्ती मेसाबी पर्वत-शृंखला जो थोड़े समय में ही विश्व

के विशालतम कच्चे लोहे के क्षेत्रों में से एक सिद्ध हुई। वहाँ कच्चा लोहा धरती की सतह के ऊपर ही उपलब्ध था। उसकी खुदाई सुगम और सस्ती थी। उसमें अवांछनीय रासायनिक मिलावट भी इतनी कम थी कि पहले उत्तम किस्म के एक टन इस्पात के उत्पादन पर तीन सौ डालर की लागत आती थी किन्तु अब पैंतीस डालर आने लगी।

उद्योग का उत्तरोत्तर विकास

इस्पात उत्पादन में जो भी तरक्कियां की गयीं उनका अधिकतर श्रेय एण्ड्रू कार्नेगी को है। वे उद्योग के इतिहास की एक महान् हस्ती थे। वे १२ वर्ष की आयु में स्काटलैण्ड से अमरीका आए थे और एक कपड़े के कारखाने में 'बाबिन-बॉय' के काम के बाद उन्होंने टेलिग्राफ कार्यालय तथा पेन्सिलवानिया रेलवे लाइन के दफ्तर में बारी-बारी से काम किया। तीस वर्ष की आयु में पहुँचने के पहले ही उन्होंने अपना संचित धन चतुराई और दूरदर्शिता के साथ व्यापार में लगा दिया, जो १८६५ तक सारा का सारा लोहा-उद्योग में केन्द्रित हो गया था। कुछ वर्षों में ही उन्होंने ऐसी कम्पनियां संगठित कर ली या उनमें हिस्सेदारी कर ली जो लोहे के पुल, रेलें और इंजिन बनाने का काम करती थीं। दस वर्ष बाद उन्होंने पेन्सिलवानिया में मोनानगाहीला नदी के तट पर एक इस्पात मिल खड़ी की। वह उस समय देश की सबसे बड़ी इस्पात मिल सिद्ध हुई। कार्नेगी का व्यापार उत्तरोत्तर बढ़ता गया। केवल नयी मिलों में ही नहीं, बल्कि कोक और कोयले की जायदादों, सुपीरियर झील के कच्चे लोहे, ग्रेट लेक्स के पास के एक स्टीमर-बेड़े, ऐरी झील के एक बन्दरगाह और उन्हें मिलाने वाली एक रेलवे लाइन का अधिकृत नियन्त्रण भी उनके हाथ में आ गया। उनका व्यवसाय एक दर्जन अन्य व्यवसायों से सम्बद्ध था। रेलों तथा जहाजी कम्पनियों से वे अनुकूल शर्तों पर ही तिजारत कर सकते थे, व्यवसाय के विस्तार के लिये उनके पास पर्याप्त पूंजी थी। मजदूर भी बहुतायत से उपलब्ध थे। अमरीका में पहले ऐसा कभी भी नहीं देखा गया जिसकी तुलना इस औद्योगिक विस्तार से की जा सके।

अनेक दृष्टियों से कार्नेगी की कथा अमरीका के बड़े व्यापार की कहानी है। उद्योग में हालांकि उनका प्रभुत्व बहुत समय तक रहा पर प्राकृतिक साधनों, परिवहन तथा इस्पात उत्पादन सम्बन्धी औद्योगिक योजनाओं पर सम्पूर्ण एकाधिकार करने में वह कभी सफल नहीं हुए। १८९०-९९ में कुछ नयी कम्पनियां बनी जिन्होंने उनकी पूर्व प्रभुता को चुनौती दी। होड़ की चोट खा कर पहले तो कार्नेगी ने नयी खानें खरीदने और अपेक्षाकृत अधिक शक्तिशाली व्यापार संगठित करने की धमकी दी किंतु वृद्धावस्था एवं थकित होने के कारण वह अन्ततः एक ऐसे प्रस्ताव पर विचार करने को राजी हो गए जिसके अनुसार उन्हें अपने क्षेत्रों को एक ऐसे संगठन में मिला देने को कहा गया था जिसमें लोहे और इस्पात के दूसरे क्षेत्र भी शामिल थे।

'संयुक्तराज्य इस्पात कार्पोरेशन' ने जो इस सम्मिलन के परिणामस्वरूप १९०१ में संगठित हुआ, एक ऐसी प्रक्रिया प्रस्तुत की जो तीस वर्ष से चली आ रही थी। यह थी स्वतन्त्र उद्यमों का संयोग अथवा केन्द्रीय कम्पनियों में गठन। गृहयुद्ध के समय आरम्भ होने वाला यह रुख १८७० के बाद बड़े वेग से बढ़ा। व्यापारियों ने अनुभव किया कि यदि वे प्रतिस्पर्धी फर्मों को एक संगठित संस्था में ला सकें तो उत्पादन तथा बाजार दोनों पर उनका नियन्त्रण हो सकता है। इन व्यापक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जो कार्पोरेशन और 'ट्रस्ट' बनाए गए, वे अनेक दृष्टियों से बड़े पैमाने के व्यापारियों को संगठित करने के तर्कसंगत साधन थे। क्योंकि 'कार्पोरेशन' बनाकर बहुत अधिक पूंजी एकत्र की जा सकती थी। रुपया लगाने वाले इस बात की वजह से उसकी ओर आकर्षित हुए कि वे उस व्यवस्था में शेयर और बाण्ड खरीद कर मुनाफे कमा सकते थे। यदि व्यापार असफल भी हो जाय तो भी उनका नुकसान केवल लगायी हुई रकम तक ही सीमित रहेगा। इसके अतिरिक्त ये कार्पोरेशन, व्यापारिक उद्यमों को स्थायी जीवन तथा लगातार नियन्त्रण की क्षमता प्रदान करते थे। 'ट्रस्ट' (न्यास) वस्तुतः कार्पोरेशन का एक ऐसा संगठन था जिसके द्वारा कार्पोरेशनों के साझीदार अपनी शेयर-पूंजी उन न्यासधारियों (ट्रस्टियों) के हाथों में सौंप देते थे जो उन सभी कार्पोरेशनों के व्यापारों का प्रबन्ध करते थे। ट्रस्टों के होने से विस्तृत संगठन, केन्द्रीय नियन्त्रण और प्रशासन तथा पेटण्टों का एकत्रीकरण सम्भव हो सका। पूंजी के साधनों की वजह से उनके पास व्यापार प्रसार की, विदेशी कम्पनियों से होड़ लेने की और मजदूरों के साथ जिन्होंने अब तक प्रभावकारी ढंग से संगठित होना शुरू कर दिया था, सस्ते सौदे करने की अपेक्षाकृत अधिक सामर्थ्य थी। वे रेलों से अनुकूल शर्तों की मांग कर सकते थे और राजनीति पर भी अपना प्रभाव डाल सकते थे।

'स्टैण्डर्ड आयल कम्पनी' सबसे पहले बनने वाले शक्तिशाली कार्पोरेशनों में से एक है। उसके बाद बिनौले तेल, सीसा, चीनी, तम्बाकू और रबड़ के व्यव-

मायों में अनेक ट्रस्टों और संगठनों की स्थापनाएं हुईं। ढीठ व्यापारी, अपने निजी हितों के लिए उद्योग क्षेत्रों को हथियाने लगे। मांस के चार थोक व्यापारियों ने --जिनमें फिलिप आर्थर और गस्टेवस स्विफ्ट प्रमुख थे, एक बीफ-ट्रस्ट स्थापित किया। मेकार्मिक्स फसल काटने के यन्त्रों के व्यापार में अग्रणी हो गया। इन प्रवृत्तियों की झलक १९०४ के एक सर्वेक्षण में स्पष्ट परिलक्षित हुई जिसने यह दिखा दिया कि पिछली पांच हजार स्वतन्त्र कम्पनियां आपस में मिल कर कोई तीन सौ औद्योगिक न्यासों में बदल गयीं।

अन्य क्षेत्रों में भी मुख्यतः संचार और परिवहन में सम्मिश्रण की प्रवृत्ति देखने योग्य थी। बड़े संगठनों में सबसे पहली "वेस्टर्न यूनियन" थी। उसके बाद "बेल टेलीफोन सिस्टम" और अन्त में अमरीकी टेलीफोन ऐण्ड टेलीग्राफ कम्पनी बनी। कार्नीलियस वैण्डरबिल्ट ने पहले ही समझ लिया था कि रेल सेवा की कुशलता के लिए विभिन्न लाइनों का एकीकरण आवश्यक था। १८६०-६९ में उसने परस्पर तीन सौ मील दूर न्यूयार्क और बफैलो को जोड़ने वाली विभिन्न रेलवे लाइनों को मिलाकर एक अकेली लाइन बनायी और अगले दशक में उसने शिकागो और डेट्रायट के बीच लाइनें बिछाई और "न्यूयार्क सेण्ट्रल-सिस्टम" का जन्म हुआ। संगठन के अनेक कार्य हो रहे थे और शीघ्र ही राष्ट्र के प्रमुख रेलमार्ग ऐसी "ट्रंक लाइनों" और "सिस्टमों" में संगठित हो गए जिनका निर्देशन सिर्फ आधे दर्जन व्यक्ति करते थे।

नगरों और समस्याओं में वृद्धि

शहर, इस नयी उद्योग-व्यवस्था के चेता-केन्द्र थे। इनकी प्राचीरों के अन्तर्गत अथाह पूंजी-संचय, व्यापारिक तथा आर्थिक संस्थाएं, उत्तरोत्तर विस्तृत होते हुए रेलवेयार्ड, आधार कारखाने, मजदूरों और बाबुओं की फौजें आदि अनेक गतिशील आर्थिक शक्तियां उभर रही थीं। देहातों तथा समुद्रपार से आने वाली जन-संख्या के साथ गांव कस्बों में और कस्बे नगरों में देखते-देखते बदलते गए। १८३० में पन्द्रह व्यक्तियों में से एक व्यक्ति ८००० या उससे ऊपर की संख्या वाले समुदायों में रहता था। १८६० में लगभग छः पीछे एक और १८९० में लगभग दस पीछे तीन। १८६० में किसी भी एक नगर की जनसंख्या १० लाख नहीं थी पर तीस वर्ष बाद न्यूयार्क की पन्द्रह लाख और शिकागो और फिलाडेल्फिया की दस-दस लाख से ऊपर थी। इन तीस वर्षों में फिलाडेल्फिया तथा बाल्टीमूर की जनसंख्याएं दुगनी हो गयीं, केंसास और डेट्रायट की चौगुनी, क्लीवलैण्ड की छःगुनी और शिकागो की दस गुनी। मिनीपोलिस और ओमाहा जैसी अनेक बस्तियों की, जो गृहयुद्ध के आरम्भ में पुरवे मात्र थीं, आबादी पचास गुनी या उससे अधिक बढ़ गयी।

ये विकास बड़े महत्वपूर्ण थे किन्तु उनके विषय में यह अनुमान भलीभांति नहीं लगाया जा सका कि राजनीतिक जीवन पर भी उनका इतना भारी प्रभाव पड़ेगा। यद्यपि अमरीकी जनता के सामने अगणित प्रश्न थे तो भी जैसा कि एक अमरीकी इतिहासकार ने लिखा है, "१८६५ से १८९७ तक संघीय कानून की पुस्तकों में ऐसे दो या तीन कानून ही जोड़े गए जो सम्बन्धित नागरिक का ध्यान राजनीतिक शक्ति के उन परिणामों की ओर आकर्षित करते थे जो मानवीय सम्बन्धों में आवश्यक पुनर्संगठन को अनिवार्य बना देते हैं।

१८८४ में, डेमोक्रेट, ग्रोवर क्लीवलैण्ड राष्ट्रपति के पद पर चुने गए। युद्ध के बाद निर्वाचित होने वालों में वही एक ऐसे राष्ट्रपति थे जो उन परिवर्तनों का महत्व और रुख समझते थे जो देश का रूप बदलते जा रहे थे। उन्होंने उत्पन्न समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न किया। उदाहरण के लिए, रेलमार्गों में अनेक सुधारों की आवश्यकता थी। सबसे ज्यादा हानिकर था वह भेदभाव जो छोटे व्यापारियों के साथ बरता जाता था याने बड़े-बड़े व्यापारियों को माल के किरायों में रियायत दी जाती थी। इसके अलावा कुछ रेलमार्गों पर, दूरी का ख्याल किए बिना मनमाने ढंग से किन्हीं व्यापारियों से कम और किन्हीं से ज्यादा भाड़ा वसूला जाता था। जिन नगरों के बीच कई रेलमार्ग होते थे उनमें किराए की दरें प्रतिस्पर्धा के कारण कम होती थीं पर जिन स्थानों के बीच एक ही लाइन होती थी उनके बीच भाड़े की दरें बहुत चढ़ जाती थीं। परिणामस्वरूप शिकागो से ८०० मील दूर न्यूयार्क को माल भेजने में, शिकागो के १०० मील पूर्व की ओर भेजने की तुलना में, कहीं कम भाड़ा लगता था। रेलों में भी होड़ से बचने के लिए सम्मिलित योजनाएं अपनायी जा रही थीं। इसी प्रकार की योजना एक साथ मिलकर काम करने की थी जिसमें प्रतिस्पर्धी कम्पनियां पूरी बचत को एक करके पूर्व स्वीकृत योजना के अनुसार आपस में बांट लेती थीं। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, रेल व्यापार की इन कार्रवाइयों के विरुद्ध जनता का क्षोभ बढ़ता गया और राज्यों ने उनके नियमन के प्रयत्न किए। यद्यपि इनका कुछ हितकर परिणाम भी हुआ फिर भी यह समस्या देश भर की थी और इसीलिए कांग्रेस द्वारा कार्रवाई आवश्यक थी। अस्तु, "इण्टरस्टेट कामर्स ऐक्ट" (अन्तर्राज्य व्यापार कानून) बनाया गया जिस पर राष्ट्रपति क्लीव-

लैण्ड ने १८८७ में हस्ताक्षर किए। इसके द्वारा अत्यधिक दरों, पूल (एकत्रण), भाड़े में रियायतों और दरों में भेदभाव का निषेध हुआ और कानून के उल्लंघन की देख-रेख तथा रेलमार्गों की दरों और उसकी कार्रवाइयों के नियन्त्रण के लिए एक अन्तर्राज्य कामर्स कमीशन बनाया गया।

क्लीवलैण्ड, चुंगी में सुधार करने के प्रबल समर्थक थे। चुंगी की ऊँची दरें आरम्भ में युद्ध की संकटकालीन आवश्यकता के रूप में निर्धारित की गयी थीं। किन्तु उन्होंने राष्ट्र की स्थायी नीति का रूप ले लिया था। क्लीवलैण्ड उन्हें अनुचित मानते थे। उनके अनुसार बहुत कुछ उन्हीं की वजह से रहन-सहन के स्तर पर बोझ बढ़ने के साथ ही न्यासों की संख्या बढ़ी थी। वर्षों तक चुंगी को राजनीतिक समस्या के रूप में नहीं लिया गया। तो भी १८८० में डेमोक्रेटों ने "केवल राजस्व के लिए चुंगी" की मांग की थी। शीघ्र ही सुधार के लिए भी मांग होना जरूरी हो गया। क्लीवलैण्ड ने, बावजूद इस चेतावनी के कि इस विस्फोटक विषय से बचा जाय, १८८७ में अपने वार्षिक सन्देश में अमरीकी उद्योग की विदेशी प्रतियोगिता से रक्षा के सिद्धान्त को जिस बेशुमार हद तक महत्व दिया जाता था उसकी निन्दा करके राष्ट्र को अचम्भे में डाल दिया।

यही प्रश्न आगामी राष्ट्रपति के चुनाव आन्दोलन का अगली मुद्दा बन गया और रिपब्लिकन उम्मीदवार बेंजामिन हैरीसन इसी संरक्षण की धारणा के समर्थक होने के नाते विजयी हुए। उनके प्रशासन ने उनकी चुनावकालीन प्रतिज्ञाएं पूरी करने के लिए नए कानून बनाने आरम्भ किए और "मैकिनले चुंगी बिल" १८९० में पास हुआ। इस कानून का उद्देश्य केवल जमे हुए उद्योगों की रक्षा करना ही नहीं वरन् शिशु-उद्योगों को प्रोत्साहित करना और निषेधात्मक चुंगी लगाकर नए उद्योगों की सृष्टि करना भी था। आमतौर से लगायी गयी चुंगी की ऊँची नयी दरें शीघ्र ही फुटकर बिक्री के वक्त की ऊँची कीमतों के रूप में प्रकट हुईं जिनसे तुरन्त ही व्यापक असन्तोष फैल गया।

इस अवधि में जनता को ट्रस्टों की अधिकाधिक चिन्ता थी। १८८०-१८८९ में हैनरी जार्ज और ऐडवर्ड बेलामी जैसे सुधारकों की तीव्र आलोचनाओं के सहते-सहते अब बड़े-बड़े कार्पोरेशन केवल विरोध के लक्ष्य ही नहीं बल्कि राजनीतिक मसले भी बन चुके थे। १८९० में, शेरमन-एण्टी-ट्रस्ट-ऐक्ट पास हो गया। इसका प्रथम उद्देश्य था एकाधिकारों को तोड़ना। अन्तर्राज्यीय व्यापार को रोकने वाले समस्त गठबन्धनों का निषेध हुआ और इसे लागू करने के लिए अनेक प्रणालियां अपनायी गयीं, जिनमें नियमोल्लंघन के लिए बड़े दण्डों की व्यवस्था भी थी। पास होने के तुरन्त बाद ही इस कानून का कोई विशेष फल नहीं हुआ क्योंकि वह साधारण और अनिश्चित शैली में लिखा हुआ था। किन्तु दस वर्ष बाद थियोडोर रूजवेल्ट के शासन ने इसका सफल प्रयोग करके राष्ट्रपति को 'न्यास-ध्वंसक' होने की ख्याति दिलायी।

इन प्रमुख प्रवृत्तियों के बावजूद गृहयुद्ध के अन्त से लेकर नयी शताब्दी के प्रारम्भ तक राजनीतिक स्थिति प्रायः नकारात्मक ही रही। इन वर्षों में अमरीकी जनता की शक्ति दूसरी ओर लगी रही; जिसके प्रभाव कदाचित पश्चिम के इतिहास में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुए। १८६५ में, सीमान्त रेखा आमतौर से मिसिसिपी नदी के तटवर्ती राज्यों की पश्चिमी सीमा के साथ-साथ मानी जाती थी और केवल कन्सास तथा नेब्रास्का के पूर्वी भागों को शामिल करने के लिए बाहर की ओर फैलकर पुनः मुड़ आती थी। इन अग्रणी किसानों के कृषि प्रदेशों के पतले किनारे के पीछे अब भी बहुत-सी अनबसी जमीन पड़ी थी जिनके आगे बहुत-से खुले और बिना बाड़ के घास के मैदान थे जो आगे चलकर उन 'सेजब्रश' मैदानों में मिल जाते थे जो 'राकीज' नामक पर्वत-शृंखलाओं की शिरा-पीठ तक पहुँचते थे। जहाँ से लगभग एक हजार मील तक उन पर्वतमालाओं का विस्तार था जिनमें से बहुतों में चांदी, सोना और अन्य बहुमूल्य धातुओं का भण्डार था। प्रशान्त महासागर की ओर जंगलों से आच्छादित किनारे की पहाड़ियों और समुद्र तट तक नए मैदान और मरुस्थल फैले हुए थे। कैलीफोर्निया के बसे हुए जिलों और कुछ बिखरी हुई बस्तियों को छोड़कर इस विस्तृत प्रदेश में केवल आदिवासी (इण्डियन) ही आबाद थे।

पश्चिम में अवसरों की उपलब्धि

फिर भी, कोई पच्चीस वर्षों के बाद वस्तुतः सारा देश राज्यों और राज्य क्षेत्रों में अंकित हो गया था। इन्हें आबाद करने के कार्य को १८६२ के "होमस्टैड ऐक्ट" से गति मिली। इस कानून के अनुसार जो नागरिक किसी धरती पर बस कर उसे सुधारने का वचन देता था उसे १६० एकड़ भूमि निःशुल्क दी जाती थी। अतः १८८० तक लगभग पांच करोड़ ६० लाख एकड़ भूमि व्यक्तियों की निजी सम्पत्ति बन गयी। आदिवासियों (इण्डियनों) के साथ झगड़े बन्द हो गए थे। खनिक लोग स्थान-स्थान पर सुरंगें बनाते हुए समस्त पहाड़ी प्रदेश लांघ चुके थे। उन्होंने नेवाडा, मोन्टाना और कोलोरेडो में छोटी-छोटी बस्तियां बसा ली थीं। पशु-पालकों ने विस्तृत चरागाहों से लाभ

उठाकर टैक्सास से लेकर मिसूरी नदी के उत्तर के लम्बे-चौड़े प्रदेश पर अधिकार जमाना आरम्भ कर दिया था। भेड़ पालने वाले भी घाटियों और पहाड़ी ढालों तक फैल गए थे। किसानों के दल मैदानों और घाटियों में छा गए जिससे पूर्व और पश्चिम के बीच की दरार भर गयी। १८९० तक, सीमान्त गायब हो गया और बीस वर्ष पहले जहाँ जंगली भैंसें घूमते-फिरते थे वहाँ पचास-साठ लाख नर-नारी खेती करने लगे।

बस्तियां बसाने के कार्य में रेलें सहायक सिद्ध हो रही थीं। १८६२ में कांग्रेस ने यूनियन पैसिफिक रेलरोड को एक अधिकार-पत्र दिया जिसके अनुसार कम्पनी ने काउंसिल ब्लफ्स (आइओवा) के पश्चिम में रेल की पटरियां बिछायीं। इसी समय सेण्ट्रल-पैसिफिक रेलवे कम्पनी ने सैक्रामेण्टो (कैलीफोर्निया) से पूर्व एक अनिश्चित संगम की दिशा में पटरियां बिछाना आरम्भ किया। ये दोनों लाइनें एक-दूसरे की ओर मजबूती से बढ़ती गयी और अन्त में १० मई, १८६९ को 'यूटाह' में प्रामंटरी पौइण्ट पर जा मिलीं। सारे देश में हलचल बढ़ गयी। एटलांटिक और पैसिफिक महासागरों के बीच की एक महीने की कठिन यात्रा अब केवल उस अवधि का एक अंश मात्र रह गई। महाद्वीप में रेलों का जाल दृढ़ता से फैलता गया। १८८४ में चार बड़ी लाइनों ने केन्द्रीय-मिसिसिपी-घाटी प्रदेश को प्रशान्त महासागर से मिला दिया।

सुदूर पश्चिम में आबादी के लिए पहला बड़ा दौर पहाड़ी प्रदेशों में हुआ। सोना सबसे पहले १८४८ में कैलीफोर्निया में पाया गया, इसके दस साल बाद, कोलोराडो में, १८६०-६१ में मोन्टाना और वायोमिंग में और १८७०-७९ में डकोटा प्रदेश की ब्लैकहिल्स में पाया गया। इन सभी क्षेत्रों के विकास में खनिकों ने ही पहल की। उन्होंने बस्तियां बसायीं और अपेक्षाकृत अधिक स्थायी बस्तियों की नींवें डालीं। ये लोग जब पहाड़ों में खुदाई कर रहे थे तब कुछ निवासियों का ध्यान इस प्रदेश में खेती और पशुपालन की सम्भावनाओं की ओर गया। कुछ समुदाय पूरी तरह खनन कार्य में ही जुटे रहे। लेकिन मोन्टाना, कोलोराडो, वायोमिंग और आइडाहो की सच्ची समृद्धि कैलीफोर्निया की भांति वहां की घास और धरती में ही निहित सिद्ध हुई।

पशुपालन, टैक्सास का एक महत्वपूर्ण उद्योग रहा था। युद्ध के पश्चात वहाँ के उद्यमी लोग अपने लम्बे सींगों वाले पशुओं को हांकते हुए बिना बाड़े के प्रदेशों के पार उत्तर की ओर चल दिए। राह में पड़ने वाले मैदानों में चरते हुए ये पशु यात्रा के आरम्भ के समय की अपेक्षा कहीं अधिक तगड़े और मोटे हो गए थे। यह 'लम्बी हांक' के नाम से प्रसिद्ध हुई और शीघ्र ही एक नियमित घटना बन गयी। उत्तर की ओर जाने वाले पशु-समूह के खुरों से सैकड़ों मील तक का मार्ग अंकित हो गया। पशुपालन का व्यापार शीघ्र ही मिसूरी पार के प्रदेशों में फैल गया और कोलोराडो, वायोमिंग, कैन्सास, नेब्रास्का और डकोटा के प्रदेशों में बहुत बड़े-बड़े बाड़े (पशुशालाएं) बन गए। पश्चिम के नगर मांस के व्यापार-केन्द्रों के रूप में फलने-फूलने लगे।

इन बाड़ों के जीवन से रहन-सहन का एक नया स्वरूप सामने आया जिसका प्रमुख प्रतीक 'काऊ बॉय' व उसका साहसिक जीवन है। अमरीका के पच्चीसवें राष्ट्रपति थियोडॉर रूजवेल्ट ने डकोटा के अपने निजी अनुभवों के संस्मरणों में लिखा है, "...घोड़े और राइफिल के साथ हम स्वच्छन्द और परिश्रमी जीवन बिताते थे। मध्य ग्रीष्म में जब मैदान चिलचिलाती हुई धूप में तपते और झुलसते होते थे तब हम काम करते थे; और शरदकाल में जब बर्फ देर से गिरती तब हम रात को घोड़ों पर सवार होकर अपने ढोरों की चौकसी करते हुए खून जमा देने वाली ठण्ड की यातनाओं का अनुभव करते थे।...फिर भी, हम अपनी रगों में परिश्रमी और कठोर जीवन की धड़कनों का अनुभव करते थे। अपने काम पर हमें गौरव था और वही हमारे जीवन का सुख था।"

१८६६ और १८८८ के बीच टैक्सास से लगभग साठ लाख पशु कोलोराडो, वायोमिंग और मोन्टाना के ऊँचे मैदानों की ओर हांक कर ले जाए गए। वस्तुतः १८८५ में पशुपालन का व्यापार अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा। इस समय तक यह क्षेत्र इतना पास्चुरीकृत हो चुका था कि बड़े पैमाने पर पशुओं के चराने के स्थल लगभग नहीं के बराबर रह गए थे। इसके अलावा रेलों का जाल भी यहाँ विस्तार पाता जा रहा था। घास के मैदानों को खेतों में बदलने वाले किसानों की 'चूं चरर-मरर' करती हुई गाड़ियां (स्कूनर्स) भी पशुपालकों से अधिक पीछे न थीं। वे अपने साथ महिलाओं व बच्चों के अलावा घोड़े, गायें और सूअर भी लाए।

होमस्टेड ऐक्ट के अनुसार उन्होंने कटीले तारों से जमीनें घेर कर उन पर अपना कब्जा जमा लिया और उन पशुपालकों को बाहर निकाल दिया जो गैरकानूनी तरीके से उन जमीनों पर बाड़े बनाए हुए थे। १८८६ और १८८७ की भयंकर सर्दी ने खुले मैदानों में रहने वाले पशुओं को नष्ट कर दिया। और इस तरह पश्चिम के सीमान्त जंगली क्षेत्रों में स्थायी बस्तियों और गेहूँ, मक्का व जई की खेती के लिए मार्ग खुल गया।

१९वीं शताब्दी के आठवें दशक में, राकी पर्वतों में चांदी की खानों की खोज से आकृष्ट हो हज़ारों अग्रणियों ने पश्चिम की ओर यात्रा की। चित्र : लेडविल (कोलोराडो) नामक खानों के नगर की ओर जाता हुआ अग्रणियों का एक काफ़िला लट्ठों से बनी एक खतरनाक सड़क को पार कर रहा है।



विज्ञान और मशीनों द्वारा किसानों की सहायता

सारे देश की भांति पश्चिम में भी खेती ही बुनियादी उद्योग था। हालांकि दूसरे उद्योगों के लिए भी बड़े प्रयत्न किए जा रहे थे फिर भी ज्यादातर लोग किसानी ही करते थे। लड़ाई के बाद के दस वर्षों में जिस प्रकार वस्तु-निर्माता उद्योग ने विकास किया था उसी प्रकार कृषि में भी क्रान्ति हो रही थी। इसके फलस्वरूप हाथ की खेती, यन्त्रों की खेती में और सामान्य निर्वाह वाले अनाजों की खेती व्यापारिक वस्तुओं की खेती में बदल गयी। १८६० से १९१० तक के पचास वर्षों में अमरीका में फार्मों की संख्या तिगुनी हो गयी याने २० लाख से बढ़कर ६० लाख हो गयी; उनका क्षेत्रफल भी दुगने से अधिक याने ४० करोड़ की जगह ८८ करोड़ एकड़ हो गया। गेहूँ की उपज १७ करोड़ ३० लाख बुशल (१ बुशल=६० पौण्ड) से बढ़कर ६३ करोड़ ५० लाख बुशल हो गयी। मक्का का उत्पादन ८३ करोड़ ८० लाख बुशल से बढ़ कर २८८ करोड़ ६० लाख बुशल और रुई का ३८ लाख ४१ हजार गांठों से बढ़कर १ करोड़ १६ लाख ९ हजार गांठ हो गया। १८६० के बाद के तीस वर्षों में जितनी भूमि खेती योग्य बनायी गयी उतनी अमरीका के इतिहास में कभी भी नहीं बनायी गयी। इसी काल में राष्ट्र की जनसंख्या दुगनी से अधिक हो गयी। अधिकतर वृद्धि नगरों में हुई परन्तु अमरीकी किसान भी इतनी पर्याप्त मात्रा में अनाज, रुई, ऊन, मांस आदि का उत्पादन करने लगा था कि अमरीकी लोगों की आवश्यकताएं पूरी होने के साथ ही उनका निर्यात भी किया जाने लगा।

पश्चिम की ओर आबादी का विस्तार इस असाधारण सफलता पर बहुत कुछ प्रकाश डालता है। दूसरा तत्व था खेती के कामों में यन्त्रों और विज्ञान का प्रयोग। सन् १८०० में किसान हँसिए से एक दिन में आधा एकड़ गेहूँ काटने की आशा कर सकता था। तीस साल बाद 'क्रेडिल'' की सहायता से वह दिन भर में दो एकड़ काट सकता था। पर १८४० में सायरस मैकार्मिक ने पाँच या छै एकड़ की कटाई करने वाली चमत्कारी मशीन ईजाद की, वह इस मशीन के विकास पर दस वर्षों से काम कर रहा था। दूरदर्शी वह था ही, इसलिए पश्चिम की ओर बढ़ा और शिकागो पहुँच कर उसने एक 'रीपर' (कटाई की मशीन) बनाने का कारखाना खोला। १८६० तक उसने ढाई लाख 'रीपर' बेच लिए।

एक के बाद दूसरी कृषि मशीनें ईजाद होती गयीं जिनमें बुआई से लेकर कटाई और सम्भाल करने वाले तरह-तरह के यन्त्र शामिल थे। ये मशीनें खेती के हर काम में किसान का हाथ बंटाने लगीं। अनाज बोने, काटने, दाने को भूसे से अलग करने, छिलका उतारने, दूध से क्रीम निकालने, खाद फैलाने, आलू बोने, घास सुखाने, अण्डे सेने और सैकड़ों अन्य काम करने वाली मशीनों के आविष्कारों ने किसान की मेहनत हलकी करने के साथ ही उनकी क्षमता बढ़ा दी। इन मशीनों का अधिकतर उपयोग पश्चिम में ही हुआ। पूरब में खेत छोटे थे और उनकी खेती इतनी विविध प्रकार की थी इसलिए उनमें इतनी महंगी मशीनों का लगाया जाना उपयोगी नहीं था। दक्षिणी प्रदेशों में होने वाली कपास और तम्बाकू की खेती भी अपने को इतनी जल्दी इन मशीनों के उपयोग के अनुकूल नहीं बना सकी।

इस कृषि-क्रान्ति में विज्ञान का महत्व भी यन्त्रों की तुलना में कम न था। १८६२ में मौरिल लैण्ड-ग्राण्ट कॉलेज ऐक्ट पास होने के पश्चात कांग्रेस ने प्रत्येक राज्य को खेती और उद्योग के विद्यालयों की स्थापना के लिए भूमि अनुदान में दी गयी। ये विद्यालय कृषि सम्बन्धी प्रशिक्षण केन्द्र के अतिरिक्त कृषि अनुसन्धान केन्द्र भी थे। इसके बाद कांग्रेस ने देश भर में कृषि-परीक्षण-केन्द्र खोलने तथा अन्य प्रकार के अनुसन्धानों के लिए कृषि-विभाग को बहुत-सा धन दिया। नयी शताब्दी के आरम्भ में देश भर में वैज्ञानिक लोग कृषि अनुसन्धान कार्य में जुट हुए थे।

कृषि विभाग की ओर से मार्क कार्लटन नामक एक वैज्ञानिक रूस गया। वहाँ उसने गेहूँ के पौधे की वह किस्म पायी जिस पर 'रतुआ' रोग व सूखे का कोई असर न होता था और जो जाड़े में तैयार होता था। वह उस गेहूँ के बीज अमरीका लाया। आज आधे से अधिक अमरीका में उसी किस्म के गेहूँ की खेती होती है। अन्य तत्कालीन कृषि-वैज्ञानिक भी किसी से पीछे नहीं रहे। मैरियन डारसेट ने सुअरों में फैलने वाले भीषण कालरा रोग का इलाज खोज निकाला। जार्ज मोलर ने मुंह और खुरों के संक्रामक रोग का निदान ढूंढ निकाला। एक अन्वेषक उत्तरी अफ्रीका से 'कैफ़िर' नामक मक्का की पौध लाया। एक दूसरे ने तुर्किस्तान से पीले फूलों वाली एल्फ़ा-एल्फ़ा का आयात किया। लूथर बरबैंक ने कैलीफोर्निया में बीसों नए फल और सब्जियां उगायीं। विस्कान्सिन में स्टिफेन बैबकाक ने एक ऐसा यन्त्र बनाया जिससे दूध में निहित मक्खन के अनुपात का पता लगाया जा सकता था, अलबामा के टस्केजी इन्स्टीट्यूट में महान नीग्रो वैज्ञानिक जार्ज वाशिंगटन कार्वर ने मूंगफली, शकरकंद और सोयाबीन के सैकड़ों नए उपयोग निकाले।

इन सब प्रगतियों के बावजूद अमरीकी किसानों ने १९वीं शताब्दी में लगातार दुरूह कठिनाइयों का सामना किया। व्यापक कृषि प्रसार की इस शताब्दी के

अन्त में किसान की दुविधा उसकी एक बड़ी समस्या बन गयी। इसके अनेक और बुनियादी कारण थे: भूमि की उर्वरता का ह्रास, ऋतु की अविश्वसनीयता, प्रमुख फसलों (कपास, ऊन आदि) का अत्यधिक उत्पादन, आत्मनिर्भरता की कमी और कानून द्वारा पर्याप्त संरक्षण तथा सहायता का अभाव। दक्षिण की भूमि को लगातार तम्बाकू और कपास की खेती ने अनुर्वरा कर डाला था, और पश्चिम और मैदानों में भी, जमीन को कटाव, तूफ़ानों तथा कीड़ों से हानि पहुँच रही थी।

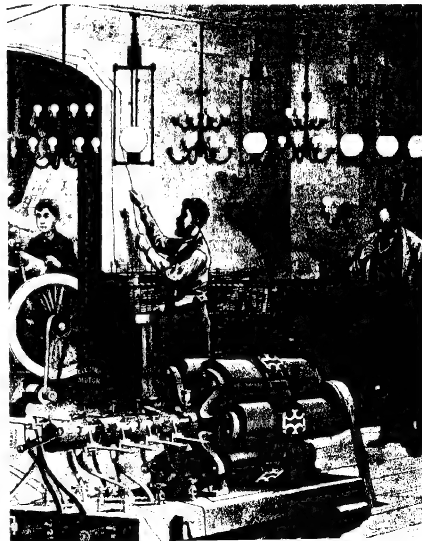
किसानों द्वारा दिक्कतों का सामना

मिसिसिपी नदी के पश्चिम में खेती का द्रुत मशीनीकरण केवल लाभदायक ही सिद्ध नहीं हुआ, इससे प्रोत्साहित होकर बहुत से किसानों ने अपनी खेती का बिना समझे-बूझे विस्तार भी किया, इससे प्रमुख फसलों (ऊन व कपास आदि) पर विशेष रूप से ध्यान देने की प्रवृत्ति को आश्वासन मिला, इससे बड़े किसानों को छोटे किसानों की तुलना में बहुत लाभ हुआ, खेत काश्तकारों को किराए पर दिए जाने लगे। बड़े पैमाने पर खेती की जाने लगी। यह सारी समस्याएं तब तक उलझी ही बनी रहीं जब तक कि भूमि-संरक्षण को आधुनिक तरकीबें नहीं अपना ली गयीं।

इससे भी जटिल किन्तु सुगमता से सुलझ सकने वाली समस्या कीमतों की थी। किसान को अपनी उपज होड़ से ओतप्रोत विश्व-बाजारों में बेचनी पड़ती थी जबकि उसे आवश्यकता की वस्तुएं, उपकरण और घरेलू चीजें संरक्षित बाजार में खरीदनी पड़ती थी। उसे अपने गेहूँ, रुई अथवा मांस आदि का जो मूल्य प्राप्त होता था उसका निर्णय विदेशों में होता था परन्तु वह अपने यान्त्रिक हलों, खाद या कंटीले तारों का जो मूल्य देता था उसका निश्चय उन ट्रस्टों द्वारा होता था जो चुंगी कानूनों के संरक्षण में बैठे होते थे। १८७०-९० के बीच बहुत-सी कृषि वस्तुओं की कीमतें अनियमित रूप से गिरती चली गयीं और अमरीका के कृषि-उत्पादन का मूल्य केवल पचास करोड़ डालर तक ही बढ़ा। किन्तु इस अवधि में वस्तुओं का उत्पादन ६ अरब डालर तक बढ़ गया।

इस आर्थिक असन्तुलन के फलस्वरूप समान शिकायतों पर विचार करने और उनका समाधान करने के लिए किसानों के संगठन बने। ये संगठन अधिकतर १८६७ में स्थापित 'ग्रेंज' (चौपाल) के नमूने के थे। कुछ ही वर्षों में प्रायः हर राज्य में ग्रेंज बन चुके थे और उनकी सदस्य संख्या साढ़े सात लाख से अधिक हो गयी थी। पहले-पहल ये संगठन मुख्यतः सामाजिक थे और किसानों

१९ वीं शताब्दी के नवें दशक का एक विद्युत-प्रकाश संयंत्र। एडिसन के नवविकसित उत्ताप-दीप से अमरीकी रहन-सहन का स्वरूप बदल रहा था क्योंकि बिजली का उपयोग घरों, सड़कों और सार्वजनिक भवनों की प्रकाश-व्यवस्था में किया जाने लगा था।



का एकाकीपन दूर करने के लिए बनाए गए थे। जैसा कि स्वाभाविक ही है, उनके सदस्य आगे चलकर व्यापार और राजनीति पर भी विचार विनिमय करने लगे। बातचीत के बाद काम की बारी आयी और शीघ्र ही इन 'ग्रेंजों' ने सहकारी हाट-व्यवस्था, सहकारी दुकानें और सहकारी कारखाने स्थापित किए। मध्य पश्चिम के कई राज्यों में उन्होंने विधान सभा के सदस्य चुने और रेलों और गोदामों के नियन्त्रण-सम्बन्धी कानून पास कराए। ग्रेंज-सदस्यों के अनेक व्यापारिक प्रयत्न असफल रहे। फिर भी उसी जमाने में सन् १८७० के दशक के अन्तिम वर्षों में फार्म पुनः समृद्ध हुए। फलतः ग्रेंजों का महत्व घट गया। पर जो आन्दोलन इन्होंने आरम्भ किया था वह शताब्दी के आठवें दशक के अन्त और नवें दशक के प्रारम्भ में किसान संगठनों के रूप में विकसित हुआ। एक बार फिर कठिन समय आया। मैदानों में सूखा पड़ गया और गेहूँ तथा रुई के भाव गिर गए। इससे पुनर्जीवित होकर किसान-संगठन-आन्दोलन ने द्रुत गति से जोर पकड़ा और १८९० तक इसके लगभग २० लाख सदस्य हो गए। व्यापक शैक्षणिक कार्यक्रम के अतिरिक्त राजनीतिक सुधारों की मांगें पेश की गयीं। शीघ्र ही ये किसान-संगठन साहसी राजनीतिक दल में परिवर्तित हो गए जो 'पापुलिस्ट्स' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 'पापुलिस्ट' लोगों ने पुराने रिपब्लिकन और डेमोक्रैटिक दलों का सबल विरोध किया।

"पापुलिस्टों" ने सुगम द्रव्य की पैरवी की

अमरीकी राजनीति में पापुलिस्ट आन्दोलन जैसा अन्य कोई आन्दोलन कभी नहीं हुआ। यह मैदानों और कपास के खेतों में फैल गया। दिन भर खेतों में पसीना बहा कर शाम को अपनी बग्घियां जोड़कर किसान अपने बाल-बच्चों के साथ मीटिंग-हाउसों में जाते और तालियां बजाकर अपने नेताओं के जोशीले भाषणों का अनुमोदन करते। १८९० के चुनाव में यह नयी पार्टी दक्षिण और पश्चिम के बारह राज्यों में बहुमत से जीती और इसने कोई बीस व्यक्ति सेनेट और प्रतिनिधि सभा में भेजे। इस सफलता से प्रोत्साहित होकर 'पापुलिस्टों' ने व्यापक सुधारों की मांग की जिनमें आय-कर, किसानों के लिए तकावी, ऋण की राष्ट्रीय व्यवस्था, रेलों पर सरकारी अधिकार, श्रमिकों के लिए सिर्फ आठ घण्टे का कार्य दिवस और यथेष्ट मात्रा में चांदी के सिक्के ढलवा कर मुद्रा संचार में वृद्धि की मांगें शामिल थीं।

१८९२ के चुनाव में 'पापुलिस्टों' ने दक्षिण तथा पश्चिम में अपना अच्छा प्रभाव प्रदर्शित किया। राष्ट्रपति पद के लिए इनके उम्मीदवार को दस लाख से अधिक वोट प्राप्त हुए पर जीत डेमोक्रैटिक उम्मीदवार ग्रोवर क्लीवलैण्ड की हुई। चार वर्ष बाद शक्तिशाली 'पापुलिस्ट' प्रायः सर्वत्र डेमोक्रैटिक दल के साथ मिल गए। 'पापुलिस्टों' के दबाव में आकर नए डेमोक्रैटिक नेता मुद्रा के प्रश्न को प्रधान राजनीतिक प्रश्न बनाने की तैयारी करने लगे।

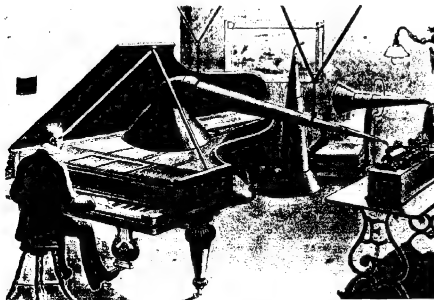
संयुक्त राज्य अमरीका में उसकी स्थापना काल से ही मुद्रा केवल दो धातुओं की बनायी जाती थी अर्थात् टकसाल में जितना भी सोना-चांदी आया सरकार उसको डालरों में ढालने को तैयार रहती थी। १८७३ में कांग्रेस ने अपनी मुद्रा प्रणाली का पुनर्गठन किया और अन्य बातों के साथ उसने चांदी के डालरों को अधिकृत घरेलू सिक्कों में से निकाल दिया। चांदी उस समय सुलभ न थी इसलिए इस कानून की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। सच तो यह है, पिछले चालीस वर्ष से चांदी का कोई सिक्का चल ही नहीं रहा था। स्थिति ने पलटा खाया। पश्चिम के पहाड़ी राज्यों में चांदी की खान मिल गयीं। साथ ही, कई यूरोपीय देशों ने चांदी के सिक्कों का चलन भी बन्द कर दिया। सहसा भारी मात्रा में चांदी उपलब्ध होने लगी।

देश अनेक संकटों से गुजर रहा था। दक्षिण और पश्चिम के कृषक नेताओं ने चालू मुद्रा की कमी को अपनी कठिनाइयों का आधार मानकर पूर्वी उद्योग केन्द्रों के श्रमिक समूहों की सहायता से मांग की कि चांदी के सिक्के पूर्ववत असीमित मात्रा में ढाले जायं। यह तर्क भी पेश किया गया कि इस प्रकार ऋणी अपना ऋण आसानी से चुका सकेंगे। दूसरी ओर कन्जरवेटिव (सनातनी) लोगों का विश्वास यह था कि ऐसी वित्तीय नीति विनाशकारी सिद्ध होगी। मुद्रास्फीति का दौर यदि शुरु हो गया तो रोका न जा सकेगा। सरकार दिवालिया हो जाएगी। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सिक्के सोने के ही बनाए जाएं, स्थायित्व उसी में है।

१८९६ में, चांदी-समर्थकों—डेमोक्रेटों और 'पापुलिस्टों' को—राष्ट्रपति के पद के चुनाव के लिए अपना उम्मीदवार मिल गया। वह था नेब्रास्का का एक नेता विलियम जेनिंग्स ब्रायन। दर्शनीय व्यक्तित्व और सम्मोहनी डाल देने वाला कुशल वक्ता होने के कारण वह तुरन्त ही लाखों को अपना भक्त बना लेता था। परन्तु उसके दल में फूट थी और उसके विरोधी शक्तिशाली थे, केवल एक ही बात में डेमोक्रेट लाभ में थे और वह थी स्वयं ब्रायन का उनके साथ होना। लेकिन इतना ही काफी न था। चुनाव में विलियम मैकिनले की पांच लाख से

इंग्लैण्ड में आविष्कृत इस्पात बनाने की बेसेमेर विधि को अमरीका में व्यापक रूप से अपनाया गया। यह विधि उस कच्चे-लोहे के लिए विशेष रूप से उपयुक्त थी जो लेक सुपीरियर के पास मेसाबी के पहाड़ी इलाके में बहुतायत से पाया जाता था।





प्यानो-संगीत के फोनोग्राफ रिकार्ड भरने का यह उपकरण १८९० के आसपास इस्तेमाल में लाया जाता था। यह एक ऐसे यन्त्र से विकसित किया गया था जिसमें हाथ से घुमानेवाला टीन की पत्ती का एक सिलेण्डर था। इसका आविष्कार दस वर्ष पहले एडिसन ने किया था।

ज्यादा वोटों से जीत हुई। फिर भी, ब्रायन का आन्दोलन एक कहानी के रूप में जीवित रहा। उसकी मुद्रा-सम्बन्धी नीति को छोड़कर पापुलिस्टों और ग्रामीण डेमोक्रेटों के सभी सुझाव बाद में कानून बन गए।

इस आन्दोलन से इस बात का आश्चर्यजनक प्रमाण मिला कि राज्यों में गृहयुद्ध के पश्चात् संघ कितना मजबूत हुआ था। यद्यपि किसानों की शिकायतें गुलाम रखने वालों की शिकायतों से किसी प्रकार कम नहीं थीं तो भी निषेध अथवा संघ से अलग होने की बात किसी ने भी नहीं की। यह राष्ट्रीय एकता १८९८ में देश पर आ पड़ने वाली स्पेन से लड़ाई के दौरान में स्पष्टतः उद्भासित हुई। शताब्दी के आरम्भ में पश्चिमी गोलार्ध स्थित स्पेन के बड़े उपनिवेशों ने जो विद्रोह किया था उससे स्पेन ने कुछ भी सबक नहीं लिया था। उसने अपना तानाशाही शासन क्यूबा द्वीप पर बनाए रखा जिसका संयुक्त राज्य अमरीका के साथ व्यापार बढ़ रहा था। १८९५ में क्यूबा निवासियों की सुलगती हुई क्रोधाग्नि स्वाधीनता संग्राम के रूप में प्रज्ज्वलित हो उठी। अमरीका में इस विद्रोह की प्रगति बड़ी चिन्ता के साथ परखी गयी क्योंकि लैटिन अमरीकी देशों के स्वाधीनता संघर्षों में अमरीका की रुचि परम्परागत थी। राष्ट्रपति क्लीवलैण्ड ने तटस्थता को बनाए रखने का भरसक प्रयत्न किया। परन्तु तीन वर्ष बाद मैकिनले के शासनकाल में अमरीका का "मेन" नामक युद्धपोत जो हवाना बन्दरगाह में शान्तिपूर्वक ठहरा हुआ था, नष्ट कर दिया गया और उसके २६० व्यक्ति मार डाले गए। फलस्वरूप, देशभक्ति की भावनाएं उबल उठीं। फिर भी, मैकिनले ने कुछ समय तक शान्ति बनाए रखने का प्रयास किया पर शीघ्र ही यह समझ कर कि अधिक विलम्ब निरर्थक है, उन्हें सैनिक हस्तक्षेप की सिफारिश करनी पड़ी।

स्पेन ने युद्ध हारा और उपनिवेश खोये

वास्तविक सैनिक कारंवाई वेग से हुई और निर्णायक सिद्ध हुई। वह केवल चार मास चली। अमरीकियों की कहीं भी एक छोटी-सी पराजय तक नहीं हुई। युद्ध की घोषणा के एक सप्ताह बाद कॉमाडोर जार्ज डेवी जो उस समय हांगकांग में था, अपना छः जहाजों का बेड़ा लेकर फिलिपीन की ओर चल पड़ा। उसको आज्ञा थी कि वह उस स्पेनिश बेड़े को जो वहां पड़ा हुआ था, अमरीकी समुद्र में कारंवाई करने से रोके। सबेरे से पहले ही उसने मनीला खाड़ी वाले तोपखाने पर आक्रमण कर दिया और दोपहर तक उसने समस्त स्पेनिश बेड़े को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। इस सारी कारंवाई में एक भी अमरीकी हताहत नहीं हुआ। उधर क्यूबा में एक सैनिक टुकड़ी सेन्टियागो के पास उतारी गयी जिसने लगातार कई लड़ाइयां जीतकर बन्दरगाह पर गोलाबारी आरम्भ की। चार सशस्त्र स्पेनिश क्रूजर सैन्टियागो की खाड़ी से निकल कर भागे पर कुछ ही घण्टों में टूट-फूट कर ढेर हो गए। जुलाई के जिस गर्म दिन यह सन्देश मिला कि सेन्टियागो पर विजय हुई तो बॉस्टन से लेकर सानफ्रांसिस्को तक सीटियां बजायी गयीं और झण्डे लहराए गए। समाचार-पत्रों ने अपने संवाददाता क्यूबा और फिलिपीन भेजे, और इन कलम के धनी लोगों ने राष्ट्र के नए वीरों की ख्याति की शहनाइयां बजाई। इनमें से प्रमुख थे मनीला ख्याति के जार्ज डेवी और 'रफ़राइडर्स' नामक स्वयंसेवक घुड़सवारों के दस्ते के नेता थियोडोर रुज़वेल्ट जिन्होंने इन स्वयंसेवक घुड़सवारों की भर्ती क्यूबा में की थी। स्पेन ने शीघ्र ही सुलह-शान्ति की प्रार्थना की। १० दिसम्बर १८९८ को एक सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर किए गए जिसके अनुसार स्पेन ने क्यूबा को तब तक के लिए संयुक्त राज्य अमरीका को सौंप दिया जब तक कि वहां स्वतन्त्र शासन स्थापित न हो जाय। उसने अमरीका को पोर्टोरीको और गुआम द्वीप युद्ध के हरजाने के रूप में दिए तथा २ करोड़ डालर का मूल्य लेकर फिलीपीन भी अमरीका के हाथ बेच दिया।

फिलिपीन में जम जाने से अमरीका को यह आशा हो गयी कि चीन के साथ उसका अच्छा व्यापार हो सकेगा। परन्तु १८९४-९५ में जापान के द्वारा चीन की पराजय के पश्चात कई यूरोपीय राष्ट्रों ने चीन में समुद्री अड्डे, ठेकेदारी के क्षेत्र इत्यादि लेकर अपना प्रभाव स्थापित कर लिया। उन्होंने न केवल व्यापार के एकाधिकार प्राप्त किए बल्कि रेल-निर्माण में रुपया लगाने तथा आसपास के प्रदेशों में अपने लिए खनिज उद्योग के विकास के हक भी प्राप्त कर लिए थे। पूर्व के साथ अपने राजनीतिक सम्बन्धों में अमरीकी सरकार समस्त राष्ट्रों के लिए समान व्यापारिक अधिकारों पर पहले से ही जोर देती आयी थी। सितम्बर १८९९ में सेक्रटरी आफ स्टेट जॉन हे ने सभी सम्बन्धित शक्तियों के नाम एक गश्ती नोट भेजा। उन सबने चीन में सब राष्ट्रों के लिए 'खुले द्वार' का सिद्धान्त स्वीकार कर लिया—अर्थात् जिन प्रदेशों पर उनका अधिकार था उनमें सबको समान चुंगी, समान तट-कर और रेल-भाड़े की समान दर आदि की एक जैसी सुविधाएं दी गयीं।

परन्तु १९०० में चीनियों ने विदेशियों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। जून में विद्रोहियों ने पीपिंग पर अधिकार करके वहां के विदेशी दूतावासों को घेर लिया। हे ने तुरन्त ही समस्त शक्तियों को सूचित किया कि संयुक्त राज्य

अमरीका, चीन के प्रादेशिक अथवा प्रशासनिक अधिकारों अथवा 'खुले द्वार' के सिद्धान्त के उल्लंघन का विरोध करेगा। विद्रोह शान्त होने, अमरीकी कार्यक्रम को आगे बढ़ाने और भारी हरजाने के निपटारे के भार से चीन की रक्षा करने के लिए हे को अपना समस्त बुद्धि कौशल लगाना पड़ा। अक्टूबर में ब्रिटेन और जर्मनी ने 'खुले द्वार' की नीति, और चीनी स्वतन्त्रता की रक्षा का पुनः समर्थन किया और अन्य राष्ट्रों ने उसका अनुकरण किया।

इसी बीच, १९०० के राष्ट्रपति के चुनाव ने अमरीकी जनता को मैकिनले शासन और विशेषकर उसकी विदेश-नीति पर अपना मत व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया। फिलाडेल्फिया में एकत्रित होकर रिपब्लिकनों ने स्पेन के साथ युद्ध की सफल समाप्ति, समृद्धि की पुनः स्थापना और 'खुले द्वार' की नीति द्वारा नए बाजारों की प्राप्ति के प्रयासों पर हर्ष प्रकट किया। चुनाव में मैकिनले का राष्ट्रपति के पद पर और उनके साथी थियोडोर रूजवेल्ट का चुना जाना पूर्वनिश्चित था। परन्तु राष्ट्रपति अपनी जीत का आनन्द भोगने के लिए अधिक समय जीवित न रह सके। सितम्बर १९०१ में न्यूयार्क के बफैलो में एक व्याख्यान सुनते समय किसी हत्यारे ने उन्हें गोली मार दी। मैकिनले की मृत्यु ने थियोडोर रूजवेल्ट को राष्ट्रपति की कुर्सी पर बिठा दिया।

सामाजिक समालोचना का युग

आन्तरिक तथा वैदेशिक दोनों प्रकार के मामलों में रूजवेल्ट की पदोन्नति से अमरीकी राजनीतिक जीवन में एक नए युग का समारम्भ हुआ। शताब्दी के मोड़ पर अमरीका अपनी तीन पीढ़ियों के विकास का सिंहावलोकन कर सकता था। सम्पूर्ण महाद्वीप आबाद हो चुका था, सीमान्त लुप्त हो चुके थे। राष्ट्र अब एक छोटे से संघर्षग्रस्त गणतन्त्र से विश्वशक्ति की श्रेणी में आ चुका था। इसकी राजनीतिक नीवें गृहयुद्ध तथा विदेश युद्ध के उतार-चढ़ाव और समृद्धि एवं अभाव के ज्वार-भाटे झेल चुकी थीं। कृषि तथा उद्योग में बड़ी-बड़ी मंजिलें पूरी की जा चुकी थीं। निःशुल्क सार्वजनिक शिक्षा का आदर्श पूरा हो चुका था। प्रेस की स्वाधीनता का आदर्श कायम रखा गया था। धार्मिक स्वतन्त्रता का आदर्श भी माना जाता था। इतने पर भी विचारशील अमरीकी लोग अपनी सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक स्थिति से सन्तुष्ट नहीं थे क्योंकि इस समय बड़े-बड़े व्यापारी पूर्वकाल की अपेक्षा बहुत ही शक्तिशाली हो रहे थे। स्थानीय और म्यूनिसिपल शासन व्यवस्था की बागडोर प्रायः भ्रष्टाचारी राज-

'लाइनोटाइप' नामक टाइप कम्पोजिंग यन्त्र के आविष्कर्ता मर्जेन्थलर द्वारा न्यूयार्क ट्रिब्यून के सम्पादक रीड के सामने उसका प्रदर्शन। यह मशीन सर्वप्रथम (१८८६) न्यूयार्क ट्रिब्यून के प्रेस में इस्तेमाल की गयी।



नीतिज्ञों के हाथों में आ जाती थी। समाज के प्रत्येक अंग में भौतिकवादी भावना व्याप्त हो रही थी।

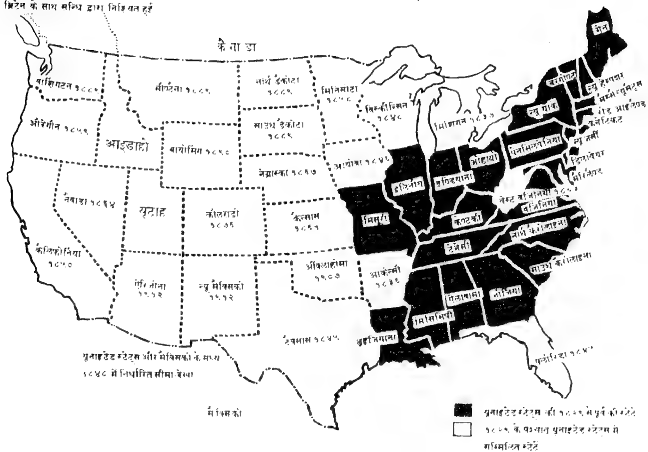
इन दोषों के विरुद्ध पूरी आवाज़ उठी जिसने सन् १८९० से लेकर प्रथम विश्व युद्ध तक अमरीकी राजनीति और विचारों को एक विलक्षण चरित्र प्रदान किया। औद्योगिक क्रान्ति के आदिकाल से ही किसान, नगरों और बढ़ते हुए उद्योगपतियों के विरुद्ध संघर्ष कर रहे थे। १८५०-६० से ही सुधारक, प्रचलित पक्षपात-संरक्षण की नीति की तीव्र निन्दा कर रहे थे जिसके द्वारा सफल राजनीतिक नेता, सरकारी पद अपने समर्थकों में वितरित कर दिया करते थे। तीस वर्ष के संघर्ष के बाद सुधारकों ने १८८३ में "पेन्डलटन सिविल सर्विसेज़ बिल" पास करवा लिया जिसके अनुसार सरकारी पदों के निमित्त योग्यता के सिद्धान्त की स्थापना के द्वारा राजनीतिक सुधारों का श्रीगणेश हुआ। कारखानों के मजदूर भी अन्यायों के विरुद्ध शिकायतें कर रहे थे। पहले इन्होंने अपनी रक्षा के लिए 'नाइट्स आफ़ लेबर' का संगठन किया। १८६९ से आरम्भ होकर उनकी सदस्य संख्या बढ़ते-बढ़ते १८९५ में सात लाख तक पहुँच गयी। यह संगठन तो शिथिल हो गया पर इसके स्थान पर इससे भी अधिक प्रभावशाली संगठन "अमेरिकन फेडरेशन आव लेबर" (ए. एफ. एल.) बना जो, शिल्प और उद्योग यूनियनों का एक शक्तिशाली सम्मिलन था। १९०० तक श्रमिक संगठन अमरीका में एक ऐसी शक्ति बन चुका था जिसकी कोई भी राजनीतिज्ञ उपेक्षा नहीं कर सकता था।

इस काल में प्रायः हर प्रसिद्ध व्यक्ति ने चाहे वह राजनीति में हो या दर्शन-शास्त्र में, अध्ययन में अथवा साहित्य में, अपनी ख्याति आनुपातिक रूप में सुधार आन्दोलन के जरिए ही प्राप्त की। इस समय के समस्त नेता सुधारक थे जो तत्कालीन आवश्यकताओं का प्रचार करते थे। यह इसलिए कि एक अट्ठारहवीं शताब्दी के ग्रामीण गणतन्त्र से उधार लिए हुए सिद्धान्त और प्रथाएं बीसवीं शताब्दी के नागरिक राष्ट्र के लिए अनुपयुक्त सिद्ध हो चुकी थीं। उद्योग-युग में अमरीका के समक्ष अव्यवस्था की जो समस्याएं आयी उनके मुख्य कारण थे, समाज की जटिलता और परम्परावलम्बन तथा बड़े-बड़े कार्पोरेशनों की स्थापना के कारण व्यक्तिगत उत्तरदायित्वों का बिखर जाना। इस स्थिति को शुद्ध करने के लिए कुछ लेखकों ने अपनी प्रतिभा को इस ओर लगाया। इस कार्य में सबसे आगे थे समाचारपत्र और लोकप्रिय पत्रिकाएं। उपन्यासकारों ने भी इस प्रसंग को अपनाया और इस तत्कालीन महत्वाकांक्षी राजनीति-सुधारकों ने जिनमें अमरीका के नये राष्ट्रपति भी शामिल थे आन्दोलन को व्यावहारिक रूप दिया। अधिकतम सुधार कार्रवाइयां १९०२ से लेकर १९०८ तक के समय में हुईं। बरसों पहले १८७३ में मार्कट्वेन ने अपने चिन्तनशील अध्ययन "दि गिल्डेड एज" में अमरीकी समाज का दिग्दर्शन कराया था। अब "मैक्ल्योर्स", 'ऐवरीबडीज़' और 'कॉलियर्स' नामक पत्रिकाओं में, ट्रस्टों, वित्त व्यवस्था, अशुद्ध भोजन और रेलों के विषय में उग्र आलोचनाएं प्रकाशित हुईं। कथा-कल्पना के सहारे अप्टन सिन्क्लेयर ने एक उपन्यास "दि जंगल" प्रकाशित किया जिसमें शिकागो स्थित पैकिंग-हाउसों की अस्वास्थ्यकर दशाओं का चित्रण था और यह दर्शाया गया था कि किस प्रकार समस्त देश का मांस-सम्भरण-व्यवसाय एक ट्रस्ट की मुट्ठी में था, थियोडोर ड्राइज़र के 'फाइनेन्शियर' और 'टाइटन' नामक पत्रों ने व्यापारियों की चालबाजियों का और भी सरलता से उद्घाटन किया। फ्रैंक नोरिस के "दि पिट" ने भूमि सम्बन्धी शिकायतों का स्पष्टीकरण किया। लिंकन स्टीफ़ेन्स के 'दि शेम आफ़ दि सिटीज़' ने भ्रष्टाचार का पर्दाफ़ाश किया। यह सब 'अनावरण साहित्य' लोगों को सक्रिय होने के लिए जाग्रत करने में बड़ा ही प्रभावपूर्ण सिद्ध हुआ।

सुधारों से सर्वसाधारण को लाभ

समझौते से इनकार करने वाले लेखकों और जाग्रत जनता के अनर्गल प्रहारों ने राजनीतिक नेताओं को व्यावहारिक पग उठाने के लिए बाध्य किया। कई राज्य ऐसे कानून बनाने लगे जिनका प्रयोजन लोगों के दैनिक जीवन और काम की स्थिति सम्भालने से था। बीसवीं शताब्दी के पहले १५ वर्षों में जितने सामाजिक कानून पास हुए उतने अमरीका के पिछले इतिहास में कभी नहीं बने थे। बालश्रम-कानून अधिक दृढ़ बना दिए गए और कई नए कानूनों की सहायता से बालकों के काम करने की कम से कमआयु बढ़ायी गयी, काम के घण्टे कम कर दिए गए, रात में काम का निषेध कर दिया गया और स्कूलों में उपस्थिति अनिवार्य बना दी गयी। इस समय तक आधे से अधिक राज्यों और अधिकतर बड़े नगरों में सार्वजनिक कामों में आठ घण्टे के कार्य-दिवस की स्थापना हो चुकी थी। जोखिम के कामों में भी काम का समय कानून द्वारा नियन्त्रित कर दिया गया। श्रमिकों की क्षतिपूर्ति के कानून भी कम महत्वपूर्ण नहीं थे। उनके द्वारा मजदूरों को शारीरिक हानि उठाने पर उसके हरजाने का उत्तरदायी मालिकों को बना दिया गया। सरकारी आय के विषय में भी नए कानून बनाए गए जिनके द्वारा उत्तराधिकार, आय और कारपोरेशन के जायदादों और आमदनी

महाद्वीप यूनाइटेड स्टेट्स



पर कर लगाया गया। इन करों के जरिए शासन का बोझ उन कन्धों पर डालने का प्रयत्न किया गया जो देने में समर्थ थे।

ये सभी कदम प्रशंसा के योग्य थे फिर भी यह स्पष्ट था कि सुधारक जिन समस्याओं के लिए प्रचार कर रहे थे उनमें अधिकतर तब तक नहीं सुलझ सकती थीं जब तक उन पर राष्ट्रव्यापी क़दम न उठाए जाएं। राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट ने, जो स्वयं भी सुधारों में उत्साह से रुचि लेते थे, यह बात स्पष्ट समझ ली थी। रूज़वेल्ट एक राजनीतिक यथार्थवादी, उत्साही-राष्ट्रवादी और एक विश्वसनीय रिपब्लिकन थे। टामस जैफर्सन के बाद के राष्ट्रपतियों में वह सबसे अधिक विवेकशील थे। वह रैंचर और एक राज्य के गवर्नर भी रह चुके थे। उन्होंने बड़े जानवरों का शिकार किया था, पुस्तकें लिखीं थीं, न्यूयार्क राज्य की संसद् की सदस्यता की थी, न्यूयार्क की नगर पुलीस में एक अधिकारी के पद पर काम किया था, नौसेना का निर्देशन किया था और क्यूबा में युद्ध किया था। वह सब कुछ पढ़ते थे और हर विषय में उनका अपना मत था। ऐण्ड्रू जैक्सन के समान उनमें जनता का विश्वास जीतने और अपने संघर्षों को नाटकीय रूप में प्रस्तुत करने की प्रतिभा थी। एक वर्ष के भीतर उन्होंने यह दिखा दिया था कि वे अमरीका में हो रहे महान परिवर्तनों को समझते थे और उनका संकल्प था कि वे जनता के साथ पूरा न्याय करेंगे।

ट्रस्ट-विरोधी कानूनों को लागू कराने में रूज़वेल्ट ने अधिकाधिक सरकारी देख-रेख की नीति पर आचरण किया। सरकारी निरीक्षणों का रेलमार्गों पर लागू हो जाना उनके शासन की एक विशेष सफलता थी। उन्होंने रेल सम्बन्धी विधायन को 'बहुत ही बड़ा मसला' माना। दो कानून भी पास किए गए। १९०३ के एल्किन्स ऐक्ट द्वारा रेल-व्यवस्था संचालकों के लिए भाड़े की प्रकाशित दरों पर रेलों का चलाना अनिवार्य कर दिया गया और इन दरों पर छूट लेने-देने के लिए रेलवे अधिकारी तथा माल भेजने वाले दोनों ही अपराधी ठहराए गए। इसकी सहायता से सरकार ने अपराधी कम्पनियों पर सफलतापूर्वक मुकदमे चलाए। बाद में कांग्रेस ने व्यापार और श्रम का एक नया विभाग खोलकर मन्त्रिमण्डल में उसका एक सदस्य भी बढ़ा लिया। इस विभाग के एक ब्यूरो को, बड़ी-बड़ी व्यापारी कम्पनियों की जांच करने का अधिकार दिया गया। उदाहरणार्थ १९०७ में यह ज्ञात हुआ कि 'एक अमरीकी चीनी शोधक कम्पनी' ने सरकार को धोखा देकर आयात-कर की बड़ी राशि हड़प ली थी। कानूनी कार्रवाई द्वारा उससे चालीस लाख डालर से ऊपर वसूल किए गए और कम्पनी के अनेक अधिकारियों को सजाएं हुईं। इसी वर्ष इण्डियाना की स्टैन्डर्ड आयल कम्पनी को शिकागो-आल्टन रेलमार्ग से माल भेजने पर गुप्त-रीति से छूट लेने के लिए अपराधी ठहराया गया। समय की भावना का परिचय इस बात से मिलता है कि १४६२ मुकदमों में २ करोड़ ९२ लाख ४० हजार डालर जुर्माना किया गया।

१९०४ में, थियोडोर रूज़वेल्ट रिपब्लिकनों के 'आदर्श पुरुष' बन चुके थे। उनका आकर्षक व्यक्तित्व और उनके "ट्रस्ट ध्वंसक" कार्यों ने जनसाधारण की भक्ति जीत ली थी। प्रगतिशील डेमोक्रेट भी अपने उम्मीदवार की अपेक्षा उनकी ओर अधिक आकृष्ट थे। देश की अतिशय समृद्धि भी एक प्रभाव डाल रही थी जिसने १९०४ के चुनावों में रिपब्लिकनों को विजयी कराया। अपनी जबर्दस्त विजय से उत्साहित होकर राष्ट्रपति, सुधार के हेतु को और भी अग्रसर करने के नए प्रण के साथ अपने पद पर पुनः आसीन हुए। अपने प्रथम वार्षिक सन्देश में उन्होंने रेल व्यवस्था के लिए और भी अनेक नियमों को लागू करने की मांग की। जून १९०६ में "हेपबर्न ऐक्ट" पास हुआ। इसके द्वारा, अन्तर्राज्य 'कामर्स कमीशन' को दरों से सम्बन्धित नियम बनाने के वास्तविक अधिकार मिले, उसके प्रभाव-क्षेत्र में वृद्धि हुई और रेल-कम्पनियों ने जहाज़ी-लाइनों तथा कोयला कम्पनियों पर जो स्वत्व जमा रखे थे उन्हें छोड़ना पड़ा। रूज़वेल्ट की शासन-अवधि पूरी होते-होते, भाड़े के लेन-देन में छूट की प्रथा प्रायः समाप्त हो चुकी थी और रेलों का सार्वजनिक नियमन एक सर्वस्वीकृत सिद्धान्त बन चुका था।

कांग्रेस के अन्य कानूनों द्वारा संघीय नियन्त्रण के सिद्धान्त को और भी बढ़ावा मिला। सुधारकों के आन्दोलन के उत्तर में १९०६ में पास होने वाले 'प्योर फूड ला' के अन्तर्गत बनी बनायी औषधियों अथवा खाद्यपदार्थों के रूप में किसी भी हानिकारक, रासायनिक अथवा परिरक्षक द्रव्य का उपयोग निषिद्ध कर दिया गया। इस कानून को तुरत ही एक दूसरे कानून द्वारा और भी पक्का कर दिया गया जिसके अनुसार उन सारी संस्थाओं के केन्द्रीय निरीक्षण को आवश्यक माना गया जो अन्तर्राज्य-व्यापार के अन्तर्गत मांस बेचती थीं।

साधनों की रक्षा के लिये रूज़वेल्ट के कार्य

इस बारे में कोई दो रायें नहीं हो सकती कि रूज़वेल्ट के शासन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण सफलता थी राष्ट्र के प्राकृतिक साधनों की सुरक्षा। कच्चे माल का बेजा उपयोग और उसकी बरबादी को रोकना आवश्यक था। बड़े-बड़े भूभाग जो बेकार समझे जाते थे उन्हें सच्चे अर्थों में उपयोगी बनाने के लिए उचित



अन्न कूटनेके लिए किसानों ने भाप के इंजिनों का इस्तेमाल १८९० के पहले से ही शुरू कर दिया था। मशीनों के इस्तेमाल से अनेक बड़े-बड़े पेरी-प्रदेशों के विकास की रफ्तार तेज हुई जो पहले बेकार व अनुपजाऊ से पड़े थे। डकोटा का यह क्षेत्र भी उन्हीं में से एक है ।

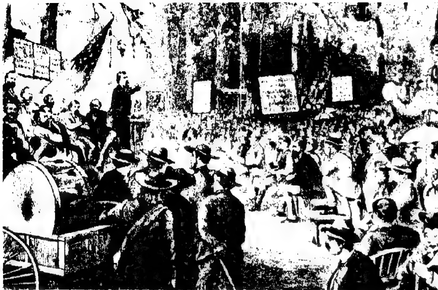
ध्यान देने की अपेक्षा थी। १९०१ में कांग्रेस के लिए अपने प्रथम सन्देश में रूजवेल्ट ने 'वन और जल' को "अमरीका की लगभग सबसे अनिवार्य आन्तरिक समस्याएं" कहकर पुकारा था। उन्होंने भू-संरक्षण, भूमि-सुधार, और सिंचाई के लिए एक दूरगामी और सम्भावित कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल दिया। उनके पूर्वाधिकारियों ने जो ४,७०,००,००० एकड़ भूमि वन संरक्षण के लिए सुरक्षित कर दी थी उन्होंने उसे बढ़ाकर १४,८०,००,००० एकड़ कर दिया और बड़वाग्नि से जंगलों की रक्षा करने तथा वृक्षहीन भागों में वृक्षारोपण के क्रमिक प्रयत्न किए। १९०७ में उन्होंने एक "इनलैण्ड वाटरवेज़ कमीशन" नियुक्त करके उसे नदियों, भूमि और जंगलों के परस्पर सम्बन्धों, पनबिजली के विकास और जलीय यातायात के प्रश्नों पर पूर्ण चिन्तन और मनन का काम सौंपा। इसी कमीशन की सिफारिशों के फलस्वरूप 'राष्ट्रीय संरक्षण सम्मेलन' की योजना बनी और उसी वर्ष रूजवेल्ट ने सभी राज्यपालों, मन्त्रिमण्डलीय सदस्यों और राजनीति, विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्रों के सम्मान्य व्यक्तियों को इस सम्मेलन में आमंत्रित किया। इस सम्मेलन ने संरक्षण की समस्या पर राष्ट्र का ध्यान केन्द्रित किया। सिद्धान्तों का एक घोषणापत्र निकाला गया जिसमें न केवल जंगलों के बल्कि पानी और खनिज-पदार्थों के संरक्षण और भूमि के कटाव तथा सिंचाई पर ध्यान देने पर भी बल दिया गया। इसकी सिफारिशों में निजी भूमि में पेड़ों की कटाई के नियम, यातायात योग्य जलधाराओं का सुधार और नदी तट के प्रदेशों का भूमि-संरक्षण शामिल था। इसके फलस्वरूप अनेक राज्यों ने 'कंजरवेशन एसोसियेशन' बनाए और १९०९ में एक 'राष्ट्रीय कंजरवेशन एसोसियेशन' की स्थापना हुई जिसका काम था इस विषय में जनता को प्रशिक्षित करना। १९०२ में एक 'रिक्लेमेशन ऐक्ट' बनाया गया जिससे सरकार को बड़े-बड़े बांध और जलाशय बनाने का अधिकार मिला। शीघ्र ही बड़े-बड़े अनुपजाऊ भूभाग हरे-भरे और खेती के योग्य बन गए।

१९०८ के चुनाव-आन्दोलन के ठीक पहले, रूजवेल्ट लोकप्रियता के शिखर पर थे। फिर भी वह उस प्रथा को चुनौती देने में झिझके जिसके अनुसार दो कार्यकालों से ज्यादा कोई भी राष्ट्रपति इस पद पर नहीं रहा था। उन्होंने विलियम हावर्ड टैफ्ट का समर्थन किया जो अगले राष्ट्रपति हुए। रूजवेल्ट के कार्यक्रम को आगे बढ़ाने की इच्छा से उन्होंने कुछ कदम उठाए। उन्होंने ट्रस्टों के विरुद्ध कार्रवाई जारी रखी, अन्तर्राज्य-कामर्स-कमीशन को दृढ़ बनाया, डाकघरों में सेविंग्स-बैंक खोले, डाक द्वारा पार्सल भेजने की व्यवस्था की, सिविल सर्विस का विस्तार किया और केन्द्रीय-संविधान में दो संशोधन प्रस्तावित किए। १७वां संशोधन १९१३ में स्वीकृत हुआ जिसके अनुसार सेनेटरों के सीधे चुनाव की व्यवस्था की गयी और १६वें संशोधन द्वारा केन्द्रीय सरकार को आय-कर लगाने का अधिकार प्राप्त हुआ। उनकी इन सभी सफलताओं को बराबर कर देने वाले काम थे रक्षित क्रमों के तटकर की स्वीकृति जिससे उदार मतानुयायी बहुत क्रुद्ध हुए, ऐरीजोना राज्य के उदार संविधान के कारण यूनियन में उसके प्रवेश पर आपत्ति और अपनी पार्टी के अत्यधिक रूढ़िवादियों पर उनका ज़रूरत से ज्यादा भरोसा।

१९१० में, टैफ्ट के दल में फूट पड़ गयी और एक भारी बहुमत से कांग्रेस का नियन्त्रण फिर डेमोक्रेटों के हाथों में आ गया। दो साल बाद राष्ट्रपति-पद के चुनाव के लिए न्यूजर्सी के राज्यपाल वुडरो विल्सन, रिपब्लिकन-उम्मीदवार टैफ्ट के विरुद्ध खड़े हुए। रूजवेल्ट ने, जिन्हें रिपब्लिकन सम्मेलन ने अपना उम्मीदवार बनाना अस्वीकार कर दिया था, एक तीसरा दल 'प्रोग्रेसिव्ज़' नाम से संगठित किया और उसके टिकट पर राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ा। विल्सन ने अपने दोनों प्रतिद्वन्द्वियों को डटकर हराया। विल्सन का चुनाव उदार विचारों की विजय थी क्योंकि उनकी दृढ़ आकांक्षा थी कि वह डेमोक्रेटों को सुधारों के लिए संकल्पित करें। उनके नेतृत्व में कांग्रेस ने कानून निर्माण के एक ऐसे कार्यक्रम को अपनाया जो अपनी व्यापकता और महत्व में अमरीकी इतिहास में सबसे अधिक उल्लेखनीय है। कार्यक्रम का पहला कदम था, तटकर का पुनर्निर्धारण। विल्सन ने कहा, "तटकर या चुंगी की दरें अवश्य बदली जायं। हमें ऐसी प्रत्येक वस्तु को समाप्त कर देना चाहिए जो विशेषाधिकार जैसी जान पड़ती है।" 'अण्डरवुड चुंगी-कानून' पर ३ अक्टूबर १९१३ को हस्ताक्षर हुए। इसके अनुसार खाद्यान्नों, कपास और ऊनी सामान, लोहा और इस्पात जैसे कच्चे माल तथा अनेक दूसरी वस्तुओं पर कर की दर घटा दी गयी और लगभग सौ से अधिक वस्तुओं पर से चुंगी उठा दी गयी। यद्यपि इस कानून में संरक्षण के अनेक लक्षण अब भी मौजूद थे फिर भी रहन-सहन का व्यय घटाने की दिशा में यह एक वास्तविक प्रयत्न का सूचक था।

विल्सन द्वारा बैंक प्रणाली का कायाकल्प

डेमोक्रेटिक कार्यक्रम का दूसरा अंग था बैंकों तथा मुद्रा-प्रणाली का पुनर्गठन। राष्ट्र एक अरसे से ऋण तथा मुद्रा की अलोचशीलता की कठिनाइयां झेलता



१८६७ में संगठित 'फार्मर्स ग्रन्जेज' नामक किसान-संगठन को शीघ्र ही एक विशिष्ट राजनीतिक रूप प्राप्त हो गया। वे अपने उम्मीदवारों का चुनाव करने लगे और संगठन के सदस्यों को सहकारी ढंग से काम करने के लिए प्रोत्साहित करने लगे।



कैरी चैपमैन कैट के प्रयास से महिलाओं को मताधिकार दिलाने का आन्दोलन १८६० में प्रारम्भ हुआ। उसके फलस्वरूप १९२० में संविधान में एक ऐसा संशोधन किया गया जिससे अमरीकी महिलाओं को मताधिकार प्राप्त हुआ।



१८९३ में अपने पद की शपथ लेते हुए अमरीका के २२वें राष्ट्रपति ग्रोवर क्लीवलैण्ड। उनका कार्यकाल असैनिक सेवाओं, रेल-व्यवस्था की कुप्रथाओं और तटकरों की ऊंची दरों में किए गए सुधारों के लिए प्रसिद्ध है।

संयुक्त राज्य अमरीका के २५ वें राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट जिनकी गणना राष्ट्र के सर्वाधिक आकर्षक और गतिशील प्रधानों में की जाती है, इनके कार्यकाल में बड़े व्यापारों, रेल-व्यवस्था और संरक्षण के क्षेत्र में अनेक सुधार किए गये।



आ रहा था। समय-समय पर कानून बना कर राष्ट्रीय बैंकों को संकटकालीन सिक्के चलाने की आज्ञा दे दी जाती थी पर बैंकिंग प्रणाली के कायाकल्प की आवश्यकता बहुत पहले से अनुभव की जा रही थी। विल्सन का कहना था, "नियन्त्रण व्यक्तियों का नहीं, जनता का होना चाहिए। उसे सरकार के अपने हाथों में रहना चाहिए जिससे बैंक व्यापार, व्यक्तिगत प्रयास तथा क्रियाशील भावना के सहायक बनें, न कि उनके मालिक।" २३ दिसम्बर १९१३ के "फेडरल-रिजर्व ऐक्ट" ने ये आवश्यकताएं पूरी कर दीं। वर्तमान बैंकों पर इसने एक नयी व्यवस्था लागू की। देश को बारह जिलों में विभक्त करके हर जिले में एक केन्द्रीय रिजर्व बैंक की स्थापना की गयी। ये बैंक उन सब बैंकों की पूंजी जमा रखने के लिए थे जो इस प्रणाली के अन्तर्गत काम करना स्वीकार करते थे। इनका प्रथम कर्तव्य था बैंकों-के-बैंक की भांति आचरण करना। इस प्रणाली से किसी भी अस्थायी कठिनाई के समय इस प्रकार जमा किए हुए धन से स्थानीय बैंकों की सहायता की व्यवस्था सम्भव बनायी जा सकी। दूसरा उद्देश्य था मुद्रा की पूर्ति में लोचशीलता लाना। इसके लिए केन्द्रीय रिजर्व बैंक द्वारा बाजार की मांग पूरी करने के लिए नोट जारी करने की व्यवस्था की गयी। इस योजना का निरीक्षण एक संघीय रिजर्व बोर्ड के हाथ में रखा गया।

अगला महत्वपूर्ण काम था न्यासों का नियमन। अनुभव के आधार पर यह सोचा गया कि इसे रेलों के 'अन्तर्राज्य कामर्स कमीशन' के ढंग पर होना चाहिए। इसलिए कार्पोरेशन की बुराइयों की जांच करने का काम एक केन्द्रीय 'ट्रेड कमीशन' को सौंपा गया जिसे यह अधिकार दिया गया कि वह राज्यों के पारस्परिक व्यापार में होड़ के अनुचित साधनों के उपयोग को रोके। एक अन्य कानून 'क्लेटन ऐण्टी-ट्रस्ट ऐक्ट' द्वारा कार्पोरेशनों की वे अनेक कार्रवाइयां बन्द की गयीं जो अब तक किसी प्रकार भर्त्सना से बच गयी थीं जैसे कि डाइरेक्टरों का आपस में मिल-जुलकर बहुत-सी कम्पनियों का आपस में ही बांट लेना, खरीदारों के साथ मूल्यों के बारे में किये जाने वाले भेदभाव और एक ही कार्पोरेशन द्वारा उसी प्रकार के अन्य कार्पोरेशनों के शेयरों का स्वामित्व।

मजदूरों और किसानों को भी भुलाया नहीं गया। संघीय फार्म-लोन-ऐक्ट द्वारा किसानों को कम दर के ब्याज पर ऋण देने की व्यवस्था की गयी। क्लेटन ऐक्ट की एक धारा यह थी कि मजदूरों के झगड़ों में अदालतों से इंजंक्शन न लिए जाएं। १९१५ का 'सीमैन्स ऐक्ट' समुद्री जहाजों और झीलों और नदियों पर नावों में काम करने वालों के रहन-सहन और काम की स्थिति सुधारने के लिए पास किया गया। १९१६ में 'फेडरल-वर्किंगमैन-कम्पेन्सेशन-ऐक्ट' पास करके काम करते हुए असैनिक सेवाओं के कर्मचारियों को स्थायी शारीरिक क्षति हो जाने पर उन्हें भत्ता देने की व्यवस्था की गयी। उसी वर्ष 'एडम्सन ऐक्ट' पास करके रेल-मजदूरों के लिए आठ घण्टे का कार्य-दिवस नियत किया गया।

सुधारों के इस आलेख से उन लोगों का स्वभाव परिलक्षित होता है जिन्हें राष्ट्रपति विल्सन के नेतृत्व में वाणी प्राप्त हुई थी। अमरीका के राष्ट्रपतियों के इतिहास में एक उल्लेखनीय व्यक्तित्व होते हुए भी विल्सन में उन बातों का अभाव था जो प्रतिस्पर्धा की राजनीति में सफलता प्राप्त करने के लिए जरूरी होती हैं। विल्सन बुनियादी रूप से विद्यार्थी और राजनीति के दार्शनिक थे। राजनीति-शास्त्र पर लिखे उनके लेखादि अमरीका में उस विषय के अध्ययन क्षेत्र के लिए उनके बहुमूल्य योगदान के परिचायक हैं।

विल्सन ने निष्पक्ष भाव से संसार का सर्वेक्षण किया। घटनाओं को एक जिज्ञासु विद्यार्थी की पैनी दृष्टि से गहराई के साथ देखा। हालांकि उनके सभी प्रियजन उन्हें चाहते और प्रेम करते थे फिर भी उनकी लोकप्रियता बहुत कुछ उनकी निर्लिप्त और जिज्ञासु प्रकृति पर आधारित थी। फिर भी, इतिहास में उनका मूल्यांकन उनकी विद्वता या सुधारों के प्रति उनकी अनन्य भक्ति की बिना पर नहीं बल्कि उस आश्चर्यजनक संयोग के आधार पर किया गया है जिसने उनसे एक युद्धकालीन राष्ट्रपति तथा युद्धोपरान्त वर्षों में शान्ति के निर्माता की भूमिका अदा कराई। विल्सन के दूसरे कार्यकाल के दौरान में जो शक्तियां मुक्त होकर सामने आयीं उनके भाग्य में भी उन्हीं की भांति अमरीकी राष्ट्र में कुछ परिवर्तन लाना लिखा था क्योंकि पहली बार उन्हें उन सभी जिम्मेदारियों और खतरों का सामना करना था जो विश्व की एक महान शक्ति के सामने होते हैं।

विदेश में संघर्ष और स्वदेश में सामाजिक परिवर्तन

"हमें लोकतन्त्र का महान कोषागार बनना चाहिए।"

—फ्रैंकलिन डी० रूज़वेल्ट
कांग्रेस को सन्देश, जनवरी ६, १९४१

१९१४ की अमरीकी जनता को युद्ध छिड़ने से बड़ा धक्का लगा। पहले तो यह संघर्ष दूर मालूम पड़ता था परन्तु अधिक समय नहीं होने पाया था कि अमरीकी नेताओं और जनता ने राजनीतिक और आर्थिक जीवन पर उसके बढ़ते हुए प्रभाव महसूस किए। १९१५ तक अमरीकी उद्योग, जिसमें थोड़ी मन्दी आयी हुई थी, पश्चिमी मित्र राष्ट्रों से युद्ध सामग्री के आर्डर पाकर फिर से समृद्ध होने लगा। दोनों पक्षों के प्रचार के कारण जनता के भावावेग में वृद्धि हुई और अमरीकी जहाजरानी के खिलाफ जर्मनी और इंग्लैण्ड दोनों की ही कार्रवाइयों पर विल्सन सरकार ने तीव्र विरोध प्रकट किया। परन्तु जैसे-जैसे समय बीतता गया, जर्मन और अमरीकी नेताओं के बीच विवाद और भी स्पष्ट होता गया।

फरवरी, १९१५ में, जर्मन युद्ध नेताओं ने घोषणा की कि वे ब्रिटिश द्वीपों के आसपास सब व्यापारी जहाजों का विनाश कर देंगे। राष्ट्रपति विल्सन ने चेतावनी दी कि सामुद्रिक व्यापार का अपना परम्परागत अधिकार अमरीका नहीं छोड़ेगा और घोषणा की कि अमरीकी जहाजों या जीवन की किसी भी क्षति के लिए राष्ट्र जर्मनी को पूरे तौर से जिम्मेदार मानेगा। जर्मन सरकार ने उत्तर में कहा कि मित्र राष्ट्रों द्वारा जर्मनी की नाकेबन्दी, लड़ाई करने का पनडुब्बियों के अबाध इस्तेमाल से भी अधिक क्रूर तरीका है, क्योंकि उससे, असैनिक जनता के बहुत बड़े भाग को भूखों मरना पड़ता है, जब कि पनडुब्बी-युद्ध का असर उन्हीं लोगों पर पड़ता है जो स्वेच्छा से एटलांटिक महासागर पर अपना जीवन खतरे में डालते हैं। तथापि, पनडुब्बी युद्ध अधिक कौतुकपूर्ण था जब कि नाकेबन्दी धीमी और खामोश थी। १९१५ के वसन्त में अंग्रेजी जहाज 'लुसी टानिया' को, लगभग १,२०० व्यक्तियों के साथ डुबाए जाने पर, जिनमें १२८ अमरीकी भी थे, अमरीकी जनमत रोष की सीमा पर पहुँच गया।

युद्धकालीन आवेश के दबाव के कारण राष्ट्रपति विल्सन निरंतर एक जैसी नीति पर चलने में असमर्थ थे। जेफर्सन के समय से अब तक कोई अन्य अमरीकी राष्ट्रपति शान्ति रक्षा के लिए उनसे अधिक तत्पर नहीं रहा था। परन्तु उन्हें यह भी विश्वास था कि जर्मनी की विजय का अर्थ होगा यूरोप में सैन्यवाद की विजय, जिससे न केवल अमरीकी सुरक्षा वरन् विश्व-शान्ति का स्वयं उनका स्वप्न भी खतरे में पड़ जायगा। पनडुब्बी युद्ध की क्रूरता से यह डर और भी पक्का हो गया। परन्तु ४ मई, १९१६ को जब जर्मन सरकार ने वचन दिया कि आगे से पनडुब्बी युद्ध अमरीकी मांगों के अनुसार सीमित रहेगा तो ऐसा प्रतीत हुआ कि पनडुब्बी समस्या का समाधान हो गया। इसी वर्ष विल्सन अपने पुनर्निर्वाचन आन्दोलन में सफल हुए और इसमें उनके दल के इस नारे का कि "उन्होंने हमें लड़ाई से बचाया" काफी बड़ा हाथ था। जनवरी, १९१७ में सेनेट के समक्ष भाषण देते हुए उन्होंने "विजय के बिना शान्ति" की मांग की और यह घोषणा की कि केवल इसी प्रकार की शान्ति अधिक समय तक कायम रह सकती है।

प्रथम महायुद्ध में अमरीका का प्रवेश

नौ दिन बाद, जर्मन सरकार से नोटिस प्राप्त हुआ कि युद्ध में पनडुब्बियों का अबाध प्रयोग फिर से चालू किया जाएगा। इस घोषणा से अमरीका में साधारणतः यही प्रतिक्रिया हुई कि अब युद्ध अनिवार्य है। २ अप्रैल, १९१७ को, जब पांच अमरीकी जहाज डूब चुके थे, विल्सन ने कांग्रेस से युद्ध की घोषणा की अनुमति मांगी। तुरन्त ही अमरीकी सरकार अपने सैनिक, औद्योगिक, श्रमिक और कृषि साधन एकत्रित करने में जुट गयी। शीघ्र ही, एक के बाद दूसरा, वृहद रक्षक जहाजी बेड़ा अमरीकी बन्दरगाहों से रवाना होने लगा। अक्टूबर १९१८ तक फ्रांस में १७,५०,००० से अधिक अमरीकी सैनिकों की सेना पहुंच गई।

अमरीकी सेना में से सर्वप्रथम जल सेना ने प्रधानता प्राप्त की जिसने अंग्रेजों को पनडुब्बी संरोध खण्डन करने में सहायता देकर एक नाजुक कार्य किया। फिर १९१८ के ग्रीष्म में बहुत अरसे से प्रतीक्षित एक जर्मन हमले के दौरान में नयी

अमरीकी स्थल सेना ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। नवम्बर में दस लाख से भी अधिक सैनिकों वाली एक अमरीकी सेना ने विशाल म्यूस-आर्गोन हमले में महत्वपूर्ण भाग लिया। उसने हिंडनबर्ग रेखा को नष्ट कर दिया।

युद्धकालीन नेता के नाते विल्सन स्वयं ही बड़े प्रभावशाली थे। मित्रराष्ट्रों के युद्ध-उद्देश्यों की जो प्रभावशाली परिभाषा उन्होंने की वह शीघ्र युद्ध समाप्ति के लिए उनके द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों में सबसे अधिक परिणामकारी सिद्ध हुई। शुरू से ही उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह संघर्ष जर्मन जनता के विरुद्ध नहीं था बल्कि उनकी निरंकुश सरकार के विरुद्ध था। जनवरी, १९१८ में उन्होंने सेनेट के सामने निष्पक्ष शान्ति के आधार के लिए अपनी विख्यात चौदह सूत्री योजना रखी। उन्होंने गुप्त अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों को छोड़ने, सामुद्रिक स्वतन्त्रता की गारन्टी, राष्ट्रों के बीच आर्थिक अवरोधों को हटाए जाने, राष्ट्रीय सैन्य शक्ति में कमी, प्रभावित निवासियों के कल्याण को ध्यान में रखते हुए औपनिवेशिक दावों का समंजन करने की मांग की। दूसरे विशिष्ट लक्षणों वाले सूत्रों का अभिप्राय यूरोपीय जातियों को स्वयंशासन और अबाधित आर्थिक विकास का विश्वास दिलाना था। अपने चौदहवें सूत्र में विल्सन ने अपने शान्ति प्रस्ताव के प्रधान सिद्धान्त का वर्णन किया—राष्ट्रों की एक संस्था की स्थापना जो बड़े और छोटे राष्ट्रों को समान दैशिक सुरक्षा और "राजनीतिक स्वतन्त्रता का पारस्परिक आश्वासन दे।"

शांति के बाद अलगाववाद

१९१८ के ग्रीष्म काल में, जब कि जर्मन सेनाएं पीछे हट रही थीं, तो जर्मन सरकार ने विल्सन से उनकी चौदह सूत्री योजना के आधार पर समझौता करने की अपील की। यह पता लगाने के बाद कि यह प्रार्थना सैनिक गुट की न होकर जनता के प्रतिनिधियों की ओर से की गई है राष्ट्रपति ने मित्रराष्ट्रों से सलाह की जिन्होंने जर्मन प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। इस आधार पर ११ नवम्बर को युद्ध-विराम सन्धि की गयी।

विल्सन को आशा थी कि अन्तिम सन्धि का रूप समझौतापूर्ण शान्ति का होगा, परन्तु उन्हें डर था कि युद्धजनित आवेग के कारण मित्रराष्ट्रों की मांगें बहुत बढ़ी-चढ़ी होंगी। यह उन्होंने ठीक ही सोचा था। यह समझ लेने के उपरान्त कि संसार में शान्ति के लिए उनकी सबसे बड़ी आशा अर्थात् राष्ट्रसंघ की स्थापना कभी भी सफल नहीं होगी जब तक कि वे मित्र राष्ट्रों की मांगों के प्रति रियायत नहीं करेंगे, वे पेरिस की शान्ति समझौता वार्ता में एक के बाद दूसरे सूत्र पर छूट देते गए। उन्हें कुछ नकारात्मक विषयों में सफलता भी मिली; उन्होंने इटली को फ्यूम नहीं मिलने दिया, समस्त राईन लैंड को जर्मनी से अलग करने की क्लीमेनसो की मांग का प्रतिरोध किया, फ्रांस को सार बेसिन छीनने से रोका और जर्मनी पर युद्ध का समस्त व्यय लादने के एक प्रस्ताव को पूरा न होने दिया। अन्त में, उनके उदारतापूर्ण और स्थायी शान्ति के लिए सकारात्मक प्रस्तावों में से राष्ट्र संघ के अतिरिक्त बहुत कम बाकी बचा; और विल्सन को अन्त में यह दिन भी देखना पड़ा कि स्वयं उनके देश ने ही राष्ट्रसंघ की सदस्यता को ठुकरा दिया। नाजुक समय में स्वयं उनके राजनीतिक विवेक ने उनका साथ नहीं दिया। उन्होंने एक बड़ी राजनीतिक भूल यह की कि वे पेरिस की शान्ति वार्ता में अपने साथ विपक्षी रिपब्लिकन दल के किसी प्रभावशाली सदस्य को नहीं ले गए और लौटने पर, जब उन्होंने राष्ट्रसंघ के प्रति अमरीकी सद्भावना की अपील की तब भी सेनेट, जिसमें रिप-ब्लिकन बहुमत था, की मंजूरी प्राप्त करने के लिए आवश्यक मामूली छूट देने से उन्होंने इन्कार किया। वाशिंगटन में अपनी पराजय के बाद उन्होंने जनता तक अपनी बात पहुंचाने के लिए देश भर का दौरा किया और जोरदार शब्दों में इस विषय की पैरवी की।

शान्ति प्रयत्नों और युद्धकालीन राष्ट्रपति के पद के दबावों के कारण शारीरिक रूप से अशक्त हो जाने पर २५ सितम्बर, १९१९ को प्यूब्लो (कोलोराडो) में उन पर घातक पक्षाघात हुआ जिससे वे फिर अच्छे न हो सके। मार्च, १९२० में सेनेट ने अपनी अन्तिम वोट में वर्सेलीज सन्धि व राष्ट्रसंघ प्रतिज्ञापत्र दोनों को ही अस्वीकृत कर दिया। इसके बाद अमरीका अधिकाधिक रूप से अलगाव की नीति अपनाता गया। विल्सन के साथ ही आदर्शवाद की वृत्ति समाप्त हो गयी और उदासीनता का युग आरम्भ हुआ।

१९२० के राष्ट्रपति चुनाव में स्वयं विल्सन के दल ने ओहायो के राज्यपाल जेम्स एम. काक्स को खड़ा किया जो कभी भी विल्सन प्रशासन से अधिक सम्बन्धित नहीं रहे थे। रिपब्लिकन उम्मीदवार वारेन जी. हार्डिंग की प्रबल सफलता से विल्सनवाद का सार्वजनिक रूप से खण्डन हो गया। यद्यपि चुनाव प्रचार में हार्डिंग ने राष्ट्रसंघ के विषय पर कोई प्रत्यक्ष विचार व्यक्त नहीं किए थे तथापि उनकी और उनके रिपब्लिकन उत्तराधिकारियों की विदेश नीति सामान्यत: अलगाववाद का ही समर्थन करती रही।

यह पहला चुनाव था जिसमें समस्त राष्ट्र की स्त्रियों ने राष्ट्रपति पद के उम्मीदवारों के लिए मतदान किया। युद्धकाल में विल्सन ने स्त्रियों को मतदान के अधिकार देने के लिए एक संवैधानिक संशोधन का नेतृत्व किया था। युद्ध प्रयत्नों में अमरीकी स्त्रियों के योगदान ने उनकी नागरिक क्षमता और मतदान के अधिकारों की योग्यता को स्पष्ट कर दिया। जून, १९१९ में कांग्रेस ने राज्यों के सामने उन्नीसवां संशोधन प्रस्तुत किया और वह समय से स्वीकृत हो गया। फलतः आगामी वर्ष स्त्रियों को मतदान के अधिकार मिल गए।

रूढ़िवादी नीतियां व्यापक हुईं

सामान्य समृद्धि जो कम-से-कम नगरीय क्षेत्रों में व्यापक थी, के कारण तीसरे दशक के वर्षों में अमरीकी सरकार की नीति प्रधानतः रूढ़िवादी रही। यह उस विश्वास पर आधारित थी कि अगर सरकार वैयक्तिक व्यापार को बढ़ाने का हर संभव प्रयत्न करती है तो समृद्धि का फल जनता के सब वर्गों को मिलेगा।

तदनुसार, रिपब्लिकन सरकार की नीतियों का आशय अमरीकी उद्योग के लिए अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न करना था। १९२२ और १९३० के टैरिफ ऐक्टों द्वारा आयात शुल्क की दरों को इतना ऊँचा कर दिया गया कि अमरीकी उत्पादकों को एक के बाद दूसरे क्षेत्रों में देशीय बाजार का एकाधिकार मिलता गया। इनमें से दूसरे टैरिफ, १९३० के स्मूट-हावले कानून में इतने ऊँचे शुल्क की व्यवस्था थी कि एक हजार से अधिक अमरीकी अर्थ-शास्त्रियों ने राष्ट्रपति हूवर से अपील की कि वे उसके विरुद्ध अपने निषेधाधिकार का प्रयोग करें। बाद की घटनाओं से उनकी यह भविष्यवाणी सत्य भी प्रमाणित हुई कि इस कानून के कारण दूसरे राष्ट्र हानिपूर्ण बदला लेने का प्रयत्न करेंगे। केन्द्रीय सरकार ने टैक्स घटाने का एक कार्यक्रम भी चालू किया। कोषमन्त्री एण्ड्रू मैलन को यह विश्वास था कि अधिक आयकर के कारण धनी पुरुष औद्योगिक संस्थाओं में पूंजी नहीं लगायेंगे। उन्होंने प्रस्ताव किए कि युद्धकाल के आयकर, अतिरिक्त लाभ कर और निगम कर एकदम निरस्त कर दिए जाने चाहिए या उनमें भारी कमी होनी चाहिए और १९२१ व १९२९ के बीच कांग्रेस द्वारा पारित कानूनों में इनका समर्थन किया गया।

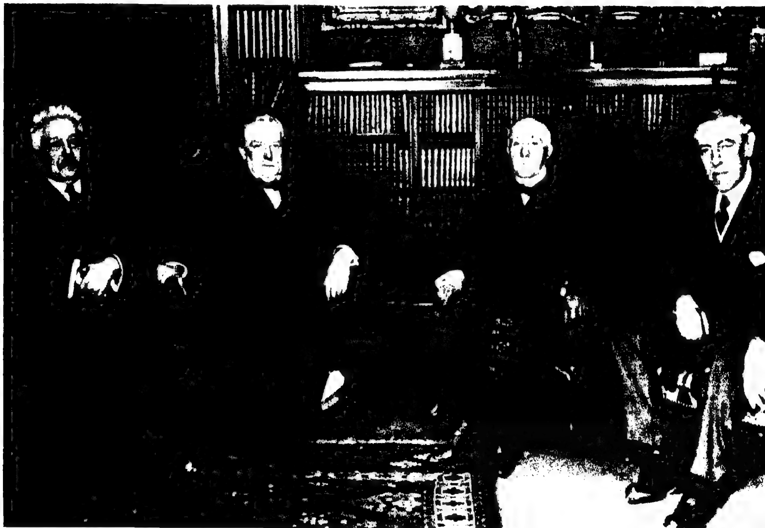
तीसरे दशक में वैयक्तिक व्यवसाय को काफी प्रोत्साहन दिया गया। राष्ट्रीय रेल व्यवस्था जो युद्धकाल में दृढ़ सरकारी नियन्त्रण में थी, १९२० के यातायात कानूनों द्वारा निजी प्रबन्ध में लौटा दी गयी। व्यापारिक जहाज जो १९१७ और १९२० के बीच काफी मात्रा में सरकार के थे और सरकार द्वारा ही चलाए जाते थे, निजी परिचालकों के हाथ बेच दिए गए। निर्माण ऋण, डाक व्यवस्था के लाभकारी अनुबन्ध और अन्य अप्रत्यक्ष अनुपूर्तियां भी दी गयीं। शायद निजी व्यवसाय को सबसे बड़ी मदद बिजली उत्पादन क्षेत्र में दी गयी। युद्धकाल में सरकार ने टेनेसी नदी की मसल शोल नामक ३७ मील लम्बी तीव्र धारा के उत्थान पर नाइट्रेट उत्पादन के दो कारखाने स्थापित किए थे और बिजली उत्पादन के लिए नदी पर कई बांध भी बनाए गए थे। १९२८ में कांग्रेस के दोनों सदनों ने बिजली के सार्वजनिक उत्पादन और विक्रय के लिए एक अधिनियम भी पारित कर दिया था। परन्तु राष्ट्रपति हूवर ने अपने अधिकार से उसका निषेध कर दिया। बाद में फ्रैंकलिन डी. रूज़वेल्ट के राष्ट्रपति होने पर इसी मसल शोल परियोजना ने टेनेसी घाटी अधिकरण का रूप लिया।

इसी बीच रिपब्लिकन प्रशासन की नीतियों को कृषि क्षेत्र से गहरे विरोध का सामना करना पड़ा क्योंकि १९२० के बाद की समृद्धि में किसानों को ही सबसे कम हिस्सा मिला था। १९०० से १९२० तक का काल खेती के लिए सामान्य समृद्धि का था और कृषि पदार्थों के मूल्य बढ़ते रहे थे। युद्धकाल में कृषि पदार्थों की अपूर्व मांग के कारण उत्पादन को बहुत प्रोत्साहन मिला था। किसानों ने कभी न जोते गए या बहुत समय से खाली पड़े कम उपजाऊ खेतों में भी काम शुरू कर दिया था। अमरीकी खेतों का मूल्य बढ़कर दुगना-तिगुना हो गया और किसानों ने ऐसा सामान और ऐसी मशीनें खरीदना शुरू किया जो पहले उनकी सामर्थ्य से बाहर थीं। परन्तु १९२० के अन्त में जब युद्धकालीन मांगें एकाएक समाप्त हो गयीं तो व्यापारिक फसलों की खेती लाभदायक न रही। जब १९३० में सार्वजनिक मन्दी आयी तो स्थिति जो पहले से ही चिन्ताजनक थी और भी खराब हो गयी।

१९२० से १९२९ के बीच का अमरीका

अमरीकी कृषि में मन्दी के कई कारण थे। परन्तु उनमें विदेशी मण्डियों का हाथ से निकल जाना प्रमुख था। अमरीकी किसान उन क्षेत्रों में आसानी से विक्रय नहीं कर सकते थे जहां से अपने आयात शुल्कों के कारण अमरीका कोई सामान नहीं खरीदता था। अमरीकी निर्यात का स्थान अर्जेण्टाइना और आस्ट्रेलिया के पशु-धन सम्बन्धी उत्पादन, कैनाडा और पोलैण्ड के बेकन, अर्जेण्टाइना, आस्ट्रेलिया कैनाडा, रूस और मंचूरिया के खाद्यान्न और भारतीय चीनी, रूस और ब्राजील

१९१९ के पेरिस शान्ति सम्मेलन के प्रतिनिधियों ने सन्धि करने का अधिकार जिन ४ व्यक्तियों को सौंपा वे थे (बायें से दायें) इटली के आरलैण्डो, ग्रेट ब्रिटेन के ल्वायेड जार्ज, फ्रांस के क्लीमेन्सो और संयुक्त राज्य अमरीका के विल्सन।



की कपास ने ले लिया। उसके लिए धीरे-धीरे विश्व-मण्डियों के सभी द्वार बन्द होने लगे।

आप्रवासन पर प्रतिबन्ध—अमरीकी नीति में १९२० के बाद का एक महत्वपूर्ण परिवर्तन था। बीसवीं शताब्दी के प्रथम पन्द्रह वर्षों में १,३०,००,००० से अधिक व्यक्ति अमरीका में आए। कुछ समय से इस असीमित आप्रवासन के विरुद्ध जनता का रोष बढ़ रहा था। अमरीका अब अपने आपको यह नहीं समझता था कि उसके पास बसाने योग्य विशाल आन्तरिक क्षेत्र है और वह नया आप्रवासन स्वीकार नहीं करना चाहता था। बहुत से अधिनियमों द्वारा जिनका चरमबिन्दु १९२४ का 'आप्रवासन कोटा कानून' था, आप्रवासियों की वार्षिक संख्या १,५०,००० तक सीमित कर दी गयी। इसका वितरण विभिन्न देशों के व्यक्तियों में उसी अनुपात के अनुसार किया जाना था जिस संख्या में उस देश के निवासी १९२० में अमरीका में पहले से ही मौजूद थे। इस उपाय से आप्रवासन वरणात्मक बन गया; अधिकतर व्यक्ति अब उत्तरी और पश्चिमी के बजाय दक्षिणी और पूर्वी यूरोप से आते थे। संख्या की तीक्ष्णता से सीमित करके विश्व इतिहास के सबसे बड़े और तीन शताब्दी पुराने जनसंख्या के स्थानान्तरण को समाप्त कर दिया गया। १८२० से लेकर १९२९ तक यूरोप से अमरीका में ३,२०,००,००० से अधिक व्यक्ति आए, यहां नया घर बसाया, नया जीवन आरम्भ किया और देश की संस्कृति को बहुत अधिक अंशदान दिया।

जब आप्रवासियों की धारा धीमी होते-होते बहुत कम हो गयी तो थोड़ी परन्तु महत्वपूर्ण संख्या में अमरीकी लोग यूरोप जाने लगे। ये आप्रवासी लेखक व बुद्धिजीवी थे; उनका बाहर जाने का आशय बृहत प्रवास आन्दोलन में भाग लेना नहीं था बल्कि राष्ट्रीय त्रुटियों की आलोचना करना था। अमरीका में कला और विचारों की कमी अनुभव करके ये लोग मुख्यतः पेरिस गए। उनका आरोप था कि अमरीकी संस्कृति अत्यधिक भौतिकवादी है और तत्कालीन समृद्धि से इसकी पुष्टि होती थी। इस आरोप से भी अधिक महत्वपूर्ण आरोप था शुद्धाचारवाद के बारे में। इस शुद्धाचार का प्रतीक था शराब के उत्पादन व बिक्री पर रोक जो लगभग एक शताब्दी के आन्दोलन के बाद १९१९ में, विधान में १८ वें संशोधन द्वारा लागू कर दी गयी। शराबबन्दी के समर्थकों का आशय था अमरीका से शराब खानों और सुरापान का विलोपन। परन्तु इससे हजारों गैर-कानूनी शराबखाने खुल गए और चोरी से शराब बनाने वालों के लिए अवैध किन्तु लाभप्रद व्यवसाय पैदा हो गया। इसके अतिरिक्त ऐसे कानून का जिसका इतना अधिक उल्लंघन होता हो, अस्तित्व मात्र भी नैतिक रूप से मिथ्याचार था। बहुत से अमरीकी शराबबन्दी के परिणामों की तुलना हार्डिंग युग के व्यापक भ्रष्टाचार से करते थे। अमरीकी साहित्य में भी इसकी कड़ी आलोचना एक मुख्य विषय बन गया। पत्रकार और समालोचक एच. एल. मेन्केन ने अमरीकी जीवन व चरित्र की खुल कर निन्दा की। वह बहुत ही लोकप्रिय हो गए। सिन्क्लेयर लुई से अधिक शायद ही किसी गम्भीर उपन्यासकार की पाठक संख्या रही हो जिनके "मेन स्ट्रीट" और "बेबिट" नामक उपन्यासों में अमरीकी मध्यवर्ग के जीवन पर उपहास राष्ट्रीय चेतना के महत्वपूर्ण चिन्ह बन गए। दुर्भाग्य से अमरीका की अमरीकियों द्वारा यह आलोचना राष्ट्र के सर्वाधिक समृद्धि-काल में हुई; मन्दी और उसके बाद विदेश में सैनिकवाद व फासिज्म के डर से अमरीकी बुद्धिजीवी अपने देश लौट आए और देश की मानवीय व लोकतंत्रीय परम्पराओं और भौतिक साधनों के प्रति उनमें स्नेह व आस्था का नये सिरे से विकास हुआ।

बीसवीं सदी में यह प्रतीत होता था कि समृद्धि सदैव बनी रहेगी; यद्यपि १९२९ के वसन्त में शेयर बाजार डूब चुका था फिर भी उच्च सूत्रों से आशाजनक पूर्व अनुमान मिलते रहे। परन्तु मन्दी शीघ्रता से और लगातार बढ़ती गयी; देश की आर्थिक स्थिति बहुत अधिक नीचे गिर गयी, लाखों धन लगाने वालों की उम्र भर की बचत डूब गयी, व्यापारिक संस्थाएं और कारखाने बन्द हो गए, बैंक डूब गए और लाखों बेरोजगार लोग काम की खोज में सड़कों पर चक्कर लगाने लगे। अमरीकी इतिहास में १८७० की बहुत पहले भूली हुई मन्दी को छोड़कर इस प्रकार का दूसरा कोई अनुभव नहीं है।

रूज़वेल्ट मन्दी से जूझे

जैसे-जैसे लोग पहले धक्के से सम्भले और उन्होंने अपनी कठिनाइयों के मूल कारणों की पड़ताल शुरू की तो उनको कई हानिकारक प्रवृत्तियों का पता चला जो कि १९२० की समृद्धि के आवरण के नीचे छिपी हुई थीं। गड़बड़ का मुख्य कारण था अमरीकी उद्योग की उत्पादन शक्ति और अमरीकी जनता की उपभोग क्षमता में महान् अन्तर। युद्ध काल में और उसके बाद उत्पादन के तरीकों में बड़ी नवीन प्रक्रियाएं की जा चुकी थीं जिसके फलस्वरूप अमरीकी उद्योग का उत्पादन अमरीकी श्रमिकों और किसानों की क्रयक्षमता से कहीं अधिक बढ़ गया था। धनी और मध्यवर्ग के लोगों की बचत इतनी अधिक बढ़ गयी

कि उसके ठोस निवेश की सम्भावना नहीं रही और यह धन शेयर बाजार या जायदाद के सट्टे में लगाया जाने लगा। शेयर बाजार का डूबना तो उन बहुत से धमाकों में से केवल पहला था जिन्होंने सट्टे की कमजोर इमारत को ढहा दिया।

१९३२ के राष्ट्रपति-चुनाव-प्रचार ने बढ़ी हुई मन्दी के कारण और उपचारों के ऊपर वादविवाद का रूप ले लिया। हरबर्ट हूवर ने जो दुर्भाग्य से शेयर बाजार के डूबने से केवल आठ महीने पहले ही राष्ट्रपति हुए थे, उद्योग-चक्र फिर से चलाने का अथक प्रयत्न किया था। परन्तु यह उन्होंने संघीय सरकार की भूमिका की परम्परागत धारणा की सीमा के अन्दर रहते हुए ही किया था, और इसलिए वह कोई उग्र कार्रवाई नहीं कर सके। उनके लोकतन्त्रवादी प्रतिद्वन्द्वी फ्रैंकलिन डी. रूज़वेल्ट जो बढ़ते हुए संकट के समय में पहले से ही न्यूयार्क राज्य के गवर्नर होने से लोकप्रिय थे, ने यह तर्क पेश किया कि अमरीकी अर्थव्यवस्था के दोषों, जिनमें तीसरी दशाब्दी की रिपब्लिकन नीतियों से वृद्धि हुई है, के कारण ही मन्दी आई है। राष्ट्रपति हूवर ने उत्तर दिया कि अमरीकी अर्थ-व्यवस्था मूल रूप से ठीक है परन्तु विश्व-युद्ध के फलस्वरूप संसार भर में मन्दी आने के कारण ही उसमें गड़बड़ी आई है। इस तर्क के पीछे एक स्पष्ट आशय था : हूवर पुनर्लाभ के प्राकृतिक तरीकों पर ही निर्भर रहना पसन्द करते थे जब कि रूज़वेल्ट साहसपूर्ण प्रयोगात्मक उपचार के लिए संघीय सरकार के अधिकार का प्रयोग करने को तैयार थे। चुनाव का परिणाम हुआ रूज़वेल्ट की जोरदार विजय, उन्हें हूवर के १,५०,००,००० वोटों के मुकाबले २,२८,००,००० वोट प्राप्त हुए। उपस्थित समस्याओं का सामना नए राष्ट्रपति ने उत्फुल्ल विश्वासपूर्वक किया जिससे वह शीघ्र ही लोकप्रिय हो गए। उनके पदासीन होने के कुछ ही समय में सुधारों की वह जटिल पद्धति जो 'न्यू डील' के नाम से जानी जाती है, शुरू हो गयी। वास्तव में कुछ सुधारों की, जो कि पिछले पचास वर्षों से बढ़ रहे थे, गति अब बहुत तेज कर दी गयी थी। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि "न्यू डील" ने अमरीका में केवल उन सुधारों का समावेश किया जो इंग्लैण्ड, जर्मनी और स्कैंडिनेविया में एक पीढ़ी से अधिक पहले से जारी थे। इसके अतिरिक्त इनसे तटस्थ सिद्धान्त को छोड़ने की प्रवृत्ति, जो कि १८८०-८९ से रेल परिवहन विनिमय और विल्सन-थियोडोर रूज़वेल्ट युग के अनेक संघीय व राज्यीय सुधारों से चली आ रही थी, उच्चतम शिखर पर पहुँच गयी। इसकी अत्यन्त अनोखी बात थी वह गति जिससे वह कार्य पूरा हुआ, जिसे करने में अन्य स्थानों में पूरी पीढ़ियां गुजर गयी थीं। 'न्यू डील' के अन्तर्गत बहुत से सुधारों की रूपरेखा

फ्रैंकलिन डेलिनो रूज़वेल्ट, १९३२ में, राष्ट्रपति पद के लिए अपने चुनाव आन्दोलन के दौरान में मध्य पश्चिमी राज्य, कैंसास, के किसानों को 'न्यू डील' का आश्वासन दे रहे हैं। अपने आकर्षक व्यक्तित्व और उदार दल के कारण वे चुनाव भी जीते।



जल्दी में बनायी गयी थी और उन्हें दृढ़तापूर्वक लागू नहीं किया गया, कुछ तो वास्तव में परस्पर विरोधात्मक थे। परन्तु जब इतनी कठिन समस्या का समाधान इतनी जल्दी में किया जा रहा था तो थोड़ी-सी गड़बड़ी स्वाभाविक ही थी। 'न्यू डील' के समस्त काल में, फैसला करने और उन्हें लागू करने की गति के इतने तेज होते हुए भी, सार्वजनिक समालोचना और चर्चा के लोकतन्त्रात्मक तरीके को कभी भी रोका या बन्द नहीं किया गया। वास्तव में 'न्यू डील' के कारण नागरिक व्यक्तिगत रूप से अपनी सरकार में अधिक रुचि लेने लगे।

जब रूजवेल्ट ने राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण की, देश की बैंकिंग और ऋण प्रणाली अपंग अवस्था में थी। आश्चर्यजनक गति से कुछ अच्छे बैंक फिर से व्यवसाय के लिए खोल दिए गए। मामूली-सी मुद्रा स्फीति की नीति अपनायी गयी जिससे चीजों के मूल्य बढ़ने लगे और कर्जदार लोगों को भी कुछ राहत मिली। सरकार के नए अभिकरण द्वारा कृषि और उद्योग दोनों को ही ऋण की उदारतापूर्ण सुविधाएं प्रदान की गयीं। बचत बैंकों में ५,००० डालर तक के जमाखातों का बीमा कर दिया गया। स्टाक एक्सचेंज में ऋण-पत्रों की बिक्री पर कड़े प्रतिबन्ध लगाए गए।

कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार शुरू किए गए। कांग्रेस द्वारा १९३३ में पारित कृषि समंजन कानून को जब तीन वर्ष बाद सर्वोच्च न्यायालय ने अवैधानिक मानकर रद्द कर दिया तो कांग्रेस ने खेती की सहायता के लिए अधिक प्रभावी कानून बनाया। इस कानून द्वारा इस प्रकार की व्यवस्था की गयी कि सरकार उन किसानों को धन का भुगतान करेगी जो कि अपनी जमीन के कुछ भाग में भूमि संरक्षक फसलें लगायेंगे या कार्यक्रम के दीर्घकालीन कृषि सम्बन्धी उद्देश्यों में सहयोग देंगे। १९४० तक करीब ६० लाख कृषक इस कार्यक्रम में भाग ले रहे थे और उन्हें केन्द्रीय आर्थिक सहायता मिलती थी। इस नए कानून द्वारा अतिरिक्त फसलों पर ऋण, गेहूँ की फसल का बीमा, राष्ट्र और कृषकों के लिए आयोजित गोदामों की प्रणाली, द्वारा 'अक्षय अन्न भण्डार' की सुनिश्चितता की व्यवस्था भी थी। इन उपायों का परिणाम यह हुआ कि कृषि सम्बन्धी सामग्रियों के मूल्य बढ़ गए और कृषकों के लिए आर्थिक स्थिरता की सम्भावना दिखायी देने लगी।

'न्यू डील' द्वारा सामाजिक सुधार

फार्म के काश्तकारों की स्वतन्त्रता के लिए भी प्रयास किए गए। केन्द्रीय सरकार ने काश्तकारों को सरल शर्तों पर फार्म खरीदने में आर्थिक सहायता दी। सरकार ने फार्म-ऋणों के लिए पुनः आर्थिक व्यवस्था की और इससे फार्म बन्धक कर्ताओं को राहत मिली। नव निर्मित 'कमाडिटी क्रेडिट कारपोरेशन' द्वारा सीधे ही कृषकों को उधार दिया जाने लगा। उसके साथ ही साथ विदेश मन्त्री कॉर्डेल हल की देख-रेख में यह भी प्रयास किया गया कि कुछ विदेशी बाजारों को पारस्परिक समझौतों द्वारा पुनः प्राप्त कर लिया जाय जिससे आर्थिक आत्म-निर्भरता की वह प्रवृत्ति जिसकी ओर अमरीका 'ऊँचे आयात शुल्क' के काल से झुका हुआ था, भंग हो जाय। जून १९३४ के व्यापारिक समझौता कानून के आधार पर विदेश मन्त्री हल ने कैनाडा, क्यूबा, फ्रांस, रूस और अन्य बीस देशों के साथ शर्तरहित अत्यधिक अनुकूल पारस्परिक व्यापार सन्धियां कीं। एक वर्ष में ही अमरीकी व्यापार में प्रचुर सुधार हुआ और १९३९ तक कृषि आय, सात वर्ष पहले की तुलना में, दुगनी से भी अधिक हो गयी।

रूजवेल्ट प्रशासन के प्रारम्भिक काल में 'न्यू डील' का उद्योग सम्बन्धी कार्यक्रम प्रायोगिक अवस्था में था। १९३३ में एक राष्ट्रीय पुनर्लाभ प्रशासन की स्थापना प्रधानतः इस विचार के आधार पर की गयी कि उत्पादन पर नियन्त्रण और उच्चतर मूल्य निर्धारण से संकट की स्थिति का समाधान हो जायगा। किन्तु सर्वोच्च न्यायालय द्वारा एन. आर. ए. को असंवैधानिक घोषित करने से पूर्व ही इसकी असफलता की चर्चा सब तरफ थी। इस समय तक पूर्व स्थिति पर पहुँचने के लिए अन्य प्रशासन नीतियों के प्रोत्साहन से कुछ शुरुआत भी हो गयी थी। प्रशासन ने शीघ्र ही अपने में परिवर्तन किया और इस आधार पर कार्य आरम्भ किया कि व्यापार के कुछ क्षेत्रों में प्रशासित मूल्य राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के लिए घाटा पहुँचाने वाली चीज के समान है और पूर्व स्थिति पर पहुँचने में बाधक है।

तथापि, इस बीच सामान्य स्थिति पर पहुँचने के लिए बहुत उन्नति हो चुकी थी। संघीय सरकार ने बेरोजगारों की सहायता, सार्वजनिक निर्माण और राष्ट्रीय साधनों के संरक्षण कार्यों में करोड़ों डालर खर्च किए। इन समुद्दीपन व्यय द्वारा देश में अमरीकी उद्योग के लिए नयी मांगें पैदा की गईं। 'न्यू डील' योजना काल में संगठित श्रमिकों ने अमरीकी इतिहास के किसी भी पहले समय की तुलना में अधिक लाभ प्राप्त किया। एन. आर. ए. के अनुभाग ७ (अ) में श्रमिकों को सामूहिक सौदेकारी के अधिकार की गारंटी दी गयी थी। रद्द किए गए एन. आर. ए. के श्रमिक उपबन्ध की स्थान-पूर्ति के लिए कांग्रेस ने जुलाई १९३५ में राष्ट्रीय श्रम सम्बन्ध कानून (नेशनल लेबर रिलेशन्स ऐक्ट) पारित किया जिसके अनुसार सामूहिक सौदेकारी प्रक्रिया की देखभाल के लिए एक श्रमिक बोर्ड की

स्थापना की गयी। यह श्रमिक बोर्ड चुनावों का प्रशासन करता था। श्रमिकों को मालिकों से बातचीत करने में अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए संगठन चुनने के अधिकार दिए गए थे। अमरीकी श्रमिक संघ (ए. एफ. एल.) जो दस्तकार संघवाद के सिद्धान्त में विश्वास करता था, असंगठित श्रमिकों को संगठित करने में सक्रिय न था। जब कुछ बड़ी यूनियनें इस अवस्था से असन्तुष्ट हुई तो उन्होंने नाता तोड़कर एक अन्य केन्द्रीय संघ, कांग्रेस आफ इण्डस्ट्रियल आरगनाइजेशन (सी. आई. ओ.) की स्थापना की और आश्चर्यजनक सफलतापूर्वक संगठन-आन्दोलन जारी किया--विशेषत: मोटरगाड़ी और इस्पात उत्पादन जैसे बुनियादी उद्योगों में। सी. आई. ओ. की प्रतियोगिता के कारण ए. एफ. एल. ने भी उन्नति की। संगठित श्रमिकों की संख्या १९२९ में ४०,००,००० से लेकर १९३९ में १,१०,००,००० और १९४८ में १,६०,००,००० हो गयी। श्रमिकों की शक्ति केवल उद्योग में ही नहीं बल्कि राजनीतिक क्षेत्र में भी बढ़ी क्योंकि संगठन से राजनीतिक रुचि उत्पन्न हुई। तथापि, उन्होंने इस शक्ति का उपयोग मुख्यत: द्विदलीय राजनीतिक ढांचे तक ही सीमित रखा। डेमोक्रेटिक दल को रिपब्लिकन दल के मुकाबले यूनियनों से अधिक समर्थन प्राप्त हुआ फिर भी अलग से कोई श्रमिक दल नहीं बनाया गया।

वृद्धावस्था में बेरोजगारी और परावलम्बन के खतरे की रोकथाम के लिए जो बहुत समय से सार्वजनिक चर्चा का विषय रहा है, १९३५ से सामाजिक सुरक्षा कानून के अन्तर्गत बहुत प्रकार के श्रमिकों के लिए पैंसठ वर्ष की आयु के उपरांत थोड़े-से निवृत्ति भत्ते की व्यवस्था की गयी। इस प्रयोजन के लिए श्रमिकों और मालिकों के अनुदान से एक बीमा निधि बनायी गयी। सब आयु के सक्रिय श्रमिकों के लिए बेरोजगारी भत्ते का प्रशासन राज्यों द्वारा किया जाता था और इसके लिए रकम संघीय अनिवार्य वेतन-कर द्वारा प्राप्त की जाती थी। १९३८ तक प्रत्येक राज्य में किसी न किसी रूप में बेरोजगारी बीमा व्यवस्था हो गयी थी।

१९३०-३९ में लगातार अनावृष्टि के कारण 'ओमनीबस फ्लड कण्ट्रोल बिल' पास हुआ जिसके अनुसार बहुत-से बड़े जलाशय और शक्ति उत्पादन के लिए बांध व कई हजार छोटे बांध बनाने की व्यवस्था हुई। अपने विपुल साधनों के कारण अमरीकी लोग अपने प्राकृतिक धन के प्रति अत्यन्त लापरवाह रहे थे। बहुत से इलाकों में मिट्टी के कटाव के कारण धरती पर जगह-जगह बड़े-बड़े हिस्से खाली छोड़े जाने लगे थे। इसको रोकने के लिए, विशेषत: मध्यपश्चिम के मैदानों में, भूमि संरक्षण



फोर्ट लाउडन बांध का निर्माण। यह बांध 'टेनेसी वैली एथारिटी' (टेनेसी घाटी अधिकरण) का ही एक अंग है। घाटी के ४५ लाख निवासियों के हितार्थ वेगवती टेनेसी नदी को बांधना इस योजना का लक्ष्य था।

का वृहत् कार्यक्रम तेजी से चालू किया गया जिसके अनुसार वृक्षों की एक विशाल रक्षा पट्टी लगायी गयी। अन्य महत्वपूर्ण कामों में जलधाराओं को गन्दी होने से रोकना; मत्स्य, वनपशु व पक्षियों के आरक्षित स्थानों की स्थापना; कोयला, पेट्रोलियम शेल, गैस, सोडियम और हीलियम के भूमिगत भण्डारों का संरक्षण; कुछ चरागाहों का खेती के लिए बन्द करना और राष्ट्रीय वनों में वृद्धि करना शामिल था।

'टी० वी० ए०' एक आदर्श बना

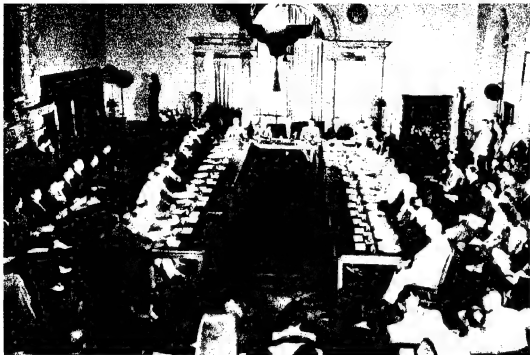
इन सब उपायों में से कदाचित सबसे अधिक भावी महत्व का काम था टैनेसी घाटी अधिकरण (टी. वी. ए.) की स्थापना जिसने इस परियोजना को शीघ्र ही सामाजिक और आर्थिक परीक्षणों के लिए एक व्यापक प्रयोगशाला का रूप दे दिया। मसल शोल, अलाबामा में, मुख्य बांधों के अतिरिक्त नोरिस, विकविक चिकामागो और अन्य कई छोटे सहायक बांध बनाए गए। इन बांधों का उपयोग नौपरिवहन में सुधार, बाढ़ नियन्त्रण और नाइट्रेट उत्पादन के अतिरिक्त बिजली उत्पादन के लिए भी हुआ। सरकार ने लगभग पांच हजार मील लम्बी बिजली की लाइनें लगायीं और आसपास के जनसमाजों को बहुत सस्ते दरों पर बिजली बेची जिससे उसकी बहुत अधिक खपत हो सके। 'टी. वी. ए.' से सम्बद्ध एक कम्पनी ने देहातों में बिजली-प्रसार के लिए वित्तीय सहायता दी। 'टी. वी. ए.' ने कम उपजाऊ भूमि को खेती से बाहर कर दिया, उनके किसानों को नयी जमीनें लेने में सहायता दी, कृषि परीक्षण किए, विशेषत: फास्फेट पूरक खादों के प्रयोग में और जन-स्वास्थ्य व मनोरंजन की सुविधाओं की व्यवस्था की।

न्यू डील के लगभग समस्त कार्यों की आलोचना न केवल रिपब्लिकन दल ही लगातार करता रहा बल्कि कभी-कभी स्वयं डेमोक्रेटिक दल के सदस्यों ने भी की। १९३६ के चुनाव में राष्ट्रपति रूजवेल्ट के प्रतिद्वन्द्वी कंसास के गवर्नर एल्फ्रेड एम. लण्डन द्वारा न्यू डील की कटु आलोचना के उपरान्त भी रूजवेल्ट की १९३२ से भी अधिक जोरदार विजय हुई। (बाद के राष्ट्रपति चुनावों के रिपब्लिकन उम्मीदवार, १९४० में वेण्डेल विल्की और १९४४ व १९४८ में थामस ई. डीवी ने स्पष्ट रूप से कहा कि न्यू डील की बहुत सी उपलब्धियां हैं जिन्हें वे स्वीकार करते हैं)।

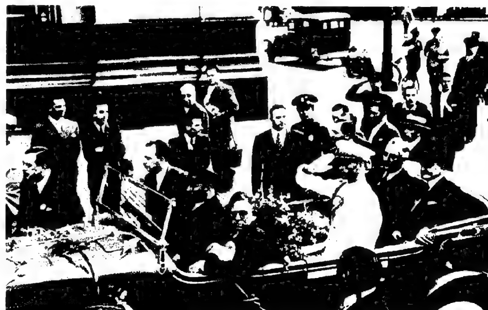
१९३२ से लेकर १९३८ तक जनमत के प्रत्येक मुखपत्र में न्यू डील की नीतियों का राष्ट्रीय, आर्थिक व राजनीतिक जीवन पर प्रभाव के बारे में वाद-विवाद होता रहा। जैसे-जैसे समय बीतता गया यह स्पष्ट हो गया कि सरकार सम्बन्धी अमरीकी



साहित्य के लिए नोबुल पुरस्कार पाने वाले प्रथम अमरीकी उपन्यासकार सिंक्लेयर लेविस। उन्होंने अमरीका के मध्यमवर्ग पर अनेक जीवंत एवं विवादास्पद उपन्यास लिखे। २०वीं शताब्दी के तीसरे दशक में वे देश के एक प्रतिष्ठित व प्रभावशाली साहित्यिक थे।



वाशिंगटन डी. सी. के निकट डम्बार्टन ओक्स में अमरीकी, ब्रिटिश और सोवियत संघ के प्रतिनिधियों की सभा। युद्ध के बाद की समस्याओं पर कई सप्ताह के विचार-विनिमय के फलस्वरूप एक अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा संगठन बनाने की योजना सामने आयी।



१९३६ में, शान्ति को कायम रखने के उद्देश्य से ब्यूनो एयर्स में आयोजित अन्तर-अमरीकी सम्मेलन के लिए जाते हुए 'उत्तम पड़ोस' नीति के जन्मदाता राष्ट्रपति रूजवेल्ट।

संकल्पना बदल रही है। जनता के कल्याण की अधिकतर जिम्मेदारी सरकार पर है इसको लोग अधिक मानने लगे हैं। न्यू डील के कुछ आलोचकों का कहना था कि इस पैमाने पर सरकारी कार्रवाइयों के विस्तार का परिणाम यही होगा कि लोगों की स्वतन्त्रता कम हो जायगी। राष्ट्रपति रूजवेल्ट और उनके अनेक अनुगामियों ने आग्रहपूर्वक यही उत्तर दिया कि आर्थिक कल्याण के उपायों से स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र को बल मिलेगा। १९३८ में एक रेडियो भाषण में उन्होंने अमरीकियों से कहा "अनेक बड़े राष्ट्रों में लोकतन्त्र लुप्त हो गया है, इसलिए नहीं कि लोग लोकतन्त्र को नापसन्द करते थे परन्तु इसलिए कि वे बेरोजगारी और अस्थिर स्थिति से तंग आ गए थे, वे देखते थे कि उनके बच्चे भूखे हैं और वे कुछ नहीं कर सकते जब कि समुचित नेतृत्व के अभाव में सरकार कमजोरी और गड़बड़ी में पड़ी हुई थी। अन्त में नैराश्य की अवस्था में उन्होंने कुछ खाना मिलने की आशा से स्वतन्त्रता का बलिदान कर दिया। हम अमरीकी लोग जानते हैं कि हमारा लोकतन्त्र कायम रह सकता है और उससे काम लिया जा सकता है। परन्तु उसे कायम रखने के लिए हमें यह साबित कर देना होगा कि लोकतन्त्रीय शासन की व्यावहारिक क्रिया द्वारा लोगों की सुरक्षा का संरक्षण हो सकता है।...अमरीकी लोग अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा किसी भी मूल्य पर करने पर सहमत हैं और बचाव का पहला मार्ग आर्थिक सुरक्षा का संरक्षण है।"

यद्यपि रूजवेल्ट का घरेलू कार्यक्रम विल्सन के १० वर्ष से अधिक पहले के कार्यक्रम के समान ही प्रभावी था परन्तु उनकी दूसरी अवधि के शुरू ही में वैदेशिक मामलों के शोर ने उसे ढंक-सा लिया। समुद्र पार, सामान्य अमरीकी की नजर से परे, शान्ति, नियम और अन्ततः अमरीकी सुरक्षा के लिए एक नया खतरा पैदा हो गया था—जापान, इटली और जर्मनी का समग्रवाद। १९३० की दशाब्दी के शुरू में इनमें से एक राष्ट्र ने हमला कर दिया। १९३१ में जापान ने मंचूरिया पर चढ़ाई कर दी, चीनियों को कुचल दिया और एक वर्ष बाद मंचुकुओ के कठपुतली राज्य की स्थापना की। इटली ने फासिस्टवाद के हाथों पड़कर लीबिया में अपने सीमान्त का विस्तार किया और १९३५-३६ में इथोपिया को अधीन कर लिया। जर्मनी ने, जहां एडाल्फ हिटलर ने राष्ट्रीय समाजवादी दल संगठित किया था और शासन की बागडोर हथिया ली थी, फिर से राइनलैण्ड पर कब्जा कर लिया और बड़े पैमाने पर फौजी तैयारी शुरू की।

चूंकि समग्रवाद का असली रूप स्पष्ट हो गया और चूंकि जर्मनी, इटली और जापान ने एक के बाद दूसरे छोटे राष्ट्रों पर हमला जारी रखा, अमरीकी आशंका क्रोध में बदल गयी। १९३८ में जब हिटलर ने आस्ट्रिया को राइख में मिला लेने के बाद चेकोस्लोवाकिया के सूडेटनलैण्ड पर भी दावा किया तो किसी भी क्षण लड़ाई छिड़ने की सम्भावना होने लगी। अमरीकी लोग प्रथम महायुद्ध में लोकतन्त्र के लिए धर्मयुद्ध की असफलता देख चुके थे और अब भ्रम से मुक्त होकर उन्होंने यह घोषणा की कि किन्हीं भी परिस्थितियों में युद्धकारी को सहायता नहीं दी जाएगी। तटस्थता विधान में, जो १९३५ से १९३७ तक थोड़ा-थोड़ा करके बनाया गया, किसी भी युद्धकारी राष्ट्र से व्यापार करना या उसे उधार देना निषिद्ध कर दिया गया था। इसका उद्देश्य किसी भी मूल्य पर अमरीका को गैर अमरीकी युद्ध में ग्रस्त होने से रोकना था।

तानाशाहियों ने दूसरा विश्वयुद्ध छेड़ दिया

राष्ट्रपति रूजवेल्ट और विदेश मन्त्री हल—दोनों ने इस विधान का शुरू से ही विरोध किया। राष्ट्रपति ने अब अमरीकियों को इन शक्तियों द्वारा किए गए विनाश से अवगत कराने और अमरीका को नैतिक व भौतिक रूप से तैयार करने का उपक्रम किया। अमरीकी नौसेना को सुदृढ़ करने के लिए उन्होंने बहुत काम किया था, उन्होंने कठपुतली राज्य मंचुकुओ को मान्यता देना अस्वीकार कर दिया। हल के साथ मिलकर उन्होंने 'उत्तम पड़ोसी नीति' द्वारा पश्चिमी गोलार्ध के राष्ट्रों में समैक्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण प्रगति की। १९३५ में जब हल की पारस्परिक व्यापारिक सन्धियों की पुनः पुष्टि की गयी तब उसीके साथ अमरीका ने छः लैटिन अमरीकी राष्ट्रों के साथ सन्धियां कीं और हस्ताक्षरकर्ताओं को वचनबद्ध कर दिया कि बल द्वारा किए गए प्रादेशिक परिवर्तनों को मान्यता न दी जायगी।

चूंकि समग्रवादी नीति अधिक आक्रमणकारी हो गयी और हिटलर ने पोलैण्ड, डेनमार्क, नार्वे, हालैण्ड, बेलजियम और फ्रांस के विरुद्ध युद्ध-गर्जना की इसलिए अमरीकी भावना भी और कठोर हो गयी। अमरीकियों की पहली प्रवृत्ति यूरोपीय संघर्ष से दूर रहने की थी। किन्तु कुछ समय बाद उन्हें इस बात पर विश्वास हो गया कि शक्तियों का जो गुट प्रत्येक की सुरक्षा को धमकी दे सकता है उससे उनकी अपनी सुरक्षा को भी खतरा हो सकता है।

इस विश्वास में शीघ्र ही दृढ़ता लाने का कारण था फ्रांस के पतन से होने वाली नाजी सैनिक शक्ति का प्रदर्शन। जब १९४० के ग्रीष्मकाल में ब्रिटेन पर हवाई आक्रमण आरम्भ हुए तब बहुत कम अमरीकी विचारों में तटस्थ रह गए थे। अमरीका

ने लैटिन अमरीकी गणराज्यों के साथ सम्मिलित होकर पश्चिमी गोलार्ध के लोकतन्त्रीय राष्ट्रों की सम्पत्ति को सामूहिक सुरक्षा प्रदान की। संयुक्तराज्य अमरीका और कैनाडा ने एक संयुक्त रक्षा बोर्ड की स्थापना की। कांग्रेस ने आरोपित संकटों का सामना करने के लिए पुनः शस्त्रीकरण के लिए वृहत धन राशि स्वीकृत की। सितम्बर १९४० में अमरीकी इतिहास में पहला शान्तिकालीन अनिवार्य भरती बिल लागू किया गया।

१९४० में राष्ट्रपति के चुनाव आन्दोलन से अमरीकी मनोभावों की प्रबल एकता का प्रदर्शन हुआ। रूजवेल्ट के प्रतिद्वन्द्वी वेन्डेल विल्की ने राष्ट्रपति की विदेशी नीति का समर्थन किया और चूंकि वह रूजवेल्ट के घरेलू कार्यक्रमों से भी अधिकतर सहमत थे इस कारण उनके पास बाध्यकारी विचार-वस्तु की कमी थी और नवम्बर के चुनाव में रूजवेल्ट को फिर से बहुमत प्राप्त हुआ। अमरीकी इतिहास में यह पहला अवसर था कि एक ही व्यक्ति राष्ट्रपति पद पर तीसरी अवधि के लिए चुना गया।

अधिकतर अमरीकी जब उत्सुकतापूर्वक यूरोपीय युद्ध-गति का निरीक्षण कर रहे थे तब सुदूर पूर्वीय देशों में तनाव बढ़ रहा था। अपनी युद्धनीतिक स्थिति को सुधारने के अवसर से लाभ उठाने की उत्सुकता में जापान ने साहस पूर्वक एक 'नई व्यवस्था' द्वारा सम्पूर्ण दूरपूर्व और प्रशान्त महासागर क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व फैलाने की घोषणा की। स्वयं को प्रतिरोध में असमर्थ देखकर ब्रिटेन लड़ाई से पीछे हट गया और उसने अस्थायी रूप से बर्मा रोड को बन्द कर दिया। १९४० के ग्रीष्म काल में जापान ने कमजोर विची सरकार से फ्रांसीसी हिन्द चीन में हवाईअड्डे इस्तेमाल करने की अनुमति प्राप्त कर ली। सितम्बर में जापान के रोम-बर्लिन धुरी शक्तियों में सम्मिलित हो जाने के बाद संयुक्त राज्य ने जापान को होनेवाला रद्दी लोहे का निर्यात निषिद्ध कर दिया।

युद्ध में तत्परता से संलग्न

१९४० तक यह प्रतीत होने लगा था कि जापानी कदाचित ब्रिटिश मलाया और नीदरलैण्डस इण्डीज के तेल, टिन और रबड़ के लिए दक्षिण दिशा में घूम जाएंगे। जुलाई, १९४१ में जब विची सरकार ने जापानियों को बाकी हिन्दचीन पर अधिकार कर लेने दिया तब संयुक्त राज्य ने जापानी परिसम्पत्ति को जब्त कर लिया। १९ नवम्बर को, जनरल टोजो की सरकार के शासन सम्हाल लेने के बाद साबुरो कुरूसु नामक एक विशिष्ट राजदूत अमरीका आया। कुरूसु ने घोषणा की कि उसके मिशन का उद्देश्य एक शान्तिपूर्ण समझौते पर पहुँचना था और ६ दिसम्बर को राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने जापान के सम्राट के पास एक निजी शान्ति सन्देश भेजा। ७ दिसम्बर की प्रातः जापानियों का जवाब अमरीकी रक्षा सेना के अड्डे पर्ल हारबर पर बमों की बौछार के रूप में आया।

हवाई, मिडवे, वेक, और गुआम पर जापानी हमलों की खबर जैसे ही अमरीकी रेडियो द्वारा प्रसारित की गयी तो अविश्वास क्रोध में परिणत हो गया। राष्ट्रपति रूजवेल्ट के शब्दों में वह "अनुत्तेजित और भीरुतापूर्ण" हमला था। ८ दिसम्बर को कांग्रेस ने जापान के साथ युद्ध स्थिति घोषित कर दी। तीन दिन पश्चात् जर्मनी और इटली ने संयुक्त राज्य अमरीका के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया।

युद्ध का शुरू होना अमरीकी लोगों को एक बड़ी दार्शनिक पराजय-सी लगी। उन्होंने सैन्यवाद को कभी भी पसन्द या स्वीकार नहीं किया और यथासम्भव अमरीकी संविधान में अमरीकी जनजीवन पर असैनिक नियन्त्रण की ही व्यवस्था है। अतः अमरीका में युद्ध को भयानक और दुर्भाग्यपूर्ण परन्तु इतिहास का एक आवश्यक मोड़ माना गया है। कोई भी अमरीकी युद्ध के उद्देश्य को स्थायी शान्ति स्थापना के अतिरिक्त नहीं मानता। ९ दिसम्बर को अमरीकी जनता को युद्ध सन्देश देते हुए राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने उन्हें याद दिलाया कि "हमारा सच्चा उद्देश्य वीभत्स युद्ध-भूमि से बहुत परे और ऊंचा है। जब हम बल प्रयोग का सहारा लेते हैं, जैसा इस समय हमारे लिए आवश्यक है, तो हमारा संकल्प यही होता है कि यह बल प्रयोग तात्कालिक अनिष्ट के खिलाफ और चरम अच्छाई के लिए हो। हम अमरीकी विध्वंसकारी नहीं हैं—हम निर्माणकारी हैं।"

राष्ट्र तेजी से युद्धप्रयास में जुट गया जिसमें उसे अपनी जनशक्ति और समस्त औद्योगिक क्षमता को एकत्रित करना था। ६ जनवरी, १९४२ को राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने जिन उत्पादन लक्ष्यों की घोषणा की उन्हें सुनकर सामान्य समय में राष्ट्र विचलित हो जाता। उन्होंने उस वर्ष ६०,००० हवाई जहाज, ४५,००० टैंक, २०,००० हवामार तोपों और व्यापारिक जहाजी बेड़े में १,८०,००,००० टन कुल भार वृद्धि की मांग की। राष्ट्र की समस्त कार्रवाइयां—खेती, उत्पादन, खनन, व्यापार, श्रम, धन लगाना, संचार और शिक्षा तथा सांस्कृतिक संस्थाएं तक भी किसी न किसी रूप में नए व परिवर्तित नियन्त्रण में ले ली गयीं। अत्यधिक राशि में धन एकत्रित किया गया; नए बड़े उद्योग स्थापित किए गए; विमानों और जहाजों के बड़ी मात्रा में उत्पादन के लिए अद्भुत नयी तकनीकी प्रणालियों का विकास हुआ; जनसंख्या में बहुत स्थानान्तरण हुआ। बहुत से



१९४५ में, फ्रैंकलिन रूजवेल्ट के आकस्मिक निधन के उपरान्त राष्ट्रपति पद की शपथ लेते हुए उप-राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन। तीन वर्ष बाद राष्ट्रपति पद के लिए उन्हें पुनः चुना गया।

अनिवार्य भरती कानूनों द्वारा अमरीकी फौजों में सैनिकों की गिनती १,५१,००,००० तक पहुँच गयी। १९४३ के अन्त तक लगभग ६,५०,००,००० स्त्री-पुरुष फौजी वर्दी या अनिवार्य व्यवसायों में लगे थे।

अमरीका के युद्ध में उतरने के शीघ्र ही बाद यह निश्चय किया गया कि पश्चिमी मित्रराष्ट्रों का आवश्यक युद्ध-प्रयास यूरोप में संकेन्द्रित होना चाहिए जहां शत्रु शक्ति का केन्द्रबिन्दु था। इस बीच प्रशान्त महासागर के युद्ध क्षेत्र को गौण माना गया। तथापि, १९४२ के उस अन्धकारपूर्ण वर्ष में पहली महत्वपूर्ण अमरीकी सफलताएं प्रशान्त महासागर क्षेत्र के युद्ध में हुई। ये मुख्यतः नौसेना और नौसेना के वायुयानों की सफलताएं थीं। मई १९४२ में कोरल सागर के युद्ध में जापानियों को भारी नुकसान हुआ और जापानी नौसेना को आस्ट्रेलिया पर आक्रमण करने के विचार को छोड़ने पर मजबूर हो जाना पड़ा। जून में नौसेना वायुयानों ने मिडवे द्वीपों के पास जापानी जंगी बेड़े को भारी क्षति पहुँचाई। अगस्त में थल और जलसेना द्वारा संयुक्त कदम उठाया गया जिसके परिणामस्वरूप अमरीकी फौजें गुआडाल केनाल पर उतरीं और बिस्मार्क सागर के युद्ध में एक अन्य नौसैनिक विजय हुई। जहाजों के उत्पादन में आधिक्य के फलस्वरूप नौसेना में शीघ्रता से वृद्धि हुई और इससे आगे के लिए जीत की आशा भी बढ़ी।

मित्रराष्ट्रों की विजय

इसी बीच यूरोपीय रणक्षेत्र में युद्ध-सामग्री व रसद का सम्भरण शुरू हो चुका था। १९४२ के वसन्त और ग्रीष्मकाल में अमरीकी युद्ध सामग्री द्वारा दृढ़ बन जाने पर ब्रिटेन की सेनाओं ने मिस्र पर लक्षित जर्मन हमले को तोड़ दिया और रोमेल को त्रिपोली में ढकेल कर स्वेज क्षेत्र के खतरे को समाप्त कर दिया। ७ नवम्बर को एक अमरीकी सेना फ्रांसीसी उत्तरी अफ्रीका में उतरी। विषम युद्ध के बाद इटली और जर्मनी की सेनाओं को बुरी तरह परास्त किया गया। युद्धबन्दियों की संख्या ३,४९,००० थी। १९४३ के ग्रीष्म के मध्य तक मेडिटरेनियन सागर के दक्षिणी तट से फासिस्ट सेनाएं साफ कर दी गयी थीं। सितम्बर में मार्शल बेडोग्लियो के नेतृत्व में इटली ने युद्ध विराम सन्धि पर हस्ताक्षर किये और जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। यद्यपि इटली में घोर युद्ध चल रहा था। मित्र सेनाओं ने जर्मनी के रेल मार्गों, कारखानों और शस्त्रागारों पर सर्वनाशी हवाई हमले किए। यूरोप के काफी अन्दर की ओर प्लोएस्टी 'रूमानिया' में जर्मन तेल भण्डार ध्वंस कर दिए गए।

१९४३ के अन्त में, मित्र राष्ट्रों में युद्ध नीति पर काफी तर्क-वितर्क के बाद पश्चिमी मोर्चा शुरू करने का फैसला हुआ जिससे रूसी मोर्चे से जर्मनी को उससे कहीं अधिक सेनाएं हटानी पड़ी जितनी कि इटली की लड़ाई में लगायी जा सकती थीं। जनरल ड्वाइट डी. आइजनहॉवर सर्वोच्च कमाण्डर नियुक्त हुए और बड़ी मात्रा में शीघ्रता से तैयारी की गयी। ६ जून को जब रूस की ओर से जवाबी हमला हो रहा था तो अमरीकी और ब्रिटिश चढ़ाई सेना की पहली टुकड़ी एक उत्कृष्ट वायुसेना के संरक्षण में नार्मण्डी समुद्र तट पर उतरी। किनारे के क्षेत्र पर कब्जा कर लिया गया; और अधिक सैनिक लाए गए; बहुत से जर्मन बचाव दस्ते घूम कर सैन्य संचालन में फंसा लिए गए; और अन्त में मित्र सेनाएं फ्रांस में से होकर जर्मनी में बढ़ने लगीं परन्तु उन्हें हमेशा ही बहुत दृढ़ बचाव का सामना करना पड़ा। २५ अगस्त को पेरिस फिर से ले लिया गया। जर्मनी की सीमा पर मित्र सेनाओं को कठिन जवाबी हमलों के कारण काफी देर लगी परन्तु फरवरी और मार्च, १९४५ में पश्चिम से सेनाएं जर्मनी में घुसने लगीं और जर्मन सेनाएं पूर्व में पीछे हटने लगीं। ८ मई को तीसरी राइख (जर्मनी) की बची-खुची थल, जल और वायु सेनाओं ने हथियार डाल दिए।

इस बीच पैसिफिक क्षेत्र में अमरीकी सेनाओं ने बहुत उन्नति कर ली थी। जैसे-जैसे अमरीका और आस्ट्रेलिया की सेनाएं एक के बाद एक सालोमन्स, न्यू-ब्रिटेन, न्यू गिनी और बोगनविल द्वीप लेती गयीं। बढ़ती हुई नौसेनाओं ने जापानी रसद मार्ग बन्द कर दिए। अक्टूबर, १९४४ में फिलिपाइन सागर में नौसेना विजयी हुई। आइवो-जिमा और ओकिनावा में अगली कार्यवाइयों से ऐसा पता चला कि यद्यपि जापानी स्थिति नैराश्यपूर्ण थी तथापि शायद जापानी प्रतिरोध काफी दिन चलेगा। परन्तु अगस्त में हीरोशिमा और नागासाकी पर अणु बम पड़ने से युद्ध एकाएक समाप्त हो गया। जापान ने २ सितम्बर, १९४५ को आत्म-समर्पण कर दिया।

मित्र राष्ट्रों ने युद्ध प्रयासों के साथ-साथ युद्ध के राजनीतिक पहलुओं पर विचार करने के लिए कई बैठकें की। इनमें से पहली बैठक अगस्त १९४१ में राष्ट्रपति रूजवेल्ट और प्रधानमन्त्री चर्चिल के बीच ऐसे समय पर हुई जब तक अमरीका युद्ध में सक्रिय रूप से नहीं लगा था और इंग्लैण्ड व रूस की सैनिक स्थिति बड़ी कमजोर प्रतीत होती थी। उनकी यह मुलाकात एक जंगी जहाज पर हुई और रूजवेल्ट व चर्चिल ने एक उद्देश्य-वक्तव्य—एटलांटिक चार्टर—जारी किया जिसमें उन्होंने इन उद्देश्यों का समर्थन किया: क्षेत्रीय विवर्धन नहीं होगा;



दूसरे महायुद्ध का यह एक सुप्रसिद्ध चित्र है। चित्र में, अमरीकी नौ-सेना के जवान पैसिफिक महासागर के एक सामरिक-दृष्टि से महत्वपूर्ण द्वीप, आइवो जिमा में अमरीकी झण्डा गाड़ रहे हैं। इस पर नौ-सेना के ५०,००० जवानों ने हमला किया था और २६ दिनों बाद इस पर अधिकार हो पाया था।



१९४१ में, 'एटलाण्टिक चार्टर' पर हस्ताक्षर करने के लिए अमरीका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट और ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री चर्चिल न्यूफाउण्डलैण्ड के सागर तट के निकट 'प्रिंस आव वेल्स' नामक ब्रिटिश युद्धपोत पर मिले। 'एटलाण्टिक चार्टर' एक ऐसी आठ सूत्री घोषणा थी जिसके अन्तर्गत अमरीका और ब्रिटेन ने संयुक्त रूप से शान्ति के लिए आधारभूत सिद्धान्त घोषित किए थे।

प्रादेशिक परिवर्तन बिना वहां की जनता की इच्छा के नहीं होंगे; जनता को अपने शासन का रूप निर्धारित करने का अधिकार होगा; लोगों के छीने गए स्वशासन अधिकार लौटा दिए जाएंगे; सब राष्ट्रों के बीच आर्थिक सहयोग; सब लोगों के लिए युद्ध, भय और अभाव से मुक्ति; नौचालन स्वतन्त्रता; अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में बल-प्रयोग की समाप्ति।

इसके बाद का बड़ा आंग्ल-अमरीकी सम्मेलन जनवरी, १९४३ में कासाब्लांका में हुआ। इसमें यह निश्चय हुआ कि धुरी-शक्तियों और उनके बालकन पिछलग्गुओं से 'बिना शर्त समर्पण'' के सिवा किसी तरह की शान्ति सन्धि नहीं की जायगी। इस शर्त का उद्देश्य युद्धरत राष्ट्रों की समस्त जनता को यह आश्वासन देना था कि फासिस्ट और नाजीवाद के प्रतिनिधियों से कोई शान्ति वार्ता नहीं की जायगी, कि ऐसे प्रतिनिधि अपनी अवशेष शक्ति को बचाने के लिए कोई सौदेकारी नहीं कर सकते; इससे पहले कि जर्मनी, इटली और जापान की जनता से अन्तिम शान्ति सन्धि की शर्तें की जायं उनके सैनिक सत्ताधिकारियों को समस्त संसार के सामने अपनी पूर्ण पराजय स्वीकार करनी पड़ेगी।

युद्ध की समाप्ति

अगस्त, १९४३ में क्यूबेक में एक आंग्ल-अमरीकी सम्मेलन हुआ जिसमें जापान के विरुद्ध कार्रवाई और राजनीति व युद्धनीति के अन्य पहलुओं पर विचार किया गया। दो महीने बाद इंग्लैण्ड, अमरीका और रूस के विदेश मन्त्रियों की बैठक मास्को में हुई। उन्होंने 'बिना शर्त आत्मसमर्पण' की नीति की पुनः पुष्टि की, इटली के फासिस्टवाद को समाप्त करने और आस्ट्रिया की स्वाधीनता वापस देने की मांग की और शान्ति के हित में शक्तियों के बीच युद्धोत्तर सहयोग का समर्थन किया। कैरो में, जहां रूजवेल्ट और चर्चिल ने चांग काई-शेक से भेंट की, जापान के बारे में शर्तें तय की गयीं जिसमें उसके पिछले आक्रमण के सभी लाभों को त्यागना भी शामिल था। तेहरान में २८ नवम्बर को चर्चिल, रूजवेल्ट और स्टालिन ने मास्को सम्मेलन की शर्तों की पुनः पुष्टि की और संयुक्तराष्ट्र के द्वारा स्थायी शान्ति की मांग की। लगभग दो वर्ष उपरान्त फरवरी १९४५ में, जब विजय अवश्यम्भावी प्रतीत होती थी, उनकी एक बैठक याल्टा में हुई, जिसमें कुछ और समझौते हुए। जर्मनी के समर्पण के कुछ ही समय बाद रूस जापान के विरुद्ध युद्ध में शामिल होने को गुप्तरूप से राजी हो गया; पोलैण्ड का पूर्वी सीमान्त मोटे तौर से १९१९ की कर्जन-रेखा पर तय किया गया; जर्मनी में

भारी क्षतिपूर्ति वसूल करने की स्टालिन की मांग पर कुछ विचार करने के बाद निश्चय स्थगित रखा गया (रूजवेल्ट और चर्चिल ने इस मांग का विरोध किया था); मित्रराष्ट्रों द्वारा जर्मनी पर कब्जा करने और युद्ध अपराधियों के मुकदमे के विशिष्ट प्रबन्ध किए गए; परिमुक्त क्षेत्रों की जनता से सम्बन्धों के बारे में एटलांटिक चार्टर के सिद्धान्तों की पुनः पुष्टि की गयी। यह आसानी से मान लिया गया कि संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद की शक्तियों को अपनी सुरक्षा से सम्बन्धित मामलों में निषेधाधिकार मिलने चाहिए। काफी मतभेद के उपरान्त जिसमें स्टालिन और चर्चिल एक तरफ और रूजवेल्ट दूसरी तरफ थे, यह तय हो गया कि यूक्रेन और बाइलोरशिया की बड़ी जनसंख्या के आधार पर संयुक्तराष्ट्र-सभा में सोवियत संघ की दो अतिरिक्त वोटों की मांग का सभी शक्तियां समर्थन करेंगी।

याल्टा से लौटने के केवल दो महीने बाद ही जब वे जार्जिया में अपने 'लिटिल ह्वाइट हाउस' में छुट्टी बिता रहे थे, फ्रेंकलिन डी. रूजवेल्ट की पक्षाघात से मृत्यु हो गयी। अमरीकी इतिहास में देश और बाहर बहुत कम लोगों की मृत्यु का इतना शोक मनाया गया है और कुछ समय तक अमरीकी लोग कभी पूरी न होने वाली क्षति की भावना से ग्रस्त रहे। तथापि, लोकतन्त्री नेतृत्व किसी भी व्यक्ति की अपरिहार्यता पर आधारित नहीं है; अधिक समय नहीं गुजरा था कि रूजवेल्ट के उत्तराधिकारी हेरी एस. ट्रूमेन ने न्यू डील की घरेलू और विदेश नीति के अनिवार्य उद्देश्यों के आधार पर सक्रिय नेतृत्व करना शुरू कर दिया।

जुलाई, १९४५ तक जब पोट्सडैम में फिर से इंग्लैण्ड, अमरीका और रूस का सम्मेलन हुआ तो जर्मनी आत्मसमर्पण कर चुका था। सम्मेलन के बीच में ही इंग्लैण्ड में आम चुनाव हुए जिसका नतीजा यह हुआ कि यद्यपि चर्चिल और क्लीमेण्ट एटली दोनों ही सम्मेलन के प्रथम भाग में उपस्थित थे, केवल एटली ही समझौता-वार्ता के अन्तिम भाग में रह गए थे। यद्यपि प्रशान्त महासागर क्षेत्र के युद्ध के कुछ पहलुओं पर विचार किया गया, परन्तु सम्मेलन का आवश्यक उद्देश्य कब्जा करने की नीति और जर्मनी के भविष्य के सम्बन्ध में कार्यक्रम निर्धारित करना था। यह तय हुआ कि जर्मनी की शान्तिकालीन आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त औद्योगिक क्षमता छोड़ देनी चाहिए परन्तु उसके पास सैनिक तैयारियों के लिए कोई अतिरिक्त गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। यह भी तय हुआ कि जाने हुए नाजियों पर मुकदमा चलाया जाएगा और अगर उससे यह साबित हो गया कि नाजियों की योजना के अनुसार उन्होंने बेमतलब नर-संहार में भाग लिया है तो उन्हें मृत्युदण्ड भोगना पड़ेगा। नाजीवादी वातावरण में पली पूरी पीढ़ी को पुनः शिक्षित करने की आवश्यकता स्वीकार की गयी और साथ ही साथ जर्मनी में फिर से लोकतन्त्रीय वातावरणों को पैदा करने के मोटे सिद्धान्त भी। जर्मनी से क्षतिपूर्ति वसूल करने के मसले पर विचार करने में भी काफी समय लगा। सोवियत संघ के कब्जे में आए हुए क्षेत्र से उन्हें औद्योगिक कारखाने और सम्पत्ति उठा ले जाने की इजाजत दे दी गयी, परन्तु याल्टा सम्मेलन में उठाए हुए क्षतिपूर्ति के रूसी दावे, जिनकी रकम कुल १०,००,००,००,००० डालर थी, विवाद का विषय बने रहे। पोट्सडैम में तय हुए अपराधी मुकदमे नवम्बर १९४५ में न्यूरैम्बर्ग में शुरू हुए। इंग्लैण्ड, फ्रांस, सोवियत संघ और अमरीका के कुछ सम्मानित न्यायशास्त्रियों के सामने जर्मन नेताओं पर न केवल आक्रमणकारी युद्ध करने और उसका षडयन्त्र रचने बल्कि युद्ध और मानवता के नियम तोड़ने के भी आरोप लगाए गए। मुकदमे दस महीने से अधिक चले और उनके परिणामस्वरूप तीन प्रतिवादियों को छोड़कर बाकी सभी दण्डित हुए।

अध्याय ८

आधुनिक संसार में अमरीका

"हमारा बुनियादी उद्देश्य अब भी वही है; स्वतन्त्र और स्वाधीन राज्यों का शान्तिपूर्ण विश्व समुदाय—जिन्हें अपना भविष्य और अपनी प्रणाली चुनने की पूरी आज़ादी हो।"

—जॉन एफ० केनेडी,
कांग्रेस को संदेश, ११ जनवरी, १९६२

जब कि 'पोट्सडैम-वार्ता' चल रही थी तभी ५१ राष्ट्रों के प्रतिनिधि संयुक्त राष्ट्र की रूपरेखा तैयार करने के लिए सॉन फ्रांसिस्को में एकत्र हुए। आठ सप्ताह काम करने के उपरान्त उन्होंने संयुक्तराष्ट्र-चार्टर का मसौदा पूरी तरह तैयार कर लिया, जिसमें एक ऐसे विश्व-संगठन की रूपरेखा थी जहां अन्तर्राष्ट्रीय मतभेदों पर शान्तिपूर्ण ढंग से विचार किया जा सके और भूख तथा बीमारी का मिलकर सामना किया जा सके। यद्यपि प्रथम महायुद्ध के पश्चात् सेनेट ने अमरीका को 'लीग आव नेशन्स' का सदस्य बनने की अनुमति नहीं दी थी तथापि अब उसने २ वोटों के मुकाबले ८९ वोटों से संयुक्त राष्ट्र चार्टर का तुरन्त ही अनुसमर्थन कर दिया। इस कार्रवाई से अलगाववाद, जो अमरीकी विदेश-नीति का महत्वपूर्ण तत्व रहा था, समाप्त हो गया और अमरीका ने अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में अपनी पूरी जिम्मेदारी स्वीकार की।

अगस्त १९४५ में जापान के आत्मसमर्पण के उपरान्त अमरीकियों ने अपनी समस्त शक्ति घरेलू मामलों पर केन्द्रित की। एक सन्निकट समस्या थी लौटने वाले लाखों सैनिकों का असैनिक जीवन में पुनः समाकलन। दो वर्षों में सैनिकों की संख्या १ करोड़ २० लाख से घटाकर १५ लाख कर दी गयी। फौजी पुनः समंजन कानून (जिसका प्रचलित नाम "जी. आई. बिल ऑव राइट्स' है) के अनुसार पुराने सैनिकों को सरकारी ऋण द्वारा घर खरीदने और व्यापार या फार्मिंग का काम शुरू करने की सुविधा दी गयी। इसके द्वारा लाखों पुराने सैनिकों को शिक्षा के लिए भी धन दिया गया और इस प्रकार अधिक आयु के विद्यार्थी भी कालेजों में पहुँचे जो प्रायः विवाहित और बाल-बच्चों वाले थे।

अनेक अर्थशास्त्रियों की आशंकाओं के विपरीत अमरीकी अर्थ-व्यवस्था ने बिना किसी गम्भीर बेरोजगारी समस्या के युद्धकाल से शान्तिकाल में संक्रमण किया। उद्योगों के असैनिक उत्पादन में लगते ही लाखों आदमियों को काम मिल गया और फिर भी युद्धकालीन अभाव, बढ़ी हुई मजदूरी और जमा-बचत के कारण उपभोक्ता सामग्री की बढ़ी हुई मांगें मुश्किल से पूरी हो सकीं। १९४५ और १९४८ के बीच रोजगार में लगे हुए व्यक्तियों की संख्या ५४० लाख से बढ़कर ६१० लाख हो गयी और राष्ट्रीय आय १८,१०० करोड़ डालर से लेकर २२,३०० करोड़ डालर प्रतिवर्ष से अधिक हो गयी।

परन्तु समृद्धि के साथ दूसरी प्रकार की समस्या भी सामने आई। उपलब्ध घरों की संख्या मांग की तुलना में बहुत कम थी। स्थिति केवल १९४७ के बाद ही सुधर सकी जब भवन निर्माण-उद्योग ने कुछ तेजी से काम करना शुरू किया। युद्ध के बाद के काल में मूल्य एकदम से बढ़ गए जिससे स्फीति का भय पैदा हुआ परन्तु इच्छित वस्तुओं के उत्पादन और मांग में सामंजस्य पैदा होते ही मूल्य अधिक स्थायी स्तरों पर आ गए। बढ़ते हुए मूल्यों के कारण बहुत से श्रमिक संगठनों ने अधिक मजदूरी की मांग की और १९४६ की हड़तालों में ४५,००,००० से अधिक मजदूर शामिल हुए। १९४७ में कांग्रेस ने नया श्रमिक कानून 'टैफ्ट हार्टले ऐक्ट' पास किया। इस कानून में जिसका श्रमिक नेताओं द्वारा बहुत विरोध हुआ, यह व्यवस्था थी कि किसी भी यूनियन या मालिक के लिए कोई अनुबन्ध तोड़ने से पहले ६० दिन का नोटिस देना आवश्यक था। इस में प्रबन्धकों को यह अनुमति भी दी गयी थी कि वे यूनियनों के अधिकारियों पर अनुबन्ध तोड़ने का मुकदमा भी चला सकें और वर्तमान अनुबन्धों में दी गयी यूनियन सुविधाओं को भी कम कर दिया गया था। इन प्रतिबन्धों के होते हुए भी श्रमिकों को और अधिक मजदूरी मिलती रही और निवृत्ति पेंशन व मालिकों द्वारा दिए गए स्वास्थ्य बीमों के कारण उनकी सुरक्षा में भी वृद्धि हुई।

राष्ट्रों के सामने एक बहुत बड़ी समस्या थी अणुशक्ति का विकास तथा नियन्त्रण की। जुलाई १९४६ में कांग्रेस ने इसका उत्तरदायित्व ५ असैनिक सदस्यों वाले "अमरीकी अणुऊर्जा आयोग' को दे दिया। आयोग के पर्यवेक्षण में अमरीकी वैज्ञानिकों ने अणु-ज्ञान का विकास किया और दूसरे राष्ट्रों के लिए उसे उपलब्ध किया।

उन्होंने कृषि, उद्योग, औषधि-विज्ञान के क्षेत्र में उसके अनेक शान्तिकालीन उपयोग प्रदान किए।

रिपब्लिकन उम्मीदवार थामस ई. डीवी के विरुद्ध १९४८ के चुनाव में राष्ट्रपति ट्रूमेन की अप्रत्याशित परन्तु निश्चयात्मक विजय ने उन्हें अपने 'फेयर डील' सुधार कार्यक्रम को पास कराने के लिए प्रेरित किया। यद्यपि कांग्रेस ने इस कार्यक्रम के कुछ भाग अस्वीकार कर दिए परन्तु उसने अधिकतर को पास करके कानून बना दिया। सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था को विस्तारित करके उसे १ करोड़ अधिक व्यक्तियों पर लागू किया गया। अन्तर्राज्यीय उद्योगों के मजदूरों की न्यूनतम मजदूरी ४० से बढ़ाकर ७५ सेंट प्रतिघण्टा कर दी गई। गन्दी बस्तियां हटाने और कम किराए के मकान बनाने का एक केन्द्रीय कार्यक्रम स्वीकृत हुआ। १९५० के आन्तरिक सुरक्षा कानून में जिसके अनुसार साम्यवादी संगठनों पर महान्यायवादी के पास अपने सदस्यों की सूची दर्ज कराने का प्रतिबन्ध लागू हुआ, चालू अन्तर्राष्ट्रीय तनाव का पता चलता था।

अणुशक्ति के अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण का सुझाव

दूसरे महायुद्ध के अन्त में अमरीकियों और उनकी सरकार को यह आशा थी कि सोवियत संघ और पश्चिमी लोकतन्त्रों के बीच युद्धकालीन सहयोग जारी रहेगा जिससे सुरक्षित और शान्तिपूर्ण विश्व का निर्माण होगा। अमरीका ने संयुक्तराष्ट्र के कई अभिकरणों की स्थापना और वित्तीय सहायता में सक्रिय भाग लिया। अभिकरणों का उद्देश्य था यूरोप, एशिया और अफ्रीका के युद्ध-ध्वंसित क्षेत्रों का आर्थिक पुनर्निर्माण और उनके कष्टों का निवारण। बड़ी मात्रा में अमरीकी सहायता साम्यवादी व असाम्यवादी, दोनों ही देशों के जरूरतमन्द लोगों को पहुँचायी गई।

एक महत्वपूर्ण क्षेत्र जिसमें अमरीका को अन्तर्राष्ट्रीय समझौते की पूर्ण आशा थी, यह था 'अणु बम पर नियन्त्रण'। इस भयानक अस्त्र का विकास अमरीका द्वारा दूसरे महायुद्ध के दौरान में किया गया था जब कि वैज्ञानिकों ने यह प्रमाणित कर दिया था कि जर्मन ऐसे ही बम के निर्माण का प्रयत्न कर रहे हैं। जापान से आत्मसमर्पण कराने के लिए इसका उपयोग किया गया क्योंकि केवल दूसरा रास्ता जापानी द्वीपों पर बड़ी चढ़ाई करना था जिसमें दोनों तरफ से १० लाख से भी अधिक व्यक्तियों के हताहत होने की सम्भावना थी। अमरीका ने यह स्वीकार किया कि आणविक अस्त्रों के विस्तार से मानवमात्र के अस्तित्व को खतरा है। इसलिए जून, १९४६ में अमरीकी प्रतिनिधि बर्नार्ड बारुक ने राष्ट्रसंघ में एक प्रस्ताव पेश किया जिसमें आणविक अस्त्रों का निषेध करने और समस्त आणविक साधनों पर अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण की माग की गयी थी। अमरीका ही उस समय ऐसा राष्ट्र था जिसके पास अणु बम था और उसने बमों के अपने भण्डार को नष्ट करके और समस्त न्यूक्लियर भेद प्रगट करके अपना सर्वोपरिता छोड़ देने का प्रस्ताव किया। बारुक योजना की एक ही मुख्य शर्त थी; निरीक्षण और उसे लागू कराने के लिए अधिकृत अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरण पर किसी भी एक राष्ट्र का निषेधाधिकार लागू न हो।

अमरीकी प्रस्ताव का समर्थन संयुक्तराष्ट्र सुरक्षा परिषद के १० सदस्यों में से ९ ने किया, परन्तु सोवियत संघ ने निषेधाधिकार का प्रयोग किया। रूसी प्रति-प्रस्ताव में यद्यपि सब राष्ट्रों से अणु अस्त्रों का त्याग करने की मांग की गयी थी तथापि उसमें उसके उल्लंघन का पता लगाने के लिए कोई निरीक्षण प्रणाली या उल्लंघन करने वालों को दण्ड देने के लिए किसी लागू कराने की प्रणाली का कोई प्रबन्ध नहीं था। बारुक योजना के अस्वीकृत होने का एक परिणाम हुआ अणु बम से भी कई गुने विनाशकारी अस्त्रों का विकास। निरीक्षण और निषेधाधिकार के प्रश्नों पर इसी प्रकार के मतभेदों के कारण निरस्त्रीकरण के लिए बाद में किए गए सम्मेलन भी निष्फल रहे।

सोवियत संघ ने पूर्वी यूरोप में स्थित अपनी फौजों का उपयोग अल्पमत के साम्यवादी दलों को मदद देने और असाम्यवादी दलों को उखाड़ कर रूस-समर्थक सरकारें स्थापित करने के लिये किया। अमरीका में यह एक बड़ी चिन्ता का विषय बन गया। युद्ध समाप्त होने के दो वर्ष से भी कम के अन्दर पोलैण्ड, हंगरी, यूगोस्लाविया, बुल्गारिया, अल्बानिया और जर्मनी के रूसी अधिकृत क्षेत्रों में कम्युनिस्ट सरकारें बन गईं। (अगले ही वर्ष चेकोस्लोवाकिया भी साम्यवादियों के हाथ आ गया।) १९४७ के बसन्त में साम्यवादी विस्तार का खतरा और भी स्पष्ट हो गया जब यूनान में कम्युनिस्ट छापेमार दस्तों को रूसी सहायता मिली और डार्डेनेलिज़ पर तुर्की के नियन्त्रण के विरुद्ध रूस ने धमकी दी। राष्ट्रपति ट्रूमेन ने कांग्रेस के समक्ष यह घोषणा की कि "अमरीका की यह नीति होनी चाहिए कि उन स्वतन्त्र लोगों की सहायता की जाय जो सशस्त्र अल्पसंख्यकों या बाहरी दबाव द्वारा अधीन किए जाने के प्रयासों का मुकाबला कर रहे हैं।" यह नीति बाद में "ट्रूमेन डाक्ट्रिन" कहलायी और इसके परिणामस्वरूप पहले-पहल कांग्रेस द्वारा ग्रीस और तुर्की की आर्थिक और फौजी सहायता के लिए ४० करोड़ डालर की धनराशि प्रदान की गयी। दो वर्ष के अन्दर ही ग्रीस में पुनः व्यवस्था हो गयी, तुर्की को उसकी

प्रादेशिक अखण्डता का विश्वास दिला दिया गया और भू-मध्यसागर की ओर साम्यवादी विस्तार रोक दिया गया।

उपनिवेशवाद के शीघ्र अन्त की मांग

अमरीका ने उपनिवेशवाद का विरोध और दूसरे क्षेत्रों में आत्म-संकल्प के सिद्धान्तों का समर्थन प्रदर्शित किया। १९४६ में राष्ट्रपति ट्रूमैन ने फिलीपीन्स की पूर्ण स्वतन्त्रता घोषित की। अगले वर्ष कांग्रेस ने पोर्टोरीको के लोगों को अपना गवर्नर चुनने की अनुमति दे दी। यह १९५२ में उनको स्वशासन के पूर्ण अधिकार देकर सामान्य नागरिकता और स्वतन्त्र चुनाव के आधार पर अमरीका से सम्बद्ध करने की दिशा में पहला कदम था। अमरीकी नेताओं ने भारत, पाकिस्तान और बर्मा को स्वतन्त्रता दिए जाने के लिए भी इंग्लैण्ड को प्रोत्साहित किया और डच-शासन से इण्डोनेशिया को मुक्ति दिलाने में शीघ्रता करने के लिए मध्यस्थता भी की। १९४९ में राष्ट्रपति ट्रूमैन ने विश्व के नव-विकसित क्षेत्रों को तकनीकी और वित्तीय अमरीकी सहायता में शीघ्रता करने के लिए अपने 'प्वायण्ट फोर' (चारसूत्री) कार्यक्रम का प्रस्ताव पेश किया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषि, शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, आवास और कई दूसरे क्षेत्रों में अमरीकी विशेषज्ञों ने समस्त एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीकी देशों को सहायता और सलाह प्रदान की।

जिस समय इन नवोदित राष्ट्रों में राजनीतिक और आर्थिक विकास हो रहा था, यूरोप के युद्ध-ध्वंसित देशों को कठोर आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के समक्ष जून, १९४७ में, व्याख्यान देते हुए विदेश मन्त्री जार्ज सी. मार्शल ने यूरोप में आर्थिक व्यवस्थाओं को पुनः संस्थापित करने के एक विस्तृत कार्यक्रम का प्रस्ताव किया। यह कार्यक्रम बाद में 'मार्शल योजना' कहलाया और इसके अन्तर्गत भाग लेने के इच्छुक किसी भी यूरोपीय राष्ट्र को अमरीकी धन, सामग्री और मशीनें देने का प्रस्ताव किया गया। (यद्यपि सोवियत संघ और उसके पूर्व-यूरोपीय पिछलग्गू देशों को भी कार्यक्रम में सम्मिलित करने का प्रस्ताव किया गया था तथापि उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया।) १२ अरब डालर के सामान और सेवाओं की अमरीकी सहायता का यह वृहत कार्यक्रम अप्रैल १९४८ में, चालू किया गया। आइसलैण्ड से लेकर तुर्की तक १६ देशों को शीघ्र आर्थिक पुनर्लाभ प्राप्त करने में इसने सहायता दी। तीन वर्ष से कम की अवधि में युद्ध से पहले की तुलना में औद्योगिक उत्पादन २५ प्रतिशत और कृषि-उत्पादन १४ प्रतिशत बढ़ गया।

जिस समय 'मार्शल योजना' प्रगति कर रही थी, पश्चिमी बर्लिन में, जो इंग्लैण्ड, फ्रांस और अमरीकी फौजों के कब्जे में था, एक विषम स्थिति उत्पन्न हो गयी। पूर्वी जर्मनी के रूसी क्षेत्र में ११० मील अन्दर की ओर इस समृद्ध, लोकतन्त्री और पश्चिमीराष्ट्रों के समर्थक समुदाय की उपस्थिति साम्यवादी नेताओं के लिए कठिनाई का कारण थी। बर्लिन से पश्चिमी शक्तियों को बाहर निकाल देने की आशा में १९४८ के वसन्त में रूसी अधिकारियों ने जर्मनी के पश्चिमी क्षेत्र और बर्लिन के बीच सड़क और रेल यातायात पर पहले पाबन्दी लगायी और फिर पूर्णतः रोक लगा दी। १९४८ की ग्रीष्म में शुरू करके और लगभग १ वर्ष तक निरन्तर अंग्रेजी और अमरीकी विमानों ने २० लाख टन से अधिक खाद्य सामग्री, ईंधन, दवाइयां और पश्चिमी बर्लिन के लोगों की जरूरत का अन्य सामान ढोया। अन्त में जब रूसियों को यह विश्वास हो गया कि उनकी चाल असफल रही है तो मई १९४९ में उन्होंने नाकेबन्दी उठा दी।

पूर्वी यूरोप में रूसी प्रभाव के बढ़ने और ग्रीस व तुर्की के विरुद्ध धमकियों के पश्चात् बर्लिन संकट आने से समस्त पश्चिमी यूरोप में सनसनी फैल गयी। इसके परिणामस्वरूप उत्तरी अतलांतिक सन्धि संगठन (एन. ए. टी. ओ.) की स्थापना अप्रैल, १९४९ में रूसी आक्रमण की सम्भावना के विरुद्ध सदस्य राष्ट्रों के फौजी बचावों का समन्वय करने के लिए हुई। बेल्जियम, कैनाडा, डेनमार्क, फ्रांस, इंग्लैण्ड, आइसलैण्ड, लक्जेमबर्ग, नीदरलैण्ड्स, नार्वे, पुर्तगाल और अमरीका इस बात पर सहमत हुए कि उनमें से किसी के भी विरुद्ध आक्रमण सबके विरुद्ध माना जायेगा। ग्रीस, तुर्की और पश्चिमी जर्मनी भी बाद में इसमें शामिल हुए। दिसम्बर, १९५० में जनरल ड्वाइट डी. आइजनहोवर 'एन. ए. टी. ओ.' फौजों के सर्वोच्च कमाण्डर नियुक्त हुए। ट्रूमैन प्रशासन के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में अमरीका का पड़ना केवल यूरोप तक ही सीमित नहीं था। १९४८ में अमरीका ने २१ लैटिन अमरीकी राष्ट्रों से मिलकर अमरीकी राज्य संगठन की स्थापना की जिसका उद्देश्य अन्तर अमरीकी विवादों का शान्तिपूर्ण समाधान करना, और आक्रमण के मौके पर सामूहिक कार्रवाई का प्रबन्ध करना था। यह संगठन उन कई अन्तर अमरीकी राज्यों के समूह का उत्तराधिकारी था जिसका विचार लगभग १।। शताब्दी पहले साइमन बोलीवर ने दिया था और इनमें से पहला समूह १८८९ में स्थापित हुआ था।

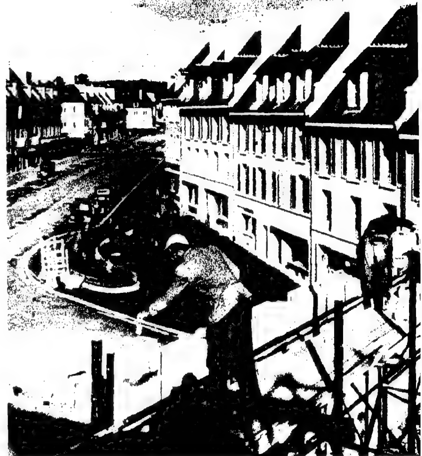
मध्य पूर्व में जब मई १९४८ में इजराइल के यहूदी राज्य की घोषणा से उस देश और उसके अरब पड़ोसियों के बीच युद्ध छिड़ गया तो अमरीका ने

संयुक्तराष्ट्र के एक विराम-सन्धि दल को सन्धि प्रबन्ध के सफल प्रयासों में सहायता दी। इस दल के नेता और एक अमरीकी गुलाम के पोते डाक्टर राल्फ बन्श को उनके काम के लिए शान्ति का नोबेल पुरस्कार मिला।

कोरिया में आक्रमण के विरुद्ध संयुक्तराष्ट्रीय मोर्चा

तथापि राष्ट्रपति ट्रूमैन के कार्यकाल के अन्तिम वर्षों में अमरीकी अन्तर्राष्ट्रीय उलझनें एशिया से सम्बन्धित थीं। २५ जून, १९५० को रूसी कब्जा करने वाली सेनाओं द्वारा प्रशिक्षित और सुसज्जित साम्यवादी उत्तरी कोरिया की सेनाओं ने ३८ अक्षांश पार कर कोरियाई गणराज्य पर हमला कर दिया, जिसकी सरकार संयुक्तराष्ट्र के निरीक्षण में हुए स्वतन्त्र चुनावों से निर्वाचित हुई थी। संयुक्तराष्ट्र सुरक्षा परिषद की एक आपाती बैठक में इस हमले को शान्ति-खण्डक बताया गया और मांग की गयी कि आक्रमणकारी फौरन ही पीछे हट जायं। दो दिन बाद परिषद ने उत्तरी कोरिया को आक्रमणकारी करार दिया और संयुक्तराष्ट्र के सदस्यों से दक्षिणी कोरिया की हर सम्भव सहायता की जाने का अनुरोध किया। अमरीका, जिसने कोरिया को अमरीकी शासन से मुक्त किया था, ने घिरे हुए गणराज्य के प्रति विशेष उत्तरदायित्व का अनुभव किया और शीघ्र ही वायु और थल सेनाएं कोरिया भेज दीं। इसके बाद १५ और राष्ट्रों ने सैनिक और ४९ देशों ने सहायता सामग्री भेजी। संयुक्तराष्ट्र-कमान की स्थापना हुई और इतिहास में पहली बार संगठित अन्तर्राष्ट्रीय फौजों ने अतिक्रमण के विरुद्ध कार्रवाई की। संयुक्तराष्ट्र की यह कार्रवाई इसीलिए सम्भव हो सकी कि कुछ समय से सोवियत संघ सुरक्षा परिषद की बैठकों का बहिष्कार किए हुए था और इस कार्रवाई को रोकने में अपना निषेधाधिकार प्रयोग करने के लिए उपस्थित नहीं था।

कोरियाई युद्ध की गति बड़ी कटु, रक्तपात वाली और नैराश्यपूर्ण रही। आरम्भिक हानियों के उपरान्त संयुक्तराष्ट्र की फौजों ने धीरे-धीरे हमलावर कार्रवाई शुरू कर दी और आक्रमणकारियों को पीछे खदेड़ दिया। लड़ाई का अन्त निकट ही प्रतीत होता था जब कि साम्यवादी चीन ने लाखों की संख्या में तथाकथित 'स्वयं सेवक' संयुक्त राष्ट्र सेनाओं के विरुद्ध लड़ाई में झोंक दिए। इस हस्तक्षेप से डर पैदा हुआ कि लड़ाई कोरियाई सीमा से बाहर भी फैल जायगी परन्तु संयुक्तराष्ट्रीय कमान एक प्रचण्ड आग लगाने का खतरा मोल लेने को तैयार नहीं थी और इसलिए सीमित उद्देश्य के लिए सीमित युद्ध करने में ही



संयुक्त राज्य अमरीका से प्राप्त मार्शल प्लान निधि की सहायता से फ्रांस के आने-सर-ओशान का पुनर्निर्माण जिसे द्वितीय महायुद्ध में ध्वस्त कर दिया गया था।

सन्तुष्ट रही। समय से अतिक्रमणकारियों को लगभग ३८ अक्षांश रेखा तक पीछे हटा दिया गया। लम्बी वार्ता के बाद १९५३ की गर्मियों में हुई सन्धि में युद्ध-क्षेत्र के तथ्यों को ही मान लिया गया। लड़ाई के अन्त तक अमरीका ढाई लाख सैनिक देश से आधी दुनिया दूर भेज चुका था और उसके ३०,००० से अधिक सैनिक मारे गए जो साम्यवादी अतिक्रमण के विरुद्ध स्वतन्त्र राष्ट्रों को बचाने के उसके दृढ़ निश्चय का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

अमरीकियों ने नवम्बर १९५२ के चुनाव में एक रिपब्लिकन राष्ट्रपति निर्वाचित किया जिससे राष्ट्रपति पद पर डेमोक्रेटिक दल की २० वर्ष की पकड़ छूट गयी। जनरल ड्वाइट डी. आइजनहोवर ने डेमोक्रेटिक उम्मीदवार, इलिनोय के गवर्नर अडलाई ई. स्टीवेंसन को निश्चयात्मक रूप से पराजित कर दिया। परन्तु जब १९५६ में राष्ट्रपति आइजनहोवर का पुनर्निर्वाचन पहले से भी अधिक बहुमत से हुआ तो उन्हें अपने पद के आखिरी छः वर्षों में डेमोक्रेटिक नियन्त्रित कांग्रेस के साथ काम करना पड़ा।

आइज़नहोवर द्वारा घरेलू समस्याओं का सामना

घरेलू मामलों में आइजनहोवर प्रशासन ने जिन नीतियों को अपनाया उन्हें प्रायः "माडर्न रिपब्लिकनिज्म" के नाम से पुकारा जाता है। इस नीति का एक पहलू राज्यों और निजी व्यवसाय के मामलों में कम से कम हस्तक्षेप करना था। परन्तु, दूसरी ओर 'न्यू डील-फेयर डील' काल में विकसित बुनियादी सामाजिक और आर्थिक विधान कायम रखे गए और उनका सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा के लिए केन्द्रीय सहायता, सार्वजनिक आवास, गन्दी बस्तियों की सफाई, और सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्रवाइयां जैसे क्षेत्रों में विस्तार भी किया गया। जनवरी, १९५३ में पदासीन होने के कुछ ही समय बाद राष्ट्रपति आइजनहोवर ने केन्द्रीय सुरक्षा अभिकरण को मन्त्रिमण्डल स्तरीय स्वास्थ्य, शिक्षा तथा कल्याण विभाग में बदला जाना स्वीकार कर लिया। उन्होंने न्यूनतम मजदूरी दर को ७५ सेण्ट प्रति घण्टा से १ डालर तक बढ़ाए जाने की कांग्रेसी कार्रवाई का भी समर्थन किया।

१९५५ में श्रमिकों को दो अन्य विकासों से भी प्रोत्साहन मिला। पहला था कुछ यूनियन प्रबन्धक अनुबन्धों में मालिकों द्वारा दिए जाने वाले बेरोजगारी भत्ते के प्रबन्ध का समावेश जो राज्यों द्वारा दिए जाने वाले भत्तों के अतिरिक्त था और दूसरा था दो स्वतन्त्र यूनियन संघों का एक संयुक्त ए. एफ. एल.-सी. आई. ओ. में मिलाया जाना जिसमें १५० लाख सदस्य थे। कुछ यूनियनों में



विदेश मंत्री जार्ज सी. मार्शल को १९५३ में, नोबुल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें उनको मानवीय कल्याण सम्बन्धी उस योजना पर प्रदान किया गया था जो उन्होंने उन यूरोपीय देशों को सहायतार्थ बनायी थी जिन्हें युद्ध के दौरान में काफी क्षति पहुंची थी। चित्र : जिस समारोह में श्री मार्शल को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया उसमें वे भाषण दे रहे हैं।



संयुक्त राष्ट्र संघ के अवर-सचिव तथा १९५० में नोबुल शान्ति पुरस्कार के अमरीकी विजेता डा. राल्फ जे. बन्श (दाएं)। संयुक्त राष्ट्र महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष ईरान के नसरोल्ला इंतेजाम (बाएं) उन्हें पुरस्कार प्राप्ति के समय बधाई दे रहे हैं।

भ्रष्टाचार का पता चलाने पर ए. एफ. एल.-सी. आई. ओ. ने आचार नीति सम्बन्धी कड़ी नियमावली अपनायी और कांग्रेस से एक विधान पारित कराया जिसके अनुसार यूनियन के वित्तीय मामलों विशेषतः पेंशन, और कल्याण निधि सम्बन्धी मामलों का सार्वजनिक प्रकटीकरण अनिवार्य हो गया। इस प्रकार यूनियन सदस्यों को लोकतन्त्रीय अधिकारों की गारण्टी मिली।

अन्य घरेलू समस्याओं का समाधान कठिन साबित हुआ। कृषि तकनीक में नयी प्रगतियों के कारण कृषि उत्पादन राष्ट्रीय मांग से अधिक बढ़ जाने की समस्या अधिक गूढ़ हो गयी। आइजनहोवर प्रशासन ने कृषकों को निर्धारित मूल्य समर्थन गारण्टी सम्बन्धी मौजूदा नीति के स्थान पर निर्धारित मूल्यों का एक लोचशील पैमाना स्थापित किया जिससे किसानों को ऐसी फसलें उपजाने का प्रोत्साहन मिले जिनका आधिक्य न था। इसके अतिरिक्त एक 'भूमि बैंक' कार्यक्रम ने चारा उगाने, पेड़ लगाने और तालाब बनाने के लिए अधिक भूमि के उपयोग को प्रोत्साहन दिया।

अमरीकियों की आलोचना व साहचर्य स्वतन्त्रता के सर्वाधिक अधिकारों का उल्लंघन किए बिना देश को तोड़-फोड़ की कार्रवाइयों से बचाने की समस्या भी आइजनहोवर प्रशासन को विरासत में मिली। सेनेटर जोसफ मेकार्थी के नेतृत्व में कांग्रेस की एक उपसमिति ने शासन में कम्यूनिस्ट प्रभाव की सम्भावना की पूरी जांच-पड़ताल की और सरकारी व गैर-सरकारी व्यक्तियों पर आरोप लगाए। बहुत से अमरीकियों ने सेनेटर मेकार्थी के प्रयासों की प्रशंसा की परन्तु दूसरे बहुत से लोगों ने उनकी असावधानी और न्याय सम्बन्धी रीतियों की अवहेलना की आलोचना की। १९५४ में उनका प्रभाव बहुत घट गया जिसका कारण अंशतः उनकी कुछ कार्रवाइयों के खिलाफ सेनेट का प्रस्ताव था।

आइजनहोवर शासनकाल में नीग्रो अमरीकियों के राजनीतिक, वैधानिक व सामाजिक अधिकारों में निरन्तर वृद्धि हुई। पहले से अधिक नीग्रो कालेजों में जाने लगे, चुनावों में मतदान देने लगे, उनके अपने घर और मोटरगाड़ियां थीं उनको अधिक व्यावसायिक व पर्यवेक्षी नौकरियां मिलीं और वे सरकार में ऊंचे पदों पर आसीन हुए। परन्तु इस काल का असैनिक अधिकारों का सबसे अधिक महत्वपूर्ण विकास था सर्वोच्च न्यायालय का एक मत फैसला जिसके अनुसार नीग्रो और श्वेत बच्चों के लिए अलग-अलग स्कूलों की व्यवस्था करने वाले राजकीय और स्थानीय नियमों को असंवैधानिक करार दिया गया। चूंकि अधिकतर राज्यों के सार्वजनिक स्कूलों में पृथक्करण नहीं था इसलिए यह फैसला मुख्यतः



रिपब्लिकन दल की ओर से राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव जीतने के उपरान्त श्री ड्वाइट् डी. आइजन होवर अपने पद का कार्यभार सम्भालने के पहले तत्कालीन डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति श्री ट्रूमॅन से सत्ता के सरल हस्तान्तरण के आश्वासन के लिए मिले। यह एक अमरीकी परम्परा है।

थोड़े से दक्षिणी राज्यों पर ही लागू हुआ। जहां जातीय पृथक्करण की पुरानी परम्परा थी। सर्वोच्च न्यायालय ने इन क्षेत्रों के संघीय सरकार के सूबा न्यायालयों को यह आदेश दिया कि स्थानीय स्कूल अधिकारियों द्वारा इस फैसले के पूर्ण पालन की शीघ्र और उचित शुरुआत कराने का प्रबन्ध करें। कोलम्बिया सूबे और कुछ सीमान्त राज्यों में स्कूलों में एकीकरण तेजी से चला परन्तु दूर दक्षिण में उसका घोर विरोध हुआ। इस मामले पर १९५७ में लिटिल राक आरकन्सास में हिंसात्मक कार्रवाई शुरू होने के बाद संघीय फौजें भेजी गई। यह सरकार के इस संकल्प का प्रमाण था कि स्कूलों के एकीकरण के लिए न्यायालय आदेश का पूर्णतः पालन किया जाय। अलास्का और हवाई को १९५८ और १९५९ में पूर्ण राज्यीय स्तर दिया जाना, जहां विभिन्न जातियों के व्यक्ति बसते हैं, सामाजिक और राजनीतिक लोकतन्त्र की प्रगति का और अधिक प्रमाण है।

१९५० और १९६० के बीच अमरीकी लोगों का जीवन स्तर बढ़ता गया। १९५७-१९५८ की मन्दी के पश्चात बेरोजगारी बढ़ने के बावजूद भी मजदूरी में निरन्तर वृद्धि हुई, व्यापार गतिशील हो गया और आशावादी भावना बनी रही। कुल राष्ट्रीय उत्पादन—राष्ट्र की समस्त सामग्री और सेवाओं का मूल्य—१९६० में २६,४७० करोड़ डालर हो गया। तथापि विश्व-साम्यवाद से चलने वाले संघर्ष और अन्तर्राष्ट्रीय तनावों की वृद्धि, समृद्धि के उपभोग में बाधक हुई।

अमरीका द्वारा एशियाई स्वतन्त्रता का समर्थन

राष्ट्रपति आइजनहोवर का प्रथम प्रशासन विदेशी मामलों से सम्बन्धित एक आशापूर्ण विजय से प्रारम्भ हुआ। कोरिया में फौजी मात के कारण उत्तरी कोरियाई साम्यवादियों ने जुलाई १९५३ में संयुक्तराष्ट्र कमान के साथ युद्ध विराम सन्धि कर ली। इस सन्धि में औपचारिक रूप से कोरिया का विभाजन और युद्ध बन्दियों की अदला-बदली स्वीकार की गयी थी। जब लाखों उत्तरी कोरियाई और चीनी युद्ध बन्दियों ने भारतीय प्रेक्षकों की उपस्थिति में अपने घरों को वापस जाना अस्वीकार कर दिया तो इससे साम्यवादी मनोबल को बहुत अधिक धक्का लगा।

परन्तु कोरियाई सन्धि से एशिया में साम्यवादी विस्तार समाप्त नहीं हुआ। १९५४ के बसन्त में हिन्द चीन की वैध सरकार के विरुद्ध कम्युनिस्ट चीन की मदद से सुलगती हुई छापेमार कार्रवाइयों के कारण पूरी तरह लड़ाई भड़क उठी। हिन्द चीन, फ्रांस, कम्यूनिस्ट चीन, सोवियत संघ और इंग्लैण्ड के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन जुलाई में जेनीवा में हुआ जिसमें यह तय हुआ कि देश को दो भागों में बांट दिया जाय। उत्तरी क्षेत्र को वियेतमिन्ह के साम्यवादी राज्य का नाम दिया गया (जो बाद में उत्तरी वियतनाम कहलाया)। जब कि बाकी भाग को लाओस, कम्बोडिया और दक्षिणी वियतनाम के तीन असाम्यवादी राज्यों में बांट दिया गया। एक अर्थपूर्ण बात यह हुई कि वियेतमिन्ह की लगभग १० प्रतिशत जनसंख्या ने कम्यूनिस्ट प्रशासन में रहने की बजाय दक्षिण की ओर चले आना पसन्द किया।

स्वतन्त्र एशियाई देशों को भविष्य में साम्यवादी घुसपैठ या आक्रमण से बचाने के लिए अमरीका ने थाईलैण्ड, फिलीपाइन्स, पाकिस्तान, इंग्लैण्ड, फ्रांस, आस्ट्रेलिया और न्यूइंग्लैण्ड के साथ मिलकर सितम्बर, १९५४ में दक्षिणी एशिया सन्धि संगठन स्थापित किया। पारस्परिक सहायता की इस सन्धि में जो 'सीटो' नाम से पुकारी गयी आर्थिक सहयोग, तकनीकी सहायता और आक्रमण और विध्वंसक कार्यों के विरुद्ध सामूहिक कार्रवाई का प्रबन्ध किया गया। एक सम्बद्ध धारा के अनुसार सन्धि की शर्तें लाओस, कम्बोडिया और दक्षिणी वियतनाम की सुरक्षा और आर्थिक सहायता के लिए भी लागू कर दी गयी।

यह स्वीकार करते हुए कि अमरीकी सुरक्षा व कल्याण और नवोदित क्षेत्रों के लोगों की आर्थिक और सामाजिक प्रगति के बीच सीधा सम्बन्ध है, अमरीका ने एशिया, मध्यपूर्व, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के लिए अपना तकनीकी सहायता कार्यक्रम बढ़ा दिया। युद्ध-ध्वंसित दक्षिणी कोरिया की सहायता और पुनर्निर्माण के लिए अमरीका ने १०० करोड़ डालर से अधिक की धनराशि व्यय की, १९५९ तक वह देश लड़ाई से पहले के अधिकतर उत्पादन व उपभोग स्तर प्राप्त कर चुका था या उससे आगे निकल चुका था। फिलीपाइन गणराज्य को युद्ध-विध्वंस के बाद पुनर्निर्माण और कम्यूनिस्ट छापेमारों से सफलतापूर्वक युद्ध करने के लिए दी गयी वृहत सहायता भी समान रूप से प्रभावी थी। कुल मिलाकर १९५० और १९६० के बीच अमरीका ने ६० राष्ट्रों को औषधियां, मशीनें, ऋण और तकनीशियन दिए।

शान्तिपूर्ण सहयोग के प्रयास

१९५५ में विभिन्न सहायता कार्यक्रमों और यूरोप में 'मार्शल योजना' के बचे हुए भाग को मिलाकर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग प्रशासन की स्थापना हुई जो अमरीकी सरकार का स्थायी भाग बना। नवोदित क्षेत्रों को परिवहन, बिजली, उद्योग,

नदी घाटी योजनाओं, सिंचाई और आर्थिक उन्नति के दूसरे साधनों के विकास के लिए आवश्यक पूंजी प्रदान करने के लिए अमरीका ने १९५७ में 'विकास ऋण निधि' की स्थापना की। १९६० के अन्त तक इस निधि से ४९ देशों को १८४ करोड़ डालर के कुल १८३ ऋण दिए जा चुके थे। इसके अतिरिक्त १९५४ और १९६० के बीच अमरीका ने १,००० करोड़ डालर के लागत की खाद्य सामग्री जरूरतमन्द देशों में वितरित की। इसमें से लगभग आधी खाद्य-सामग्री सीधे उपहार के रूप में पाकिस्तान, नेपाल, जार्डन, हेटी और घाना जैसे देशों को अकाल से बचाने के लिए दे दी गयी। बाकी आधा भाग विदेशी मुद्राओं में बेच दिया गया और वही राशि आदाता देशों को ऋण के रूप में कम या बिना किसी ब्याज के उनके आर्थिक विकास योजनाओं के लिए दे दी गयी।

१९५५ के जेनीवा 'शिखर सम्मेलन' से साम्यवादी व असाम्यवादी शक्तियों के बीच उन्नति के लिए शान्तिपूर्ण सहयोग की आशाएं बढ़ीं। किन्तु अमरीका, रूस, ब्रिटेन और फ्रांस के नेता काफी विचार-विनिमय के बाद भी निरस्त्रीकरण या जर्मनी के पुनः एकीकरण करने के तरीकों पर सहमत नहीं हो सके। अचानक हमले के खतरे को न्यूनतम करने और हथियार बन्दी रोकने के प्रयास में राष्ट्रपति आइजनहोवर ने प्रस्ताव किया कि सोवियत संघ और अमरीका अपने फौजी संस्थानों के नक्शों की अदला-बदली कर लें और फौजी संस्थानों के पारस्परिक हवाई प्रेक्षण की अनुमति दें। रूसी नेताओं ने इस योजना को राष्ट्रीय प्रभुसत्ता पर आक्रमण मानकर ठुकरा दिया जिससे बहुत से देशों की जनता को जो आइजनहोवर योजना को शस्त्र नियन्त्रण और निरीक्षण की विश्व प्रणाली की ओर पहला कदम मानती थी, घोर निराशा हुई। तथापि जेनीवा सम्मेलन का परिणाम यह जरूर हुआ कि रूसी तकनीशियनों, बुद्धिजीवियों और कलाकारों की एक बड़ी संख्या ने एक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत अमरीका का दौरा किया और उनके प्रतिरूप अमरीकी सोवियत संघ गए।

हंगरी और स्वेज पर संकट

१९५६ में, अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में कई विस्फोटकारी घटनाएं हुईं। उस वर्ष के आरम्भ में सोवियत दल के नेता निकिता ख्रुश्चेव ने अकस्मात ही मृत डिक्टेटर स्टालिन को क्रूर अत्याचारी शासक कहकर दोषी ठहराया। ख्रुश्चेव द्वारा स्टालिन के अपराध खोले जाने पर पूर्वी यूरोप के रूसी अभिभावी देशों की जनता ने रूसी नियन्त्रण और घरेलू मामलों में रूसी हस्तक्षेप से मुक्ति की मांग की। पोलैण्ड में एक राष्ट्रीय साम्यवादी नेता व्लाडीस्ला गोमुल्का, जो स्टालिन काल में बन्दी बना लिए गए थे, पोलैण्ड के साम्यवादी दल के प्रमुख बने और उन्होंने जनता को अधिक वाक्-स्वातन्त्र्य, प्रेस स्वातन्त्र्य और धर्म-स्वातन्त्र्य देने का वादा किया। पोलैण्ड के उदाहरण से प्रोत्साहित होकर हंगरी की जनता ने अक्तूबर १९५६ में विद्रोह कर दिया, एक उदार सरकार की स्थापना की और सोवियत फौजों के वापस बुलाए जाने की मांग की। पीछे हट जाने के बजाय सोवियत फौजों ने हंगरी के स्वतन्त्रता सेनानियों पर एक वृहत हमला किया। संयुक्तराष्ट्र महासभा ने बहुमत से इस कार्य की निन्दा की। सोवियत यूनियन द्वारा विद्रोह के इस बेरहमी से कुचले जाने पर अमरीकी जनता ने समस्त संसार के लोगों के साथ मिलकर विरोध प्रकट किया। और हंगरी के उन हजारों शरणार्थियों का स्वागत किया जिन्होंने निर्वासन में उस स्वतन्त्रता को पाने का प्रयास किया था जो उन्हें स्वयं अपने देश में नहीं मिल सकी थी।

हंगरी में विद्रोह के साथ ही साथ स्वेज नहर पर नियन्त्रण के बारे में एक गम्भीर विश्व संकट उत्पन्न हो गया। मिस्रीय राज्य क्षेत्र में १८६९ में पूरा किए जाने के बाद से इस नहर का संचालन एक अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी द्वारा किया जाता था जिस पर मुख्यतः अंग्रेजी व फ्रांसीसी नियन्त्रण था। जुलाई, १९५६ में मिस्र के राष्ट्रपति नासिर ने नहर के राष्ट्रीयकरण की घोषणा कर दी। पश्चिमी शक्तियों ने मिस्र के साथ समझौता करने के प्रयत्न किए, जिनका आधार नहर का नियमित उपयोग करने वाले १८ देशों द्वारा एक नए प्रकार का अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण था। परन्तु यह प्रयास असफल रहे। फिर अक्तूबर में बढ़ते हुए सीमान्त झगड़ों की पृष्ठभूमि में इजराइल ने मिस्र पर आक्रमण की योजना बनाने का आरोप लगाया और इजराइली फौजें सिनाई प्रायद्वीप को पार करके स्वेज नहर की तरफ भेज दीं। इस घटना को नहर के नौपरिवहन के लिए खतरा मानकर इंग्लैण्ड और फ्रांस ने नहर क्षेत्र में अपनी फौजें उतारीं। अमरीका ने अपने 'नाटो' मित्रों की इस कार्रवाई को आत्मसंकल्प के सिद्धान्त का उल्लंघन मानकर विरोध किया। संयुक्त राष्ट्र में उसके प्रतिनिधि ने लड़ाई बन्दी और आक्रमणकारी फौजें पीछे हटाए जाने की मांग सम्बन्धी महासभा के एक प्रस्ताव के समर्थन में मतदान दिया। इंग्लैण्ड, फ्रांस और इजराइल ने इन शर्तों को मान लिया। परन्तु इसके खिलाफ रूसी फौजें हंगरी पर कब्जा किए रहीं। संयुक्त राष्ट्र की पुलिस के निरीक्षण में स्वेज नहर से भग्नशेष साफ किए गए और नहर नौपरिवहन के लिए मार्च, १९५७ में खोल दी गयी।



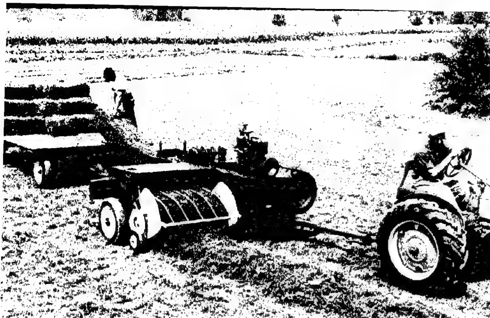
नोबुल पुरस्कार विजेता विलियम फ़ॉकनर को एक सशक्त और कल्पना के धनी उपन्यासकार के रूप में याद किया जाता है। श्री फॉकनर ने संयुक्त राज्य अमरीका के दक्षिणी भाग के बारे में लिखा है।



नोबुल और पुलिट्ज़र पुरस्कारों के विजेता अर्नेस्ट हेमिंग्वे ने अपनी विशिष्ट शैली से अनेक सम-सामयिक लेखकों को प्रभावित किया।



जॉन स्टीनबेक ऐसे अनेक सुप्रसिद्ध उपन्यासों के लेखक हैं जिनमें सामाजिक विरोध की भावनाएं प्रभावशाली ढंग से उभर कर सामने आयी हैं। उनके इन उपन्यासों में से एक है —'ग्रेप्स आव रैथ' जिस पर उन्हें १९६२ में साहित्य का नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया।



पूर्वी ओरेगान में जहाँ बहुत कम वर्षा होती है, सिंचाई की विस्तृत व्यवस्था करके हजारों एकड़ बंजर भूमि को उपजाऊ फार्मों में बदल दिया गया।

स्वेज संकट से जिसने सोवियत संघ को सशस्त्र हस्तक्षेप करने और मिस्र में रूसी 'स्वयं-सेवक' भेजने की धमकी देने को प्रेरित किया था, मध्यपूर्व में कदम जमाने के बढ़ते हुए साम्यवादी प्रयासों का पता चला। इस खतरे का मुकाबला करने और इस क्षेत्र के स्थायित्व व स्वतन्त्रता को प्रोत्साहन देने के लिए अमरीका ने वह नीति अपनायी जो बाद में 'आइजनहोवर सिद्धान्त' के नाम से प्रचलित हुई। जनवरी, १९५७ में राष्ट्रपति आइजनहोवर ने पहले तो यह अनुरोध किया कि साम्यवादी आक्रमण रोकने के लिए मध्य-पूर्व का कोई राष्ट्र फौजी सहायता मांगे तो उन्हें उसको देने के अधिकार मिलने चाहिएं। उन्होंने दूसरा यह अनुरोध किया कि २० करोड़ डालर की एक धनराशि मध्यपूर्व के उन देशों की सहायतार्थ जो संयुक्त राज्य से उसकी प्रार्थना करें, अलग रखी जानी चाहिए। कांग्रेस ने दोनों अनुरोध स्वीकार कर लिए। डेढ़ साल बाद लेबनीज सरकार ने अमरीकी सहायता की प्रार्थना की और संयुक्त अरब गणराज्य (सीरिया और मिस्र का संगठन) के ऊपर लेबनान में विद्रोह उकसाने और उसके लिए शस्त्रादि की सहायता देने का आरोप लगाया। राष्ट्रपति आइजनहोवर ने अमरीकी फौजें उस देश के प्रतिकूल विदेशी तत्वों से बचने की सुनिश्चितता के लिए भेजीं। कई सप्ताह बाद लेबनान की स्थिति सुधर गई और अमरीका ने अपनी फौजें वापस बुला लीं। इस प्रकार का एक संकट जार्डन और ईराक के बीच भी उत्पन्न हुआ परन्तु उस देश की प्रार्थना पर अंग्रेजी फौजों के जार्डन पहुँचते ही वह शीघ्रता से समाप्त हो गया। फौजें भी जल्दी वापस बुला ली गईं।

फ़ार्मोसा और बर्लिन को धमकी

१९५८ के ग्रीष्म में, जब कि मध्यपूर्व में अब भी बहुत अशान्ति थी, सुदूर पूर्व में एक नया संकट उपस्थित हुआ। साम्यवादी चीन ने राष्ट्रवादियों के क्यूमाय और मातसू द्वीपों पर बमबारी आरम्भ कर दी। यह फार्मोसा पर आक्रमण करने की दिशा में पहला कदम प्रतीत होता था। विदेश मन्त्री डलेस ने इस धमकी के जवाब में यह घोषणा की कि अमरीका किनारे के द्वीपों पर हमला रोकने और फार्मोसा के बचाव के लिए समयानुकूल व प्रभावी कार्रवाई करेगा। इन द्वीपों पर लाल चीन के दावे को रूसी



वाशिंगटन डी. सी. के एक स्कूल की पहली कक्षा । इस स्कूल में रंग के आधार पर भेद नहीं बरता जाता ।

समर्थन प्राप्त होने के बावजूद बमबारी कम हो गयी और फिर जब कि राष्ट्रपति आइजनहोवर ने यह चेतावनी दी कि सशस्त्र अतिक्रमण के सामने अमरीका पीछे नहीं हटेगा, वह बमबारी कतई बन्द हो गयी। हालांकि कम्यूनिस्ट चीन फार्मोसा और निकटवर्ती द्वीपों को मुक्त कराने के अपने अन्तिम इरादे घोषित करता रहा।

सुदूरपूर्व का संकट बीतने भी न पाया था कि नवम्बर में रूसी प्रधानमन्त्री ने पश्चिमी शक्तियों को छः महीने की अन्तिम चेतावनी दी कि वे बर्लिन को खाली करके उसे स्वतन्त्र और निरस्त्रीकृत नगर बना दें। ख्रुशोव ने घोषणा की कि इस अवधि के उपरान्त पश्चिमी बर्लिन के लिए समस्त संचार साधनों का नियन्त्रण सोवियत संघ पूर्वी जर्मनी को सौंप देगा और पश्चिमी शक्तियों की पहुँच पश्चिमी बर्लिन तक केवल पूर्वी जर्मन सरकार की अनुमति से ही हो सकेगी। अमरीका, इंग्लैण्ड और फ्रांस ने इस चेतावनी के उत्तर में दृढ़तापूर्वक कहा कि पश्चिमी बर्लिन में टिके रहने का और इस नगर तक अपनी वैध पहुँच बनाए रखने का उनका दृढ़ निश्चय है।

१९५९ में सोवियत संघ ने अपनी अन्तिम अवधि वापिस ले ली और इसके स्थान पर पश्चिमी शक्तियों के साथ चार बड़े विदेश मन्त्रियों के सम्मेलन में सम्मिलित हुआ। यद्यपि ३ महीने लम्बे इस सम्मेलन में कोई महत्वपूर्ण समझौते नहीं हो सके तथापि उससे आगामी समझौता वार्ता के लिए द्वार खुल गया। प्रधान मन्त्री ख्रुशोव की सितम्बर, १९५९ की अमरीका यात्रा के उपरान्त ऐसा प्रतीत हुआ कि यह द्वार कुछ और अधिक खुल गया है। इस यात्रा की समाप्ति पर उन्होंने और राष्ट्रपति आइजनहोवर ने एक संयुक्त घोषणा की जिसमें कहा गया कि संसार के सामने इस समय सब से गम्भीर समस्या सार्वजनिक निरस्त्रीकरण की है। वे इस पर भी सहमत हुए कि बर्लिन की समस्या और समस्त अनिर्णीत अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों का समाधान बल प्रयोग से नहीं बल्कि शान्तिपूर्ण तरीकों से समझौता वार्ता द्वारा किया जाना चाहिए। इसके बाद पेरिस में, मई १९६० में, एक 'शिखर सम्मेलन' करने के प्रबन्ध किए जाने लगे। परन्तु रूसी प्रधान मन्त्री ने १ मई को सोवियत संघ में एक अमरीकी यू. २ टोहक-विमान के गिराए जाने के आधार पर इस सम्मेलन को अस्वीकार कर दिया। यद्यपि रूसी सरकार निश्चय ही एक वर्ष से अधिक इन उड़ानों के बारे में जानती थी और राष्ट्रपति आइजनहोवर की घोषणा के बावजूद कि यह उड़ानें बन्द कर दी गयी हैं और आगे चालू नहीं की जायगी, ख्रुशोव ने कहा कि उन्हें धक्का लगा है और वे कुपित हैं और उन्होंने राष्ट्रपति आइजनहोवर से व्यक्तिगत क्षमा-याचना मांगने को कहा। जब इसको अस्वीकृत कर दिया गया तब वे पेरिस से मास्को चले गए और सम्मेलन की सब योजनाएं त्याग दी गयीं।

क्यूबा में कैस्ट्रो और साम्यवाद

इसी बीच अमरीकी दक्षिणी पूर्वी तट रेखा से ९० मील के अन्दर ही क्यूबा में कम्यूनिस्ट चालों का एक उदाहरण सामने आया। कई साल युद्ध करने के उपरान्त १९५९ के आरम्भ में फीडल कैस्ट्रो क्यूबा के डिक्टेटर फुलजेंसियो बतिस्ता की सरकार को उलटने में सफल हो गए। अमरीकी सरकार और अमरीकी जनता को बतिस्ता के क्रूर कारनामों का पता था और इसलिए उन्होंने कैस्ट्रो को शक्ति मिल जाने का स्वागत किया और उसे लोकतन्त्रीय विजय माना।

किन्तु अमरीकी सहानुभूति जल्दी ही समाप्त हो गई, जब प्रधानमन्त्री कैस्ट्रो एक कम्यूनिस्ट डिक्टेटर के समान व्यवहार और बात करने लगे। उन्होंने क्यूबा की जनता से स्वतन्त्र चुनावों के जो वायदे किए थे पूरे नहीं किए। उन्होंने शीघ्रता पूर्वक किए हुए मुकदमों के बाद जिनका आशय अदालती कार्रवाई के बजाय प्रचार अधिक था, अपने सैकड़ों राजनीतिक शत्रुओं को मृत्यु दण्ड दे दिया। उसके बाद उन्होंने क्यूबा की जेलें एक बार फिर से राजनीतिक आलोचकों से भर दीं, जिसमें कैस्ट्रो के पहले वाले साथी, कम्युनिस्ट विरोधी श्रमिक नेता और बतिस्ता शासन के पुराने विरोधी भी थे। प्रेस के ऊपर कड़ा सेंसर लगा दिया गया। विदेशी सम्पत्ति बिना पूरे मुआवजे के स्वेच्छापूर्वक जब्त कर ली गयी। बहुत से मामलों में कोई भी मुआवजा नहीं दिया गया। कैस्ट्रो की दमनात्मक और बदले की कार्रवाइयों से केवल कम्यूनिस्ट ही बच पाए।

जैसे-जैसे उसकी आन्तरिक तानाशाही पक्की होती गयी, कैस्ट्रो अधिकाधिक रूप से अमरीका की निन्दा करने लगा और कम्यूनिस्ट राष्ट्रों से समर्थन प्राप्त करने की कोशिश करने लगा।

उत्तेजित किए जाने के बावजूद आइजनहोवर प्रशासन ने पहले तो धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की नीति अपनायी। तथापि, १९६० की गर्मियों में अमरीकी नीति सख्त हो गयी। अमरीका ने क्यूबा से चीनी खरीदी जाने पर अस्थायी रोक लगा दी और अमरीकी राज्य संगठन (ओ. ए. एस.) के २१ सदस्य राष्ट्रों से क्यूबा की कार्रवाई की निन्दा करने का अनुरोध किया। ओ. ए. एस. ने यद्यपि इस दफा सीधी तौर पर कैस्ट्रो प्रशासन की आलोचना नहीं की, उसने पश्चिमी गोलार्ध में कम्यूनिस्ट हस्तक्षेप की निन्दा अवश्य की।





कोरिया के युद्ध ने बहुतों की जानें लीं और हर तरफ विनाश के दृश्य उपस्थित किए। संयुक्त राज्य अमरीका और राष्ट्रसंघ की सहायता से दक्षिणी कोरिया में कारखानों, स्कूलों और घरों का पुनर्निर्माण हुआ, संचार के साधनों की मरम्मत की गयी और किसानों ने नए औज़ारों के साथ अपने खेतों में काम करना शुरू किया।

उद्योगों व घरों के इस्तेमाल के लिए सस्ती बिजली की व्यवस्था करने के उद्देश्य से अमरीका दूसरे देशों को जो महान सहयोग प्रदान कर रहा है उसका एक उदाहरण है उत्तर प्रदेश में अमरीकी आर्थिक सहायता से निर्मित रिहेन्द बांध।

१९६० के अन्त में एक और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन से विश्व के आशाजनक और उपद्रवकारी पहलुओं का पता चलता है। संयुक्तराष्ट्र महासभा की न्यूयार्क में हुई बैठक में १६ नए राष्ट्रों को सम्मिलित किया गया, जिनमें से एक को, छोड़कर सभी अफ्रीकी महाद्वीप के थे। इससे पता चलता था कि युद्धोत्तर काल में पहले के उपनिवेशों की जनता को शीघ्रता से स्वतन्त्रता मिली है। संयुक्त-राष्ट्र के प्रतिनिधियों के लिए एक भाषण में राष्ट्रपति आइजनहोवर ने दूसरे राष्ट्रों से अनुरोध किया कि अमरीका के साथ मिलकर सामान्य रूप से सभी नवोदित राष्ट्रों को और विशेषतः अफ्रीकी राष्ट्रों को अधिक से अधिक सहायता दें। उन्होंने यह भी वचन दिया कि अमरीका निरीक्षण और नियन्त्रण की प्रभावी प्रणाली पर आधारित विश्व निरस्त्रीकरण का व्यावहारिक कार्यक्रम खोजने की कोशिश करता रहेगा।

महासभा की बैठक से पहले, शस्त्रीकरण की होड़ के ऊपर बढ़ती हुई चिन्ता मनुष्य की अन्तरिक्ष विजय से और भी अधिक तीव्र हो गयी थी। वही विकास अधिक शान्तिपूर्ण काल में केवल प्रशंसा और गर्व का विषय होता। सोवियत संघ द्वारा अक्तूबर, १९५७ में और अमरीका द्वारा जनवरी, १९५८ में प्रथम कृत्रिम उपग्रह छोड़े जाने से यह प्रदर्शित हो गया कि दोनों देशों के पास शक्तिशाली राकेट हैं जिनसे अणु और हाइड्रोजन बम हजारों मील दूर शत्रु देश के ऊपर फेंके जा सकते हैं। एक निर्दोष शस्त्र निरीक्षण प्रणाली के अभाव में यह खतरा सदैव ही था कि दुर्घटना या और किसी कारण बटन दबा कर किया जाने वाला युद्ध छिड़ जाएगा और चकाचौंध पैदा करने वाले एक ही क्षण में करोड़ों जीवन नष्ट हो जाएंगे। विश्व भर को उस समय बड़ा धक्का लगा और निराशा हुई जब प्रधान मन्त्री ख्रुशोव ने धमकीपूर्ण स्वर में संयुक्त राष्ट्र महासभा में कहा कि सोवियत संघ निशस्त्रीकरण समझौते की आरम्भिक दशा में निरीक्षण और नियन्त्रण स्वीकार नहीं करेगा। सोवियत नेता जानते थे कि निरीक्षण के बिना निरस्त्रीकरण लोकतन्त्रीय राष्ट्रों को अमान्य है क्योंकि इससे सोवियत संघ जैसे आवरण से ढंके समाज को खतरनाक लाभ मिल सकते हैं जहां निरस्त्रीकरण सम्बन्धी वचनों के उल्लंघन का आसानी से पता नहीं चल सकता, जब कि दूसरी ओर लोकतन्त्र में उस प्रकार के उल्लंघनों के पता चलने के अधिक अवसर होंगे।

घरेलू मोर्चे पर केनेडी की कार्रवाई

विश्व तनावों की इस पृष्ठभूमि में अमरीकी लोगों ने नवम्बर १९६० में एक नए राष्ट्रपति को चुना। पूर्व सेनेटर जॉन एफ. केनेडी अपने रिपब्लिकन प्रतिद्वन्द्वी उपराष्ट्रपति रिचर्ड एम. निक्सन से बहुत कम वोटों से जीते। राष्ट्रपति पद के इन दो युवा उम्मीदवारों ने एक वादविवाद श्रृंखला में साथ-साथ टेलीविजन पर आकर एक दृष्टान्त स्थापित किया। निक्सन ने आइजनहोवर प्रशासन में अपने आठ साल के अनुभव पर जोर दिया और मतदाताओं को रिपब्लिकन नेतृत्व में प्राप्त हुई 'शान्ति और समृद्धि' की याद दिलाई। केनेडी ने देश के मानवीय और आर्थिक साधनों के अधिक प्रभावी उपयोग के लिए एक नए और दूरदर्शी नेतृत्व की मांग की।

अपने उद्घाटन भाषण में राष्ट्रपति केनेडी ने, जो अब तक निर्वाचित राष्ट्रपतियों में सबसे कम उम्र के थे, अपनी युवाशक्ति का परिचय दिया जो उनके प्रशासनकाल का प्रधान तत्व रही है। उन्होंने कहा कि 'ज्योतिशिखा अमरीकियों की नयी पीढ़ी को दे दी गई है।' वस्तुतः उनके मन्त्रिमण्डल और सलाहकार वर्ग में देश के इतिहास में सबसे कम उम्र वाले उच्च स्तरीय अधिकारी थे। यह वर्ग नए विचारों को ग्रहण करने और प्रबल कार्रवाई करने की तत्परता के लिए विख्यात था।

जब राष्ट्रपति केनेडी ने पद-ग्रहण किया तब देश की अर्थ-व्यवस्था सामान्यतः समृद्ध थी और एक औसत औद्योगिक श्रमिक की मजदूरी ९५ डालर प्रति सप्ताह के सबसे ऊँचे स्तर पर थी। परन्तु बेरोजगारी भी बढ़ी हुई थी विशेषतः पेन्सिलवानिया और पश्चिमी वर्जिनिया के कोयला खनन क्षेत्रों में, जिन पर नए उत्पादनों की प्रतियोगिता और अमरीकी जीवन में परिवर्तनों के कारण गम्भीर प्रभाव पड़ा था। इस स्थिति का सुधार करने के लिए नए प्रशासन ने क्षेत्रीय विकास कानून पास कराया जिससे केन्द्रीय सरकार को विपदग्रस्त समुदायों को नए उद्योग शुरू करने और आवश्यक सार्वजनिक सुविधाओं के निर्माण में सहायता करने के आवश्यक अधिकार प्राप्त हुए। एक दूसरे कानून द्वारा बेरोजगार श्रमिकों के लिए या ऐसे व्यक्तियों के लिए जो उद्योग में आवश्यक कुशलता के अभाव में कम वेतन पा रहे थे वेतन सहित पुनः प्रशिक्षण का प्रबन्ध हुआ। इसके अतिरिक्त राज्यों को २६ सप्ताह की मानक अवधि से आगे १३ सप्ताह तक और बेरोजगारी बीमा बढ़ाने के आपाती अधिकार दिए गए।

अमरीकियों की सामान्य दशा सुधारने के लिए और भी कानून बनाए गए। सामाजिक सुरक्षा प्रणाली और उदार कर दी गयी जिससे ६५ वर्ष की आयु तक प्रतीक्षा करने की बजाय किसी भी व्यक्ति को ६२ वर्ष की आयु से ही निवृत्ति पेंशन मिलनी शुरू हो गई। न्यूनतम मजदूरी १ डालर से बढ़ाकर

१.२५ डालर प्रति घण्टा कर दी गयी। बड़ी आयु के व्यक्तियों और कम आमदनी वाले परिवारों के लिए उचित लागत पर मकानों का प्रबन्ध करने के लिए कांग्रेस ने एक बड़ा आवास कार्यक्रम भी पास किया।

जहां कहीं जातीय भेदभाव अब भी मौजूद था उसे समाप्त करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। १९६१ की शरद ऋतु में दक्षिण के ४१ और स्कूली जिलों में नीग्रो विद्यार्थी पहले के समस्त श्वेत स्कूलों में भरती किए जाने लगे जिससे १९५४ के सर्वोच्च न्यायालय आदेश के उपरान्त समेकित स्कूली जिलों की संख्या ८९७ तक पहुँच गयी। नीग्रो और श्वेत विद्यार्थियों द्वारा फरवरी १९६० में शुरू किए गए शान्तिपूर्ण धरनों के फलस्वरूप २०० से अधिक दक्षिणी समुदायों में जलपान गृहों से पृथक्करण सफलतापूर्वक समाप्त हो गया। इसके बाद १९६१ में बस-परिवहन और प्रतीक्षालय सुविधाओं में पृथक्करण के विरुद्ध शान्तिपूर्ण और व्यवस्थित विरोध शुरू हुआ, जिसको 'फ्रीडम राइड्स' का नाम दिया गया। नवम्बर १९६१ में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार निगम ने अन्तर्राज्यीय यात्रा में पृथक्करण पर निषेध आदेश जारी किए। अगले वर्ष सर्वोच्च न्यायालय ने इस आदेश का समर्थन किया और कहा कि "हमने असंदिग्ध रूप से यह तय कर दिया है कि कोई भी राज्य अन्तर्राज्यीय या राज्य के भीतर परिवहन सुविधाओं में जातीय पृथक्करण की मांग नहीं कर सकता।" केनेडी शासन ने जातीय समानता के मामले में उच्च सरकारी पदों पर बड़ी संख्या में विशिष्ट नीग्रो व्यक्तियों की नियुक्ति करके और प्रगति की। रावर्ट सी. वीवर केन्द्रीय आवास और गृह-वित्त अभिकरण के प्रधान बने, थरगुड मार्शल, जो पहले काले लोगों की प्रगति की राष्ट्रीय संस्था के मुख्य सलाहकार थे, केन्द्रीय न्यायाधीश बनाए गए; और दर्जनों अन्य अमरीकी नीग्रो राष्ट्रपति के सहायक से लेकर राजदूत पदों पर नियुक्त किए गए। १९६२ में २२०,००० से अधिक नीग्रो विद्यार्थी उच्च शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, इसलिए यह विश्वसनीय था कि नीग्रो व्यक्तियों को अच्छी नौकरियां और प्रभावशाली सरकारी पद मिलने की प्रवृत्ति गतिशील हो जायगी।

अमरीका द्वारा प्रगति के लिये मैत्री का अनुरोध

विदेशी मामलों के क्षेत्र में राष्ट्रपति केनेडी को क्यूबा, दक्षिणी पूर्वी एशिया बर्लिन और अन्य स्थानों पर कई चुनौतीपूर्ण स्थितियों का सामना करना पड़ा। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर अपने प्रशासन के विचार निम्नलिखित रूप में व्यक्त किए: "अपने पुराने मित्रों के लिए जिनका सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उद्गम हमारे जैसा ही है, हम वफादार और निष्ठावान दोस्तों का वचन देते हैं।... उन नए राज्यों को, जिनका हमने स्वतन्त्रता की पंक्ति में स्वागत किया है, हम वचन देते हैं कि एक प्रकार का औपनिवेशिक नियन्त्रण, जो बीत चुका है, के स्थान पर दूसरा अधिक अत्याचारी शासन नहीं आने दिया जायगा। हम उनसे सदैव अपने दृष्टिकोण के समर्थन की अपेक्षा नहीं करते हैं। परन्तु हम सदैव ही यह आशा करेंगे कि वह स्वयं अपनी स्वतन्त्रता का बलपूर्वक समर्थन करते रहेंगे। ...उन लोगों के लिए जो झोपड़ियों और गांवों में रहते हैं और बड़ी संख्या में दुःख से छुटकारा पाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं हम उनको स्वयं अपनी मदद करने में सहायता देने का वचन देते हैं।...अपने साथी दक्षिणी गणराज्यों को हम अपने अच्छे शब्दों को अच्छे कार्यों में बदलने प्रगति के लिए एक नयी मैत्री करने—स्वतन्त्र मनुष्यों और स्वतन्त्र सरकारों को गरीबी की बेड़ियां तोड़ फेंकने का विशेष वचन देते हैं।...प्रभु-सत्ता पूर्ण राज्यों के उस विश्व सम्मेलन, संयुक्त राष्ट्र को, जो हमारे युग की जिसमें युद्ध-शक्तियां शान्ति-शक्तियों से कहीं अधिक बढ़ गयी हैं, अन्तिम आशा है, हम अपने समर्थन का पुनः वचन देते हैं।... अन्त में उन राष्ट्रों को जो अपने आपको हमारा विरोधी बना लेंगे हम कोई वचन नहीं देते परन्तु उनसे हम अनुरोध करते हैं कि इससे पहले कि विज्ञान द्वारा परिवर्धित विनाशकारी शक्तियां समस्त मानव समाज को आयोजित या दुर्घटनावश आत्म विनाश में लपेट ले, दोनों पक्षों को शान्ति की खोज फिर से शुरू करनी चाहिए। ...हमें डर कर समझौता वार्ता नहीं करना चाहिए। परन्तु, समझौता वार्ता करने से कभी डरना भी नहीं चाहिए।"

राष्ट्रपति केनेडी के पदग्रहण करने के तीन सप्ताह से कम पहले अमरीका ने क्यूबा से राजनयिक संबन्ध विच्छेद कर दिया था। यह कार्रवाई कैस्ट्रो सरकार द्वारा अमरीका को बदनाम किए जाने, अमरीकी दूतावास के अधिकारियों को तंग किए जाने और लैटिन अमरीका में कम्यूनिस्ट प्रयत्नों के प्रवेश के लिए क्यूबा को अड्डे के रूप में प्रयोग किए जाने पर की गयी थी। (इसी वर्ष, बाद में, प्रधान मन्त्री कैस्ट्रो ने एक महत्वपूर्ण व्याख्यान में स्वीकार किया कि वह कई वर्ष तक गुप्त रूप से कम्यूनिस्ट रहे थे।)

जैसे जैसे कैस्ट्रो की तानाशाही कड़ी होती गयी, हज़ारों क्यूबा निवासियों ने अपना देश छोड़ दिया, और उनमें से बहुत से अमरीका आये। अप्रैल,



संयुक्त राज्य अमरीका की सहायता संसार भर के लोगों को उपलब्ध है। मानव कल्याण के प्रोत्साहन और आर्थिक मजबूती एवं समृद्धि के पुनर्स्थापन के लिए अमरीका ने करोड़ों डालर प्रदान किए हैं।

१९६१ में क्यूबा के शरणार्थियों के एक समूह ने अपने देश पर हमला कर कॅस्ट्रो सरकार को उलटने का असफल प्रयास किया। यद्यपि अमरीकियों ने इन शरणार्थियों को प्रशिक्षण और सहायता दी थी तथापि किसी भी अमरीकी सैनिक ने चढ़ाई में भाग नहीं लिया। संसार को बहुत अचरज हुआ जब प्रधानमन्त्री कॅस्ट्रो ने पकड़े गए क्यूबा के लोकतन्त्रवादियों को छोड़ने के लिए कई लाख डालरों का उद्धार-मूल्य मांगा।

अक्तूबर, १९६२ में संसार को और भी अधिक धक्का लगा जब पता चला कि कॅस्ट्रो सरकार ने गुप्त रूप से सोवियत संघ को क्यूबा में मिजाइल अड्डा बनाने की अनुमति दे दी है। इन अड्डों में केवल रूसी तकनीशियन थे और वहां से उत्तरी व दक्षिणी अमरीका के अधिकतर बड़े नगरों पर न्यूक्लीय मिजाइल छोड़े जा सकते थे। अमरीका ने इन अड्डों को फौरन हटा लेने की मांग की और क्यूबा में भेजे जाने वाले समस्त फौजी सामान पर दृढ़ संरोध लगा दिया। अमरीकी राज्यों के संगठन ने शून्य के मुकाबले २० वोटों से यह सिफारिश की कि सदस्य राष्ट्र क्यूबा में आक्रमक शस्त्रों का जाना रोकने के लिए हर सम्भव कार्रवाई करें। इतने अधिक प्रतिरोध का सामना होने पर रूसी सरकार ने इन अड्डों को तोड़ा और संयुक्त राष्ट्र के निरीक्षण में उनका रूस वापस भेजा जाना स्वीकार कर लिया।

आर्थिक क्षेत्र में अपने पड़ोसी लैटिन अमरीकी देशों के साथ अमरीका के सम्बन्धों में सुधार होता रहा। मार्च १९६१ में राष्ट्रपति केनेडी ने औपचारिक रूप से "प्रगति के लिए मैत्री" का प्रस्ताव किया जिसके अन्तर्गत अमरीका, अन्य स्वतन्त्र देशों, विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों और व्यक्तिगत पूंजीपतियों से मिलकर लैटिन अमरीका की आर्थिक प्रगति और जीवन स्तर में सुधार के लिए २० अरब डालर के अनुदान व १० वर्ष की अवधि के लिए ऋण की व्यवस्था करेगा। अगस्त में १९ लैटिन अमरीकी राष्ट्रों ने मैत्री चार्टर का अनुमोदन कर दिया और मैत्री की शर्तों के अनुसार सब व्यक्तियों को आर्थिक व सामाजिक लाभ देने के लिए भूमि और कर सम्बन्धी सुधार करने का करार किया। १९६१ के अन्त में राष्ट्रपति केनेडी और उनकी पत्नी ने अपनी वेनेजुला और कोलम्बिया यात्रा के दौरान इस कार्यक्रम को चालू हालत में देखा। इन दो देशों ने छोटे किसानों के बीच भूमि का पुनर्वितरण शुरू कर दिया। मैत्री धन का उपयोग सड़कें, घर और स्कूल बनाने, सफाई-प्रबन्ध और जल व्यवस्था के सुधार, छोटे किसानों को ऋण देने और शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए हुआ।

दक्षिण अमरीका से अतलांतिक के उस पार अफ्रीका महाद्वीप विस्फोटकारी रूप से उदय हो रहा था। १९५६ में मोरक्को और १९५७ में ट्यूनिस और घाना से लेकर १९६१ तक २० अफ्रीकी देशों को स्वतन्त्रता मिल चुकी थी। अमरीका ने इन नवोदित राष्ट्रों का स्वागत किया। इनका औपनिवेशिक स्थिति से निकलना अमरीका को स्वयं अपने भूतकाल की याद दिलाता था। संयुक्तराष्ट्रसंघ में अमरीकी राजदूत अडलाई ई. स्टीवेन्सन ने भविष्य में विश्व मंच पर इन नए राष्ट्रों की महत्वपूर्ण भूमिका की आशा प्रगट की। राजदूत की हैसियत से उनका पहला काम अमरीका का मत अफ्रीका द्वारा किए गए उस प्रस्ताव के पक्ष में देना था जिसमें पश्चिमी अफ्रीका के अंगोला नामक पुर्तगाली उपनिवेश में जातीय अव्यवस्था की संयुक्तराष्ट्र द्वारा जांच पड़ताल किए जाने की मांग की गयी थी।

नए अफ्रीका ने राष्ट्रसंघ के लिए एक जटिल व चुनौतीपूर्ण समस्या उपस्थित कर दी जब १९६० में बेल्जियम से स्वतन्त्रता प्राप्त करने के उपरान्त कांगो गृह-कलह में ग्रस्त हो गया। राष्ट्रपति कासावूबू की प्रार्थना पर संयुक्तराष्ट्रों की फौजें कांगो भेजी गई जिनका प्रथम उद्देश्य जीवन रक्षा और व्यवस्था स्थापित करना था और बाद में १९६१ में खनिज पदार्थों से भरे-पुरे कटांगा के सूबे को फिर से बाकी देश से मिलाना था। यद्यपि कुछ अमरीकियों ने कटांगा में संयुक्तराष्ट्रों की फौजी कारंवाई की कांगो के आन्तरिक मामलों में अनुचित हस्तक्षेप बताकर आलोचना की, तथापि अमरीकी सरकार ने संयुक्त राष्ट्रों के कांगो को संयुक्त करने के उद्देश्य का समर्थन किया और उसे उस देश की आर्थिक व राजनीतिक समस्याओं के समाधान का एक मात्र रास्ता माना। इस उद्देश्य के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रयासों में अमरीका ने धन, खाद्य सामग्री और सेवाओं के रूप में ४ करोड़ डालर का अंशदान दिया। १९६२ तक कांगो के शान्तिपूर्ण और संयुक्त बनने की आशा बहुत बढ़ गई।

दक्षिण पूर्वी एशिया में कम्युनिस्टों के छापामार आक्रमणों से लाओस और दक्षिणी वियतनाम की सुरक्षा व स्वतन्त्रता को बहुत खतरा पैदा हो गया था। अमरीका को मिलाकर १४ राष्ट्रों का मई, १९६१ में लाओस के झगड़े का समाधान खोजने के लिए जेनीवा में एक सम्मेलन हुआ। छः महीनों की वार्ता के उपरान्त, जिस बीच लड़ाईबन्दी की जा चुकी थी, उन्होंने यह तय किया कि तीनों विरोधी गुटों के नेता लाओसी नरेशों से अनुरोध किया जाय कि वे मिलकर

१९५५ में, निःशस्त्रीकरण और तनाव को कम करने के लक्ष्य से आयोजित जेनीवा शिखर सम्मेलन में राष्ट्रपति आइजनहोवर (बाएं से दूसरे) ने परस्पर वैमानिक निरीक्षण का प्रस्ताव रखा जिसे सोवियत नेताओं ने नहीं माना। बाएं से दूसरे हैं, अमरीकी विदेश मन्त्री जॉन फास्टर डलेस।





अमरीकी राष्ट्रपति जॉन एफ. केनेडी और (बाईं ओर पीछे) तत्कालीन उप-राष्ट्रपति लिण्डन बी. जानसन। डलास (टेक्साज) में राष्ट्रपति केनेडी की हत्या के बाद, २२ नवम्बर १९६३ को श्री जानसन को अमरीका के ३६ वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण कराई गई।

एक तटस्थ, संयुक्त और स्वतन्त्र राष्ट्र बनाएं। तथापि दक्षिणी वियतनाम में १९६२ तक लड़ाई चलती रही क्योंकि सशस्त्र कम्युनिस्ट उत्तरी वियतनाम से घुस आए थे और अपहरण, कत्ल और निष्ठावान नागरिकों पर तरह-तरह के अत्याचार कर रहे थे। देश की प्रादेशिक अखण्डता की सुरक्षा के लिए वहां की सरकार की प्रार्थना पर अमरीकी फौजी अधिकारियों ने दक्षिणी वियतनाम की फौजों को प्रशिक्षण दिया। अमरीका ने राष्ट्रपति डीम की सरकार को नए सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी सुधार करने और कम्युनिस्ट छापे मार हमलावारों से लड़ने के लिए सीमा की जनता की सहायता प्राप्त करने के प्रयासों को प्रोत्साहन दिया।

कम्युनिस्टों ने पश्चिमी बर्लिन में एक नया संकट खड़ा करके स्वतन्त्र संसार के क्षेत्रों को हथियाने का एक अन्य प्रयत्न किया। जून १९६१ में, प्रधान मन्त्री ख्रुश्चेव ने पूर्वी जर्मनी के साथ एक अलग सन्धि करने की फिर से धमकी दी और कहा कि इससे चार शक्तियों के बीच वह मौजूदा समझौता टूट जायगा जिसके अनुसार, अमरीका, इंग्लैण्ड और फ्रांस को पश्चिमी बर्लिन में पहुँच के अधिकारों की गारण्टी दी गयी है। तीनों राष्ट्रों ने इसका उत्तर दिया कि कोई भी एक-तरफा सन्धि पश्चिमी बर्लिन में उनके अधिकारों और उत्तरदायित्वों का निराकरण नहीं कर सकती, और इसमें नगर तक बेरोक पहुँच भी शामिल है। संकट के वातावरण के कारण बहुत से पूर्वी जर्मनी के निवासी पश्चिमी बर्लिन में आ गए: केवल जुलाई में लगभग ३०,००० व्यक्ति भाग कर स्वतन्त्रता की ओर आए। अकस्मात १३ अगस्त को पूर्वी जर्मनी की कम्युनिस्ट सरकार ने बर्लिन के पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों के बीच एक कंकरीट की दीवार खड़ी कर दी और बलपूर्वक पूर्वी जर्मनी के निवासियों का आना जाना बन्द कर दिया। समस्त संसार में यह कार-वाई कम्यूनिस्ट प्रणाली की असफलता के रूप में देखी गयी। पश्चिमी बर्लिन में पहुँच के अधिकारों को बनाए रखने के मित्र राष्ट्रों के दृढ़ निश्चय के कारण सोवियत सरकार ने वर्ष की अन्तिम अवधि निकल जाने दी और पूर्वी जर्मनी के साथ शान्ति सन्धि करने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

विश्व शान्ति की ओर प्रगति

जिस महीने बर्लिन में दीवार खड़ी की गयी, सोवियत संघ ने यह घोषणा करके कि वह अणु शस्त्रों के परीक्षण फिर से चालू करेगा, विश्व के जनमन को फिर से क्रोधित कर दिया। इस घोषणा से तीन साल पहले का सोवियत संघ, इंग्लैण्ड और अमरीका के बीच किया गया परीक्षणों के ऊपर स्वेच्छिक निषेध

आकस्मिक रूप से समाप्त हो गया। अगले दिन १ सितम्बर को सोवियत संघ ने वायुमण्डल में परीक्षण विस्फोटों की तालिका शुरू की जिसके कारण रेडियो सक्रियता में बहुत वृद्धि हुई और संसार भर में आनेवाली पीढ़ियों में जनन शक्ति के क्षय का डर फैल गया। जिस गति से लगभग ५० न्यूक्लीय विस्फोट किए गए उनसे पता चलता है कि सोवियत संघ उनकी योजना गुप्त रूप से कई महीनों से कर रहा था और इसी बीच वह अमरीका और इंग्लैण्ड से स्थायी परीक्षण निषेध सन्धि के लिए नेकनियती से वार्ता करने का दावा भी कर रहा था।

रूसी परीक्षणों के बाद भी राष्ट्रपति केनेडी ने सोवियत संघ से अनुरोध किया कि वह भविष्य में सभी परीक्षणों के निषेध का आश्वासन देने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय निरीक्षण प्रबन्ध के समझौते पर हस्ताक्षर कर दे। यह प्रस्ताव भी ठुकरा दिया गया और अमरीका ने विवश होकर घोषणा की कि इसके लिए अब वायुमण्डलीय परीक्षण शुरू करने के सिवा और कोई रास्ता नहीं है जिससे शत्रु के न्यूक्लीय आक्रमण का जवाब देने की अपनी क्षमता कायम रह सके। तथापि, अमरीकी सरकार शस्त्रीकरण की होड़ समाप्त करने के अपने दृढ़ निश्चय पर लगातार काम करती रही। उसने एक विशेष शस्त्र नियन्त्रण व निःशस्त्रीकरण अभिकरण की स्थापना की और सन्धि प्राप्त करने के लिए तत्परता से प्रयास करता रहा।

२५ जुलाई १९६३ को ये प्रयास अपनी परिणति पर पहुँचे जब कि अमरीका ब्रिटेन और सोवियत संघ के प्रतिनिधियों ने मास्को में आंशिक आणविक परीक्षण प्रतिबन्ध सन्धि सम्बन्धी समझौता किया जिसके अनुसार वायुमण्डल बाह्य-अन्तरिक्ष और जल में आणविक परीक्षण पर रोक लगा दी गई। इस सन्धि में भूमिगत आणविक परीक्षणों को इसलिए शामिल नहीं किया गया क्योंकि ये तीनों शक्तियां भूमिगत परीक्षणों का पता लगाने की किसी प्रभावपूर्ण प्रणाली के बारे में एकमत न हो सकीं। इस आंशिक सन्धि पर औपचारिक रूप से ५ अगस्त १९६३ को हस्ताक्षर हुए। स्वर्गीय जॉन एफ. केनेडी के शब्दों में "यह एक पहला कदम था तनाव को कम करने, आणविक शस्त्रास्त्रों की होड़ को धीमा करने और विश्व को सम्पूर्ण विनाश की ओर फिसलने से बचाने की दिशा में।"

इस अशान्त अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण के बीच सैकड़ों आदर्शवादी अमरीकी नवयुवकों ने स्वेच्छा से बाहर के नवोदित देशों में नर्सों, सर्वेक्षकों, शिक्षकों, स्वास्थ्य सफाई विशेषज्ञों, मिस्त्रियों और कृषि सहायकों का काम करना स्वीकार किया। राष्ट्रपति केनेडी द्वारा मार्च, १९६१ में आरम्भ की गयी इस शान्ति-सेना के

ला-मारिटा (वेनेजुला) में, जहाँ ८६ किसान परिवारों को उनके अपने फार्मों पर पुनः बसाया गया था, आयोजित 'एलायेन्स ऑव प्राग्रेस' समारोह में भाग लेते हुए राष्ट्रपति बेटनकोर्ट, राष्ट्रपति केनेडी और श्रीमती केनेडी।



सदस्यों ने अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमरीका में सामान्य नागरिकों की भांति रहकर काम किया। उनका उद्देश्य अपने से कम सम्पन्न व्यक्तियों को एकता में बांधना है, इस कार्यक्रम के प्रथम वर्ष के अन्त में ३२ देशों ने शान्ति सेना के स्वयंसेवकों की मांग की और कांग्रेस ने इस सेना की सदस्य-संख्या दस हजार कर देने के लिए आवश्यक रकम प्रदान की।

अमरीकियों में शान्ति सेना की लोकप्रियता उस साहसिक आदर्शवाद की प्रतीक है जिसकी जड़ें अमरीकी इतिहास में उपनिवेशकाल और सीमान्त को बसाने के लिए अमरीकी अन्दोलन के समय से ही बहुत गहरी हैं और जिसके फलस्वरूप अमरीकियों ने अनेक देशों के लाखों आप्रवासियों का इस देश में स्वागत किया है। यह लक्षण वर्तमान समय में विश्वविद्यालय क्षेत्रों में भी प्रत्यक्ष था जहां विद्यार्थी अध्ययन किये जाने वाले विषयों के संकीर्ण दायरे से बाहर आकर युद्ध शान्ति की समस्याओं, न्यूक्लीय नीति, संयुक्तराष्ट्र और असैनिक अधिकारों के बारे में भी अधिक चिन्तित थे और उन पर बातचीत करते थे। यही आदर्शवाद उपन्यासों, नाटकों संगीत, चित्रकारी, नृत्य, शिल्पकला, चल-चित्र और टेलीविजन क्षेत्र में भी व्याप्त हो गया जहां नए और मौलिक गुणवाले व्यक्ति बेमिसाल संख्या में प्रकट हुए। अमरीकी विज्ञान, टैक्नोलोजी और उद्योग की सैद्धान्तिक और व्यावहारिक उपलब्धियों में भी यही दृष्टिगोचर होता था। और अमरीका के राजनीतिक नेताओं के विश्वशान्ति के रास्ते ढूढने व देश और विदेश में गरीबी और अन्याय से जूझने की तत्परता का भी यही कारण है।



घाना स्थित एक स्कूल की कक्षा में अध्यापिका के प्रश्न का उत्तर देने के लिए उत्सुक विद्यार्थी। यह अध्यापिका अमरीकी शान्ति सेना की सदस्या है।



कांगो गणतन्त्र में डाक्टरी सहायता को सामान्यतः सुलभ बनाए रखने के लिए राष्ट्रसंघ के तत्वावधान में जाने वाला भारतीय डाक्टरी दल अपने साज-सामान के साथ एक अमरीकी परिवहन विमान में बैठ रहा है।

सहायक पुस्तकों व संदर्भ ग्रन्थों की सूचो

Allen, Frederick Lewis	*The Big Change; America Transforms Itself, 1900-1950*, Harper and Brothers, 1952
Barck, Oscar Theodore *and* Blake, Nelson Manfred	*Since 1900; A History of the United States in Our Times*, 3rd Ed., The Macmillan Company, 1959
Beard, Charles A. *and* Mary R.	*The Beard's New Basic History of the United States*, Doubleday and Company, Inc., 1960
	The Rise of American Civilization, The Macmillan Company, 1939
Bragdon, Henry Wilkinson *and* McCutchen, Samuel Proctor	*History of a Free People*, The Macmillan Company, 1961
Chase, Gilbert	*America's Music, from the Pilgrims to the Present*, McGraw-Hill Book Company, Inc., 1955
Foerster, Norman, Ed.	*American Poetry and Prose*, 4th Ed., Houghton Mifflin Company, 1957
Franklin, John Hope	*From Slavery to Freedom Etc.*, Alfred A. Knopf, Inc., 1956
Hofstadter, Richard	*United States: The History of a Republic*, Prentice-Hall, Inc., 1957
Larkin, Oliver Waterman	*Art and Life in America*, 2nd Ed., Henry Holt and Company, Inc., 1960

Morison, Samuel Eliot *and* Commager, Henry Steele — *The Growth of the American Republic*, 4th Ed., Oxford University Press, 1950

Morris, Richard Brandon, Ed. — *Encyclopedia of American History*, 2nd Ed., Harper and Brothers, 1961

Muzzey, David — *Our Country's History*, Ginn and Company, 1961

Nevins, Allan *and* Commager, Henry Steele — *The Pocket History of the United States*, Washington Square Press, Inc., 1960

Parkes, Henry Bamford — *The United States of America; a History*, 2nd Ed., Alfred A. Knopf, Inc., 1959

Parrington, Vernon — *Main Currents in American Thought*, Harcourt, Brace, and Company, Inc., 1927

Savelle, Max — *A Short History of American Civilization*, The Dryden Press, 1957

Schlesinger, Arthur Meier, Jr. — *The Age of Jackson*, Little, Brown and Company, 1945

Schlesinger, Arthur Meier, Sr. — *Paths to the Present*, The Macmillan Company, 1949

Smith, Guy E. — *American Literature; a Complete Survey*, Littlefield, Adams and Company, 1957

